इस्बाते रफउल यदैन

अहादीस की रोशनी में

जमा व तरतीब
मौलाना अब्दुल रशीद अन्सारी

अनुवाद
रज़िया आलम

सलफी बुक सेन्टर
शाहीन बाग, जामिया नगर ओखला दिल्ली-25

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नाम किताब : इस्बाते रफ़उल यदैन अहादीस की रोशनी में
मुअल्लिफ़ : मौलाना अब्दुर्रशीद अंसारी
नाशिर : सलफ़ी बुक सेन्टर
प्रथम हिन्दी संस्करण : 2013
संख्या : 1100
क़ीमत :

मिलने के पते
दारुल कुतुब अल इस्लामिया
मटिया महल जामा मस्जिद देहली
मकतबा तर्जुमान
उर्दू बाजार, जामा मस्जिद देहली
रज़िया एकेडमी
गाँव ऊपरढिहा, पोस्ट मुकन्दपुर, जिला मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल
मोबाइलः 09136505582

Published by :

Salafi Book Centre

C-187/A-G.F., Shaheen Bagh, Jamia Nagar,
Okhla, New Delhi -25

विषय सूची

क्या ?	कहाँ ?
१. तक़दीम	०५
२. तक़दीम	०६
३. अर्ज़े नाशिर	०८
४. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रह०.....	१०
५. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मुस्लिम रह०	१२
६. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मालिक रह०	१२
७. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी रह०	१३
८. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम अहमद बिन शुऐब नसाई रह०	१४
९. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम इब्ने माजह रह०	१४
१०. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम अबू दाऊद रह०	१४
११. मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम अहमद बिन हंबल रह०	१६
१२. मरातिब कुतुबे हदीस अज़ हुज्जतुल्लाहिल-बालिग़ा	१८
१३. रफ़ा यदैन अहादीस की रोशनी में	२१
१४. (१) सही बुख़ारी	२१
१५. (२) सही मुस्लिम	२४
१६. (३) तिर्मिज़ी शरीफ़	२६
१७. (४) अबू दाऊद शरीफ़	२७
१८. (५) सुनन नसाई शरीफ़	३३
१९. (६) सुनन इब्ने माजह शरीफ़	४३
२०. (७) मुअत्ता इमाम मालिक रह०	४८
२१. तीसरी रकअत के लिए खड़े होने के बाद भी रफ़ा यदैन का सुबूत	५०
२२. (८) सही इब्ने खुज़ैमह	५५

२३. (९) अस्सुननुल-कुबरा ६६
२४. (१०) मुसनद अल-हुमैदी १०२
२५. (११) मुसनद अबी अवाना १०३
२६. (१२) शरहुस्सुन्नह १०७
२७. (१३) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक ११३
२८. (१४) सुनन अद्दारमी ११५
२९. (१५) सुनन दार कुतनी ११६
३०. (१६) अल-मुन्तक़ा लेइब्निल-जारूद १३०
३१. (१७) जुज़ओ रफ़इल यदैन इमाम बुख़ारी रह० १३५
३२. (१८) इब्ने अबी शैबा १५३
३३. (१९) मुसनद इमाम अहमद १५७
३४. (२०) सही इब्ने हिब्बान १७१
३५. (२१) मुस्नद अबू दाऊद त्यालसी १७५
३६. (२२) मुसनद शाफ़ई १७७
३७. (२३) मुअत्ता इमाम मुहम्मद १७७
३८. सहाबा किराम रज़ि० में से कुछ रावियाने अहादीस....... १७८
३९. रफ़ा यदैन पर सहाबा का इज्मा १८०
४०. रफ़ा यदैन करने वाले ताबेईन व तबअ़ ताबेईन और अइम्म-ए-मुज्तहेदीन १८१
४१. इमाम तिर्मिज़ी की शहादत १८२
४२. मक्का, मदीना, हिजाज़, इराक़, शाम, बसरा, यमन और खुरासान के अइम्म-ए-दीन १८३
४३. इमाम जुहरी और हसन बसरी रह० का फरमान १८४
४४. अली बिन मदीनी का इरशाद १८४
४५. शाह वलीउल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी रह० का फतवा १८४
४६. पीराने पीर शैख़ अब्दुल-क़ादिर जीलानी का फरमान १८४
४७. मौलाना अब्दुल-हई रह० हन्फ़ी का फतवा १८५
४८. रफ़्अ़ यदैन को बिदअत कहने वाला रिसालत मआब (स०), सहाबा और दीगर अइम्मा का गुस्ताख़ है १८५
४९. रफ़ा यदैन न करने वाले उलमा से बाज़ सहाबा की औरतों को ज़्यादा इल्म है १८६

❖ ❖ ❖

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

तक़्दीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वस्सलातु वस्सलामु अला खैरे खल्केही मुहम्मद व आलेही व सहबेही अज्मईन व मन तबेअ्हुम बेएहसानिन इला यौमिद्दीन। अम्मा बाद :

ज़ेरे नज़र किताब एक पाकिस्तानी आलिम मौलाना अब्दुर्रशीद अन्सारी की तालीफ़ है जो एक देवबन्दी हन्फ़ी आलिम के जवाब में लिखी गई है यह किताब दो हिस्सों पर मु तमिल है और मुतअ़द्दिद बार शाए हो चुकी है।

पहले हिस्सा में मुअ़ल्लिफ़ ने अहादीस की तेईस बुलन्द पाया किताबों से (जिन में सही बुख़ारी, सही मुस्लिम, सुनने अबी दाऊद, सुनने नसाई, सनने तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा, मुअत्ता इमाम मालिक, सही इब्ने खुज़ैमा जैसी आला तरीन सही और मो'तबर किताबें शामिल हैं) ऐसी दो सौ पैंतालीस अहादीस मअ् अस्नाद जमा की हैं जिन से नमाज़ में रुकूअ् जाते वक़्त, रुकूअ् से सर उठाते वक़्त और दो रकअ़त के बाद तशह्हुद पढ़ कर तीसरी रकअ़त के लिए खड़े होते वक़्त रफ़ा यदैन करना साबित है मुअल्लिफ़ ने दलाइल से वाज़ेह किया है कि रफ़ा यदैन पर सहाबा किराम का इज्मा था किसी भी सहाबी से इसका तर्क साबित नहीं और पैंतालीस सहाबा किराम के अस्माए गिरामी मअ् हवाला कुतुब नक़ल किए हैं जिन से रफ़ा यदैन की अहादीस मरवी हैं जिन में ऐसे सहाब–ए–किराम के नाम भी शामिल हैं जिन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी के आख़िरी सालों में इस्लाम क़ुबूल किया है जिस से रफ़ा यदैन के नस्ख़ के दावा की क़लई खुल जाती है। ताबेईन तबअ् ताबेईन, अइम्म–ए–मुज्तहेदीन की अक्सरीयत और मक्का, मदीना, हिजाज़, यमन, शाम, इराक़, बसरा व खुरासान और तमाम बड़े बड़े इस्लामी शहरों के तमाम बड़े बड़े उलमा न सिर्फ़ रफ़ा यदैन के क़ाइल बल्कि उस पर बराबर अमल पैरा थे। यही वजह है कि खुद अहनाफ़ के इंसाफ़ पसन्द उलमा व मुहक़्क़ेक़ीन मसलन शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी, मौलाना अब्दुल हई हन्फ़ी और अल्लामा सिन्धी वग़ैरहुम ने उसके मसनून होने का एतराफ़ किया है।

दूसरे हिस्सा में रफ़ा यदैन के तर्क पर जो हदीसें पेश की जाती हैं उनका तफ़्सीली जायज़ा लिया है और उन्हें नक़ल करके तरतीब वार उनका भरपूर मुदल्लल और मुस्कित जवाब दिया है इस तरह इस किताब

को एक दस्तावेज़ी हैसियत हासिल हो गई है। किताब की इसी अहमीयत के पेशे नज़र मोहतरमा रज़िया सुल्ताना ने उसे हिन्दी का जामा पहना दिया है जिसे सलफ़ी बुक सेन्टर पहली बार शाए करने की सआदत हासिल कर रहा है ताकि इस का इफ़ादीयत आम हो और इस से हिन्दी दान तबक़ा भर पूर मुस्तफ़ीद हो सके। दुआ है कि अल्लाह तआला इसे शर्फ़े क़ुबूलियत अता फ़रमाए और मुअल्लिफ़, मुतर्जिम और नाशिर सभी को अजरे जज़ील से नवाज़े और आम मुसलमानों को इससे ज़्यादा से ज़्यादा इस्तिफ़ादा की तौफ़ीक़ बख़्शे। वस्सलाम

रफ़ीक़ अहमद सलफ़ी दारुद्दावा, दिल्ली–२५

तक़्दीम

नमाज़ में दाख़िल होते वक़्त रफ़ा यदैन मस्नून है इस पर इत्तिफ़ाक़ के बाद क़दीम ज़माना से इस मसअला में इख़्तिलाफ़ है कि रुकूअ़ को जाते और रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन करना मस्नून है या मम्नूअ़, अहले कूफ़ा के अलावा तमाम फ़ुक़्हा–ए–उम्मत इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि यह मस्नून है और नमाज़ की सुन्नतों में कोई सुन्नत ऐसी नहीं जो सुबूत व तवातुर में इस सुन्नत का मुक़ाबला कर सके। मुतअ़दिद उलमाए–किराम ने रुकूअ़ से पहले और रुकूअ़ के बाद रफ़ा यदैन की अहादीस को अहादीसे मुतवातिरा में शुमार किया है।

बुलन्द पाया मुहद्देसीने किराम ने ख़ास इस मसअला पर मुस्तक़िल किताबें तहरीर फ़रमाई हैं।

जिन में मुन्दरिजा ज़ैल हज़रात क़ाबिले ज़िक्र हैं :–मुहम्मद बिन नस्र अल मर्वज़ी, साहिबे क़्यामुल लैल। इमाम अबू बकर अल–बज़्ज़ार, साहिबे मुसनद अल बज़्ज़ार। इमाम अबू नुऐम अल अस्बहानी, साहिबुल मुस्तख़रज।

इमाम तक़ीयुद्दीन अस्सुबकी, साहिबुत्तबक़ात। इमाम बुख़ारी रहेमहुमुल्लाहु रहमातन वासेअह।

इन हज़रात के अलावा भी बाज़ हज़रात ने मुफ़स्सल तहरीरात छोड़ी हैं। तक़रीबन पचास से ज़ायद सहाबए किराम ने इस मसअला पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अहादीस रिवायत की हैं।

इन तमाम मज़्बूत व मुस्तहकम बुनियादों के बावजूद बाज़ हज़रात महज़ मसलकी तअस्सुब में इस सुन्नत के अज़ली दुशमन बने हुए हैं और सिर्फ़ इस लिए क्योंकि उनके मज़्हब में उसका हुक्म नहीं –

बाज़ हज़रात तो इस को सुन्नते मन्सूख़ा बताने पर उधार खाए बैठे हैं

और धड़ल्ले से कहते हैं इब्तिदा–ए–इस्लाम में रफ़ा यदैन थी फिर मन्सूख़ हो गई और दलील में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु की हदीस पेश कर देते हैं। हालांकि इस हदीस में सिरे से रफ़ा यदैन जो मुतनाज़े फ़ीह है उसका कोई ज़िक्र ही नहीं। इसमें तो सिर्फ़ इब्तिदाए सलात में रफ़ा यदैन का ज़िक्र है और उस के बाद वह फ़रमाते हैं कि हम ने फिर रफ़ा यदैन करते नहीं देखा। इसका सीधा सा मतलब तो यही है कि पहली रकअ़त शुरू करते वक़्त रफ़ा यदैन करते, दूसरी रकअ़त शुरू करते वक़्त नहीं करते थे। लेकिन पता नहीं किस तरह इस रिवायत को रुकूअ़ को जाते और उस से उठते वक़्त रफ़ा यदैन से किस तरह जोड़ दिया गया – इस से ज़्यादा तअज्जुब इस बात पर है कि एक क़दीमुल–इस्लाम सहाबी की रिवायत को नासिख़ और मुतअख़्ख़िरुल इस्लाम सहाबा की अहादीस को बिला दलील मन्सूख़ क़रार दिया जा रहा है जो सरासर इंसाफ़ से बईद और फ़िरक़ा बन्दी की रविश को बाक़ी रखने की कोशिश के अलावा कुछ नहीं। मसअला हमेशा से वाज़ेह और बेग़ुबार था और है पहले भी रफ़ा यदैन के मज़बूत दलाइल ने बावजूद नुक़्त–ए–नज़र के इख़्तिलाफ़ के इंसाफ़ पसन्दों को इस बात का एतराफ़ करने पर उभारा है कि रफ़ा यदैन की अहादीस बहुत ज़्यादा हैं और उनके रिवायत करने वाले सहाबा किराम की एक बड़ी जमाअत है और इस सुन्नत को मन्सूख़ बताने वालों के पास कोई यक़ीनी दलील मौजूद नहीं है।

यह किताब जो आपके हाथमें है हर तरह के तअस्सुब की ऐनक को उतार कर मुताला फ़रमाएं, हमें उम्मीद है कि आपका दिल भी यह एतराफ़ किये बग़ैर नहीं रहेगा कि यह अल्लाह के रसूल की मुबारक, महबूब और ऐसी सुन्नत है जिस पर आप आख़िर तक अमल पैरा रहे।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह मुरत्तिब, मुतर्जिम और नाशिर को वह सवाब अता फ़रमाए जो वह अपने नबी की सुन्नतों पर अमल करने वालों और उनको मिटने से बचाने वालों को अता फ़रमाता है।

व सल्लल्लाहु अला नबीयेना मुहम्मदिन व आलेही व सहबेही व सल्लम।

कतबहू

रज़ाउल्लाह अब्दुल करीम अल मदनी
ख़ादिम जामिया सैय्यद नज़ीर हुसैन
मुहद्दिस देहलवी रहेमहुल्लाह
फाटक हबश ख़ाँ, दिल्ली – ६

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अरज़े नाशिर

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम। व बअ्द

शरई इस्तेलाह में रफा यदैन नमाज में दोनों हाथ उठाने को कहते हैं। नमाज़ शुरू करते वक्त, रुकूअ् में जाते वक्त, रुकूअ से सर उठाने के बाद और दो रकअ्त का तशह्हुद पढ़ कर उठने के बाद रफा यदैन करना अहादीसे सहीहा मुतवातिरह से साबित है।

मसअला रफा यदैन क़दीम ज़माना से अह्ले हदीस और अह्लुर्रा (अहनाफ) के दर्मियान इख़्तिलाफी चला आ रहा है। उम्मत का सुवादे आज़म जिस में सहाबा–ए–किराम की ग़ालिब अक्सरीयत, ताबेईन, तबअ् ताबेईन मुहद्देसीन और अइम्म–ए–सलासा यानी इमाम मालिक, इमाम शाफई और इमाम अहमद बिन हम्बल रफा यदैन करते थे। और बकौल इमाम बुखारी रहमतुल्लाह अलैह "किसी भी एक सहाबी से रफा यदैन का तर्क साबित नहीं इमाम बुखारी रहमतुल्लाह अलैह ने इस मसअला पर "जुज़ओ रफइल यदैन के नाम से एक मुस्तकिल रिसाला तस्नीफ फ़रमाया है।

अह्लुर्राए यानी अहनाफ नमाज़ में तक्बीर तहरीमा के अलावा बकिय मकामात पर रफा यदैन के क़ायल नहीं हैं उनके बाज़ उलमा इस अमल को मन्सूख कहते हैं और बाज़ उलमा तर्क को अफ़ज़ल बताते हैं यानी मन्सूख होने के खिलाफ हैं। अहनाफ की तरफ से भी इस मसअला प बहुत सी किताबें शाए की गई हैं मगर यह हज़रात अपने मौकिफ़ की ताई में सही हदीस पेश करने से क़ासिर हैं जबकि इस्बात में कसीर तादाद अहादीसे सहीहा मौजूद हैं।

जेरे इशाअत किताब मौलाना अब्दुर्रशीद अन्सारी की मुरत्तब करदह जिसके दो हिस्से हैं पहला हिस्सा "इस्बाते रफउल यदैन अहादीस क रोशनी में" है, जिस में दो सौ पैंतालीस अहादीस सनदों के एतबार से जम की गई हैं। इस मौज़ूअ् पर यह अपनी तरज़ का पहला निहायत क़ीमत मज्मूआ है। दूसरे हिस्से में अहनाफ के अड़तीस दलाइल के मुदल्लल मुस्किल जवाब निहायत सन्जीदगी से तहरीर किए हैं।

इस किताब की जमा व तरतीब का पस मन्ज़र यह है कि पाकिस्ता के एक हन्फी मौलवी अबू मुआविया सफ्दर साहब ने अह्ले हदीस हज़रा का तरीक़ा नमाज़ और रुकूअ् से पहले और रुकूअ् के बाद रफा यदैन कर एक ग़ैर इस्लामी अमल बताया। मौलवी साहब ने यह भी चेलन्ज किया कि जो शख़्स इस फतवा के बरअक्स साबित करेगा उसे एक हज़ार रुप इन्आम दिया जाएगा। मौलाना अब्दुर्रशीद अन्सारी साहब ने मज़्कूरा मौल

का चेलन्ज क़ुबूल करते हुए सिविल जज सियालकोट की अदालत में मुक़द्दमा दायर कर दिया और फाजिले अदालत से दर्ख़्वास्त की कि उन से एक हज़ार रुपया दिलवाया जाए। सिविल जज ने यह मुक़द्दमा इस बिना पर खारिज कर दिया कि चूंकि फरीकैन में कोई मुआहदा अमल में नहीं लाया गया लिहाज़ा उसकी समाअत नहीं हो सकती। सिविल जज के इस फ़ैसले के ख़िलाफ मौलाना अब्दुर्रशीद साहब ने डिस्ट्रिक जज सियालकोट की अदालत में अपील कर दी। जो मन्ज़ूर कर ली गई। डिस्ट्रिक जज सियालकोट ने जो फैसला सुनाया वह इस तरह है :–

"यह बात काबिले ज़िक्र है कि अपील कुनिन्दह अपने एतक़ादात का ऐसा पक्का है कि उस ने अपना मकान रफा यदैन पर तहक़ीक और मुक़द्दमा बाज़ी की ख़ातिर बेच डाला उसका कहना है कि वह पचास हज़ार रुपये तहक़ीक़ और मुक़द्दमा बाज़ी पर ख़र्च कर चुका है और चार साल से ज़ायद अरसा से मुक़द्दमा बाज़ी की तकालीफ़ बर्दाश्त कर रहा है जबकि रिस्पान्डेन्ट (मुद्आ अलैह) ने इस मुआमला में शुरू ही से कोई दिल्चस्पी नहीं ली। मैं महसूस करता हूं कि रिस्पांडेन्ट ने अपील कुनिन्दह के जज़्बात को मज्रूह किया है और उसकी ख़ातिर अपील कुनिन्दह ने इतनी तकालीफ़ बर्दाश्त की। मेरे ख़्याल में इंसाफ़ का तक़ाज़ा यह है कि अपील करने वाला को रिस्पांडेन्ट (मुद्आ अलैह) से एक हज़ार रुपये दिलाया जाए. मैं अपील मन्ज़ूर करता हूं अदालते मातहत का फैसला और डिग्री मन्सूख करता हूं, अपील करने वाला का दावा डिग्री करता हूँ मअ् खरचा तमाम। (माहनामा अल इस्लाम लाहौर, २८ सितम्बर १९८४ ई.)

चूंकि इस मौज़ूअ् पर हिन्दी जानने वाले भाईयों और बहनों के लिए कोई जामेअ् व मुदल्लल किताब नहीं है इसलिए सलफी बुक सेन्टर नई दिल्ली ने सुन्नते नबवी की इशाअत व तरवीज के जज़्बा से इस किताब के दोनों हिस्सों को मेअ्यारी अन्दाज़ में हिन्दी ज़बान में शाए करने का फ़ैसला किया जो अल्हम्दुलिल्लाह आपके हाथ में है।

अल्लाह तआला हम सबको किताब व सुन्नत के मुताबिक अमल करने की तौफीक़ इनायत फ़रमाए नीज़ इस किताब के मुरत्तिब, मुतर्जिम, नाशिर व दीगर अहबाब जिन्होंने इस की इशाअत के लिए हमें उभारा और हर तरीक़ा से मदद की बिल ख़ुसूस शैख़ रफीक़ अहमद सलफी साहब (रुक्न मज्लिसे इलमी दारुद्दावह दिल्ली) और मोहम्मद ज़ुबैर ख़ाँ ने रहनुमाई फ़रमाई जिन्होंने ...इस काम में भरपूर तआवुन दिया, इन सारे हज़रात को अल्लाह तआला अजरे अज़ीम से नवाज़े। आमीन!

मुहम्मद आलम सलफी,
दिल्ली – 25

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी

इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि

मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी रह०, उनका नाम मुहम्मद है। और उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरह के बेटे हैं, जो फी व बुखारी हैं। इमाम बुखारी की पैदाइश जुमा के दिन १३ शौव्वाल १९४ हिज० को हुई और शौव्वाल की पहली शब में २५६ हिज० में इंतिकाल फरमाया, आपकी उम्र १३ दिन कम ६२ साल हुई।

इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं कि मैंने अपनी किताब बुखारी छे: लाख से ज़्यादा अहादीस से इंतिख़ाब करके मुरत्तब की, मैंने इसमें जो हदीस दर्ज की उससे पहले दो रकअत नमाज़ पढ़ी और उन्होंने यह भी फरमाया कि मुझे एक लाख सही और दो लाख गैर सही हदीसें याद हैं। उनकी किताब सही बुखारी में मुकर्ररात के साथ सात हज़ार दो सौ पचहत्तर हदीसें हैं। कहा जाता है कि मुकर्रर हदीसों को ख़त्म करने के बाद उसमें चार हज़ार हदीसें हैं।

इमाम अबू सईद इब्ने मुनीर का कौल है कि अमीर ख़ालिद बिन अहमद ज़हली हाकिम बुखारा ने इमाम बुखारी रह० के पास पैग़ाम भेजा कि मेरे पास किताब जामे और तारीख ले आइए ताकि मैं उनको आप से सुन लूं। इमाम बुखारी रह० ने कासिद से फरमाया कि मैं इल्म को ज़लील नहीं करता और न उसको लोगों के दरवाजों पर लिए फिरता हूँ अगर आपको कोई ज़रूरत है तो मेरी मस्जिद या मकान में तशरीफ ले आइए और अगर आप को यह सब नापसन्द हो तो आप बादशाह हैं मुझे इज्तिमा से मना कर दीजिए ताकि खुदा के सामने कयामत में मेरा उज्र वाजेह हो जाए इसलिए कि मैं तो इल्म को नहीं छुपाऊंगा क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि जिस शख़्स से कोई इल्मी बात दरयाफ़्त की जाए और वह उसको न

बताए तो उसको आग की लगाम दी जाएगी। दूसरे लोग बयान करते है कि बुखारी रह० के बुखारा से चले जाने का यह सबब हुआ कि खालिद ने उन से दरख़्वास्त की थी कि इमाम उनके मकान पर हाजिर हों और जामे और तारीख उनके बच्चों को पढ़ाएं तो उन्होंने उस के पास जाने से माना कर दिया और उनके पास पैग़ाम भेजा कि आप इतना करें कि बच्चों के लिए एक ख़ास वक्त मुकर्रर कर दें जिसमें उनके अलावा दूसरे हाज़िर न हों उन्होंने यह भी नहीं किया बल्कि यह फरमाया कि मुझ से यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी नशिस्त को एक जमाअत के साथ इस तरह ख़ास कर दूं कि दूसरे लोगों को यह खुसूसियत न हो, उस पर ख़ालिद ने उनके ख़िलाफ उलमाए बुख़ारा से मदद मांगी तो उन उलमा ने उन के मज़हब पर एतराज़ किए और ख़ालिद ने उनको बुख़ारा से जला वतन कर दिया। इमाम बुखारी रह० ने उन सबके ख़िलाफ़ बद्दुआ की और वह बद्दुआ मक्बूल हुई और थोड़ी ही मुद्दत में वह सब मसाइब में गिरफ़्तार हुए। (बहवाला इकमाल फी अस्माइर्रिजाल स० ६३०, मुअल्लिफ साहिबे मिश्कात अश्शैख़ वलीयुद्दीन अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल ख़तीब रहेमहुमुल्लाहु तआला)

ख़ुलास-ए-कलाम

इमाम बुख़ारी रह० ने छे: लाख से ज़्यादा अहादीस से इंतिख़ाब करके अपनी सही मुरत्तब की और फरमाया कि :

मैंने इसमें जो हदीस दर्ज की उससे पहले दो रकअत नमाज़ पढ़ी, जिस का नाम "**अल-जामे-उल-मुस्नदुस्सहीहुल-मुख़्तसरु मिन उमूरे रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व सुननेही व अय्यामिही**"। यानी यह किताब जामे है, सनद के साथ है और सही है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काम और तरीके और आपके दिन यानी ह़ालात मुख़्तसर तौर पर बयान किए गए। इमाम बुख़ारी रह० और बादशाह के दर्मियान इल्म के मुतअल्लिक कुछ गुफ़्तगू हुई। इस पर ख़ालिद ने उनके ख़िलाफ़ उलमा-ए-बुख़ारा से मदद मांगी तो उन उलमा ने उनके मज़हब पर एतराज़ किए और ख़ालिद ने उनको बुख़ारा से जलावतन कर देया। इमाम बुख़ारी रह० ने उन सबके ख़िलाफ़ बद्दुआ की और वह बद्दुआ मक्बूल हुई। और थोडी ही मुद्दत मे वह सब मसाइब में गिरफ़्तार हुए। बहरहाल इमाम बुख़ारी रह० अपना वतन छोड़ कर चले गये। उसके बाद

थोड़ी ही मुद्दत में वह सब मसाइब में गिरफ्तार हुए। यह भी एक करामा
है जो हक और नाहक की पहचान करवाती है। बुखारी शरीफ की हम
पाँच हदीसें दर्ज की हैं जो कि सनद के साथ हैं। इमाम बुखारी रह० ने
फरमाया। **"मा अदखल्तु फी किताबिल-जामे इल्ला मा सहहा"** यानी मैं
अपनी इस किताब में सिर्फ सही अहादीस को ही दाखिल किया है।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि

नाम मुस्लिम बिन हज्जाज, उनकी कुन्नियत अबुल हुसैन है, हज्जाज
बिन मुस्लिम के बेटे हैं, कुशैरी व नीशापुरी हैं हदीस के हुफ्फाज और अइम्म
में से एक हैं। २०४ हिज० में पैदा हुए और एक शंबा की शाम के वक़्त मा
रजब में खत्मे माह से छः रोज़ पहले २६१ हिज० में वफात पाई, इराक
हिजाज, शाम और मिस्र का सफर किया और यह्या बिन यह्या नीशापुरी
कुतैबा बिन सईद, इस्हाक बिन राहवैह, अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बि
मस्लिमा कअ्नबी और उनके अलावा अइम्मा व उलमाए हदीस से हदीस
हासिल की। बगदाद कई बार आए और वहाँ हदीस बयान की उन से बहु
से लोग जिन में इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन सुफियान, इमाम तिर्मिजी औ
इब्ने खुज़ैमा शामिल हैं और रिवायत करते हैं। आखिरी बार २५७ हिज०
बगदाद आए इमाम मुस्लिम रह० फरमाते हैं कि मैंने मुसनद सही को ती
लाख खुद अपनी सुनी हुई अहादीस से इंतिखाब करके लिखा है।

(बहवाला इक्माल फी अस्माइरिंजाल स० ६३

इमाम मुस्लिम रह० ने सही मुस्लिम का तीन लाख अहादीस से इंतिखा
किया है। जिनकी तादाद चार हज़ार है जो मुकर्रर हदीसों के अलावा है
रफा यदैन के मुतअल्लिक इमाम मुस्लिम रह० अपनी किताब में
अहादीस लाए हैं।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि

इमाम मालिक बिन अनस रह० उनकी किताब मुअत्ता के नाम से मशहू

है जिसको इमाम मालिक रह० ने सालहा साल हर कसौटी पर परख कर जमा
करदा अहादीसे नबवी से इंतिखाब फरमा कर मुसलमानाने आलम के लिए
मुरत्तब किया हज़रत इमाम मालिक रह० का मुहद्देसीन में जो आला मरतबा है
उससे कोई इल्म वाला नावाकिफ नहीं, आप मदीनतुर्रसूल के मक्बूल और
मुसल्लम उस्ताजुल हदीस थे और साठ साल तक हरमे मदीना में रिवायते
हदीस में मशगूल रहे। इमाम मालिक रह० की किताब मुअत्ता से हम ने
रफा यदैन की तीन अहादीस को अपने इस रिसाले में दाखिल किया है।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि

मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिजी, उनकी कुन्नियत अबू ईसा है और नाम
मुहम्मद है तिर्मिज के रहने वाले हैं, तिर्मिज में बतारीख १३ रजब २७७
हिज० में इंतिकाल फरमाया। एक शोहरत याफ्ता हाफिजे हदीस और
आलिम हैं। उनको फिक्ह में अच्छी महारत है, अइम्म–ए–हदीस की एक
जमाअत से हदीस हासिल की, मशाइख के सदरे अव्वल से उनकी
मुलाकात हुई जैसे कुतैबा बिन सईद, महमूद बिन गैलान, मुहम्मद बिन
बशार, अहमद बिन मनी, मुहम्मद बिन मुसन्ना, सुफियान बिन वकी,
मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी वगैरहुम, और बहुत से लोगों से जिनकी
कसरत का शुमार नहीं उन्होंने हदीस हासिल की। उन की इल्मे हदीस में
बहुत सी तस्नीफात हैं और उनकी किताब सही जो कि जामे तिर्मिजी से
मशहूर है। सिहाहे सित्ता में शामिल है। तिर्मिजी फरमाते हैं कि मैंने इस
किताब को मुरत्तब किया और उलमाए हिजाज के सामने पेश किया उन्होंने
इस पर अपनी पसन्दीदगी का इज़्हार किया। फिर उलमाए खुरासान के
सामने रखा उन्होंने भी पसन्द किया। जिस शख्स के मकान में यह किताब
(तिर्मिजी) मौजूद हो पस यह समझना चाहिए कि उसके यहां एक नबी
मौजूद हैं जो गुफ्तगू फरमा रहे हों। जामे तिर्मिजी से हम ने एक हदीस
तहरीर की है।

(इक्माल फी अस्माइरिंजाल स० ६३१)

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी अहमद बिन शुऐब नसाई रहमतुल्लाहि अलैहि

उनकी कुन्नियत अबू अब्दुर्रहमान और नाम अहमद है वालिद के नाम
शुऐब है और खुरासान के एक शहर नसा के रहने वाले हैं। बमकाम मक्क
३०३ हिज० में वफ़ात पाई और वहीं मदफून हैं अह्ले हिफ़्ज़ व साहिबे इल्
व फ़िक़्ह हज़रात में से हैं बड़े–बड़े मशाइख़ से उनकी मुलाक़ात हुई। सुन
नसाई से हम ने रफ़ा यदैन के मुतअल्लिक़ २० अहादीस लिखी हैं।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इब्ने माजह रहमतुल्लाहि अलैहि

उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और नाम मुहम्मद है, यज़ीद बि
माजह के बेटे, क़ज़वीन के बाशिन्दा, हाफ़िज़े हदीस और किताब सुनन इ
माजह के मुसन्निफ़ हैं। इमाम मालिक रह० के शागिर्दों और लैस से हदी
की समाअत की और उन से अबुल हसन कत्तान और उनके अलावा दूस
लोगों ने हदीस की समाअत की २०१ हिज० में पैदा हुए और २७३ हिज
में ६२ साल की उम्र में वफ़ात पाई। सुनने इब्ने माजह में से हम
रफ़ा यदैन के मुतअल्लिक़ आठ अहादीस बयान की हैं।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी इमाम अबू दाऊद सुलेमान बिन अशअस सजिस्तानी रहमतुल्लाहि अलैहि

उनकी कुन्नियत अबू दाऊद है अशअस सजिस्तानी के बेटे हैं यह उ
लोगों में से हैं जिन्होंने सफर किए और किताबें लिखीं और अहादीस व
जमा करके किताब तस्नीफ़ की। अह्ले इराक़, खुरासान व शाम व मि
व जज़ीरह से रिवायात सुन कर लिखीं। २०२ हिज० में पैदा हुए और १
शौव्वाल २७५ हिज० में बमकाम बसरा वफ़ात पाई। बग़दाद कई मरत
आए और फिर आख़िरी बार १७१ हिज० में वहां से निकल गये मुस्लिम बि
इब्राहीम, सुलेमान बिन हर्ब, अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमः क़अ्बी, यह्या बि

मुईन, अहमद बिन हंबल रह० और इनके अलावा उन अइम्म–ए–अहादीस से हदीस हासिल की जो बवज्हे कसरत शुमार नहीं होते और उन से उनके साहबज़ादे अब्दुल्लाह ने और अब्दुर्रहमान नीशापुरी और अहमद बिन मुहम्मद ख़ल्लाल वग़ैरह ने हदीस हासिल की। अबू दाऊद बसरा में सुकूनत पज़ीर रहे और बग़दाद आए और वहां अपनी तस्नीफ़ सुनन अबू दाऊद की तस्नीफ़ की। वहां के रहने वालों ने इस किताब को आप से नक़ल किया और इसको इमाम अहमद बिन हंबल के सामने पेश किया तो उन्होंने उसके हुस्न व ख़ूबी पर तहसीन का इज़्हार फ़रमाया। अबू दाऊद ने कहा मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करदह पांच लाख हदीसें जमा कीं उन में से मैंने उन अहादीस का इंतिख़ाब किया जिनको मैंने इस किताब में दर्ज किया। मैंने इस किताब में चार हज़ार आठ सौ हदीसें जमा कीं। मैंने सही, सही के मुशाबेह और सही के क़रीब जो अहादीस जमा की हैं इनमें से आदमी को अपने दीन के लिए सिर्फ़ चार हदीसें काफ़ी हैं।

१. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि आमाल नीयतों के साथ वाबस्ता हैं।
२. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि आदमी की ख़ूबी यह है कि वह ला यानी चीज़ों को छोड़ दे।
३. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कौल है कि आदमी उस वक़्त तक (पूरा) मोमिन नहीं होता जब तक कि वह अपने मुसलमान भाई के लिए वही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता हो।
४. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान कि हलाल ज़ाहिर है और हराम भी वाज़ेह है लेकिन इन दोनों के बीच में कुछ मुश्तबेह चीज़ें हैं ....

अबू बकर ख़ल्लाल ने कहा कि अबू दाऊद अपने ज़माना में इमाम और पेशरू हैं। अबू दाऊद ने फ़रमाया मैंने अपनी किताब में कोई ऐसी हदीस दर्ज नहीं की जिसके तर्क पर तमाम लोगों का इत्तिफ़ाक़ हुआ।

(बहवाला इक्माल फ़ी अस्माइर्रिजाल)

इमाम अबू दाऊद ने कुल पाँच लाख अहादीस जमा कीं जिन में से चार हज़ार आठ सौ अहादीस का इंतिख़ाब किया। इमाम अबू दाऊद अपनी किताब में रफ़ा यदैन के मुतअल्लिक़ नौ अहादीस लाए हैं।

मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी

इमाम अहमद बिन हंबल

रहमतुल्लाहि अलैहि

अहमद बिन हंबल, उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और नाम अहमद वालिद का नाम मुहम्मद बिन हंबल है। मरवज़ी और बनू शैबान में से हैं। १६४ हिज० में बग़दाद में पैदा हुए और २४१ हिज० में ७७ साल की उम्र में बग़दाद ही में वफ़ात पाई। मदीना, शाम और जज़ीरा का सफर किया और उस ज़माना के उलमाए किराम से हदीसें जमा कीं। अबू ज़र कहते हैं कि इमाम अहमद बिन हंबल रह० को दस लाख हदीसें याद थीं। मुहम्मद बिन मूसा ने कहा हसन बिन अब्दुल अज़ीज की मीरास उनके पास मिस्र से लाई गई यह एक लाख अशरफ़ी थी। उन्होंने इमाम अहमद बिन हंबल रह० के लिए तीन थैलियां जिन में एक एक हज़ार दीनार थे भेजी और कहला भेजा कि हज़रत यह मीरास हलाल में से पेश करता हूं आप उसे क़बूल फ़रमा लें। आपने फरमाया कि मुझे उनकी ज़रूरत नहीं, मेरे पास ज़रूरत भर मौजूद है। चुनांचे उसको वापस कर दिया और उसमें से कुछ भी क़बूल नहीं किया। उनके बेटे अब्दुर्रहमान कहते हैं कि नमाज़ों के बाद मैं अपने वालिद को अक्सर यह कहते हुए सुनता था, ऐ अल्लाह जिस तरह तूने मेरे चेहरे को दूसरों के सामने झुकने से बचाया उसी तरह मेरे चेहरा को दूसरों से सवाल करने से महफ़ूज़ रख। मैमून बिन अस्बा ने कहा कि मैं बग़दाद में था मैंने एक चिल्लाने की आवाज़ सुनी। मैंने पूछा यह आवाज़ कैसी है? तो लोगों ने बयान किया कि अहमद बिन हंबल रह० का इम्तिहान किया जा रहा है। मैं वहां गया जब उनको एक कोड़ा मारा गया तो आपने फरमाया बिस्मिल्लाह जब दूसरा मारा गया, तो आप ने कहा **ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह**, जब तीसरा लगाया गया तो फरमाया कुरआन अल्लाह का कलाम है मख़्लूक नहीं। जब चौथा मारा गया तो आपने आयत **"लन युसीबना इल्ला मा कतबल्लाह"** पढ़ी। **तर्जमा** : "हम पर हरगिज कोई मुसीबत न आएगी सिवाए उसके जो अल्लाह ने हमारे लिए मुक़र्रर कर दी है"। इसी तरह उन्तीस कोड़े गलाये गये। उस वक़्त इमाम अहमद रह० का इज़ार बन्द एक कपड़े की कन्नी था कोड़े की मार से कट गया तो

उनका पायजामा नाफ़ के नीचे आ गया तो इमाम अहमद ने आसमान की तरफ देखा और अपने होंटों को कुछ हरकत दी। न मालूम क्या बात हुई उनका पायजामा ऊपर को हो गया और नीचे नहीं गिरा। एक हफ़्ता बाद मैं उनके पास हाज़िर हुआ तो मैंने अर्ज़ किया कि मैंने आपको देखा आप अपने होंटों को कुछ हरकत दे रहे थे, आपने क्या चीज पढ़ी थी? उन्होंने फरमाया कि मैंने कहा था ऐ अल्लाह मैं आप से आपके इस नाम के वसीला से दरख़्वास्त करता हूं जिस से आपने अपने अर्श को पुर किया है कि अगर आपको इल्म है कि मैं सही रास्ता पर हूं तो आप मेरा पर्दा फ़ाश न करें। (बहवाला इक्माल फी अस्माइरिंजाल लिल ख़तीब तबरेज़ी)।

हमने मुसनद अहमद से रफ़ा यदैन के मुतअल्लिक अपनी इस किताब में २३ अहादीस नक़ल की हैं।

ख़ुलास-ए-कलाम

यानी यह ख़्याल करना कि बेग़ैर आज़माए जाने के छूट जायेंगे ग़लत है बल्कि ज़रूर अल्लाह तआला अपने ईमानदार बन्दों को उनके ईमान के मुताबिक इम्तिहान लेगा। जैसे इरशादे इलाही है।

أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ - وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ

[العنكبوت/٢، ٣]

(सूरः अंकबूत, प. २०, आयत : २ ता ३)

यानी "क्या लोगों ने यह समझ लिया है कि (ज़बान से) हम कह देंगे ईमान लाए तो छोड़ दिए जाएंगे और उनकी जांच न होगी और हम उन से पहले अगले ईमानदार लोगों को आज़मा चुके हैं। तो इसी तरह अल्लाह तआला सच्चों को ज़रूर अलग करेगा और झूठों को अलग"। सही हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सबसे बढ़ कर पैग़म्बरों पर इम्तिहान ज़्यादा होता है फिर नेक लोगों पर फिर जो इनके बाद मरतबा में अफ़ज़ल हैं और आदमी पर उसके दीन के मुवाफ़िक दरजा बदरजा इम्तिहान आता है जिस क़द्र कोई शख़्स दीन में मज़बूत और सख़्त होगा उसी क़द्र इम्तिहान में सख़्ती होगी।

(फ़वाइद सत्तारिया तफ़सीरुल-क़ुरआन)

हज़रत ख़ब्बाब बिन अर्त रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया पहले लोगों के सरों पर आरा चला कर उनको चीर दिया गया। और लोहे की कंघी से उनके गोश्त और पोस्त को नोचा गया मगर यह चीज़ उनको दीन से न फेर सकी। (बुखारी व मुस्लिम स० ५१०)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फरमाते हैं कि मदीना में हिजरत के बाद जब मुसलमानों को मुश्रेकीन, मुनाफेकीन और यहूद से सख्त तकालीफ़ पहुंची तो यह आयत नाज़िल हुई। अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैः

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصْرُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ [البقرة/٢١٤]

यानी "मुसलमानो! क्या तुम समझते हो कि (बे खटके और) बग़ैर तक्लीफ उठाए जन्नत में चले जाओगे और अभी तक तो तुम्हारी वह हालत नहीं हुई जो अगले लोगों की हुई थी मुसीबत और तकलीफ़ उनको लग गई यानी मुफ़्लिसी और बिमारी ने घेर लिया और उस वक़्त तक झिंझोड़े गये कि खुद पैग़म्बरों और उनके साथ के ईमान वाले घबरा कर बोल उठे अल्लाह की मदद कब आएगी। सुन लो अल्लाह की मदद करीब है"।

इबरत का मक़ाम : इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि अलैहि की आज़माइश हुई मुसलमानों के लिए इबरत है। कोड़े मारे गये फरमाया कुरआन अल्लाह का कलाम है, मख़्लूक नहीं। जिस क़द्र कोई दीन में मजबूत और सख्त होगा उसी क़द्र इम्तिहान में सख्ती होगी। लिहाज़ा इंसान को सोच समझ कर बोलना चाहिए ऐसा न हो कि इंसान की पकड़ हो जाए फिर पछताए। अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गईं खेत।

मरातिबे कुतुबे हदीस

अज़ हुज्जतुल्लाहिल-बालिग़ा

हज़रत शाह वलीयुल्लाह हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा जिल्द अव्वल स० २६७ ता ३०० में फरमाते हैं। जिस का खुलासा पेश किया जाता है कि अहादीस के चार तबके हैं। पहला तब्क़ा बुखारी व मुस्लिम और मुअत्ता

इमाम मालिक रह० का है। दूसरा तबक़ा तिर्मिज़ी, नसाई, अबू दाऊद और मुसनद अहमद का है। उसके बाद तीसरे और चौथे तब्क़ा की किताबों को बयान करके फरमाते हैं कि दीन में बतौरे दलाइल सिर्फ़ पहले और दूसरे तब्क़ा की अहादीस ही पेश हो सकती है। क्योंकि तीसरे और चौथे तबक़ा से तो तमाम बिदअती गरोहों रवाफ़िज़ व मोतज़िला वग़ैरह को भी दलाइल मिल जाते हैं इस लिए तीसरे और चौथे तब्क़ा की रिवायात को बतौर दलील पेश नहीं किया जा सकता। बल्कि बतौर शवाहिद पेश किया जा सकता है। फिर फरमाया कि एक पाँचवां तबक़ा भी शुमार किया जा सकता है। और वह है जिन में से अक्सर सूफिया वग़ैरह बयान करते हैं। उनकी सनदें बड़ी क़वी लगा कर बयान करते हैं। बड़े बड़े सिक़ह रावियों के नाम से रिवायात पेश करते हैं। लेकिन सब ऐसी होती हैं कि उनको किसी शुमार में नहीं लाया जा सकता। (हुज्जतुल्लाह अरबी स० १३३)

मेरे भाईयो! खुदा रा गौर करो, रिवायात के रावियों को सिक़ह कहने से कोई रिवायत सही नहीं हो सकती, बल्कि देखो उसको बयान करने वाला कौन है? और बयान करने वाले ने उसके मुतअल्लिक़ क्या कहा है?

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायात की तरदीद किसी मुसलमान के शायाने शान नहीं। उम्मत में से जिस किसी ने भी बुखारी व मुस्लिम पर एतराज़ात किए वह खुद लोगों की नज़रों से गिर गया। चाँद पर थूकने वाले की थूक उसी के मुंह पर गिरी। उसके बाद सिहाह का मक़ाम है। अब अगर आपको दलाइल पेश करने हों तो सिहाहे सित्ता या कुछ लोगों के कौल के मुताबिक़ मुसनद अहमद को शामिल करके सिहाहे सबआ से पेश करें"। बशर्ते कि वह दलाइल साबित शुदः हों।

खुलास–ए–कलाम यह है कि हम ने जो रिवायात बतौर दलाइल पेश की वह पहले और दूसरे तब्क़ा की हैं और तीसरे और चौथे तबक़ा की जो रिवायात पेश की हैं वह बतौर शवाहिद पेश की हैं।

जैसे अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ [النساء/١٣٥]

ऐ ईमान वालो! इंसाफ़ पर मज़बूत रहने वाले और अल्लाह के लिए सच गवाही देने वाले बन जाओ अगरचे वह तुम्हारे अपने खिलाफ़ हो। यानी

सच्ची शहादत दो।

मुहद्देसीन किराम रह० ने अपनी किताबों में बयान कर दिया जो उनको इल्म था अगर इल्म को ज़ाहिर न करते तो अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में यह फरमा दिया है।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ (البقرة/١٤٠)

"और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा कि खुदा की गवाही को जो उसके पास हो छुपाए। (सूरः बकरह, आयत : १४०)

किसी हाल में अल्लाह की शरीअत से ज़्यादा तुम्हारी तरफ़दारी का मुस्तहिक नहीं हो सकता।

दीन खैर ख्वाही और नसीहत को कहते हैं। सवाल किया गया यह खैर ख्वाही और नसीहत किस के लिए है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदा के लिए, खुदा की किताब के लिए, खुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए, मुसलमानों के इमामों के लिए और आम मुसलमानों के लिए। (बुख़ारी किताबुल ईमान, मिश्कात स. ४२३ मुस्लिम स० ५६)

शहादत का छुपाना इतना बड़ा गुनाह है कि उस से दिल मस्ख हो जाता है। **नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिका।**

अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं :

وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ (البقرة/٢٨٣)

और मत छुपाओ गवाही को और जो कोई छुपाएगा उसको पस तहकीक गुनहगार है दिल उसका। (सूरः बकरः २८३, आयत ७, प. ३)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस शख़्स से कोई इल्मी बात पूछी जाए जिसको वह जानता है और वह उस को छुपाए यानी न बतलाए तो कयामत के दिन उसके मुंह में आग की लगाम दी जाएगी। (मिश्कात किताबुल इल्म)

❖❖❖

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हिस्सा अव्वल

रफ़ा यदैन

अहादीस की रोशनी में

(१) सही बुख़ारी

١- (١) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (صحيح البخاري- رقم الحديث: ٧٣٥)

हदीस १ (१) : हम से अब्दुल्लाह बिन मुस्लमा कअनबी ने बयान किया उन्होंने इमाम मालिक से उन्होंने इब्ने शिहाब से उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से उन्होंने अपने बाप (अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०) से कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो दोनों मोंढों तक हाथ उठाते और जब रुकूअ़ की तक्बीर करते और जब रुकूअ़ से अपना सर उठाते तब भी इसी तरह दोनों हाथ उठाते और **समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** कहते और सज्दों के बीच में हाथ न उठाते। (हदीस नम्बर : ७३५)

٢- (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَكَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يُكَبِّرُ لِلرُّكُوعِ وَيَفْعَلُ ذَلِكَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَيَقُولُ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ وَلَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (صحيح البخاري — رقم الحديث: ٧٣٦)

हदीस २ (२) : हम से मुहम्मद बिन मुकातिल ने बयान किया कहा हम को अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रा०) ने ख़बर दी कहा हम को यूनुस बिन यज़ीद आइली ने उन्होंने ज़ुहरी से उन्होंने कहा मुझ को सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से उन्होंने कहा मैंने देखा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में खड़े होते तो (तक्बीर तहरीमा के वक़्त) अपने दोनों हाथ मोंढों के बराबर उठाते और जब रुकूअ के लिए तक्बीर कहते तब भी ऐसा ही करते और जब रुकूअ से सर उठाते उस वक़्त भी ऐसा ही करते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते अल्बत्ता सज्दों के बीच में हाथ न उठाते। (हदीस नम्बर : ७३६)

٢- (٣) حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ أَنَّهُ رَأَى مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ إِذَا صَلَّى كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَنَعَ هٰكَذَا

(صحيح البخاري – رقم الحديث: ٧٣٧)

हदीस ३ (३) : हम से इस्हाक वास्ती ने बयान किया कहा हम से ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने उन्होंने ख़ालिद से उन्होंने अबू क़िलाबा से उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस (सहाबी रज़ि०) को देखा जब वह नमाज़ शुरू करते अल्लाहु अक्बर कहते और जब रुकूअ करने लगते तो भी दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ से सर उठाते तो भी दोनों हाथ उठाते और बयान करते कि उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसा ही करते देखा। (हदीस नम्बर : ७३७)

٤- (٤) حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ أَنَّ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ افْتَتَحَ التَّكْبِيرَ فِي الصَّلَاةِ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتّٰى يَجْعَلَهُمَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَهُ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَعَلَ مِثْلَهُ وَقَالَ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَلَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ حِينَ يَسْجُدُ وَلَا حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ

(صحيح البخاري – رقم الحديث: ٧٣٨)

हदीस ४ (४) : हम से अबुल यमान हकम बिन नाफ़े ने बयान किया कहा हम को शुऐब ने ख़बर दी उन्होंने ज़ुहरी से उन्होंने कहा मुझको सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने कहा मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आपने अल्लाहु अकबर कह के नमाज़ शुरू की और अल्लाहु अकबर कहते वक़्त दोनों हाथ उठाए यहां तक कि उनको मोंढों के बराबर कर दिया और रुकूअ की तक्बीर के वक़्त भी ऐसा ही किया और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो भी ऐसा ही किया। और फ़रमाया **रब्बना व लकल हम्द** और सज्दा में ऐसा नहीं करते (यानी हाथ नहीं उठाते) और न जब सज्दे से सर उठाते। (हदीस नम्बर : ७३८)

٥- (٥) حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَرَفَعَ ذٰلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (صحيح البخاري – رقم الحديث: ٧٣٩)

हदीस ५ (५) : हज़रत नाफ़े रह० से मरवी है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ में दाख़िल होते तो अल्लाहु अकबर कहते और दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ में जाते तब भी रफ़ा यदैन करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तब भी रफ़ा यदैन करते और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तब भी रफा यदैन करते। और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि० ने इस हदीस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंचाया। यानी यह हदीस मरफ़ूअ है और हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल है। (हदीस नम्बर : ७३६)

❖❖❖

(२) सही मुस्लिम शरीफ़

٦- (١) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ وَسَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَمْرٌو النَّاقِدُ وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ وَابْنُ نُمَيْرٍ كُلُّهُمْ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عُيَيْنَةَ وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَقَبْلَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ مِنْ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُهُمَا بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ (صحيح مسلم – رقم الحديث: ٣٩٠/٢١)

हदीस ६ (९) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ पढ़ते तो अपने मोंढों तक अपने दोनों हाथ उठाते और इसी तरह रुकूअ में जाते वक्त और रुकूअ से सर उठाते वक्त अपने दोनों हाथ उठाते थे और सज्दों के दर्मियान रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : २९/३६०)

٧- (٢) حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ لِلصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا رَفَعَ مِنْ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَلَا يَفْعَلُهُ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنْ السُّجُودِ (صحيح مسلم – رقم الحديث: ٣٩٠/٢٢)

हदीस ७ (२) : हज़रत इब्ने उमर रज़ि० का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथ अपने दोनों मोंढों तक उठा के अल्लाहु अकबर कहते और जब रुकूअ का इरादा फरमाते तब भी ऐसा ही करते। और जब सज्दा से सर उठाते तो ऐसा न करते यानी रफ़ा यदैन सज्दों के दर्मियान नहीं करते थे।

(हदीस नम्बर : २२/३६०)

٨- (٣) حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا حُجَيْنٌ وَهُوَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ ح و حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قُهْزَاذَ حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ كِلَاهُمَا عَنْ الزُّهْرِيِّ بِهَذَا الْإِسْنَادِ كَمَا قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ إِذَا قَامَ لِلصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ (صحيح مسلم – رقم الحديث: ٣٩٠/٢٣)

हदीस ८ (३) : मुझे मुहम्मद बिन राफे ने हदीस बयान की वह कहते है हमें हुसैन बिन मुसन्ना ने वह कहते हैं हमें लैस ने अकील से और हदीस बयान की मुझे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन कुहजाज ने वह कहते हैं हमें सलमा बिन सुलेमान ने उसको यूनुस ने यूनुस और अकील दोनों ने जुहरी से इसी सनद से बयान किया है उसी तरह जिस तरह इब्ने जुरैज ने बयान किया यानी सालिम बिन अब्दुल्लाह से उस ने अब्दुल्लाह बिन उमर से कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथ मोंढों तक उठा कर अल्लाहु अकबर कहते।

(हदीस नम्बर : २३/३६०)

٩- (٤) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ أَنَّهُ رَأَى مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ إِذَا صَلَّى كَبَّرَ ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَفْعَلُ هَكَذَا (صحيح مسلم – رقم الحديث: ٣٩١/٢٤)

हदीस ९ (४) : अबू किलाबा का बयान है कि उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० को नमाज़ पढ़ते देखा उन्होंने नमाज़ पढ़ने के लिए तक्बीर कही और रफ़ा यदैन किया और फिर रुकूअ में जाते वक्त रफ़ा यदैन किया और रुकूअ से सर उठा कर भी और बयान किया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा ही किया करते थे। (हदीस नम्बर:२४/३६१)

١٠- (٥) حَدَّثَنِي أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ فَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ (صحيح مسلم – رقم الحديث: ٣٩١/٢٥)

हदीस १० (५) : मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीर कहते तो अपने दोनों हाथ अपने कानों तक उठाते और जब रुकूअ करते तो अपने दोनों हाथ कानों तक उठाते और रुकूअ से सर उठाते हुए **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और रफा यदैन करते थे। (हदीस नम्बर : २५/३६१)

١١- (٦) حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الْجَبَّارِ بْنُ وَائِلٍ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلٍ وَمَوْلًى لَهُمْ أَنَّهُمَا حَدَّثَاهُ عَنْ أَبِيهِ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَصَفَ هَمَّامٌ حِيَالَ أُذُنَيْهِ ثُمَّ الْتَحَفَ بِثَوْبِهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ أَخْرَجَ يَدَيْهِ مِنَ الثَّوْبِ ثُمَّ رَفَعَهُمَا ثُمَّ كَبَّرَ فَرَكَعَ فَلَمَّا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ سَجَدَ بَيْنَ كَفَّيْهِ

(صحيح مسلم – رقم الحديث: ٤٠١/٥٤)

हदीस ११ (६) : वाइल बिन हुज्र रज़ि० का बयान है कि उन्होंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस तौर पर देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ शुरू करते वक़्त अपने दोनों हाथ उठाये और अल्लाहु अकबर कहा। इस हदीस के रावी हम्माम का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों हाथ कानों तक उठाए फिर चादर ओढ़ ली। उसके बाद सीधा हाथ उलटे हाथ पर रखा। फिर आपने चादर में से दोनों हाथ बाहर निकाल के दोनों कानों तक उठा कर तक्बीर पढ़ी उसके बाद रुकूअ में गये। और हालते कयाम **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** पढ़ कर रफा यदैन किया और फिर आपने दोनों हथेलियों के दर्मियान में सज्दा किया। (हदीस नम्बर : ५४/४०१)

(३) तिर्मिज़ी शरीफ़

١٢- (١) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ وَابْنُ أَبِي عُمَرَ قَالَا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَزَادَ ابْنُ أَبِي عُمَرَ فِي حَدِيثِهِ وَكَانَ لَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ (سنن الترمذي – رقم الحديث: ٢٥٥)

हदीस १२ (१) : रिवायत है सालिम से वह रिवायत करते हैं अपने बाप (अब्दुल्लाह बिन उमर रजि अल्लाहु अन्हुमा) से कहा देखा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब शुरू करते नमाज तो उठाते दोनों हाथ यहां तक कि बराबर हो जाते दोनों शानों के और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और ज्यादा कहा इब्ने अबी उमर ने अपनी रिवायत में कि हाथ नहीं उठाते थे दर्मियान दोनों सज्दों के। (हदीस नम्बर : २५५)

(४) अबू दाऊद शरीफ़

١٣- (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ حَنْبَلٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اسْتَفْتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَبَعْدَمَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ وَأَكْثَرُ مَا كَانَ يَقُولُ وَبَعْدَ مَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ (سنن أبي داود – رقم الحديث: ٧٢١)

हदीस १३ (१) : अहमद बिन हंबल, सुफियान, जुहरी, सालिम उनके वालिद अब्दुल्लाह बिन उमर रजि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब नमाज़ शुरू करते दोनों हाथ उठाते मोंढों तक इसी तरह जब रुकूअ करते और जब सर उठाते रुकूअ से और नहीं हाथ उठाते थे दोनों सज्दों के बीच में। (हदीस नमबर : जिल्द ७२१)

١٤- (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُصَفَّى الْحِمْصِيُّ حَدَّثَنَا بَقِيَّةُ حَدَّثَنَا الزُّبَيْدِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ وَهُمَا كَذَلِكَ فَيَرْكَعُ ثُمَّ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْفَعَ صُلْبَهُ رَفَعَهُمَا حَتَّى تَكُونَ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي السُّجُودِ وَيَرْفَعُهُمَا فِي كُلِّ تَكْبِيرَةٍ يُكَبِّرُهَا قَبْلَ الرُّكُوعِ حَتَّى تَنْقَضِيَ صَلَاتُهُ (سنن أبي داود – رقم الحديث: ٧٢٢)

हदीस १४ (२) : मुहम्मद बिन मुसफ्फा हिम्सी, बकिया, जुबैदी, जुहरी, सालिम, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो दोनों हाथ उठाते मोंढों तक फिर तक्बीर कहते और हाथ वहीं रहते फिर रुकूअ करते, फिर जब सर उठाते रुकूअ से दोनों हाथों को उठाते मोंढों तक फिर फरमाते **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** और नहीं उठाते थे दोनों सज्दों में बल्कि उठाते थे हर रकअत में जब तक्बीर कहते रुकूअ करने के लिए यहां तक कि पूरी हो जाती नमाज आपकी। (हदीस नम्बर : ७२२)

١٥- (٣) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي قَالَ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَكَبَّرَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ أَخَذَ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ فَلَمَّا سَجَدَ وَضَعَ رَأْسَهُ بِذَلِكَ الْمَنْزِلِ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ ثُمَّ جَلَسَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَحَدَّ مِرْفَقَهُ الْأَيْمَنَ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ ثِنْتَيْنِ وَحَلَّقَ حَلْقَةً وَرَأَيْتُهُ يَقُولُ هَكَذَا وَحَلَّقَ بِشْرٌ الْإِبْهَامَ وَالْوُسْطَى وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ (سنن ابي داود – رقم الحديث: ٧٢٦)

हदीस १५ (३) : मुसद्दद, बिश्र बिन मुफज़्ज़ल, आसिम बिन कुलैब, उनके वालिद वाइल बिन हुज्र रजि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को क़स्दन देखा, आप कैसे पढ़ते हैं, तो पहले आप खड़े हुए तो किब्ले की तरफ मुंह किया, और अल्लाहु अकबर कहा दोनों हाथ उठाए कानों तक फिर बाएं हाथ को दाएं हाथ से पकड़ा जब रुकूअ का क़सद किया। इसी तरह दोनों हाथों को उठाया, जब सज्दा किया तो अपने सर को दोनों हाथों के बीच में रखा फिर दोनों हाथ अपने घुटनों पर रखे, जब रुकूअ से सर उठाया उसी तरह दोनों हाथों को उठाया। फिर बैठे तो बाएं पैर को बिछाया और बायां हाथ अपने बाएं रान

पर रखा और दाहिने हाथ की कुहनी दाहिनी रान से जुदा रखी। और दो उंगलियों को बन्द कर लिया। और एक हल्का बना लिया (बीच की उंगली और अंगूठे से) और देखा मैंने उनको इस तरह करते थे। और बिश्र ने बताया अंगूठे और बीच की उंगली का हल्का किया। और कलिमे की उंगली से इशारा किया। (हदीस नम्बर : ७२६)

١٦- (٤) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ بِإِسْنَادِهِ وَمَعْنَاهُ قَالَ فِيهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى وَالرُّسْغِ وَالسَّاعِدِ وَقَالَ فِيهِ ثُمَّ جِئْتُ بَعْدَ ذَلِكَ فِي زَمَانٍ فِيهِ بَرْدٌ شَدِيدٌ فَرَأَيْتُ النَّاسَ عَلَيْهِمْ جُلُّ الثِّيَابِ تَحَرَّكُ أَيْدِيهِمْ تَحْتَ الثِّيَابِ (سنن ابي داود – رقم الحديث: ٧٢٧)

हदीस १६ (४) : हसन बिन अली, अबुल वलीद, ज़ाइदः, आसिम बिन कुलैब सनदन व मानन इसी तरह रिवायत करते हैं कि फिर आप ने अपना दाहिना हाथ बाएं हथेली, गट्टे और कलाई पर रखा, इसी रिवायत में यह है कि फिर मैं आया सख्त जाड़े में तो मैंने लोगों को देखा बहुत कपड़े पहने हुए उसके अन्दर उनके हाथ हिलते थे। (रफा यदैन के वक्त) (हदीस नम्बर : ७२७)

١٧- (٥) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ ح و حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى وَهَذَا حَدِيثُ أَحْمَدَ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ عَطَاءٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا حُمَيْدٍ السَّاعِدِيَّ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْهُمْ أَبُو قَتَادَةَ قَالَ أَبُو حُمَيْدٍ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا فَلِمَ فَوَاللَّهِ مَا كُنْتَ بِأَكْثَرِنَا لَهُ تَبَعًا وَلَا أَقْدَمِنَا لَهُ صُحْبَةً قَالَ بَلَى قَالُوا فَاعْرِضْ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ يُكَبِّرُ حَتَّى يَقِرَّ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ يَقْرَأُ ثُمَّ يُكَبِّرُ فَيَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ يَرْكَعُ وَيَضَعُ رَاحَتَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ يَعْتَدِلُ فَلَا يَصُبُّ رَأْسَهُ وَلَا يُقْنِعُ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيَقُولُ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ثُمَّ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ

بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ يَقُولُ اللّٰهُ أَكْبَرُ ثُمَّ يَهْوِي إِلَى الْأَرْضِ فَيُجَافِي يَدَيْهِ عَنْ جَنْبَيْهِ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ وَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا وَيَفْتَحُ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ إِذَا سَجَدَ وَيَسْجُدُ ثُمَّ يَقُولُ اللّٰهُ أَكْبَرُ وَيَرْفَعُ رَأْسَهُ وَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ ثُمَّ يَصْنَعُ فِي الْأُخْرَى مِثْلَ ذٰلِكَ ثُمَّ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا كَبَّرَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلَاةِ ثُمَّ يَصْنَعُ ذٰلِكَ فِي بَقِيَّةِ صَلَاتِهِ حَتَّى إِذَا كَانَتِ السَّجْدَةُ الَّتِي فِيهَا التَّسْلِيمُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ مُتَوَرِّكًا عَلَى شِقِّهِ الْأَيْسَرِ قَالُوا صَدَقْتَ هٰكَذَا كَانَ يُصَلِّي صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (سنن ابي داود – رقم الحديث: ٧٣٠)

हदीस १७ (५) : अहमद बिन हंबल, अबू आसिम जहहाक बिन मख़लद (दूसरी सनद) मुसद्दद, यहया, अब्दुल हमीद बिन जा'फर, मुहम्मद बिन उमर बिन अता, अबू हुमैद साइदी रज़ि० से रिवायत है कि वह दस सहाबियों में बैठे हुए थे उन में अबू कतादा रज़ि० भी थे। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा मैं तुम सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को जानता हूं। उन लोगों ने कहा क्यों कर? खुदा की कसम,तुम हम से ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी नहीं करते थे। और न ही तुम हम से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुहबत के लिहाज़ से मुक़द्दम हो। तो उन्होंने कहा क्यों नहीं तो इन (दस सहाबा रज़ि०) ने कहा कि फिर पेश करो,तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ को खड़े होते,दोनों हाथ उठाते अपने मोंढों तक फिर तक्बीर कहते जब हर एक हड्डी अपने मकाम पर आ जाती एतदाल से तो आप किरात शुरू करते फिर तक्बीर कहते और दोनों हाथ उठाते मोंढों तक फिर रुकूअ करते और दोनों हथेलियां अपने घुटनों पर रखते। और पीठ सीधी करते (और सर को पीठ के बराबर करते) न झुकाते न ऊंचा रखते फिर उठाते और फरमाते **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** फिर दोनों हाथ उठाते अपने मोंढों तक सीधे खड़े हो कर फिर अल्लाहु अकबर कहते। और ज़मीन की तरफ़ झुकते तो दोनों हाथों को अपने पहलुओं से जुदा रखते, फिर उठाते अपना सर सज्दे से

और बाएं पांव को बिछा कर उस पर बैठते और सज्दा के वक़्त उंगलियों को खुला रखते। फिर दूसरा सज्दा करते अल्लाहु अकबर कह कर, फिर सर उठाते सज्दे से और बाएं पैर को बिछा कर उस पर बैठते इतनी देर तक कि हर एक हड्डी अपने ठिकाने पर आ जाती। (उसके बाद खड़े होते) और दूसरी रकअत में भी ऐसा ही करते। फिर दो रकअतों में भी ऐसा ही करते। फिर जब दो रकअतों के बाद तीसरी करअत के लिए खड़े होते। अल्लाहु अकबर कहते। और दोनों हाथ उठाते मोंढों तक जैसा कि शुरू नमाज़ के वक़्त उठाते थे फिर बाकी नमाज़ में ऐसा ही करते यहां तक कि जब अख़ीर सज्दे से फ़ारिग होते जिस के बाद सलाम होता है। अपना बायां पांव निकालते और बाएँ कुल्हे पर बैठते। उन सहाबा रज़ि० ने यह सुन कर कहा सच कहा तूने, इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ते थे। (हदीस नम्बर : ७३०)

١٨- (٦) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا ابْتَدَأَ الصَّلَاةَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا دُونَ ذٰلِكَ قَالَ أَبُو دَاوُد لَمْ يَذْكُرْ رَفَعَهُمَا دُونَ ذٰلِكَ أَحَدٌ غَيْرُ مَالِكٍ فِيمَا أَعْلَمُ (سنن ابي داود – رقم الحديث: ٧٤٢)

हदीस १८ (६) : क़अनबी, मालिक, नाफ़े से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ शुरू करते थे अपने दोनों हाथों को शानों तक उठाते थे और जब रुकूअ से सर उठाते तो उस से कम हाथों को उठाते थे। कहा अबू दाऊद ने सिवा मालिक के किसी ने यह रिवायत नहीं किया कि रुकूअ से सर उठाते वक़्त उस से कम उठाते थे। (बल्कि और लोगों ने एक साथ रिवायत किया है। जितना शुरू में उठाते थे उतना ही बीच में।)

(हदीस नम्बर : ७४२)

١٩- (٧) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَمُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْمُحَارِبِيُّ قَالَا حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ (سنن ابي داود–رقم الحديث: ٧٤٣)

हदीस १९ (७) : उस्मान बिन अबी शैबह और मुहम्मद बिन उबैद मुहारिबी,

मुहम्मद बिन फुज़ैल, आसिम् बिन कुलैब, मुहारिब बिन दिसार, इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तो तक्बीर कहते और दोनों हाथ उठाते। (हदीस नम्बर : ७४३)

٢٠- (٨) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْهَاشِمِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ الْفَضْلِ بْنِ رَبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عُبَيْدِ اللّٰهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَيَصْنَعُ مِثْلَ ذٰلِكَ إِذَا قَضَى قِرَاءَتَهُ وَأَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَيَصْنَعُهُ إِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلَاتِهِ وَهُوَ قَاعِدٌ وَإِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ كَذٰلِكَ وَكَبَّرَ قَالَ أَبُو دَاوُد فِي حَدِيثِ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ حِينَ وَصَفَ صَلَاةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا كَبَّرَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلَاةِ (سنن أبي داود – رقم الحديث: ٧٤٤)

हदीस २० (८) : हसन बिन अली, सुलेमान बिन दाऊद हाशमी, अब्दुर्रहमान बिन अबिज़्ज़िनाद, मूसा बिन उक्बा, अब्दुल्लाह बिन फज़ल, अब्दुर्रहमान आरज, उबैदुल्लाह बिन अबी राफे, अली रज़ि० बिन अबी तालिब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फर्ज नमाज के लिए खड़े होते तो तक्बीर कहते और दोनों हाथ उठाते मोंढों तक और जब किरअत से फ़ारिग़ होते और रुकूअ का इरादा करते तो उसी तरह हाथों को उठाते और जब रुकूअ से सर उठाते तो उसी तरह हाथों को उठाते और बैठने की हालत में हाथों को न उठाते। और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तो दोनों हाथ उसी तरह उठाते और तक्बीर कहते। अबू दाऊद ने कहा कि अबू हुमैद साइदी रज़ि० की हदीस में है जब दो रकअतें पढ़ कर खड़े होते तो तक्बीर कहते और दोनों हाथ उठाते मोंढों तक जैसे तक्बीर कही थी शुरू नमाज में (इस

के बयान करने से यह गर्ज है, कि हज़रत अली रज़ि० की रिवायत में **इज़ा कामा मिनस्सज्दतैन** के मानी **व इज़ा कामा मिनर्रकअतैन** हैं। चुनांचे इसी तरह तर्जमा किया गया है) (हदीस नम्बर : ७४४)

٢١- (٩) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ حَتَّى يُبْلُغَ بِهِمَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ (سنن أبي داود – رقم الحديث: ٧٤٥)

हदीस २१ (९) : हफ्स बिन उमर, शो'बा, कतादा, नस्र बिन आसिम, मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत है, वह कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब तक्बीर तहरीमा कहते, और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो कानों की लव तक रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ७४५)

(५) सुनन नसाई शरीफ़

٢٢- (١) أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَيَّاشٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي سَالِمٌ ح و أَخْبَرَنِي أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ هُوَ ابْنُ سَعِيدٍ عَنْ شُعَيْبٍ عَنْ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الزُّهْرِيُّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ التَّكْبِيرَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذٰلِكَ ثُمَّ إِذَا قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَعَلَ مِثْلَ ذٰلِكَ وَقَالَ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَلَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ حِينَ يَسْجُدُ وَلَا حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٧٦)

हदीस २२ (१) : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने देखा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब तक्बीर कहते नमाज शुरू करने की तो दोनों हाथ उठाते तक्बीर कहते वक़्त यहां तक कि मोंढों के बराबर आ जाते और जब रुकूअ के लिए तक्बीर कहते तब भी ऐसा

ही करते (यानी दोनों हाथ उठाते मोंढों तक) फिर जब **समिअल्लाहुलि**
हमिदह कहते तो ऐसा ही करते यानी दोनों हाथ उठाते मोंढों तक और रब्ब
व लकल हम्द कहते, फिर जब सज्दे में जाते तो हाथ न उठाते, इसी त
जब सज्दे से सर उठाते तब भी हाथ न उठाते। (हदीस नम्बर : ८७६)

٢٢- (٢) أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ يُكَبِّرُ قَالَ وَكَانَ يَفْعَلُ ذٰلِكَ حِينَ يُكَبِّرُ لِلرُّكُوعِ وَيَفْعَلُ ذٰلِكَ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَيَقُولُ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ وَلَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ فِي السُّجُودِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٧٧)

हदीस २३ (२) : इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि मैंने दे
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब आप खड़े होते नमा
के लिए उठाते दोनों हाथ यहां तक कि मोंढों के बराबर आ जाते। फि
तक्बीर कहते। और जब रुकूअ के लिए तक्बीर कहते तब भी ऐसा
करते (यानी दोनों हाथ मोंढों तक उठाते) फिर **समिअल्लाहुलि**
हमिदह कहते तो ऐसा ही करते (यानी मोंढों तक हाथ उठाते और ज
सज्दे में जाते तो हाथ नहीं उठाते थे।) (हदीस नम्बर : ८७७)

٢٤- (٣) أَخْبَرَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذٰلِكَ وَقَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ فِي السُّجُودِ(سنن النسائي–رقم الحديث: ٨٧٨)

हदीस २४ (३) : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्ला
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ का आग़ाज़ करते तो दोनों हाथ मों
तक उठाते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो दोनों हाथ उठा
मोंढों तक और कहते **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** फि
सज्दे में ऐसा नहीं करते थे। (यानी हाथ नहीं उठाते थे) (हदीस नम्बर : ८७

٢٥- (٤) أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ سَمِعْتُ نَصْرَ بْنَ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا صَلَّى رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حِيَالَ أُذُنَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٨٠)

हदीस २५ (४) : मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ पढ़ते थे तो दोनों हाथ उठाते थे और जब रुकूअ करते थे तो दोनों हाथ कानों तक उठाते थे। इसी तरह जब रुकूअ से सर उठाते थे। (तो दोनों हाथ कानों तक उठाते थे) (हदीस नम्बर : ८८०)

٢٦- (٥) أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ عَنِ ابْنِ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَحِينَ رَكَعَ وَحِينَ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ حَتَّى حَاذَتَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٨١)

हदीस २६ (५) : हमें ख़बर दी याक़ूब बिन इब्राहीम ने कहा बयान किया इब्ने उलय्य: ने वह इब्ने अबी अरूबा से, क़तादा से नस्र बिन आसिम से वह मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत करते हैं, कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आप ने जब नमाज़ शुरू की तो दोनों हाथ उठाए और जब रुकूअ किया तो दोनों हाथ उठाए फिर जब रुकूअ से सर उठाया तो दोनों हाथ उठाए कानों की लव तक।
(हदीस नम्बर : ८८१)

٢٧- (٦) أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ زَائِدَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي أَنَّ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ أَخْبَرَهُ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ فَقَامَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا بِأُذُنَيْهِ

ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى كَفِّهِ الْيُسْرَى وَالرُّسْغَ وَالسَّاعِدَ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا قَالَ وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ لَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا ثُمَّ سَجَدَ فَجَعَلَ كَفَّيْهِ بِحِذَاءِ أُذُنَيْهِ ثُمَّ قَعَدَ وَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ وَرُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَجَعَلَ حَدَّ مِرْفَقِهِ الْأَيْمَنِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ قَبَضَ اثْنَتَيْنِ مِنْ أَصَابِعِهِ وَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَفَعَ إِصْبَعَهُ فَرَأَيْتُهُ يُحَرِّكُهَا يَدْعُو بِهَا (سنن النسائي – رقم الحديث: ٨٨٩)

हदीस २७ (६) : वाइल बिन हुज्र रज़ि० से रिवायत है कि मैंने कहा कि मै रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को ज़रूर देखूंगा, आप किस तरह नमाज पढ़ते है। मैंने देखा आप खड़े हुए और तक्बीर कही, फिर दोनों हाथ उठाए कानों के बराबर, फिर दाहिना हाथ बाएं हाथ पर रखा। यानी एक पहुंचा दूसरे पहुंचे पर या एक हाथ दूसरे हाथ पर। जब रुकूअ करने का क़स्द किया तो दोनों हाथ उठाए उसी तरह (यानी कानों के बराबर) और दोनों हाथ अपने घुटनों पर रखे, फिर जब सर उठाया रुकूअ से तो दोनों हाथ उठाए उसी तरह (यानी कानों के बराबर) फिर सज्दा किया और दोनों हाथों को अपने कानों के बराबर रखा। फिर बैठे बायां पांव बिछा कर और बाएं हाथ की हथेली अपनी रान पर और घुटने पर रखी और दाहिने हाथ की कुहनी दाहिनी रान पर जमाई, फिर दो उंगलियों को बन्द कर लिया और एक हल्का बांध लिया (बीच की उंगली और अंगूठे से) और कलिमे की उंगली को ऊपर उठाया तो मैंने देखा आप कलिमे की उंगली को हिलाते थे और उस से दुआ करते थे। (हदीस नम्बर : ८८६)

٢٨- (٧)- أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا إِسْمَعِيلُ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ اللَّيْثِيِّ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِفُرُوعِ أُذُنَيْهِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٢٤)

हदीस २८ (७) : हम को अली बिन हुज्र ने बयान किया उसको

इस्माईल ने, उसको सईद ने, उसको कतादा ने, उसको नस्र बिन आसिम लैसी ने उसने कहा : हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत है उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आप अपने दोनों हाथ उठाते जब तक्बीर कहते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते, कानों की लव तक। (हदीस नम्बर : १०२४)

٢٩- (٨) أَخْبَرَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٢٥)

हदीस २६ (८) : हम को कुतैबा ने खबर दी उसने कहा हम को सुफियान ने जुहरी से उसने सालिम से उस ने कहा मेरे वालिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आप जब नमाज शुरू करते तो दोनों हाथ उठाते मोंढों तक इसी तरह जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते। (हदीस नम्बर : १०२५)

٣٠- (٩) أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ قَيْسِ بْنِ سُلَيْمٍ الْعَنْبَرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي عَلْقَمَةُ بْنُ وَائِلٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَأَيْتُهُ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ هَكَذَا وَأَشَارَ قَيْسٌ إِلَى نَحْوِ الْأُذُنَيْنِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٥٥)

हदीस ३० (९) : हम को सुवैद बिन नस्र ने खबर दी उसको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उसको कैस बिन सलीम अंबरी ने, उसको अल्कमा बिन वाइल ने बयान किया कि मेरे बाप वाइल ने मुझे बताया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी तो मैंने देखा आप दोनों हाथ उठाते थे जब नमाज शुरू करते थे और जब रुकूअ करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते कैस रावी ने कहा कि कानों तक। (हदीस नम्बर : १०५५)

٣١- (١٠) أَخْبَرَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ مَسْعُودٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ وَهُوَ ابْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ أَنَّهُ حَدَّثَهُمْ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٥٦)

हदीस ३१ (१०) : हम को इसमाईल बिन मसऊद ने खबर दी उसको यज़ीद बिन जुरैअ ने उसको सईद ने कतादा से उसको नस्र बिन आसिम ने उस ने मालिक बिन हुवैरिस से बयान किया कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा दोनों हाथ उठाते हुए रुकूअ के वक़्त और रुकूअ से सर उठाते वक़्त कानों की लव तक। (हदीस नम्बर : १०५६)

٣٢- (١١) أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ قَالَ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٥٧)

हदीस ३२ (११) : हम को अम्र बिन अली ने खबर दी उसको यह्या बिन सईद ने उसको मालिक बिन अनस ने जुहरी से, उस ने सालिम से, उस ने अपने वालिद से, हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दोनों हाथों को उठाते मोंढों तक जब नमाज़ शुरू करते और जब सर उठाते रुकूअ से तो ऐसा ही करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तो **रब्बना लकल हम्द** और दोनों सज्दों के बीच में हाथ नहीं उठाते थे। (हदीस नम्बर : १०५७)

٣٣- (١٢) أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ أَنْبَأَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَاكبر للركوع وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ وَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ

لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ(سنن النسائي: رقم الحديث: ١٠٥٩)

हदीस ३३ (१२) : हम को सुवैद बिन नस्र ने खबर दी, उसको अब्दुल्लाह ने, उसको मालिक ने, उसको इब्ने शिहाब ने, उसको सालिम ने कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो दोनों हाथ मोंढों तक उठाते थे और इसी तरह हाथ उठाते थे जब रुकूअ के लिए तक्बीर कहते और जब रुकूअ से सर उठाते (तो दोनों हाथ मोंढों तक उठाते) और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** कहते। और सज्दे में हाथ नहीं उठाते थे। (हदीस नम्बर : १०५६)

٣٤- (١٣) أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْكُوفِيُّ الْمُحَارِبِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ١٠٨٨)

हदीस ३४ (१३) : मुझ को मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह कूफी ने खबर दी, उसको इब्ने मुबारक ने, उसको मुअम्मर ने, उसको जुहरी ने सालिम से उसने कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों हाथ उठाते थे जब नमाज शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और सज्दे में ऐसा नहीं करते थे (हदीस नम्बर : १०८८)

٣٥- (١٤) أَخْبَرَنِي أَحْمَدُ بْنُ نَاصِحٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ قَالَ سَمِعْتُ عَاصِمَ بْنَ كُلَيْبٍ يَذْكُرُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ فَقُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رَأَيْتُ إِبْهَامَيْهِ قَرِيبًا مِنْ أُذُنَيْهِ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ فَكَانَتْ يَدَاهُ مِنْ أُذُنَيْهِ عَلَى الْمَوْضِعِ الَّذِي اسْتَقْبَلَ بِهِمَا الصَّلَاةَ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١١٠٢)

हदीस ३५ (९४) : हम को अहमद बिन नासेह ने ख़बर दी उस ने
हम को इदरीस ने उस ने कहा हम आसिम बिन कुलैब को अपने बा
ज़िक्र करते सुना कि वह कहते है कि हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० फर
है कि मैं मदीना तैय्यबा गया तो मैंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल
अलैहि व सल्लम की नमाज़ ज़रूर देखूंगा। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि
सल्लम ने अल्लाहु अकबर कह कर रफा यदैन की, यहां तक कि आ
दोनों अंगूठे को तकरीबन आपके दोनों कानों के बराबर में मैंने देखे।
आप ने रुकूअ करने का इरादा किया तो अल्लाहु अकबर कहा और
यदैन किया। फिर आपने (रुकूअ से) सर उठाया तो **समिअल्लाहुलि**
हमिदह कहा फिर **अल्लाहु अकबर** कह कर सज्दा में चले गये, तो
के दोनों हाथ इस तरह कानों के बराबर हो गये जिस तरह कि नमाज़
करते वक्त हुए थे। (हदीस नम्बर : ११०२)

٣- (١٥) أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ
سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ
كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَبَعْدَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ
السَّجْدَتَيْنِ(سنن النسائي- رقم الحديث: ١١٤٤)

हदीस ३६ (९५) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फरमाते है
नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो **अल्ल**
अकबर कहते और रफा यदैन करते। और जब आप रुकूअ को जाते
रुकूअ के बाद भी (रफा यदैन करते) और दोनों सज्दों के दर्मियान
यदैन नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : ११४४)

٣- (١٦) أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ قَالَ حَدَّثَنَا
سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ
نَبَّتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَأَيْتُهُ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ
الصَّلَاةَ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا جَلَسَ فِي
الرَّكْعَتَيْنِ أَضْجَعَ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْيُمْنَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى
فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَنَصَبَ أُصْبُعَهُ لِلدُّعَاءِ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ
الْيُسْرَى قَالَ ثُمَّ أَتَيْتُهُمْ مِنْ قَابِلٍ فَرَأَيْتُهُمْ يَرْفَعُونَ أَيْدِيَهُمْ فِي الْبَرَانِسِ
(سنن النسائي – رقم الحديث: ١١٥٩)

हदीस ३७ (९६) : हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। मैंने देखा कि आप दोनों हाथ उठाते थे नमाज के शुरू में मोंढों तक और इसी तरह जब रुकूअ करते तो हाथ उठाते थे और जब दो रकअतों के बाद बैठते तो बायां पांव बिछाते और दाहिना खड़ा करते और दाहिना हाथ दाहिनी रान पर रखते और कलिमे की उंगली खड़ी करते दुआ के लिए और बायां हाथ बाएं पांव पर रखते। हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० ने कहा कि फिर मैं सहाबा रज़ि० के पास दूसरे साल (सर्दी के मौसम में) आया तो देखा कि वह अपने हाथ उठाते थे जुब्बों के अन्दर। (हदीस नम्बर : ११५६)

٣٨- (١٧)- أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ وَاللَّفْظُ لَهُ قَالَا حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنْ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ (سنن النسائي –رقم الحديث: ١١٨١)

हदीस ३८ (९७) : हम को याकूब बिन इब्राहीम दौरकी और मुहम्मद बिन बश्शार ने ख़बर दी और लफ्ज़ मुहम्मद बिन बश्शार के है। उन दोनों ने कहा हम को यह्या बिन सईद ने ख़बर दी उसने कहा हम को अब्दुल हुमैद बिन जाफर ने ख़बर दी उसने कहा मुझको मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने ख़बर दी उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दो रकअत के बाद उठते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और अपने दोनों हाथ मोंढों तक इस तरह उठाते जैसे शुरू नमाज़ में उठाते थे। (हदीस नम्बर : ११८१)

٣٩- (١٨) أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ قَالَ سَمِعْتُ عُبَيْدَ اللَّهِ وَهُوَ ابْنُ عُمَرَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ وَإِذَا قَامَ مِنْ الرَّكْعَتَيْنِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ كَذَلِكَ حَذْوَ الْمَنْكِبَيْنِ (سنن النسائي – رقم الحديث: ١١٨٢)

हदीस ३६ (१८) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों हाथ उठाते थे जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअतें पढ कर (तीसरी रकअत के लिए) उठते इसी तरह मोंढो तक हाथ उठाते। (हदीस नम्बर : ११८२)

٤٠- (١٩) أَخْبَرَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَإِذَا جَلَسَ اَضْجَعَ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْيُمْنَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَيَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَعَقَدَ ثِنْتَيْنِ الْوُسْطَى وَالْإِبْهَامَ وَأَشَارَ(سنن النسائي – رقم الحديث: ١٢٦٣)

हदीस ४० (१६) : हम को कुतैबा ने ख़बर दी उसने कहा मुझको सुफियान ने आसिम बिन कुलैब से उसने अपने बाप से उसने कहा कि

हजरत वाइल बिन हुज्र रज़ि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आप दोनों हाथ उठाते थे जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब बैठते तो बायां पाँव बिछा देते और दाहिना पाँव खड़ा रखते। और बायाँ हाथ बाएँ रान पर रखते और दाहिना हाथ दाहिनी रान पर रखते। और बीच की उंगली और अंगूठे का हलका बांध लेते और इशारा करते। (हदीस नम्बर : १२६३)

٤١- (٢٠) أَخْبَرَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ مَسْعُودٍ قَالَ أَنْبَأَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ أَخَذَ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ فَلَمَّا سَجَدَ وَضَعَ رَأْسَهُ بِذَلِكَ الْمَنْزِلِ مِنْ يَدَيْهِ ثُمَّ جَلَسَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى

وَحَدَّ مِرْفَقَهُ الْأَيْمَنَ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ ثِنْتَيْنِ وَحَلَّقَ وَرَأَيْتُهُ يَقُولُ هَكَذَا وَأَشَارَ بِشْرٌ بِالسَّبَّابَةِ مِنَ الْيُمْنَى وَحَلَّقَ الْإِبْهَامَ وَالْوُسْطَى (سنن النسائي – رقم الحديث: ١٢٦٥)

हदीस ४१ (२०) : हमको इस्माईल बिन मसऊद ने ख़बर दी उसने कहा कि हम को बिश्र बिन मुफ़ज्जल ने ख़बर दी उसने कहा हमको आसिम बिन कुलैब ने अपने बाप से बयान किया उसने कहा कि हजरत वाइल बिन हुज्र रज़ि० से रिवायत है कि मैंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को देखूंगा, आप किस तरह नमाज़ पढ़ते है। तो आप खड़े हुए और किब्ला की तरफ मुँह किया फिर दोनों हाथ उठाए कानों के बराबर। फिर दाहिने हाथ से बाएं हाथ को पकड़ा। जब रुकूअ का इदारा किया तो दोनों हाथों को उसी तरह उठाया (यानी कानों के बराबर) और दोनों हाथ घुटनों पर रखे जब रुकूअ से सर उठाया तो दोनों हाथों को उसी तरह उठाया। फिर जब सज्दा किया तो सर को उसी मकाम पर हाथ के पास रखा (यानी जहां तक हाथ उठाया था वहीं तक हाथ सज्दे में सर से करीब रहा) फिर बैठे तो बायाँ पाँव बिछाया और बायाँ हाथ बाएं रान पर रखा और दाहिनी कुहनी को दाहिनी रान से उठा रखा और दो उंगलियों को बन्द कर लिया और हल्का बांधा। इस तरह बिश्र जो रावी है इस हदीस का उसने कलिमे की उंगली से इशारा किया दाहिने हाथ के अंगूठे और बीच की उंगली का हल्का बनाया। (हदीस नम्बर : १२६५)

(६) सुनन इब्ने माजह शरीफ़

٤٢- (١) حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُحَمَّدٍ وَهِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ وَأَبُو عُمَرَ الضَّرِيرُ قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ (سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٥٨)

हदीस ४२ (१) : हमें अली बिन मुहम्मद, हिशाम बिन अम्मार और अबू उमर ज़रीर ने हदीस सुनाई। उन्होंने कहा हमें सुफियान बिन उयैना ने ज़ुहरी से, उन्होंने सालिम से और वह इब्ने उमर रज़ि० से उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, आपने जब नमाज़ शुरू

की तो अपने दोनों हाथों को उठाया, यहाँ तक कि मोंढों के बराबर कर दिया। इसी तरह जब रुकूअ किया। इसी तरह जब रुकूअ से सर उठाया। और दोनों सज्दों के दर्मियान आप हाथ नहीं उठाते थे। (हदीस नम्बर : ८५८)

٤٢- (٢) حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا قَرِيبًا مِنْ أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ(سنن ابن ماجه – رقم الحديث:٨٥٩)

हदीस ४३ (२) : हम से हुमैद बिन मस्अदा ने बयान किया उन्होंने यज़ीद बिन ज़ुरैअ् से, उन्होंने ने हिशाम से, उन्होंने नस्र बिन आसिम से, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीरे तहरीमा कहते तो दोनों हाथ उठाते थे कानों के करीब तक। और जब रुकूअ करते तो ऐसा ही दोनों हाथों को उठाते। और इसी तरह जब रुकूअ से सर उठाते। (हदीस नम्बर : ८५९)

٤٤- (٣) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ سَمِعْتُهُ وَهُوَ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدُهُمْ أَبُو قَتَادَةَ بْنُ رِبْعِيٍّ قَالَ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَامَ فِي الصَّلَاةِ اعْتَدَلَ قَائِمًا وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ قَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ فَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ فَاعْتَدَلَ فَإِذَا قَامَ مِنَ السَّتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ كَمَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ(سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٢)

हदीस ४४ (३) : हम से मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने यह्या बिन सईद से, उन्होंने अब्दुल हमीद बिन ज'फर से, उन से मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने उन्होंने कहा मैंने हज़रत अबू हुमैद साइदी रज़ि० से उस वक्त सुना जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम के

दस सहाबियों के बीच बैठे थे। उन में से एक अबू कतादा रज़ि० थे। खैर! अबू हुमैद रज़ि० ने कहा मैं तुम सबसे ज़्यादा जानता हूँ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को। जब आप (स०) नमाज़ के लिए खड़े होते तो सीधे खड़े होते और दोनों हाथ उठाते, यहाँ तक कि मोंढों के बराबर कर देते। फिर फरमाते अल्लाहु अकबर और जब रुकूअ का कस्द करते तो दोनों हाथ उठाते यहाँ तक कि मोंढों के बराबर कर देते। फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते, और दोनों हाथों को उठाते, और सीधे खड़े हो जाते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और दोनों हाथ उठाते यहाँ तक कि उनको मोंढों के बराबर कर देते। जैसे शुरू नमाज़ में किया था। (हदीस नम्बर : ८६२)

٤٥- (٤) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ سَهْلٍ السَّاعِدِيُّ قَالَ اجْتَمَعَ أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ وَأَبُو أُسَيْدٍ السَّاعِدِيُّ وَسَهْلُ بْنُ سَعْدٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَذَكَرُوا صَلَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ ثُمَّ رَفَعَ حِينَ كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ ثُمَّ قَامَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ وَاسْتَوَى حَتَّى رَجَعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ (سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٣)

हदीस ४५ (४) : हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने हदीस सुनाई, उन्हें अबू आमिर ने, उन्हें फुलैह बिन सुलेमान ने, उन्हें अब्बास बिन सहल साइदी ने हदीस सुनाई कि अबू हुमैद रज़ि०, अबू उसैद साइदी रज़ि०, सहल बिन सअद रज़ि० और मुहम्मद बिन मस्लिमः रज़ि० जमा हुए। और आँहज़रत (स०) की नमाज़ का तज़्किरा किया। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा मैं तुम सबसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को ज़्यादा जानता हूँ। आप खड़े हुए और अल्लाहु अकबर कहा और दोनों हाथ उठाए, फिर जब रुकूअ की तक्बीर कही तो दोनों हाथ उठाए। फिर खड़े हुए (रुकूअ से फारिग़ हो कर) और दोनों हाथ उठाए और सीधे खड़े हुए कि हर एक जोड़ अपने ठिकाने पर आ गया। (हदीस नम्बर : ८६३)

٤٦- (٥) حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ الْعَنْبَرِيُّ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ أَبُو أَيُّوبَ الْهَاشِمِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْفَضْلِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا قَامَ مِنْ السَّجْدَتَيْنِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ(سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٤)

हदीस ४६ (५) : हमें अब्बास बिन अब्दुल अज़ीम अंबरी ने हदीस सुना उन्हें सुलेमान बिन दाऊद ने, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन अबू ज़िनाद ने, उन्हें मूस बिन उक्बा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल ने, उन्हें अब्दुर्रहमान अ'रज ने उन उबैदुल्लाह बिन अबू राफ़े ने हज़रत अली रज़ि० से हदीस सुनाई कि :

औहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़र्ज़ नमाज के लिए खड़े होते तो तक्बीर कहते और दोनों हाथों को उठाते मोंढों के बराबर तक और जब रुकूअ करते तो भी ऐसा ही करते (यानी हाथों को उठाते मोंढों तक और जब रुकूअ से सर उठाते तो भी ऐसा ही करते। और जब दो रकआ पढ़ कर खड़े होते तो भी ऐसा ही करते। (हदीस नम्बर : ८६४)

٤٧- (٦) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ وَإِذَا رَكَعَ (سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٦)

हदीस ४७ (६) : मुहम्मद बिन बश्शार कहते हैं कि हमें अब्दुल वहा ने हदीस सुनाई उन्हें हुमैद ने और वह हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज नमाज में दाख़िल होते तो अपने दोनों हाथ उठाते। (और इसी तरह) ज रुकूअ करते। (हदीस नम्बर : ८६६)

٤٨- (٧) حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُعَاذٍ الضَّرِيرُ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي فَقَامَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ

حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ فَلَمَّا رَكَعَ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا مِثْلَ ذَلِكَ(سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٧)

हदीस ४८ (७) : बिश्र बिन मुआज़ ज़रीर ने हमें हदीस सुनाई उन्होंने बिश्र बिन मुफ़ज्ज़ल से, उन्होंने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने अपने बाप से, उन्होंने हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० से कि मैंने अपने दिल में कहा मैं देखूंगा औहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कैसे नमाज़ पढ़ते हैं तो आप खड़े हुए और क़िबला की तरफ़ मुँह किया और दोनों हाथ उठाए, यहाँ तक कि कानों के बराबर हो गये। जब रुकूअ किया तो भी इसी तरह दोनों हाथों को उठाया और जब रुकूअ से सर उठाया तो भी इसी तरह दोनों हाथों को उठाया। (हदीस नम्बर : ८६७)

٤٩- (٨) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا أَبُو حُذَيْفَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَيَقُولُ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ وَرَفَعَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ يَدَيْهِ إِلَى أُذُنَيْهِ(سنن ابن ماجه – رقم الحديث: ٨٦٨)

हदीस ४९ (८) : मुहम्मद बिन यह्या कहते हैं हमें अबू हुज़ैफ़ा ने हदीस सुनाई, उन्हें इब्राहीम बिन तहमान ने, वह अबू ज़ुबैर से बयान करते हैं कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० जब नमाज़ शुरू करते तो अपने दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो भी ऐसा ही करते (यानी दोनों हाथ उठाते) और कहते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैंने ऐसा ही करते हुए देखा। इब्राहीम बिन तहमान जो इस हदीस के रावी हैं, उन्होंने अपने हाथ उठाए दोनों कानों तक (यानी रफ़ा यदैन की हद बतलाई)। (हदीस नम्बर : ८६८)

❖❖❖

(७) मुअत्ता इमाम मालिक रह०

٥٠- (١) حَدَّثَنِي يَحْيَى عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ(موطا مالك -ص:٥٩)

हदीस ५० (१) : मुझे यहया ने हदीस सुनाई, उन्होंने मालिक से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते थे तो उठाते थे दोनों हाथ बराबर दोनों मोंढों के और जब सर उठाते थे रुकूअ से तब भी दोनों हाथों को उसी तरह उठाते और कहते **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** और सज्दों के बीच में हाथ नहीं उठाते थे। (स० ५६)

फ़ाइदा : यहया बिन यहया की रिवायत में **"इज़ा रकअ"** का लफ़्ज़ छूट गया है। लेकिन इब्ने वहब और इब्ने क़ासिम और इब्ने मेहदी और मुहम्मद बिन हसन और अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ और इब्ने नाफ़े वग़ैरहुम ने अपने अपने मुअत्ता में इमाम मालिक रह० से–

وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رفعهما كذلك ايضا

(**व इज़ा रकअ व इज़ा रफ़अ रासहू मिनर्रुकूअ रफ़अहुमा कज़ालिका ऐजन**) ज़िक्र किया है (यानी जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तब भी दोनों हाथ इसी तरह उठाते)

चुनांचे हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर ने इन तमाम रावियों का ज़िक्र किया है जो **"इज़ा रकअ"** का लफ़्ज़ ज़िक्र करते हैं।

जैल में उनके अस्माए गिरामी मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

(१) इब्ने वहब (२) इब्ने क़ासिम (३) यहया बिन सईद अल क़त्तान (४) इब्ने अबी ओवेस (५) अब्दुर्रहमान बिन महदी (६) जुवैरिया बिन अस्मा (७)

इब्राहीम बिन तहमान (८) अब्दुल्लाह बिन मुबारक (९) बशीर बिन उमर (१०) उस्मान बिन उमर (११) अबदुल्लाह बिन यूसुफ़ अत्तनीसी (१२) ख़ालिद बिन मुख़ल्लद (१३) मक्की बिन इब्राहीम (१४) मुहम्मद बिन अल हसन अश्शैबानी (१५) ख़ारजा बिन मुसअब (१६) अब्दुल मलिक बिन ज़्याद अन्नुसैबी (१७) अब्दुल्लाह बिन नाफ़े अस्साइग़ (१८) अबू क़ुर्रह मूसा बिन तारिक़ (१९) मतरफ़ बिन अब्दुल्लाह (२०) क़ुतैबा बिन सईदीया यह तमाम रावी रुकूअ की तरफ़ जाते वक़्त रफ़ा यदैन का ज़िक्र करते हैं, और उन्होंने इस हदीस में यह कहा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **"काना यरफ़ओ यदैहे इज़ा इफ़्ततहस्सलाता हज़वा मनकबैहि व इज़ा रकआ व इज़ा रफ़आ रासहू मिनर्रुकूअ"।**

यानी : जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते।

इमाम दार क़ुतनी ने इमाम मालिक रह० से इन में से अक्सर की सनदें ज़िक्र की हैं। जिस तरह हमने ज़िक्र किया है और यही दुरुस्त है। (अत्तम्हीद लेमा फ़िल मुअत्ता मिनल मआनी वल असानीद। (जिल्द : ९, स० २१०, २११)

ज़रक़ानी शरह मुअत्ता में है :

ورواه ابن وهب وابن القاسم وابن مهد ومحمدابن الحسن وعبد الله بن يوسف وابن نافع وجماعة غيرهم في الموطا باثباته فقالو واذا ركع واذا رفع راسه من الركوع رفعهماكذلك ايضا (زرقاني ج:١ ،ص:١٥٧)

यानी : इब्ने वहब, इब्ने क़ासिम, इब्ने महद, मुहम्मद बिन हसन अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़, इब्ने नाफ़े और उनके अलावा दीगर जमाअत ने मुअत्ता में **"इज़ा रकआ"** यानी जब रुकूअ करते का लफ़्ज़ रिवायत किया है। उन्होंने कहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो उसी तरह दोनों हाथों को उठाते।

(ज़रक़ानी जिल्द १, स० १५७)

शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं।

मुतर्जिम कहता है कि यहया बिन यहया की रिवायत में **"इज़ा रकआ"** का लफ़्ज़ साक़ित हो गया लेकिन मुअत्ता के अक्सर रावी उसे ज़िक्र करते

है। और यही मसलक इमाम मालिक रह० और अक्सर अहले इल्म का है।
(मुसफ्फा स० ९०)

इस की मज़ीद शहादत मुअत्ता इमाम मुहम्मद रह० से मिलती है। चुनांचे इमाम मुहम्मद रह० फरमाते हैं।

اخبرنا مَالِك حدثنا الزهري عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ عَبْدَ اللّٰهِ بن عمر قال كان رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حذاء مَنْكِبَيْهِ وَإِذَاكبر للركوع رَفَعَ يديه وإذا رفع رأسه مِنْ الرُّكُوعِ رَفَعَ يديه ثم قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ (موطا امام محمد ص:٨٩)

यानी : हमें मालिक रह० ने खबर दी, हमें जुहरी ने सालिम बि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से हदीस सुनाई। सालिम ने कहा, अब्दुल्ला बिन उमर रज़ि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ के लिए अल्लाहु अकबर कहते और ज रुकूअ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते फिर **"समिअल्ला लिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द"** कहते। (मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ८

तीसरी रकअत के लिए खड़े होने के बाद भी रफ़ा यदैन का सुबूत

बाकी रहा तीसरी रकअत की तरफ उठते वक्त रफ़ा यदैन करना, त जवाब उसका यह है कि उसमें शक नहीं कि जिस तरह कुरआन की आया एक दूसरी की तफ़्सीर होती है उसी तरह अहादीस भी एक दूसरी क मुफस्सिर हैं। जब तक किसी हदीस के तर्क पर कवी दलील न हो। तीस रकअत के लिए रफ़ा यदैन का सुबूत सही बुखारी से मुलाहिज़ा फरमाएं

حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَرَفَعَ ذٰلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ(صحيح البخاري – رقم الحديث:٧٣٩)

हदीस (१) : हज़रत नाफ़े से मरवी है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ में दाखिल होते तो **"अल्लाहु अकबर"** कहते और दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ में जाते तब भी रफ़ा यदैन करते और जब **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कहते तब भी रफ़ा यदैन करते। और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तब भी रफ़ा यदैन करते और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने इस हदीस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंचाया। (यानी यह हदीस मरफ़ू है। और हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल है) (सही बुखारी : हदीस नम्बर : ७३६)

मज़ीद दूसरी के बाद तीसरी रकअत के लिए खड़े होकर रफ़ा यदैन का सुबूत नसाई शरीफ में मुलाहिज़ा फरमाएं :

أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ قَالَ سَمِعْتُ عُبَيْدَ اللّٰهِ وَهُوَ ابْنُ عُمَرَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ كَذٰلِكَ حَذْوَ الْمَنْكِبَيْنِ (سنن النسائي - رقم الحديث: ١١٨٢)

हदीस (२) : हम को मुहम्मद बिन अब्दुल आला अस्सनआनी ने खबर दी और कहा खबर दी हम को मोतमिर ने कहा सुना मैंने उबैदुल्लाह से जो इब्ने उमर हैं उन्होंने इब्ने शिहाब से उन्होंने सालिम से उन्होंने इब्ने उमर से रिवायत बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों हाथ उठाते थे, जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते उसी तरह मोंढों तक हाथ उठाते। (सुनन नसाई, हदीस नम्बर : ११८२)

حَدَّثَنَاعبد الله حَدَّثَنِي أَبِي حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ سَمِعْتُهُ وَهُوَ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدُهُمْ أَبُو قَتَادَةَ بْنُ رِبْعِيٍّ يَقُولُ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا لَهُ مَا كُنْتَ أَقْدَمَنَا صُحْبَةً وَلَا أَكْثَرَنَا لَهُ

تباعة قال بلى قالوا فاعرض قال كان إذا قام إلى الصلاة اعتدل
قائما ورفع يديه حتى حاذى بهما منكبيه فإذا أراد أن يركع رفع
يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم قال الله أكبر فركع ثم اعتدل
فلم يصبب رأسه ولم يقنعه ووضع يديه على ركبتيه ثم قال سمع
الله لمن حمده ثم رفع واعتدل حتى رجع كل عظم في موضعه
معتدلا ثم هوى ساجدا وقال الله أكبر ثم جافى وفتح عضديه عن
بطنه وفتح أصابع رجليه ثم ثنى رجله اليسرى وقعد عليها واعتدل
حتى رجع كل عظم في موضعه ثم هوى ساجدا وقال الله أكبر ثم
ثنى رجله وقعد عليها حتى يرجع كل عضو إلى موضعه ثم نهض
فصنع في الركعة الثانية مثل ذلك حتى إذا قام من السجدتين
كبر ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه كما صنع حين افتتح
الصلاة ثم صنع كذلك حتى إذا كانت الركعة التي تنقضي فيها
الصلاة أخر رجله اليسرى وقعد على شقه متوركا ثم سلم (مسند
أحمدمع كنز العمال ج:٥، ص:٦٢٣)

हदीस (३) : हमें अब्दुल्लाह ने खबर दी, मुझे मेरे वालिद ने हमें यह
बिन सईद ने अब्दुल हमीद बिन ज़फर से हदीस सुनाई, उसने कह
मुझे मुहम्मद बिन अता ने अबी हुमैद साइदी से हदीस सुनाई उस
कहा मैंने उसे दस सहाबा की मौजूदगी में कहते हुए सुना, जिन में अ
क़तादा बिन रिब्ई थे, कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि
सल्लम की नमाज़ को अच्छी तरह जानता हूं उन्होंने कहा, न तो तू ह
से पहले मुसलमान हुआ है न ही हम से ज़्यादा आप (स०) की रिफ़ाक
की है, उसने कहा यह तो ठीक है, तो उन्होंने कहा अच्छा फिर पे
करो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ कैसी होती थी
उसने कहा कि जब आप ठीक से खडे हो जाते तो कन्धों तक र
यदैन करते। फिर जब रुकूअ करते तो भी कन्धों तक रफ़ा यदैन क
और रुकूअ में न सर को ऊंचा रखते और न नीचा, और हाथ अ
घुटनों पर रखते। फिर **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कह कर खड़े
जाते, तो रफ़ा यदैन करते, फिर सज्दा में जाते तो **"अल्लाहु अकब**

कहते फिर अपने बाएं पाँव को बिछा कर उस पर बैठ जाते यहाँ तक कि जिस्म का हर जोड़ अपनी अपनी जगह पर आ जाता। फिर उठते और इसी तरह दूसरी रकअत में भी करते। फिर दो रकअतों से जब उठते तक्बीर कह कर कन्धों तक रफ़ा यदैन करते, जिस तरह पहली बार नमाज़ शुरू करते वक़्त किया था। उसी तरह सारी नमाज़ में करते हत्ता कि वह रकअत आ जाती जिस में नमाज़ ख़त्म होती है तो फिर बायां पांव आगे निकाल कर अपने सुरीन पर बैठ जाते फिर सलाम फेरते। (मुस्नद अहमद मअ् कन्जुल उम्माल, जिल्द : ५, स० ६२३)

औनुल बारी सफ़: ३१२ में अल मआनी अलबदीआ की मारिफ़ते इख़्तिलाफ़े अहलि शरीआ से मन्कूल है :

وعند الشافعي وابن عمر وابن عباس وأبي سعيد الخدري وابن
الزبير وأنس والاوزاعي والليث وأحمد وإسحاق ومالك يستحب أن
يرفع يديه في تكبيره الإحرام وعند الركوع والرفع منه-

यानी : अकाबिर सहाबा अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०, अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि०, अबू सईद खुदरी रज़ि०, अनस बिन मालिक रज़ि० वग़ैरह और अकाबिर अइम्मा इमाम मालिक रह०, इमाम शाफ़ई रह०, इमाम अहमद रह० इमाम इसहाक़ रह०, इमाम लैस रह०, इमाम औज़ाई रह० वग़ैरह के नज़्दीक शुरू नमाज़ में और रुकूअ् जाते और उस से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन करना मुस्तहब है।

अल्लामा इब्ने अब्दुलबर रहेमहुल्लाह तआला फरमाते हैं :

وروى ابو مصعب وابن وهب عن مالك أنه كان يرفع يديه إذا أحرم
واذا ركع واذا رفع من الركوع على حديث ابن عمر (الاستذكار
ج:٢، ص:١٢٤)

यानी अबू मुस्अब रह० और इब्ने वहब रह० का बयान है कि इमाम मालिक रह० हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की रिवायत के मुताबिक़ तक्बीर तहरीमा के वक़्त रुकूअ् में जाते और रुकूअ् से उठते वक़्त रफ़ा यदैन करते थे। (अल इस्तिज़्कार, जिल्द : २, स० १२४)

इमाम तिर्मिज़ी फरमाते हैं :

وبه يقول مالك ومعمر و الأوزاعي وابن عيينة وعبد الله ابن المبارك والشافعي وأحمد و إسحاق (ترمذي تحقيق أحمد شاكر ج:٢، ص:٢٧)

यानी : इमाम मालिक रह०, मअ्मर रह०, औज़ाई रह०, इब्ने उयैना रह० अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह०, इमाम शाफ़ई रह०, अहमद रह० और इस्हा का यही मसलक है। (तिर्मिज़ी, तहक़ीक़ अहमद शाकिर मतबूआ बैरूत जिल्द :

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अल-हसन अश्शैबानी रह० लिखते हैं

وقال أهل المدينة يرفع يديه حذو منكبيه اذا افتتح الصلاة و اذا كبر للركوع واذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك أيضا و قال سمع الله لمن حمده ربنا و لك الحمد فيرفع يديه في هذا كله حذو منكبيه وقالوا لا يفعل ذلك في السجود ورووه ذلك عن ابن عمر(ص:٦٣، ج:١)

यानी : और अहले मदीना ने कहा कि जब नमाज़ शुरू करे त कन्धों के बराबर रफा यदैन करे और जब रुकूअ् के लिए तक्बीर कहे औ जब रुकूअ् से सर उठाए तो भी इसी तरह रफा यदैन करे औ **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द"** कहे। इन तमाम जगहों में कन्धों के बराबर रफा यदैन करे। और उन्होंने कहा है कि सुजूद में रफा यदैन न करे और उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत की है। (किताबुल हुज्जा अला अहलिल मदीना

وقال عبد الله ابن المباركة قد ثبت حديث من يرفع و ذكر حديث الزهري عن سالم عن أبيه ولم يثبت حديث ابن مسعود أن النبي صلى الله عليه وسلم لم يرفع إلا في أول مرة (ترمذي مع تحفةالأحوذي ص:٢٢٠، ج:١)

यानी : अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने कहा कि हदीस **"मन यरफअ्"** साबित है और हदीस ज़ुहरी का ज़िक्र किया है जो सालिम अन अबीह है है और इब्ने मसऊद की हदीस से साबित नहीं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर्फ़ पहली मरतबा ही (यानी नमाज़ शुरू करते वक़्त) रफ़

यदैन किया है। (तिर्मिज़ी मअ् तुहफ़ातुल अहवाज़ी जिल्द : १, स. २२०)

अल गरज़ इन हवालाजात से रोज़ रोशन की तरह अयां होता है कि इमाम मालिक का मज़हब रफा यदैन करना है।

(८) सही इब्ने खुज़ैमा

٥١- (١) أخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ ، حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ، أَنَّ ابْنَ عُمَرَ ، قَالَ : كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ لِلصَّلاَةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا بِحَذْوِ مَنْكِبَيْهِ ، ثُمَّ كَبَّرَ ، فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ ، فَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ ، وَلاَ يَفْعَلُهُ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ.

(صحيح ابن خزيمة –ص:٢٢٢ج:١)

हदीस ५१ (१) : हमें अबू ताहिर ने ख़बर दी उन्होंने अबू बकर से सुना, उन्होंने मुहम्मद बिन राफ़े से बयान किया उन्होंने अबदुर्रज़्ज़ाक़ से बयान किया, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से बयान किया कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो दोनों मोंढों के बराबर तक हाथ उठाते फिर आप अल्लाहु अकबर कहते। जब रुकूअ् का इरारा करते थे तो उसी तरह हाथ उठाते, फिर जब रुकूअ् से (सर) उठाते तो उसी तरह करते। और सज्दा से सर उठाते वक़्त ऐसा नहीं करते थे। (सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स. २३२)

٥٢- (٢) أخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ ، عَنْ أَبِيهِ ، عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ ، قَالَ : صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابِهِ فَرَأَيْتُهُمْ يَرْفَعُونَ أَيْدِيَهُمْ فِي الْبَرَانِسِ. (صحيح ابن خزيمة – ص:٢٢٢ج:١)

हदीस ५२ (२) : खबर दी हम को अबू ताहिर ने, उनको अबू बकर ने उनको सईद बिन अब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी ने, उनको सुफ़ियान ने उनको आसिम बिन कुलैब ने, उनको उनके बाप ने, उनको वाइल बिन हुज्र रज़ि०

ने कहा कि : मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप
सहाबा रज़ि० के साथ नमाज़ें अदा की, मैंने उन्हें चादरों के नीचे से र
यदैन करते हुए देखा। (सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स. २३३)

٥٢- (٣) اخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا عَبْدُ الْجَبَّارِ بْنُ الْعَلاَءِ الْعَطَّارُ ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ ، قَالَ : سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ : سَمِعْتُ سَالِمًا يُخْبِرُ عَنْ أَبِيهِ (ح) وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ ، وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ ، وَسَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَخْزُومِيُّ ، وَعُتْبَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْيَحْمَدِيُّ ، وَالْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ ، وَيُونُسُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّدَفِيُّ ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ ، وَعَلِيُّ بْنُ الأَزْهَرِ ، وَغَيْرُهُمْ قَالُوا : حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ، عَنْ سَالِمٍ ، عَنْ أَبِيهِ ، قَالَ : رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلاَةَ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ ، وَبَعْدَمَا يَرْفَعُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلاَ يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ هَذَا لَفْظُ ابْنِ رَافِعٍ. سَمِعْتُ الْمَخْزُومِيَّ يَقُولُ : أَيُّ إِسْنَادٍ أَصَحُّ مِنْ هَذَا؟ اخبرنا ابو طاهر نا ابو بكر قَالَ : سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ يَحْيَى يَحْكِي عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ قَالَ : سُفْيَانُ : هَذَا الإِسْنَادُ مِثْلُ هَذِهِ الأُسْطُوَانَةِ.(صحيح ابن خزيمة – ص:٢٩٤ج:١)

हदीस ५३ (३) : हमें अबू ताहिर ने ख़बर दी, उन्हें अबू बकर ने, उन्
अब्दुल जब्बार बिन अला अत्तार ने, उन्हें सुफ़ियान ने, उन्होंने कहा मैंने ज़ुह
से सुना, उन्होंने कहा मैंने सालिम से सुना, वह अपने वालिद से ख़बर देते थे
(दूसरी सनद) और हमें अली बिन हुज्र सअ्दी, अली बिन खशरम, सईद बि
अब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी, उतैबा बिन अब्दुल्लाह युहमेदी, हसन बिन मुहम्मद, यूनु
बिन अब्दुल आला सदफ़ी, मुहम्मद बिन राफ़े और अली बिन अज़हर वग़ैरहु
ने हदीस सुनाई इन सब ने कहा हमें सुफ़ियान ने ज़ुहरी से, उन्होंने सालि
से, उन्होंने अपने वालिद (अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०) से बयान किया कि
मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आप नमाज़
शुरू करते तो अपने मोंढों तक अपने दोनों हाथ उठाते और उसी तरह
रुकूअ् में जाते वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन करते और

सज्दों के दर्मियान रफ़ा यदैन नहीं करते थे, यह इब्ने राफ़े के लफ़्ज़ हैं। मैंने मख़्ज़ूमी से सुना कहते थे कि इस से बढ़ कर सही कोई और सनद नहीं है। हमें अब ताहिर ने ख़बर दी, उन्हें अबू बकर ने, उन्होंने कहा कि मुहम्मद बिन यहया अली बिन अब्दुल्लाह से बयान करते हैं कि सुफ़ियान का बयान है कि यह सनद सुतून की तरह है। (सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० २६४)

٥٤- (٤) اخبرنا ابو طاهر حَدَّثَنَا ابو بكر حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ سُلَيْمَانَ الْمُرَادِيُّ ، وَبَحْرُ بْنُ نَصْرٍ الْخَوْلاَنِيُّ ، قَالاَ : حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ ، أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ (ح) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ ، قَالاَ : حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْهَاشِمِيُّ ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الزِّنَادِ ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْفَضْلِ الْهَاشِمِيِّ ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجُ ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ الْمَكْتُوبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ، وَيَصْنَعُ مِثْلَ ذَلِكَ إِذَا قَضَى قِرَاءَتَهُ وَأَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ ، وَيَصْنَعُهُ إِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ ، وَلاَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلاَتِهِ وَهُوَ قَاعِدٌ ، وَإِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ كَذَلِكَ وَكَبَّرَ.
(صحيح ابن خزيمة – ص: ٢٩٥، ٢٩٦ج:١)

हदीस ५४ (४) : हमें अबू ताहिर ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमें अबू बकर ने, उन्हें रबीअ् बिन सुलेमान मुरादी और बहर बिन नस्र खौलानी ने, दोनों ने कहा हमें इब्ने वहब ने हदीस सुनाई। उसने कहा मुझे इब्ने अबू ज़ेनाद ने हदीस सुनाई। (दूसरी सनद : और हमें मुहम्मद बिन यहया और मुहम्मद बिन राफ़े ने हदीस सुनाई, दोनों ने कहा हमें सुलेमान बिन दाऊद हाशमी ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा हमें अब्दुर्रहमान बिन अबू ज़िनाद ने मूसा बिन उक्बा से ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल हाशमी ने बताया। हमें अब्दुर्रहमान अ'रज ने उबैदुल्लाह बिन अबू राफ़े से, उन्होंने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु से बयान फ़रमाया, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक बयान फ़रमाया कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो अल्लाहु अकबर कहते और दोनों हाथ मोंढों

के बराबर उठाते और उसी तरह (रफ़ा यदैन) करते जब क़िरअत से फ़ा
होते और रुकूअ़ का इरादा करते और उसी तरह हाथों को उठाते जब रुकू
से सर उठाते और बैठने की हालत में हाथों को नहीं उठाते थे। और जब
रकअतें पढ़ कर उठते तो दोनों हाथ उसी तरह उठाते और तकबीर कह

(सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० २९५–२९

٥٥- (٥) اخبرنا ابو طاهر حدثنا ابو بكر حدثنا أبو بشر الواسطي ، أخبرنا خالد ، يعني ابن عبد الله، عن خالد ، وهو الحذاء ، عن أبي قلابة ، أنه رأى مالك بن الحويرث إذا صلى كبر ورفع يديه، وإذا أراد أن يركع رفع يديه ، وإذا رفع رأسه من الركوع رفع يديه ، وحدث أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يصلي هكذا. (ص:٢٩٥ج:١)

हदीस ५५ (५) : अबू ताहिर, अबू बकर, अबू बिश्र वास्ती, ख़ालिद बि
अब्दुल्लाह, ख़ालिद हज़्ज़ा, अबू क़िलाबा से रिवायत है कि उन्होंने मालिक बि
हुवैरिस रज़ि० को देखा जब नमाज़ के लिए अल्लाहु अकबर कहते
रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ का इरादा करते और रुकूअ़ से सर उठा
तो (भी) रफ़ा यदैन करते। फिर उन्होंने हदीस बयान फ़रमाई कि रसूलुल्ला
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह नमाज़ अदा किया करते थे।

(सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० २९

قال أبو بكر : فقد أمر النبي صلى الله عليه وسلم مالك بن الحويرث والشببة الذين كانوا معه أن يصلوا كما رأوا النبي صلى الله عليه وسلم يصلي (و) قد أعلم مالك بن الحويرث أن النبي صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه إذا كبر في الصلاة، وإذا ركع، وإذا رفع رأسه من الركوع ، ففي هذا ما دل على أن النبي صلى الله عليه وسلم قد أمر برفع اليدين إذا أراد المصلي الركوع ، وإذا رفع رأسه من الركوع (صحيح ابن خزيمة–(ص:٢٩٥،٢٩٦ج:١)

इमाम अबू बकर रह० फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल

ने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० और उनके दीगर साथी नौजवानों को हुक्म फ़रमाया कि वह नमाज़ इसी तरह अदा करें जिस तरह उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते देखा। (और) मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने ख़बर दी कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिए अल्लाहु अकबर कहते वक़्त और रुकूअ़ को जाते वक़्त और रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे। इसमें वाज़ेह दलालत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर नमाज़ी को जब रुकूअ़ का इरादा करे और रुकूअ़ से सर उठाये रफ़ा यदैन करने का हुक्म दिया है।

(सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० २९५, २९६)

٥٦- (٦) اخبرنا ابو طاهر حدثنا ابو بكر حدثنا محمد بن بشار ، حدثنا يحيى بن سعيد القطان ، حدثنا عبد الحميد بن جعفر ، حدثني محمد بن عطاء ، وهو محمد بن عمرو بن عطاء نسبه إلى جده ، عن أبي حميد الساعدي، قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة اعتدل قائما (فذكر بعض الحديث) وقال : ثم ، قال : "الله أكبر" وركع ، ثم اعتدل ولم يصب رأسه ولم يقنع ، ووضع يديه على ركبتيه ، ثم . قال : سمع الله لمن حمده ، ورفع يديه واعتدل حتى يرجع كل عظم في موضعه معتدلا ، ثم هوى إلى الأرض ساجدا ثم قال : الله أكبر ، ثم تجافى عضديه عن إبطيه ، وفتخ أصابع رجليه ، ثم ثنى رجله اليسرى وقعد عليها ، ثم اعتدل حتى يرجع كل عظم في موضعه معتدلا ، ثم هوى ساجدا ، ثم قال : الله أكبر ، ثم ثنى رجله وقعد واعتدل حتى يرجع كل عظم في موضعه ، ثم نهض، ثم صنع في الركعة الثانية مثل ذلك ، حتى إذا قام من السجدتين كبر ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه كما صنع حين افتتح الصلاة ، ثم صنع كذلك حتى إذا كانت الركعة التي تنقضي فيها الصلاة أخر رجله اليسرى وقعد على شقه متوركا ، ثم سلم.

(صحيح ابن خزيمة – (ص:٢٩٧ج:١))

हदीस ५६ (६) : अबू ताहिर, अबू बकर, मुहम्मद बिन बश्शार, यहया बिन सईद कत्तान, अब्दुल हमीद बिन ज'फर, मुहम्मद बिन अता और वा मुहम्मद बिन अम्र बिन अता हैं उनकी निस्बत दादा की तरफ़ है, अबू हुमैद साइदी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो सीधे खड़े हो जाते। रावी ने हदीस का बाज़ हिस्सा ज़िक्र किया। और कहा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने **अल्लाहु अकबर** कहा और रुकूअ़ किया, फिर पीठ सीधी करते (और सर को पीठ के बराबर करते) न झुकाते न ऊंचा करते। और दोनों हथेलियां अपने घुटनों पर रखते, फिर आप ने "**समिअल्लाहुलिमन हमिदह**" कहा और रफ़ा यदैन की और सीधे खड़े हो गये यहां तक कि हर हड्डी अपनी असली जगह पर वापस आ जाती। फिर आप सज्दे के लिए ज़मीन की तरफ़ झुके, और **अल्लाहु अकबर** कहा, अपने बाज़ू बग़लों से दूर रखे और अपने पाँव की उंगलियां खोलीं। फिर बाएं पैर को बिछा कर उस पर बैठते इतनी देर तक कि हर हड्डी अपने ठिकाने पर आ जाती। फिर दूसरे सज्दे के लिए झुके, फिर अल्लाहु अकबर कहा, फिर अपने पैर को बिछा कर बैठे। यहां तक हर हड्डी अपनी असली जगह पर आ जाती। फिर दूसरी रकअत में भी इसी तरह करते। फिर दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो रफ़ा यदैन करते जैसा कि शुरू नमाज़ में करते। फिर बाक़ी नमाज़ें ऐसे ही करते। यहाँ तक कि आप उस रकअत पर पहुंचते जिस पर नमाज़ पूरी होती है, अपना बायां पाँव निकालते और बाएं कूल्हे पर बैठते फिर आप सलाम फेरते

(सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० २९

٥٧- (٧) أخبرنا ابو طاهر حدثنا ابو بكر حدثنا بندار، حدثنا أبو داود، حدثنا فليح بن سليمان، حدثني العباس بن سهل الساعدي، قال: اجتمع ناس من الأنصار فيهم سهل بن سعد الساعدي، وأبو حميد الساعدي، وأبو أسيد الساعدي فذكروا صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: حميد: دعوني أحدثكم فأنا أعلمكم بهذا. قالوا: فحدث قال: رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم أحسن الوضوء، ثم دخل الصلاة وكبر فرفع يديه حذو منكبيه، ثم ركع فوضع يديه على ركبتيه كالقابض

عليهما فلم يصب رأسه ولم يقنعه، ونحى يديه عن جنبيه، ثم رفع رأسه فاستوى قائما حتى عاد كل عظم منه إلى موضعه، ثم ذكر بقية الحديث، فقال القوم كلهم: هكذا كانت صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم. (ص:٢٩٨ج:١، ص:٣٠٨ج:١)

हदीस ५७ (७) : हम को ख़बर दी अबू ताहिर ने, उन्हें अबू बकर ने, उन्हें बुन्दार ने उन्हें अबू दाऊद ने, उन्हें फुलैह बिन सुलेमान ने, उन्हें अब्बास बिन सहल साइदी ने कहा कि अन्सार के कुछ लोग जमा हुए। उन में सहल बिन सअद साइदी रज़ि०, अबू हुमैद साइदी रज़ि०, और अबू उसैद साइदी रज़ि० भी मौजूद थे। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ का तज़्किरा किया, तो अबू हुमैद रज़ि० ने फरमाया, मुझे इजाज़त दें मैं आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ के मुतअल्लिक़ बताऊं। क्योंकि मैं उसके मुतअल्लिक़ आप सभों से ज़्यादा जानता हूं। उन्होंने कहा अच्छा! तुम ही बताओ। आप रज़ि० ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, आप ने अच्छी तरह वुज़ू किया, फिर नमाज़ में दाखिल हुए **अल्लाहु अकबर** कहा और दोनों हाथ मोंढों के बराबर उठाए। फिर रुकूअ़ किया। पस दोनों हाथ पकड़ने के अंदाज़ में घुटनों पर रखते और सर को पीठ के बराबर करते, न झुकाते न ऊंचा रखते। और अपने दोनों हाथों को अपने पहलुओं से दूर रखते। फिर अपना सर उठाया और सीधे खड़े हो गये यहाँ तक कि हर जोड़ अपने असली मकाम पर आ गया। फिर बन्दार रावी ने हदीस का बक़िया हिस्सा ज़िक्र किया और उसके आख़िर में कहा कि तमाम हाज़िरीने मज्लिस ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ ऐसे ही होती थी –

(सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : २, स० २९८, ३०८)

٥٨- (٨) أخبرنا ابو طاهر حدثنا ابو بكر قال: سمعت محمد بن يحيى يقول: من سمع هذا الحديث ثم لم يرفع يديه يعني إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع فصلاته ناقصة (صحيح ابن خزيمة – ص:٢٩٨ج:١)

हदीस ५८ (८) : हमको ख़बर दी अबू ताहिर ने, उन्हें अबू बकर ने, उन्होंने कहा कि इमाम मुहम्मद बिन यह्या फरमाते हैं कि जो शख़्स इस हदीस को सुने फिर रुकूअ् को जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन न करे तो उसकी नमाज़ नाक़िस है।(सही इब्ने ख़ुज़ैमा, जिल्द : १, स० २९८)

٥٩- (٩) واخبرنا أبو الحسن على بن المسلم ابن محمد السلمي، نا أبو محمد عبد العزيز بن أحمد الكناني، قال أخبرنا الأستاذ الإمام أبو عثمان إسماعيل بن عبد الرحمن الصابوني قراءة عليه، قال، أخبرنا أبو طاهر، نا محمد بن الفضل بن محمد بن اسحاق بن خزيمة، ناأبو بكر محمد بن إسحاق بن خزيمة حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ الصَّبَّاحِ الْمِسْمَعِيُّ ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ الْمَدَنِيُّ ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ ، قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا حُمَيْدٍ السَّاعِدِيَّ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، قَالَ : أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا : مَا كُنْتَ أَقْدَمَنَا لَهُ صُحْبَةً ، وَلَا أَطْوَلَنَا لَهُ تِبَاعَةً، قَالَ : بَلَى قَالُوا : فَاعْرِضْ قَالَ : كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ، وَاعْتَدَلَ قَائِمًا حَتَّى يَقَرَّ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلاً ، ثُمَّ يَقْرَأُ ثُمَّ يَرْفَعُ يَدَيْهِ ، وَيُكَبِّرُ وَيَرْكَعُ فَيَضَعُ رَاحَتَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ، وَلَا يَصُبُّ رَأْسَهُ ، وَلَا يُقْنِعُهُ ، ثُمَّ يَقُولُ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ، وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ مُعْتَدِلاً ، حَتَّى يَقَرَّ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلاً ، ثُمَّ يُكَبِّرُ وَيَسْجُدُ فَيُجَافِي جَنْبَيْهِ ، ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ، فَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى ، فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا ، وَيَفْتَحُ أَصَابِعَ رِجْلِهِ الْيُمْنَى، ثُمَّ يَقُومُ فَيَصْنَعُ فِي الرَّكْعَةِ الأُخْرَى مِثْلَ ذَلِكَ ، ثُمَّ يَقُومُ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ فَيَصْنَعُ مِثْلَ مَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ.(صحيح ابن خزيمة – ص:٢٣٧ج:١)

हदीस ५९ (९) : हम को अबुल हसन अली बिन मुस्लिम बिन मुहम्मद सलमी ने बयान किया, उसने कहा हम को अबू मुहम्मद अब्दुल अजीज़ बिन अहमद अल किनानी ने बयान किया, उस ने कहा हम को उस्ताद इमाम

अबू उस्मान इस्माईल बिन अब्दुर्रहमान साबूनी ने बयान किया इस हाल में कि उस पर पढ़ा जा रहा था, उस ने कहा हम को अबू ताहिर ने, उन्हें मुहम्मद बिन फ़ज़्ल बिन मुहम्मद बिन इसहाक़ बिन ख़ुज़ैमा ने, उनको अबू बकर मुहम्मद बिन इसहाक़ बिन ख़ुज़ैमा ने, उनको मुहम्मद बिन राफ़े ने, उनको अब्दुल मलिक बिन सबाह मिस्मई ने हम को अब्दुल हमीद बिन जफ़र मदनी ने महम्मद बिन अम्र बिन अता ने, उस ने कहा मैंने अबू हुमैद अस्साइदी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा रज़ि० की मौजूदगी में कहते हुए सुना : मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ का तुम से ज़्यादा इल्म है। लोगों ने कहा यह कैसे हो सकता है। न तो तुम हम से पहले आपकी सोहबत में आए और न ही हम से ज़्यादा आप की पैरवी करते थे। (अबू हुमैद रज़ि०) ने कहा क्यों नहीं। लोगों ने कहा अच्छा बयान करो। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो दोनों हाथ मोंढों तक उठाते, फिर तक्बीर कहते। जब हर हड्डी ऐ'तदाल से अपने असल मकाम पर आ जाती। तो आप किरअत शुरू करते। फिर रफ़ा यदैन करते और **अल्लाहु अकबर** कह कर रुकूअ् करते। पस दोनों हथेलियां अपने घुटनों पर रखते और सर को पीठ के बराबर करते, न झुकाते न ऊंचा रखते। फिर **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कहते। फिर दोनों हाथ मोंढों तक उठाते सीधे खड़े हो कर। यहां तक कि हर हड्डी ऐतदाल से अपने मकाम पर आ जाती। फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और सज्दा करते और दोनों हाथ अपने पहलुओं से जुदा रखते। फिर सज्दे से अपना सर उठाते, और बाएं पाँव को बिछा कर उस पर बैठते और दाएं पाँव की उंगलियां खुली रखते। फिर आप दूसरी रकअत के लिए खड़े होते और उसे पहली रकअत की तरह ही अदा करते। फिर दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो ऐसे ही करते जैसे शुरू नमाज़ में किया था। (यानी रफ़ा यदैन)

(सही इब्ने ख़ुज़ैमा, जिल्द : १, स० ३३७)

٦٠- (١٠) قَالَ أَبُو بَكْرٍ : فِي خَبَرِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ،وَكَذَلِكَ فِي اخَبَرِ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ، (و) خَبَرِ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ.(صحيح ابن خزيمة – ص: ٣٤٤ ج: ١)

हदीस ६० (१०) : इमाम अबू बकर रह० फरमाते हैं कि हज़रत अली रज़ि० की मरफूअ़ रिवायत में है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रफ़ा यदैन करते। इसी तरह यह अल्फ़ाज़ अबू हुमैद साइदी रज़ि० और अब्दुल हमीद बिन जफर की रिवायत में भी मौजूद हैं।

(सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० ३४४)

٦١- (١١)أخبرنا أبو طاهر نا أبو بكر حَدَّثَنَا الصَّنْعَانِيُّ ، أَخْبَرَنَا الْمُعْتَمِرُ ، قَالَ : سَمِعْتُ عُبَيْدَ اللهِ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ،عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ ، وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ ، يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي ذَٰلِكَ كُلِّهِ حَذْوَ الْمَنْكِبَيْنِ.(صحيح ابن خزيمة – ص:٣٤٤ج:١)

हदीस ६१ (११) : हम को अबू ताहिर ने खबर दी, उन्हें अबू बकर ने उन्हें सनआनी ने, उन्होंने कहा हम को मु'तमिर ने, उस ने कहा मैंने उबैदुल्लाह से सुना, उस ने इब्ने शिहाब से, उसने सालिम से, उसने इब्ने उमर से, वह आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ के बारे में बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में दाखिल होते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ का इरादा करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो इन तमाम मकामात पर मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। (सही इब्ने खुज़ैमा जिल्द : १, स० ३४४)

٦٢- (١٢) أخبرنا أبو طاهر نا أبو بكر حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ ،قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَبَّرَ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ ، وَرَفَعَ يَدَيْهِ ، وَحِينَ أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَحِينَ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَوَضَعَ كَفَّيْهِ وَجَافَى- يَعْنِي فِي السُّجُودِ- وَفَرَشَ فَخِذَهُ الْيُسْرَى وَأَشَارَ بِأُصْبُعِهِ السَّبَّابَةِ يَعْنِي فِي الْجُلُوسِ فِي التَّشَهُّدِ.(صحيح ابن خزيمة – ص:٣٤٥-٣٤٦ ج:١)

हदीस ६२ (१२) : हम को अबू ताहिर ने खबर दी, उनको अबू बकर ने, उनको बुन्दार ने, उनको मुहम्मद बिन जफर ने, उनको शो'बा ने, उनको आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें उनके वालिद ने कहा कि वाइल बिन हुज्र कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ में दाखिल हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा और रफ़ा यदैन की। और जब रुकूअ़ का इरादा किया तो (फिर भी) रफ़ा यदैन की और जब रुकूअ़ से सर उठाया (तब भी) रफ़ा यदैन की और हथेलियों को ज़मीन पर रखा, और पहलुओं से जुदा रखा। यानी सज्दे की हालत में, और बाएं कूल्हे पर बैठे और शहादत की उंगली से इशारा किया यानी तशह्हुद में बैठ कर पाँव को बिछाया। (सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द १, स. ३४६)

٦٣- (١٣) أخبرنا أبو طاهر نا أبو بكر حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ الْحَضْرَمِيِّ : أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ كَبَّرَ ، وَحِينَ رَكَعَ ، وَحِينَ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ ، وَقَالَ حِينَ سَجَدَ : هٰكَذَا ، وَجَافَى يَدَيْهِ عَنْ إِبْطَيْهِ ، وَوَضَعَ فَخِذَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى ، وَقَالَ : هٰكَذَا وَنَصَبَ وَهْبٌ السَّبَّابَةَ وَعَقَدَ بِالْوُسْطَى وَأَشَارَ مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى أَيْضًا بِسَبَّابَتِهِ وَحَلَّقَ بِالْوُسْطَى وَالْإِبْهَامِ ، وَعَقَدَ بِالْوُسْطَى. (صحيح ابن خزيمة – ص:٣٤٦ج:١)

हदीस ६३ (१३) : हम को अबू ताहिर ने खबर दी, उनको अबू बकर ने, उनको मुहम्मद बिन यह्या ने, उनको वहब बिन जरीर ने, उनको शोअ़बा ने, उनको आसिम बिन कुलैब ने, उनको उनके वालिद ने, उनको वाइल बिन हुज्र हज़रमी ने कहा बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब **अल्लाहु अकबर** कहते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ को जाते और रुकूअ़ से सर उठाते तो (भी) रफ़ा यदैन करते और कहा जब आप ने सज्दा किया और हाथों को बग़लों से दूर रखा। और कहा इस तरह, वहब रावी ने सब्बाबा उंगली को खड़ा किया और मियानी उंगली के साथ हल्क़ा बनाया और मुहम्मद बिन यह्या ने भी

सब्बाबा उंगली के साथ इशारा किया और उस्ता और इब्हाम के
हल्का बनाया। (सही इब्ने खुज़ैमा, जिल्द : १, स० ३४६)

(६) अस्सुनन अल कुबरा

-٦ (١) اخبرنا أبو الحسن محمد بن الحسين بن داود الحسينى
احمد بن محمد بن الحسن الحافظ ثنا عبد الرحمن ابن بشر بن
حكم ثناسفيان عن الزهري عن سالم بن عبد الله بن عمر عن
يه قال رأيت رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم يرفع يديه إذا
تتح الصلوة يحاذي بهما منكبيه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من
ركوع ولا يفعل ذلك في السجود(السنن الكبرى – للإمام
بيهقي – ص:٢٣ج٢)

हदीस ६४ (१) : हम से अबुल हसन मुहम्मद बिन हुसैन बिन दा
हुसैनी ने बयान किया, उन्होंने अहमद बिन मुहम्मद बिन हसन हाफ़ि
उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन बिश्र बिन हकम से, उन्होंने सुफ़ियान से, उ
जुहरी से उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने अपने वालिद इब्ने
रज़ि० से कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा
जब आप नमाज़ शुरू करते तो अपने दोनों हाथ मोंढों के बराबर उ
और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते (तब भी) रफ़ा यदैन
और सज्दों के दर्मियान ऐसा नहीं करते थे। (जिल्द : २, स० २३)

- (٢) (اخبرنا) ابو محمد عبد الله بن يوسف انبا أبو سعيد بن
عرابي بمكة انبا الحسن بن محمد بن الصباح ثنا عفان ابن
سلم ثنا حماد عن ايوب عن نافع عن ابن عمر ان رسول الله صلى
له تعالى عليه وسلم كان إذا دخل في الصلوة رفع يديه حذو
كبيه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع(السنن الكبرى -
مام البيهقي –ص:٢٤ج:٢)

हदीस ६५ (२) : हमें अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने ख़ब
उन्हें अबू सईद बिन अ'राबी ने मक्का मुकर्रमा में, उन्हें हसन बिन मुहम्म
सबाह ने, उन्हें अफ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने उन्हें हम्माद ने, उन्हें अय्यूब ने

नाफ़े ने, उन्हें इब्ने उमर रज़ि० ने कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम जब नमाज़ में दाख़िल होते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ्
से सर उठाते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते। (जिल्द : २, स० २४)

-٦٦ (٣) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ ثنا أبو العباس محمد بن
يعقوب ثنا أبو الحسن محمد بن سنان القزاز البصري ببغداد ثنا أبو
عاصم عن عبد الحميد بن جعفر حدثنى محمد عمر بن عمرو بن
عطاء قال سمعت ابا حميد الساعدي في عشرة من اصحاب رسول
الله صلى الله عليه وسلم فيهم أبو قتادة الحارث بن ربعى فقال أبو
حميد كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة رفع
يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم يكبر(السنن الكبرى -
للإمام البيهقي –ص: ٢٤: ج:٢)

हदीस ६६ (३) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने ख़बर दी, उन्हें अबू
अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें अबुल हसन मुहम्मद बिन सिनान
क़ज़्ज़ाज़ बसरी ने बग़दाद में, उन्हें अबू आसिम ने उन्हें अब्दुल हमीद बिन
ज'फर ने उन्हें मुहम्मद उमर बिन अम्र बिन अता ने। कहा मैंने अबू हुमैद
साइदी रज़ि० को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा
रज़ि० की मौजूदगी में सुना उन में अबू क़तादा रज़ि० यानी हारिस बिन
रिबई रज़ि० भी थे। अबू हुमैद रज़ि० ने फ़रमाया कि : रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो मोंढों के
बराबर रफ़ा यदैन करते फिर अल्लाहु अकबर कहते। (जिल्द : २, स० २४)

-٦٧ (٤) (اخبرناه) أبو الحسين على بن محمد بن عبد الله بن بشران
العدل ببغداد انبا أبو الحسين عبد الصمد بن على الطستى ثنا
محمد بن ربح بن سليمان البزار ثنا سليمان بن داؤد الهاشمي ثنا ابن
ابى الزناد عن موسى وهو ابن عقبة عن عبد الله بن الفضل القرشى
عن الاعرج عن عبيدالله بن ابى رافع عن على رضى الله تعالى عنه
قال كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلوة رفع يديه
حذو منكبيه وإذا اراد ان يركع وإذا رفع رأسه من الركوع

وكان لا يفعل ذلك في شي من سجوده وإذا قام من السجدتين مثل ذلك(السنن الكبرى - للإمام البيهقي - ص:٢٤ج:٢)

हदीस ६७ (४) : हमें अबुल हसन अली बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन बिशरान अदल ने बगदाद में खबर दी, उन्हें अब्दुस्समद बिन अली तस्ती ने, उन्हें मुहम्मद बिन रिब्ह बिन सुलेमान बज़्ज़ार ने, उन्हें सुलेमान बिन दाऊद हाशमी ने, उन्हें इब्ने अबी ज़िनाद ने, उन्हें मूसा ने जो इब्ने उक़्बा हैं, उन्हें अब्दुल्लाह बिन फज़ल कुरशी ने, उन्हें अ'रज ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अबी राफे ने उन्हें हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन करते और जब रुकूअ़ का इरादा करते और रुकूअ़ से सर उठाते और सज्दों में ऐसा नहीं करते थे और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो भी ऐसा ही करते थे (यानी रफ़ा यदैन करते मोंढो के बराबर) (जिल्द : २, स० २४)

٦٨- (٥) (اخبرنا) ابو زكريا ابن ابى اسحاق المزكي ثنا ابو العباس محمد بن يعقوب انبا الربيع بن سليمان انبا الشافعي انبا سفيان عن عاصم بن كليب قال سمعت ابى يقول حدثنى وائل بن حجر قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلوة يرفع يديه حذو منكبيه وإذا ركع وبعد ما يرفع راسه من الركوع قال وائل ثم اتيتهم في الشتاء فرايتهم يرفعون ايديهم في البرانس (السنن الكبرى - للإمام البيهقي -ص:٢٤ج:٢)

हदीस ६८ (५) : हमें अबू ज़करिया बिन अबी इसहाक़ मुज़की ने खबर दी, उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें रबी बिन सुलेमान ने उन्हें इमाम शाफई रह० ने, उन्हें सुफियान ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने उन्होंने कहा मैंने अपने वालिद को फरमाते हुए सुना कि मुझे वाइल बिन हुज्र रजि० ने खबर दी कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, जब आप नमाज़ शुरू करते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन करते और जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाने के बाद भी ऐसा ही करते।

वाइल रजि० कहते हैं फिर मैं सर्दियों के मौसम में आया तो मैंने देखा कि वह (सहाबा रजि०) चादरों के नीचे से ही रफ़ा यदैन करते थे।

(जिल्द : २, स० २४)

٦٩- (٦) (اخبرناه) ابو عبد الله الحافظ اخبرني ابو الوليد الفقيه ثنا عبد الله بن محمد ثنا محمد بن المثنى ثنا ابن ابى عدى عن سعيد (ح واخبرنا) ابو الحسن المقرى انبا الحسن بن محمد بن اسحاق ثنا يوسف بن يعقوب ثنا محمد بن المنهال ثنا يزيد بن زريع ثنا سعيد عن قتادة عن نصر بن عاصم الليثى عن مالك بن الحويرث قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا كبر رفع يديه حتى يحاذي هما فروع اذنيه وإذا ركع كذلك وإذا رفع راسه من الركوع كذلك(السنن الكبرى - للإمام البيهقي -ص:٢٥ج:٢)

हदीस ६९ (६) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज़ ने खबर दी, उन्हें अबू वलीद फक़ीह ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने, उन्हें मुहम्मद बिन मुसन्ना ने, उन्हें इब्ने अबी अदी ने, उन्हें सईद ने।

दूसरी सनद : हमें अबुल हसन मुकरी ने खबर दी, उन्हें हसन बिन मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने, उन्हें यूसुफ बिन याकूब ने उन्हें मुहम्मद बिन मिन्हाल ने, उन्हें यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने, उन्हें सईद ने, उन्हें कतादा ने उन्हें नस्र बिन आसिम लैसी ने, उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने वह फरमाते है किरसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक्बीरे तहरीमा और रुकूअ़ जाते वक़्त और रुकूअ़ से सर उठाने के वक़्त कानों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द : २, स० २५)

٧٠- (٧) (اخبرنا) على بن محمد بن عبد الله بن بشران العدل ببغداد انبا ابو على اسمعيل بن محمد الصفار ثنا عبد الكريم بن الهيثم ثنا ابو اليمان انبا شعيب بن ابى حمزة القرشى عن محمد بن مسلم بن عبيدالله بن شهاب الزهري قال اخبرني سالم ابن عبد الله عن عبد الله بن عمر بن الخطاب رضى الله عنه انه قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح التكبير في الصلوة رفع

يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذو منكبيه ثم إذا كبر للركوع
فعل مثل ذلك ثم إذا قال سمع الله لمن حمده فعل مثل ذلك وقال ربنا
ولك الحمد ولا يفعل ذلك حين يسجد ولا حين يرفع رأسه من
السجود(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٢٦ج:٢)

हदीस ७० (७) : हमें अली बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन बिशरान अदल ने बग़दाद में ख़बर दी, उन्हें अबू अली इस्माईल बिन मुहम्मद सफ़्फ़ार ने, उन्हें अबदुल करीम बिन हैसेम ने, उन्हें अबू यमान ने, उन्हें शुऐब बिन अबी हम्ज़ा कुरशी ने, उन्हें मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन उबैदुल्लाह बिन शिहाब ज़ुहरी ने, उन्होंने कहा मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से हदीस सुनाई, उन्होंने कहा कि मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आपने **अल्लाहु अकबर** कह कर नमाज़ शुरू की, और अल्लाहु अकबर कहते वक़्त दोनों हाथ उठाए यहां तक कि उन को मोंढों के बराबर कर दिया और रुकूअ् की तक्बीर के वक़्त भी ऐसा ही किया और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो ऐसा ही किया और फरमाया **रब्बना व लकल हम्द।** और सज्दा करते वक़्त ऐसा नहीं करते थे (यानी रफ़ा यदैन नहीं करते थे) और न जब सज्दा से सर उठाते वक़्त। (जिल्द : २, स० २६)

٧١- (٨) (اخبرنا) أبو طاهر الفقيه من اصله انبأ أبو بكر محمد
بن الحسين القطان ثنا عبد الرحمن بن بشر ثنا عبد الرزاق انبأ ابن
جريج اخبرني ابن شهاب عن سالم ان ابن عمر كان يقول كان
رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة رفع يديه حتى
تكونا حذو منكبيه ثم كبر وساق الحديث(السنن الكبرى -
للإمام البيهقي – ص: ٢٦ج:٢)

हदीस ७१ (८) अबू ताहिर फ़कीह ने अपनी असल किताब से बयान किया, उन्हें अबू बकर मुहम्मद बिन हुसैन कत्तान ने बताया, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन बिश्र ने उन्हें अब्दुर्रज़्ज़ाक ने, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें इब्ने उमर रज़ि० ने उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो रफ़ा यदै

किया करते, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते थे, फिर रावी ने पूरी हदीस बयान की। (जिल्द : २, स० २६)

٧٢- (٩) (واخبرنا) محمد بن عبد الله الحافظ ثنا أبو عبد الله
محمد بن يعقوب ثنا ابراهيم بن ابى طالب ثنا محمد بن رافع ثنا
عبد الرزاق انبأ ابن جريج حدثنى ابن شهاب عن سالم بن عبد الله
ان ابن عمر رضى الله عنهما قال كان رسول الله صلى الله عليه
وسلم إذا قام للصلوة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم كبرو
إذا اراد ان يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع من الركوع فعل مثل ذلك
ولا يفعله حين يرفع رأسه من السجود(السنن الكبرى - للإمام
البيهقي – ص:٢٦ج:٢)

हदीस ७२ (६) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने ख़बर दी, उन्हें अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें इब्राहीम बिन अबी तालिब ने उन्हें मुहम्मद बिन राफ़े ने, उन्हें अब्दुर्रज़्ज़ाक ने, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि इब्ने उमर रज़ि० का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथ अपने दोनों मोंढों तक उठा के **अल्लाहु अकबर** कहते, और जब रुकूअ् से सर उठाते तब भी ऐसा ही करते और जब सज्दा से सर उठाते तो ऐसा नहीं करते। यानी रफ़ा यदैन सज्दों के दर्मियान नहीं करते थे। (जिल्द २, स० २६)

٧٣- (١٠) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ اخبرني أبو النضر الفقيه
ثنا محمد بن نصر وابراهيم بن على قالا ثنا يحيى بن يحيى انبأ
خالد بن عبد الله عن خالد يعنى الحذاء عن ابى قلابة انه رأى
مالك بن الحويرث إذا صلى كبر ثم رفع يديه وإذا اراد ان يركع
رفع يديه وإذا رفع رأسه من الركوع رفع يديه وحدث ان رسول الله
صلى الله عليه وسلم كان يفعل هذا(السنن الكبرى - للإمام
البيهقي –ص:٢٧ج:٢)

हदीस ७३ (१०) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने ख़बर दी, उन्हें अबू

नज़्र फ़कीह ने, उन्हें मुहम्मद बिन नस्र ने और इब्राहीम बिन अली ने, ने कहा हमें यह्या बिन यह्या ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद बिन अब्दुल ने, उन्हें ख़ालिद हज़्ज़ा ने, उन्हें अबू क़िलाबा ने, उन्होंने मालिक हुवैरिस को देखा कि जब उन्होंने नमाज़ के लिए तक्बीर कही तो दोनों हाथ उठाए फिर जब रुकूअ़ का क़स्द किया और रुकूअ़ से उठाया तब भी दोनों हाथ उठाए और बयान किया कि रसूलुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा ही किया करते थे। इस हदीस **"काना यफ़अलु"** मौजूद है जो माज़ी इस्तिम्रारी है कि आप हमेशा यदैन किया करते थे। (जिल्द : २, स० २७)

-٧٤ (١١) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ انبأ أبو الحسن احمد بن حمد العنزي ثنا عثمان بن سيد ثنا عبد الله بن رجاء ثنازائدة ثنا اصم بن كليب الجرمى قال اخبرني ابى ان وائل بن حجر اخبره ال قلت لانظرن إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلى ال فنظرت إليه قام وكبر ورفع يديه وذكر الحديث وقال في خره ثم جئت بعد ذلك بزمان فيه برد فرأيت الناس عليهم جل ثياب تحرك ايديهم من تحت الثياب ◆ ورواه سفيان بن عيينة عن اصم وقال في الحديث ثم اتيتهم في الشتاء فرأيتهم يرفعون ايديهم في البرانس(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٢٧- ٢٨ج:٢)

हदीस ७४ (११) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने ख़बर दी, उन्हें अ हसन अहमद बिन मुहम्मद अंजी ने, उन्हें उस्मान बिन सईद ने, अब्दुल्लाह बिन रजा ने, उन्हें ज़ाइदा ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब जर्मी उन्होंने कहा मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी कि वाइल बिन हुज्र रज़ि० ने मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को ज़रूर देखूंगा आप कैसे नमाज़ अदा करते हैं। मैंने आपकी तरफ़ देखा, आप खड़े तक्बीर कही और रफ़ा यदैन की फिर बाक़ी हदीस ज़िक्र की। उसके आ में है कि फिर मैं सख़्त सर्दी के मौसम में आया, और लोगों को देखा बड़े कपड़े पहने हुए। (उसके बावजूद) कपड़ों के अन्दर उनके हाथ रफ़ के लिए हरकत करते थे। और सुफ़ियान बिन उयैना ने आसिम से

अल्फ़ाज़ नक़ल किए हैं "फिर मैं सर्दियों के मौसम में उनके पास आया तो मैंने देखा वह चादरों के नीचे से रफ़ा यदैन करते थे। (जिल्द २, स० २७, २८)

-٧٥ (١٢) (اخبرنا) على بن محمد بن عبد الله بن بشران العدل ببغداد انبأ أبو جعفر الرزاز انبأ جعفر بن محمد بن شاكر ثنا عفان ثنا همام ثنا محمد بن جحادة عن عبد الجبار بن وائل ومولى لهم انهما حدثاه عن ابيه وائل بن حجرانه رأى النبي صلى الله عليه وسلم حين دخل في الصلوة كبر قال أبو عثمان وصف همام حيال اذنيه ثم التحف بثوبه ثم وضع يده اليمنى على يده اليسرى فلما اراد ان يركع اخرج يديه من الثوب ورفعهما فكبر فلما قال سمع الله لمن حمده رفع يديه فلما سجد سجد بين كفيه(السنن الكبرى - للإمام البيهقي –ص:٢٨ج:٢)

हदीस ७५ (१२) : हमें अली बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन बिशरान अद्ल ने ख़बर दी बग़दाद में, उन्हें अबू ज'फ़र रज़्ज़ाज़ ने, उन्हें ज'फ़र बिन मुहम्मद बिन शाकिर ने उन्हें अफ़्फ़ान ने, उन्हें हम्माम ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुहादा ने, उन्हें अब्दुल जब्बार बिन वाइल और उनके मौला ने, उन दोनों ने अपने वालिद वाइल बिन हुज्र रज़ि० से रिवायत किया कि उन्होंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप ने नमाज़ शुरू करते वक़्त अपने दोनों हाथ उठाए और **अल्लाहु अकबर** कहा। इस हदीस के रावी हम्माम का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों हाथ कानों तक उठाए, फिर चादर ओढ़ ली। उसके बाद सीधा हाथ उलटे हाथ पर रखा, फिर आपने चादर में से हाथ बाहर निकाल कर दोनों कानों तक उठा कर तक्बीर कही, उसके बाद रुकूअ़ में गये और बहालते क़याम **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** पढ़ कर रफ़ा यदैन किया और आपने दोनों हथेलियों के दर्मियान में सज्दा किया। (जिल्द २, स० २८)

-٧٦ (١٣) (اخبرناه) أبو الحسين بن بشران العدل ببغداد انبأ اسمعيل بن محمد الصفار وابو جعفر محمد بن عمرو الرزاز قالا ثنا سعدان بن نصر المخرمى ثنا سفيان بن عيينة عن الزهري عن سالم

عن ابيه قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلوة رفع يديه حتى يحاذي منكبيه وإذا اراد ان يركع وبعد ما يرفع من الركوع ولا يرفع بين السجدتين(السنن الكبرى - للإمام البيهقي ص:٦٩ج:٢)

हदीस ७६ (१३) : हमें अबुल हसन बिन बिशरान अल अदल ने बग़दाद में खबर दी, उन्हें इस्माईल बिन मुहम्मद सफ़्फ़ार और अबू जफ़र मुहम्मद बिन अम्र रज़्ज़ाज़ दोनों ने कहा हमें सअ्दान बिन नस्र मख़रमी ने खबर दी उन्हें सुफियान बिन उयैना ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उनको उनके वालिद (अब्दुल्लाह रज़ि०) ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, जब आप नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ् का इरादा करते और रुकूअ् से सर उठाने के बाद मोंढों कि बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। और सज्दों के दर्मियान रफ़ा यदैन नहीं किया करते थे।

(जिल्द २, स० ६६)

٧٧- (١٤) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ انبأ الحسن بن حليم المروزى ثنا ابو الموجه ثنا عبدان ثنا عبد الله (ح واخبرنا) ابو عبد الله انبأ بكر بن محمد بن حمدان بمرو واللفظ له انبأ ابراهيم بن هلال ثنا على بن ابراهيم البنانى ثنا عبد الله انبأ يونس بن يزيد الايلى عن الزهري قال اخبرني سالم بن عبد الله عن ابن عمر قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام في الصلوة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم يكبر قال وكان يفعل ذلك حين يكبر للركوع ويفعل ذلك حين يرفع رأسه من الركوع ويقول سمع الله لمن حمده ولا يفعل ذلك في السجودقال وكان ابن المبارك يرفع يديه كذلك في الصلوت الخمس والتطوع والعيدين الجنائز(السنن الكبرى - للإمام البيهقي ص:٦٩ج:٢)

हदीस ७७ (१४) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने खबर दी, उन्हें हसन बिन हलीम मुरव्वज़ी ने, उन्हें अबू मौजा ने, उन्हें अब्दान ने, उन्हें अब्दुल्लाह ने।

(दूसरी सनद) हमें अबू अब्दुल्लाह ने खबर दी, उन्हें बकर बिन मुहम्मद बिन हम्दान ने मरवा नाम की जगह में और लफ़्ज़ उन्हीं के हैं। उन्हें

इब्राहीम बिन हिलाल ने, उन्हें अली बिन इब्राहीम बुनानी ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उन्हें यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें इब्ने उमर रज़ि० ने, उन्होंने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब नमाज में खड़े होते तो रफ़ा यदैन करते फिर **अल्लाहु अकबर** कहते यहाँ तक कि आपके दोनों हाथ मोंढों के बराबर हो जाते, इसी तरह जब रुकूअ् के लिए **अल्लाहु अकबर** कहते और रुकूअ् से सर उठाते (रफ़ा यदैन) करते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। और सज्दों के दर्मियान ऐसा नहीं करते थे। और उसने कहा कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक पाँचों नमाज़ों, नवाफ़िल, ईदैन और जनाइज़ में रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द : २, स० ६६)

٧٨- (١٥) (اخبرنا) محمد بن عبد الله الحافظ انبأ ابو عبد الله محمد بن عبد الله الصفار ثنا احمد بن مهدى ثنا ابو اليمان الحكم بن نافع قال اخبرني ابو بشر شعيب بن دينار عن ابى حمزة عن محمد بن مسلم بن عبيدالله بن شهاب الزهري اخبرني سالم ابن عبد الله عن عبد الله بن عمر بن الخطاب رضى الله عنهما قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح التكبير للصلوة رفع يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذاء منكبيه ثم إذا كبر للركوع فعل مثل ذلك ثم إذا قال سمع الله لمن حمده فعل مثل ذلك وقال ربنا ولك الحمد ولا يفعل ذلك حين يسجد(السنن الكبرى - للإمام البيهقي ص:٧٠ج:٢)

हदीस ७८ (१५) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने खबर दी, उन्हें अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सफ़्फ़ार ने, उन्हें अहमद बिन महदी ने, उन्हें अबू यमान हकम बिन नाफ़े ने, उन्हें अबू बिश्र शुऐब बिन दीनार ने, उन्हें अबू हम्ज़ा ने, उन्हें मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन उबैदुल्लाह बिन शिहाब जुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने, कहा कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, आपने अल्लाहु अकबर कह कर नमाज़ शुरू की और अल्लाहु अकबर कहते वक़्त दोनों हाथ उठाए यहाँ तक कि उनको मोंढों के बराबर कर दिया, और रुकूअ् की तक्बीर के वक़्त भी ऐसा ही किया, और जब

"समिअल्लाहुलिमन हमिदह" कहा तो भी ऐसा ही किया और फरमा
"रब्बना व लकल हम्द" और सज्दा में ऐसा नहीं करते थे। (यानी र
यदैन नहीं करते थे।) (जिल्द २, स० ७०)

७९- (१६) (اخبرنا) أبو الحسن على بن احمد بن عبدان انبأ احمد بن عبيد الصفار ثنا عبيد بن شريك وابن ملحان قالا ثنا يحيى بن بكير ثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله عن ابن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام للصلوة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم يكبر فإذا اراد ان يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع من الركوع فعل مثل ذلك ولا يفعله حين يرفع رأسه من السجود(السنن الكبرى - للإمام البيهقي — ص:٧٠ج:٢)

हदीस ७६ (१६) : हमें अबुल हसन अली बिन अहमद बिन अब्दान
खबर दी, उन्हें अहमद बिन उबैद सफ़्फ़ार ने, उन्हें उबैद बिन शरीक
अहमद बिन मिल्हान ने, उन दोनों ने कहा हमें यहया बिन बुकैर ने,
लैस ने, उन्हें उकैल ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्ल
ने उन्हें इब्ने उमर रज़ि० ने, बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि
सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो हमेशा अपने दोनों हाथ मोंढों
उठा कर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ् का इरादा फरमाते
भी ऐसा ही करते। (लेकिन) जब सज्दा से सर उठाते, तो ऐसा नहीं क
थे यानी सज्दों के दर्मियान रफा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द २, स०

८०- (१७) (اخبرنا) أبو عمرو الاديب انبأ أبو بكر الاسماعيلي انبأ أبو الحسين عبد الله بن محمد السمناني ثنا نصر بن على الجهضمى اخبرني عبد الاعلى بن عبد الاعلى انبأ عبد الله عن نافع عن ابن عمر انه كان إذا دخل في الصلوة رفع يديه وإذا ركع وعندما يرفع رأسه من الركوع وإذا قام من الركعتين رفع يديه ورفع ذلك إلى النبي صلى الله عليه وسلم(السنن الكبرى- للإمام البيهقي —ص:٧٠ج:٢)

हदीस ८० (१७) : हमें अबू अम्र अदीब ने खबर दी, उन्हें अबू बकर इस्माईली ने, उन्हें अबु हुसैन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद सम्नानी ने, उन्हें नस्र बिन अली जहज़मी ने, उन्हें अब्दुल आला बिन अब्दुल आला ने, उन्हें अब्दुल्लाह ने, उन्हें नाफे ने, उन्होंने कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ में दाखिल होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रफा यदैन करते। और जब रुकूअ् में जाते तब भी रफा यदैन करते और जब "समिअल्लाहुलिमन हमिदह" कहते तब भी रफा यदैन करते और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तब भी रफा यदैन करते। और इब्ने उमर रज़ि० ने कहा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ऐसा ही करते थे। (जिल्द : २, स० ७०)

८१- (१८) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ ثنا أبو العباس محمد بن يعقوب ثنا محمد بن اسحاق الصغانى ثنا عفان ثنا حماد بن سلمة ثنا ايوب ثنا نافع عن ابن عمر رضى الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا دخل في الصلوة رفع يديه حذو منكبيه وإذا ركع رفع راسه من الركوع(السنن الكبرى - للإمام البيهقي —ص:٧٠ج:٢)

हदीस ८१ (१८) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने खबर दी, उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें मुहम्मद बिन इसहाक सगानी ने, उन्हें अफ़्फान ने, उन्हें हम्माद बिन सलमा ने, उन्हें अय्यूब ने, उन्हें नाफे ने, उन्हें इब्ने उमर रज़ि० ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज में दाखिल होते और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ७०)

८२- (१९) (اخبرنا) أبو الحسن محمد بن الحسين العلوى انبأ احمد بن محمد بن الحسين الحافظ ثنا احمد بن يوسف السلمى ثنا عمر بن عبد الله بن رزين السلمى أبو العباس ثنا ابراهيم بن طهمان عن ايوب بن ابى تميمة وموسى بن عقبة عن نافع عن ابن عمرانه كان يرفع يديه حين يفتتح الصلوة وإذا ركع وإذا استوى قائما من ركوعه حذو منكبيه ويقول كان صلى الله عليه وسلم يفعل ذلك (السنن الكبرى - للإمام البيهقي — ص:٧٠- ٧١ج:٢)

हदीस ८२ (१६) : हमें अबुल हसन मुहम्मद बिन हुसैन अल्वी ने उन्हें अहमद बिन मुहम्मद बिन हसन हाफिज़ ने, उन्हें अहमद बिन यूसुफ़ सलमी ने, उन्हें उमर बिन अब्दुल्लाह बिन रज़ीन सलमी अबुल अब्बास ने, उन्हें इब्राहीम बिन मल्हान ने, उन्हें अय्यूब बिन अबू तमीमा और मूसा बिन उक्बा ने, उन्हें नाफ़े ने, उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० के मुतअल्लिक़ बताया कि वह हमेशा जब नमाज़ शुरू करते और रुकूअ् करते और रुकूअ् से सीधे खड़े हो जाते तो मौंढों के बराबर रफा यदैन करते और फरमाते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा ही करते थे। (जिल्द २, स० ७०, ७१

८२- (२०) (اخبرنا) ابو عمرو محمد بن عبد الله الاديب انبا ابو بكر الاسماعيلي حدثنى عبد الله بن وهب الدينورى واحمد ابن محمد بن عبد الكريم قالا ثنا ابو بشر اسحاق بن شاهين وقال الدينورى اسحاق بن ابى عمران الواسطي ثنا خالد ابن عبد الله عن خالد الحذاء عن ابى قلابة قال رأيت مالك بن الحويرث إذا صلى كبر ورفع يديه وإذا اراد ان يركع رفع يديه وإذا رفع رأسه من الركوع رفع يديه وحدثنا ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يصلى هكذا(السنن الكبرى - للإمام البيهقي –ص:٧١ج:٢)

हदीस ८३ (२०) : हमें अबू अम्र मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अदीब ने खबर सुनाई, उन्हें अबू बकर इस्माईली ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन वहब दैनूरी और अहमद बिन मुहम्मद बिन अब्दुल करीम ने, दोनों ने कहा कि हमें अबुल बिन इसहाक बिन शाहीन ने और दैनूरी इसहाक बिन अबी इमरान वास्ती ने कहा उन्हें खालिद बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें खालिद हज्जा ने, उन्हें अबू किलाबा ने उन्होंने कहा मैंने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० को देखा उन्होंने जब नमाज़ पढ़ी तो **अल्लाहु अकबर** कहा और रफा यदैन की और (इसी तरह) जब रुकूअ् का इरादा किया और रुकूअ् से सर उठाया तो रफा यदैन की और हमें हदीस सुनाई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे ही नमाज़ पढ़ा करते थे। (जिल्द २, स० ७

८३- (२१) (اخبرنا) ابو عبد الله الحسين بن عمر بن برهان وابو الحسن بن الفضل القطان وابو محمد عبد الله بن يحيى بن عبد الجبار السكرى ببغداد قالوا انبا اسمعيل بن محمد الصفار ثنا

الحسن بن عرفة ثنا خالد بن الحارث الهجيمى البصري عن سعيد بن ابى عروبة قال انبانا قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث انه قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه في صلوة إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع حتى يحاذي بهما فروع اذنيه (السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧١ج:٢)

हदीस ८४ (२१) : हमें अबू अब्दुल्लाह हुसैन बिन उमर बिन बुरहान और अबुल हसन बिन फज़ल कत्तान और अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन यह्या बिन अब्दुल जब्बार सकरी ने बग़दाद में, उन्होंने कहा हमें इस्माईल बिन मुहम्मद सफ़्फ़ार ने हमें हसन बिन अरफा ने, उन्हें खालिद बिन हारिस हुजैमी बसरी ने, उन्हें सईद बिन अबी अरूबा ने, उन्हें कतादा ने, उन्हें नस्र बिन आसिम ने उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप नमाज में जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो कानों के बराबर रफा यदैन किया करते थे। (जिल्द २ स० ७१)

८५- (२२) (اخبرنا) ابو الحسين بن بشران ببغداد انبا ابو جعفر محمد بن عمرو الرزاز ثنا جعفر بن محمد بن شاكر ثنا عفان ثنا همام ثنا محمد بن جحادة عن عبد الجبار بن وائل عن علقمة بن وائل ومولى لهم انهما حدثاه عن ابيه وائل بن حجرانه رأى النبي صلى الله عليه وسلم حين دخل في الصلوة كبر قال ابو عثمان وصف همام حيال اذنيه يعنى رفع اليدين ثم التحف بثوبه ثم وضع يده اليمنى على يده اليسرى فلما اراد ان يركع اخرج يديه من الثوب ورفعهما فكبر فلما قال سمع الله لن حمده رفع يديه فلما سجد سجد بين كفيه(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧١ ج:٢)

हदीस ८५ (२२) : हमें अबुल हुसैन बिन बिशरान ने बग़दाद में खबर दी उन्हें अबू ज'फर मुहम्मद बिन अम्र रज्ज़ाज़ ने उन्हें ज'फर बिन मुहम्मद बिन शाकिर ने, उन्हें अफ़्फ़ान ने, उन्हें हम्माम ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुहादा ने, उन्हें अब्दुल जब्बार बिन वाइल ने, उन्हें अल्कमा बिन वाइल और उनके मौला ने उन दोनों ने अपने वालिद वाइल बिन हुज्र रज़ि० से कि उन्होंने

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आपने नमाज़ शुरू करते वक़्त अपने दोनों हाथ उठाए और **अल्लाहु अकबर** कहा। इस हदीस के रावी हम्माम का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों हाथ कानों तक उठाए फिर चादर ओढ़ ली, उसके बाद दायाँ हाथ बाएं हाथ पर रखा। फिर आपने चादर में से हाथ बाहर निकाल के दोनों कानों तक उठा कर तक्बीर पढ़ी, उसके बाद में रुकूअ में गये, और हालते क्याम **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पढ़ कर रफा यदैन किया। और फिर आपने दोनों हथेलियों के दर्मियान में सज्दा किया। (जिल्द २, स० ७९)

٨٦- (٢٣) (اخبرنا) ابو الحسن على بن احمد بن عبدان انبا أحمد بن عبيدالصفار ثنا عثمان بن عمر الضبى ثنا مسدد ثنا عبد الواحد يعنى ابن زياد ثنا عاصم بن كليب عن ابيه عن وائل بن حجر الحضرمي قال اتيت النبي صلى الله عليه وسلم فقلت لا نظرن كيف يصلى فاستقبل القبلة وكبر ورفع يديه حتى كانتاحذو منكبيه ثم اخذ شماله بيمينه فلما اراد ان يركع رفع يديه حتى كانتا حذو منكبيه فلما ركع وضع يديه على ركبتيه فلما اراد ان يرفع رفع يديه حتى كانتا حذو منكبيه فلما سجد وضع يديه من وجهه ذلك الموضع فلما جلس افترش رجله اليسرى ووضع يديه اليسرى على فخذه اليسرى ووضع حد مرفقه اليمنى على فخذه اليمنى وعقد ثنتين وحلق واحدة واشار بالسبابة(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٢ج:٢)

हदीस ८६ (२३) : हमें अबुल हसन अली बिन अहमद बिन अब्दान ने ख़बर दी उन्हें अहमद बिन उबैद सफ़्फ़ार ने, उन्हें उस्मान बिन उमर ज़ब्बी ने, उन्हें मुसद्दद ने उन्हें अब्दुल वाहिद यानी इब्ने ज़ियाद ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें वाइल बिन हुज्र हज़रमी रज़ि० ने बताया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। मैंने कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को देखूंगा, आप किस तरह नमाज़ पढ़ते हैं तो (आप खड़े हुए और) क़िब्ला की तरफ़

मुँह किया। फिर दोनों हाथ उठाए कानों के बराबर, फिर दाहिने हाथ से बाएं हाथ को पकड़ा। फिर जब रुकूअ का क़स्द किया तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन की और दोनों हाथ घुटनों पर रखे, फिर जब रुकूअ से सर उठाया तो दोनों हाथों को उसी तरह उठाया। जब सज्दा किया तो हाथों को उसी मक़ाम पर रखा (यानी हालते सज्दा में हाथों को मोंढ़ों के बराबर रखा) फिर बैठे तो बायाँ पाँव बिछाया और बायाँ हाथ बायें रान पर रखा। और दाहिनी कुहनी के किनारे को दाहिनी रान पर रखा। और दो उंगलियों को बन्द कर लिया। (यानी छंगुलियां को और उसके पास वाली को। यानी खिंसर और बिंसर को) और हल्क़ा बांधा (उस्ता और अंगूठे का) और कलिमे की सब्बाबह उंगली से इशारा किया। (जिल्द : २, स० ७२)

٨٧- (٢٤) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا أبو العباس محمد بن يعقوب ثنا أبو الحسن محمد بن سنان القزاز البصري ببغداد ثنا أبو عاصم عن عبد الحميد بن جعفر قال حدثنى محمد بن عمرو بن عطاء قال سمعت ابا حميد الساعدي في عشرة من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فيهم ابو قتادة الحارث بن ربعى فقال أبو حميد الساعدي انا اعلمكم بصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا لم ما كنت اكثرنا له تبعا ولا اقد مناله صحبة قال بلى قالوا فاعرض علينا قال فقال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم يكبر حتى يقر كل عضو منه في موضعه معتدلا ثم يقرأ ثم يكبر ويرفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم يركع ويضع راحتيه على ركبتيه ثم يعتدل ولا ينصب راسه ولا يقنع ثم يرفع راسه فيقول سمع الله لمن حمده ثم يرفع يريه حتى يحاذي بهما منكبيه حتى يعود كل عضو منه إلى موضعه معتدلا ثم يقول الله اكبر ثم يهوى إلى الارض فيجافى يديه عن جنبيه ثم يرفع راسه فيثنى رجله اليسرى فيقعد عليها ويفتح اصابع رجليه إذا سجد ثم يعود ثم يرفع

فيقول الله اكبر ثم يثنى برجله فيقعد عليها معتدلا حتى يرجع أو يقر كل عظم موضعه معتدلا ثم يصنع في الركعة الاخرى مثل ذلك ثم إذا قام من الركعتين كبر ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه كما فعل أو كبر عند افتتاح الصلوة ثم يصنع مثل ذلك في بقية صلوته حتى إذا كان في السجدة التى فيها التسليم اخر رجله اليسرى وقعد متوركا على شقه الايسر فقالوا جميعا صدق هكذا كان يصلى رسول الله صلى الله عليه وسلم (السنن الكبرى - للإمام البيهقي –ص:٧٢ج:٢)

हदीस ८७ (२४) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज़ ने ख़बर दी उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें अबुल हसन मुहम्मद बिन सिनान क़ज़्ज़ाज़ बसरी ने बग़दाद में, उन्हें अबू आसिम ने, उन्हें अब्दुल हमीद बिन ज'फर ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने, उन्होंने कहा मैंने अबू हुमैद साइदी रज़ि० को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाब रज़ि० की मौजूदगी में कहते सुना, उनमें अबू क़तादा हारिस बिन रिबई रज़ि भी थे। हज़रत अबू हुमैद साइदी ने फरमाया मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ तुम से ज़्यादा जानता हूँ। उन्होंने कहा तुम हम से ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी न करते थे और न ही हम से पहले आप स० की सुहबत में आए। उन्होंने कहा हाँ क्यों नहीं उन्होंने कहा अच्छा बयान करो। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ की तरफ़ खड़े होते तो अपने दोनों हाथों को अपने कन्धों के बराबर उठाते फिर **अल्लाहु अकबर** कहते यहाँ तक कि हर हड्डी अपनी अपनी जगह पर क़रार पाती, फिर आप किरअत शुरू करते, फिर तक्बीर कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते और रुकूअ करते और दोनों हथेलियाँ अपने घुटनों पर रखते और पीठ सीधी करते और सर को पीठ के बराबर करते, न झुकाते न ऊंचा करते। फिर सर उठाते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। फिर मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते और सीधे खड़े हो जाते। यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती। फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर सज्दे के लिए ज़मीन की तरफ झुकते, तो दोनों हाथों को अपने पहलुओं से दूर

रखते। फिर सज्दे से सर उठाते और बाएं पाँव को बिछा कर उस पर बैठते और सज्दा के वक़्त उंगलियों को खुला रखते। फिर दूसरा सज्दा करते और **अल्लाहु अकबर** कह कर सर उठाते और बाएं पाँव को बिछा कर उस पर बैठते यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती या क़रार पा जाती फिर दूसरी रकअत में भी ऐसे ही करते। फिर जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते, जैसे नमाज़ शुरू करते वक़्त किया था। फिर इसी तरह बाक़ी नमाज़ में करते। यहाँ तक कि जब अख़ीर सज्दे से फ़ारिग़ होते, जिस के बाद सलाम होता है, अपना बायाँ पाँव निकालते और अपने बाएं पहलू पर तवर्रुक की हालत में बैठते। तमाम सहाबा रज़ि० ने तस्दीक़ की और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे ही नमाज़ पढ़ा करते थे।

(जिल्द २, स० ७२)

٨٨- (٢٥) (اخبرناه) أبو حازم الحافظ انبا أبو احمد الحافظ انبا أبو العباس محمد بن اسحاق الثقفى ثنا عبيدالله بن سعيد ومحمد ابن رافع قالا ثنا أبو عامر عبد الملك بن عمرو ثنا فليح حدثنى عباس بن سهل قال اجتمع محمد بن مسلمة وابو حميد وابو اسيد وسهل بن سعد فذكروا صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال أبو حميد انا اعلمكم بصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قام فكبر ورفع يديه ثم رفع يديه حين كبر للركوع ثم ركع ثم وضع يديه على ركبتيه كأنه قابض عليهما ووتر يديه فتحاهما عن جنبيه ولم يصب رأسه ولم يقنعه ثم رفع يديه فاستوى قائما حتى اخذ كل عظم موضعه ثم سجد وامكن جبهته وانفه ونحى يديه عن جنبيه ووضع كفيه حذو منكبيه حتى فرغ ثم جلس فافترش رجله اليسرى واقبل بصدر اليمنى على قبلته ووضع يده اليسرى على ركبته اليسرى ويده اليمنى على ركبته اليمنى واشار باصبعه(السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٢ج:٢)

हदीस ८८ (२५) : हमें अबू हाज़िम हाफिज़ ने ख़बर दी, उन्हें अबू

अहमद हाफिज़ ने खबर दी, उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन इस
सक्फी ने खबर दी। उन्हें अब्दुल्लाह बिन सईद और मुहम्मद बिन रा
दोनों ने कहा हमें अबू आमिर अब्दुल मलिक बिन अम्र बिन फुलैह ने,
अब्बास बिन सहल ने, उन्होंने कहा कि मुहम्मद बिन मस्लिमः रजि०,
हुमैद रजि० अबू उसैद रजि० और सहल बिन सअद रजि० जमा हुए
नबी स० की नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाया। हज़रत अबू हुमैद रजि० ने
कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ के मुतअ
तुम सबसे ज़्यादा जानता हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व स
नमाज़ के लिए खड़े हुए, तक्बीर कही और रफ़ा यदैन की। फिर जब
के लिए तक्बीर कही तो भी रफ़ा यदैन की। फिर रुकूअ् किया,
पकड़ने के अन्दाज़ में हाथ घुटनों पर रखे और हाथों को पहलुओं से
रखा। (और सर को पीठ के बराबर करते) न झुकाते न ऊंचा करते
(रुकूअ् से सर उठाया) और रफ़ा यदैन किया। आप सीधे खड़े हो
यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असल मक़ाम पर वापस आ गई। फिर
किया और पेशानी और नाक को ज़मीन पर रखा और हाथों को प
से दूर रखा और हथेलियों को मोंढों के बराबर रखा। यहाँ तक कि
से फारिग़ हुए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठे और बाए
को फैलाया और दाएं के मुँह को किब्ला की तरफ किया। और बाएं
को बाएं रान पर और दाएं हाथ को दाएं रान पर रखा और उंगली के
इशारा किया। (जिल्द २, स० ७३)

(٢٦) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا ابو عبد الله محمد بن
عبد الله الصفار الزاهد املاء من اصل كتابه قال قال ابو اسمعيل
محمد بن اسمعيل السلمى صليت خلف ابى النعمان محمد بن
الفضل فرفع يديه حين افتتح الصلوة وحين ركع وحين رفع راسه
من الركوع فسالته عن ذلك فقال صليت خلف حماد بن زيد فرفع
يديه حين افتتح الصلوة وحين ركع وحين رفع راسه من الركوع
فسالته عن ذلك فقال صليت خلف ايوب السختيانى فكان يرفع
يديه إذا افتتح الصلوة وإذا ركع وإذا رفع راسه من الركوع
فسالته فقال رأيت عطاء بن ابى رباح يرفع يديه إذا افتتح الصلوة

وإذا ركع وإذا رفع راسه من الركوع فسالته فقال صليت خلف
عبد الله بن الزبير فكان يرفع يديه إذا افتتح الصلوة وإذا ركع
وإذا رفع راسه من الركوع فسالته فقال عبد الله بن الزبير صليت
خلف ابى بكر الصديق رضى الله عنه فكان يرفع يديه إذا افتتح
الصلوة وذا ركع وإذا رفع راسه من الركوع وقال ابو بكر صليت
خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم فكان يرفع يديه إذا افتتح
الصلوة وإذا ركع وإذا رفع راسه من الركوع رواته ثقات (السنن
الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٢ج:٢)

हदीस ८६ (२६) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज़ ने खबर दी। उन्हें अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सफ्फार ज़ाहिद ने अपनी किताब से लिखवाया। अबू इस्माईल मुहम्मद बिन इस्माईल सुलमी ने कहा कि मैंने अबू नौमान मुहम्मद बिन फ़ज़ल के पीछे नमाज़ पढ़ी। उन्होंने नमाज़ शुरू करते वक़्त, रुकूअ् जाते वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन किया। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा तो उन्होंने कहा मैंने हम्माद बिन ज़ैद के पीछे नमाज़ पढ़ी तो उन्होंने नमाज़ शुरू करते वक़्त और रुकूअ् जाते वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन किया। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा। तो उन्होंने कहा कि मैंने अय्यूब सख़्तियानी के पीछे नमाज़ पढ़ी, तो वह शुरू नमाज़ के वक़्त रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा, तो उन्होंने कहा कि मैंने अता बिन अबी रबाह को देखा वह नमाज़ शुरू करते वक़्त और रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा, तो उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रजि० के पीछे नमाज़ पढ़ी वह नमाज़ शुरू करते वक़्त और रुकूअ् करते वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे। मैंने उन से उसके मुतअल्लिक पूछा तो अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रजि० ने कहा मैंने अबू बकर रजि० के पीछे नमाज़ पढ़ी वह शुरू नमाज़ में और रुकूअ् करते वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे। और हज़रत अबू बकर रजि० ने फ़रमाया

कि मैंने रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़
वह शुरू नमाज़ में और रुकूअ् जाते वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते
रफ़ा यदैन किया करते थे। (इसके तमाम रावी सिकह हैं) इस हदीस
सिर्फ़ रफ़ा यदैन का सुबूत ही नहीं मिलता बल्कि अबू बकर सिद्दीक़ र
जैसा जलीलुल क़द्र और हुज़ूर का यारे ग़ार हमेशा आपके साथ रहने
नकल कर रहा है जिस से मुतनाज़े फ़ीह रफ़ा यदैन के दवाम में कोई
बाकी नहीं रहता। (जिल्द २, स० ७३)

-१ (٢٧) (واخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا الامام ابو بكر
مد بن اسحاق بن ايوب انبأ محمد بن صالح بن عبد الله ابو
فر الكيليني الحافظ ثنا سلمة بن شبيب قال سمعت عبد الرزاق
ول اخذ اهل مكة الصلوة من ابن جريج واخذ ابن جريج من
طاء واخذ عطاء من ابن الزبير واخذ ابن الزبير من ابى بكر
صديق رضى الله عنه واخذ ابو بكر من النبي صلى الله عليه
لم قال سلمة (وثنا) احمد بن حنبل عن عبد الرزاق وزاد فيه
خذ النبي صلى الله عليه وسلم من جبرئيل واخذ جبرئيل عليه
سلام من الله تبارك وتمالى قال عبد الرزاق فقال ابن جريج يرفع
يه (السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٣- ٧٤ج:٢)

हदीस ६० (२७) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने ख़बर दी, उन्हें इ
अबू बकर अहमद बिन इस्हाक़ बिन अय्यूब ने, उन्हें मुहम्मद बिन सालेह
अब्दुल्लाह अबू ज'फ़र कैलीनी हाफ़िज़ ने, उन्हें सलमा बिन शुऐब ने, उ
कहा मैंने इमाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़ को सुना, कहते थे कि अह्ले मक्का ने न
इब्ने जुरैज से सीखी और इब्ने जुरैज ने अता से और अता ने इब्ने
रज़ि० से और इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० से और
सिद्दीक़ रज़ि० ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से।

और हमें हदीस सुनाई अहमद बिन हंबल ने, उन्हें अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने, और
यह लफ़्ज़ ज़ाइद है, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ जिब्रील
ली और जिब्रील ने अल्लाहु तबारक व तआला से। और इमाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़
फ़रमाते है कि : इब्ने जुरैज रफ़ा यदैन किया करते थे।(जिल्द : २, स० ७३)

-٩١ (٢٨) (اخبرنا) محمد بن عبد الله الحافظ ثنا ابو جعفر احمد
بن عبيدالله الحافظ وابو القاسم عبد الرحمن بن الحسن القاضى
الاسديان بهمدان قالا ثنا ابراهيم بن الحسين بن ديزيل الهمداني ثنا
آدم بن ابى اياس ثنا شعبة ثنا الحكم قال رأيت طاؤسا كبر فرفع
يديه حذو منكبيه عند التكبير وعند ركوعه وعند رفعه رأسه
من الركوع فسالت رجلا من اصحابه فقال انه يحدث به عن ابن
عمر عن عمر عن النبي صلىٰ الله عليه وسلم قال ابو عبد الله
الحافظ فالحديثان كلاهما محفوظان عن ابن عمر عن عمر عن
النبي صلى الله عليه وسلم وابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم
فان ابن عمر راى النبي صلى الله عليه وسلم فعله وراى اباه فعله
ورواه عن النبي صلى الله عليه وسلم(السنن الكبرى - للإمام
البيهقي – ص:٧٤ج:٢)

हदीस ६१ (२८) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने ख़बर दी, उन्हें अबू ज'फ़र अहमद बिन उबैद हाफ़िज़ और अबुल क़ासिम अब्दुर्रहमान बिन हसन क़ाज़ी असदी दोनों ने हम्दान में, उन्हें इब्राहीम बिन हुसैन बिन हैज़ील हम्दानी ने उन्हें आदम बिन अबू इलियास ने उन्हें शो'बा ने, उन्हें हकम ने उन्होंने कहा कि मैंने ताऊस को देखा उन्होंने **अल्लाहु अकबर** कहा और रफ़ा यदैन की (इसी तरह) रुकूअ् को जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त (भी) रफ़ा यदैन की। मैंने ताऊस के साथियों में से एक से पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि इब्ने उमर रज़ि० उमर रज़ि० से हदीस बयान करते हैं और वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करते हैं। अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ कहते है कि दोनों हदीसें महफ़ूज़ है (१) इब्ने उमर रज़ि० अन उमर रज़ि० अनिन्नबीये सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी और (२) इब्ने उमर रज़ि० अनिन्नबीये सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी क्योंकि इब्ने उमर रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रफ़ा यदैन करते देखा उसी तरह अपने वालिद हज़रत उमर रज़ि० को भी देखा और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया।

(जिल्द २, स० ७४)

٩٢- (٢٩) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ وابو سعيد بن ابى عمرو قالا ثنا أبو العباس محمد بن يعقوب ثنا بحر بن نصر ثنا عبد الله ابن وهب اخبرني ابن ابى الزناد عن موسى بن عقبة عن عبد الله بن الفضل الهاشمي عن عبد الرحمن الاعرج عن عبيدالله بن ابى رافع عن على بن ابى طالب رضى الله عنه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم انه كان إذا قام إلى الصلوة المكتوبة كبر ورفع يديه حذو منكبيه ويصنع مثل ذلك إذا قرأ قرامته واراد ان يركع ويصنعه إذا فرغ من الركوع ولا يرفع يديه في شئ من صلوته وهو قاعد وإذا قام من السجدتين رفع يديه كذلك وكبر

وقد روينا هذا الحديث عن ابى موسى الاشعري وجابر عبد الله الانصاري وابى هريرة وانس بن مالك عن النبي صلى الله عليه وسلم (السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ص:٧٤ج:٢)

हदीस ६२ (२६) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज ने और अबू सईद बिन अबू अम्र और उन्हें अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें बहर बिन नस्र ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन वहब ने, उन्हें इब्ने अबी जिनाद ने, उन्हें मूसा बिन उक्बा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन फज़ल हाशमी ने, उन्हें अब्दुर्रहमान अ'रज ने उन्हें उबैदुल्लाह बिन अबू राफे ने, उन्हें अली बिन अबू तालिब ने, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फर्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो तक्बीर कहते और मौंढों के बराबर रफा यदैन करते, और उसी तरह जब किरअत से फ़ारिग होते और रुकूअ् का इरादा करते, तो उसी तरह रफा यदैन करते, और जब रुकूअ् से सर उठाते तो ऐसे ही रफा यदैन करते। और बैठने की हालत में हाथों को न उठाते, और जब दो रकअतें पढ़ कर उठते तो भी रफा यदैन करते और अल्लाहु अक्बर कहते।

और यह हदीस (रफा यदैन वाली) हम ने अबू मूसा अशअरी रजि० जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रजि०, अबू हुरैरह रजि० और अनस बिन मालिक रजि० से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान की है।

(जिल्द २, स० ७४)

٩٣- (٣٠) (اخبرنا) أبو عبد الله الحافظ انبأ محمد بن احمد بن موسى البخاري بنيسابور ثنا محمود بن اسحاق بن محمود البخاري ثنا محمد بن اسمعيل البخاري قال وقد روينا عن سبعة عشر نفسا من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم انهم كانوا يرفعون ايديهم عند الركوع فمنهم أبو قتادة الانصاري وابو اسيد الساعدي البدرى ومحمد بن مسلمة البدرى وسهل بن سعد الساعدي و عبد الله بن عمر بن الخطاب و عبد الله بن عباس بن عبد المطلب الهاشمي وانس بن مالك خادم رسول الله صلى الله عليه وسلم وابو هريرة الدوسى و عبد الله بن عمرو بن العاص و عبد الله بن الزبير بن العوام القرشي ووائل ابن حجر الحضرمي ومالك بن الحويرث وابو موسى الاشعري وابو حميد الساعدي الانصاري رضى الله تعالى عنهم (قال الشيخ) وقد روينا عن هؤلاء وعن ابى بكر الصديق وعمر بن الخطاب وعلى بن ابى طالب وجابر بن عبد الله الانصاري وعقبة بن عامر الجهنى و عبد الله بن جابر البياضي رضى الله عنهم (السنن الكبرى - للإمام البيهقي – ٧٤،٧٥ج:٢)

हदीस ६३ (३०) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज़ ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अहमद बिन मूसा बुखारी ने नीशापुर में, उन्हें महमूद बिन इसहाक बिन महमूद बुखारी ने, उन्हें मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी ने, उन्होंने कहा कि सतरह सहाबा रजि० से रिवायत है कि बेशक वह रुकूअ् को जाते वक्त और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन करते थे। उन में से चन्द एक यह हैं :

(१) अबू कतादा अंसारी रजि०
(२) अबू उसैद साइदी बदरी रजि०
(३) मुहम्मद बिन मस्लिमः बदरी रजि०
(४) सहल बिन सअद साइदी रजि०
(५) अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब रजि०
(६) अब्दुल्लाह बिन अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब हाशमी रजि०

(७) अनस बिन मालिक रज़ि० खादिमे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम०
(८) अबू हुरैरह रज़ि०
(९) अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि०
(१०) अब्दुल्लाह बिन जुबैर बिन अव्वाम कुरैशी रज़ि०
(११) वाइल बिन हुज्र हज़रमी रज़ि०
(१२) मालिक बिन हुवैरिस रज़ि०
(१३) अबू मूसा अल अशअरी रज़ि०
(१४) अबू हुमैद अस्साइदी अल अंसारी रज़ि०

शैख फरमाते हैं कि : मज़्कूरा सहाबा रज़ि० के अलावा
(१५) अबू बकर सिद्दीक रज़ि०
(१६) उमर बिन खत्ताब रज़ि०
(१७) अली बिन अबी तालिब०
(१८) जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रज़ि०
(१९) उक्बा बिन आमिर जुहनी रज़ि०
(२०) और अब्दुल्लाह बिन जाबिर बयाज़ी रज़ि अल्लाहु अन्हुम से रफ़ा यदैन मरवी है। (जिल्द : २, स० ७४,७५)

-९ (३१) (واخبرنا) محمد بن عبد الله حدثنى محمد بن صالح
ثنا يعقوب بن يوسف الاخرم ثنا الحسن بن عيسى انبأ ابن المبارك
انبأ عبد الملك بن ابى سليمان عن سعيد بن جبير انه سئل عن رفع
اليدين في الصلوة فقال هو شئ يزين به الرجل صلوته كان
اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفعون ايديهم في الافتتاح
وعند الركوع واذا رفعوا رؤسهم (السنن الكبرى للإمام البيهقي –
ص:٧٥ج:٢)

हदीस ६४ (३१) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, उ
मुहम्मद बिन सालेह ने, उन्हें याकूब बिन यूसुफ़ अख़रम ने, उन्हें हसन बि
ईसा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उन्हें अब्दुल मलिक बिन
सुलेमान ने कि सईद बिन जुबैर से नमाज़ में रफ़ा यदैन के मुतअल्लि
सवाल किया गया तो उन्होंने कहा यह वह चीज़ है कि आदमी उसके स

अपनी नमाज़ को मुज़ैयन करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० शुरू नमाज़ और रुकूअ के वक़्त और रुकूअ से सर उठाते वक़्त हमेशा रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ७५)

-٩٥ (٣٢) (اخبرنا) محمد بن عبد الله ثنا محمد بن احمد بن
موسى البخاري ثنا محمود بن اسحاق البخاري ثنا محمد بن
اسمعيل قال ويروى عن عشرة من اهل مكة واهل الحجاز واهل
العراق واهل الشام والبصرة واليمن انهم كانوا يرفعون ايديهم عند
الركوع ورفع الرأس منه. منهم سعيد بن جبير وعطاء بن ابى رباح
ومجاهد والقاسم بن محمد وسالم بن عبد الله بن عمر بن الخطاب
وعمر بن عبد العزيز والنعمان بن ابى عياش والحسن وابن سيرين
وطاؤس ومكحول و عبد الله بن دينار ونافع وعبيد الله بن عمرو
الحسن بن مسلم وقيس بن سعد وغيرهم عدة كثيرة قال الشيخ
وقد رويناه عن ابى قلابة وابى الزبير ثم عن مالك بن انس والاوزاعي
والليث بن سعد وابن عيينة ثم عن الشافعي ويحيى بن سعيد القطان
و عبد الرحمن بن مهدى و عبد الله بن المبارك ويحيى بن يحيى
واحمد بن حنبل واسحاق بن ابراهيم الحنظلي وعدة كثيرة من اهل
الآثار بالبلدان رحمهم الله تعالى (السنن الكبرى للإمام البيهقي –
ص:٧٥ج:٢)

हदीस ६५ (३२) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें मुहम्मद बिन अहमद बिन मूसा बुख़ारी ने, उन्हें महमूद बिन इसहाक बुख़ारी ने, उन्हें मुहम्मद बिन इसमाईल ने हदीस सुनाई कहा कि कई हज़रात अहले मक्का, अहले हिजाज़, अहले इराक़ और अहले शाम व बसरा के है जो रुकूअ जाते और रुकूअ से सर उठाते हुए रफ़ा यदैन किया करते थे। उन में से चन्द एक यह हैं :–

सईद बिन जुबैर रह०, अता बिन अबू रबाह रह०, मुजाहिद रह० कासिम बिन मुहम्मद रह०, सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब रज़ि०, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह०, नो'मान बिन अबू अय्याश, हसन बसरी, इबने सीरीन, ताऊस, मकहूल, अब्दुल्लाह बिन दीनार, नाफ़े, उबैदुल्लाह बिन

उम्म रज़ि०, हसन बिन मुस्लिम, क़ैस बिन सअद और इनके अलावा बहुत बहुत से अफ़राद हैं।

हज़रत शैख फ़रमाते हैं कि :

हम ने अबू किलाबा, अबू जुबैर, मालिक बिन अनस, औज़ाई, लैस बिन सअद, इब्ने उयैना, शाफ़ई, यह्या बिन सईद अल क़त्तान, अब्दुर्रहमान बिन महदी, अब्दुल्लाह बिन मुबारक, यह्या बिन यह्या, अहमद बिन हंबल, इस्हाक़ बिन इब्राहीम, और बहुत से उलमाए किराम व मुहद्देसीन से रिवायत ली हैं। (जिल्द २, स० ७५)

٩٦- (٣٣) (وحدثنا) ابو عبد الله الحافظ املاء ثنا ابو محمد عبد الرحمن بن حمدان الجلاب بهمدان ثنا ابو حاتم محمد بن ادريس الرازي ثنا وهب بن ابى مرحوم ثنا اسرائيل بن حاتم عن مقاتل بن حيان عن الاصبغ بن نباتة عن على بن ابى طالب رضى الله عنه قال لما نزلت هذه الآية على رسول الله صلى الله عليه وسلم (انا اعطيناك الكوثر فصل لربك وانحر) قال النبي صلى الله عليه وسلم لجبريل ما هذه النحيرة التى امرني بها ربي قال انها ليست بنحيرة ولكنه يامرك إذا تحرمت للصلوة ان ترفع يديك إذا كبرت وإذا ركعت وإذا رفعت رأسك من الركوع فانها صلوتنا وصلوة الملائكة الذين في السماوات السبع قال النبي صلى الله عليه وسلم رفع الايدى من الاستكانة التى قال الله تبارك وتعالى (فما استكانوا لربهم وما يتضرعون) وقد روى هذا والاعتماد على ما مضى وبالله التوفيق (السنن الكبرى للإمام البيهقي - (ج ٢ / ص ٧٥- ٧٦)

हदीस ६६ (३३) : हमको अबू अब्दुल्लाह ने इमलाअन बयान किया, उस ने कहा हम को अबू मुहम्मद अब्दुर्रहमान बिन हम्दान जल्लाब ने हम्दान में बयान किया उसने कहा हम को अबू हातिम मुहम्मद बिन इदरीस राज़ी ने बयान किया उस ने कहा हम से वहब बिन अबू मरहूम ने बयान किया। उनको इस्राईल बिन हातिम ने, उसको मक़ातिल बिन हय्यान, उसको अस्बग़ बिन नुबाता, उसको अली बिन अबू तालिब ने, अली बिन अबू तालिब

फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सूरत **'इन्ना आतैनाकल कौसर फ़सल्लि लिरब्बिका वन्हर'** नाज़िल हुई तो आपने जिब्रील से पूछा कि यह नुहैरह क्या चीज है? जिसका मुझे अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है? तो जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा कि यह नुहैरा नहीं बल्कि ख़ुदाए तआला ने आपको हुक्म दिया है कि जब आप तक्बीर तहरीमा कह लें तो रफ़ा यदैन करें और इसी तरह रुकूअ् को जाते वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन करें क्योंकि यही हमारी नमाज़ और दीगर फ़रिश्तों की नमाज़ है जो सातों आसमानों पर रहते हैं।

ख़ैर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रफ़ा यदैन इज्ज़ व इंकिसारी की एक सूरत है। जिसके बारे में इरशाद है :

"फ़मस्तकानू लेरब्बिहिम वमा यतज़र्रऊना०"

कि वह अपने रब के सामने न झुके न रोते। और तहक़ीक़ यह हदीस रिवायत की गई है और मोतमद मा सबक़ ही है। (जिल्द : २, स० ७५, ७६)

٩٧- (٣٤) (اخبرنا) ابو على الروذبارى انبا ابو بكر بن داسة قال ثنا ابو داود ثنا ابن المصفى الحمصى ثنا بقية ثنا الزبيدى عن الزهري عن سالم عن عبد الله بن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم يكبروهما كذلك فيركع ثم إذا اراد ان يرفع صلبه رفعهما حتى تكونا حذو منكبيه ثم قال سمع الله لمن حمده ولا يرفع يديه في السجود ويرفعهما في كل تكبيرة يكبرها قبل الركوع حتى تقضي صلاته (السنن الكبرى للإمام البيهقي - (ج ٢ / ص ٨٣)

हदीस ६७ (३४) : हमें अबू अली रौज़बारी ने ख़बर दी, उन्हें अबू बकर बिन दासा ने, उन्हें अबू दाऊद ने, उन्हें इब्ने मुसफ़्फ़ा हिम्सी ने, उन्हें बक़िया ने, उन्हें ज़ुबैदी ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते फिर रुकूअ् के वक़्त भी हाथ उठाते फिर जब रुकूअ् से पीठ उठाते तो भी

मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते। फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और सज्दों में रफ़ा यदैन न करते।

और रुकूअ से क़ब्ल हर तक्बीर में रफ़ा यदैन करते, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ पूरी हो जाती। (जिल्द २, स० ८३)

٩٨- (٣٥) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ انبا ابو بكر احمد بن اسحاق الفقيه انبا احمد بن ابراهيم ثنا ابن بكير ثنا الليث عن ابن ابى حبيب عن محمد بن عمرو بن حلحلة عن محمد بن عمرو بن عطاء انه كان جالسا مع نفر من اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فذكرنا صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ابو حميد الساعدي انا كنت احفظكم لصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم رأيته إذا كبر جعل يديه حذو منكبيه وإذا ركع امكن يديه من ركبتيه ثم هصر ظهره وذكر الحديث (السنن الكبرى للإمام البيهقي - (ج ٢ / ص ٨٤)

हदीस ९८ (३५) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने ख़बर दी, उन्हें अबू बकर अहमद बिन इसहाक फ़क़ीह ने, उन्हें अहमद बिन इब्राहीम ने, उन्हें इब्ने बुकैर ने, उन्हें लैस ने, उन्हें इब्ने अबी हबीब ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन हलहला ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की एक जमाअत के पास बैठे हुए थे कि उन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ का तज़्किरा चल निकला तो अबू हुमैद साइदी रज़ि० ने फ़रमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ तुम सबसे ज़्याद याद है। मैंने आप को देखा जब आप **अल्लाहु अकबर** कहते तो हाथ मोंढों के बराबर करते और जब रुकूअ करते तो हाथ घुटनों पर रखते फिर पीठ बराबर करते और रावी ने पूरी हदीस ज़िक्र की। (जिल्द २,स० ८४)

٩٩- (٣٦) (واخبرنا) ابو الحسين على بن محمد بن بشران العدل ببغداد انبا ابو جعفر محمد بن عمرو الرزاز ثنا حنبل بن اسحاق ثنا حجاج بن منهال ثنا همام ثنا محمد بن جحادة عن عبد الجبار بن وائل بن حجر عن ابيه عن النبى صلى الله عليه وسلم كان إذا دخل

فى الصلوة رفع يديه وكبر ثم التحف بثوبه ووضع اليمنى على اليسرى فإذا اراد ان يركع قال هكذا بثوبه واخرج يديه ثم رفعهما وكبر فلما اراد ان يسجد وقعت ركبتاه على الارض قبل ان تقعا كفاه فلما سجد وضع جبهته بين كفيه وجافى عن ابطيه وقال همام وثنا شقيق ثنا عاصم عن ابيه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال مثل هذا قال وفى حديث احدهما قال همام واكبر علمي انه فى حديث محمد بن جحادة فإذا نهض نهض على ركبتيه واعتمد على فخذيه (السنن الكبرى للإمام البيهقي - (ج ٢ / ص ٩٨-٩٩)

हदीस ९९ (३६) : हमें अबुल हुसैन अली बिन मुहम्मद बिन बिशरान अदल ने बग़दाद में ख़बर दी, उन्हें अबू जअ्फ़र मुहम्मद बिन अम्र रज़्ज़ाज़ ने, उन्हें हंबल बिन इसहाक ने, उन्हें हज्जाज बिन मिंहाल ने, उन्हें हम्माम ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुहादा ने, उन्हें अब्दुल जब्बार बिन वाइल बिन हुज्र ने अपने वालिद से कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में दाख़िल हुए तो रफ़ा यदैन की और **अल्लाहु अकबर** कहा। फिर दोनों हाथ कपड़े के अन्दर कर लिए फिर दाहिने हाथ को बाएं हाथ पर रखा फिर जब रुकूअ का इरादा किया तो कपड़े से हाथ निकाले फिर रफ़ा यदैन की और **अल्लाहु अकबर** कहा। जब सज्दे का इरादा किया तो दोनों घुटने हथेलियों से पहले ज़मीन पर रखे। जब सज्दा किया तो पेशानी को दोनों हथेलियों के दर्मियान रखा और हाथों को बग़लों से दूर रखा। हम्माम कहते हैं कि मेरे इल्म के मुताबिक मुहम्मद बिन जुहादा की हदीस में यह लफ़्ज़ है कि जब आप उठते तो घुटनों के बल उठते। और रानों का सहारा लेते। (जिल्द : २, स० ९८, ९९)

١٠٠- (٣٧) (اخبرنا) ابو الفتح هلال بن محمد بن جعفر الحفار ببغداد انبا ابو عبد الله الحسين بن يحيى بن عياش انبا على بن اشكاب ثنا ابو بدر شجاع بن الوليد حدثنى ابو خيثمة حدثنى الحسن بن الحر حدثنى عيسى بن عبد الله بن مالك عن محمد بن عمرو بن عطاء اخبرني مالك عن عياش او عباس بن سهل الساعدي انه كان فى مجلس فيه ابوه وكان من اصحاب النبي

صلى الله عليه وسلم وفي المجلس ابو هريرة وابو اسيد وابو حميد
الساعدي من الانصار انهم تذاكروا الصلوة فقال ابو حميد انا
اعلمكم بصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا كيف قال
اتبعت ذلك من رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا فارنا قال فقام
يصلى وهم ينظرون إليه فبدأ فكبر فرفع يديه نحو المنكبين ثم
كبر للركوع فرفع يديه ايضا حتى امكن يديه من ركبتيه غير
مقنع رأسه ولا مصوبه ثم رفع رأسه فقال سمع الله لمن حمده اللهم
ربنا لك الحمد فرفع يديه ثم قال الله اكبر فسجد فانتصب على
كفيه وركبتيه وصدور قدميه وهو ساجد ثم كبر فجلس فتورك
احدى قدميه ونصب قدمه الاخرى ثم كبر وسجد ثم كبر يعنى
قام ولم يتورك ثم عاد فركع الركعة الاخرى كذلك ثم جلس
بعد الركعتين حتى إذا هو اراد ان ينهض للقيام قام بتكبير ثم
ركع الركعتين الاخريين ثم سلم عن يمينه السلام عليكم ورحمة
الله وسلم عن شماله ايضا السلام عليكم ورحمة الله (السنن
الكبرى للإمام البيهقي - ج ٢ / ص ١٠٢- ١٠١)

हदीस १०० (३७) : हमें अबुल फतह हिलाल बिन मुहम्मद बिन ज[…]
हफार ने बग़दाद में ख़बर दी उन्हें अबू अब्दुल्लाह हुसैन बिन यहया […]
अय्याश ने उन्हें अली बिन अशकाब ने, उन्हें अबू बद्र शुजाअ् बिन व[…]
ने, उन्हें अबू ख़ैसमा ने, उन्हें हसन बिन हुर ने, उन्हें ईसा बिन अब्दुल्[…]
बिन मालिक ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने उन्हें मालिक ने अय्[…]
या अब्बास बिन सहल साइदी से वह एक मज्लिस में थे जिन में उन[…]
वालिद भी थे। और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहा[…]
रज़ि अल्लाहु अन्हुम में से हैं। मज्लिस में अबू हुरैरह रज़ि०, अबू उसै[…]
रज़ि० और अबू हुमैद साइदी रज़ि० भी शामिल थे। उन्होंने रसूलुल्[…]
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ का तज़्किरा किया तो अबू हु[…]
रज़ि० ने फरमाया मैं तुम सबसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्[…]
की नमाज़ को ज़्यादा जानता हूँ। उन्होंने पूछा कैसे? फरमाया यह मैं[…]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हासिल की। सहाबा रज़ि० ने कहा अच्छा भला हमें भी दिखाओ, पस अबू हुमैद नमाज़ के लिए खड़े हुए और दीगर सहाबा रज़ि० आपकी तरफ देख रहे थे। पस आपने नमाज शुरू की अल्लाहु अकबर कहा और मोंढों के बराबर रफा यदैन की फिर अल्लाहु अकबर कहा फिर रुकूअ् के लिए अल्लाहु अकबर कहा फिर भी रफा यदैन किया हत्ता कि अपने हाथों को घुटनों पर रखा अपने सर को न तो ऊंचा किया और न ही नीचा किया फिर सर को रुकूअ् से उठाया और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द** कहा पस अपने हाथों को बुलन्द किया फिर **अल्लाहु अकबर** कहा और सज्दा किया। सज्दा की हालत में आप हथेलियों, घुटनों और पाँव के अगले हिस्से पर वजन डाल कर झुके रहे फिर आप ने **अल्लाहु अकबर** कहा पस आप बैठे और एक कदम को बिछाया और दूसरे को खड़े रखा। फिर आपने **अल्लाहु अकबर** कहा और सज्दा किया। फिर **अल्लाहु अकबर** कहा और खड़े हुए। फिर दूसरी रकअत भी इसी तरह अदा की। फिर दो रकअत के बाद बैठे और जब खड़े होने का इरादा किया और **अल्लाहु अकबर** कहा फिर दूसरी दो रकअत भी पढ़ी फिर दाएं तरफ **अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि** कह कर सलाम फेरा इसी तरह बाएं तरफ भी **अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि** कहा।

(जिल्द : २, स० १०१, १०२)

١٠١- (٣٨) (اخبرنا) ابو عبد الله الحافظ ثنا على بن حمشاذ (قال
واخبرني) ابو سعيد احمد بن يعقوب الثقفى قالا انبأنا محمد ابن
ايوب انبأنا مسدد انبأ خالد بن عبد الله ثنا عاصم بن كليب عن
ابيه عن وائل بن حجر ان النبي صلى الله عليه وسلم قام إلى الصلوة
فكبر ورفع يديه حتى حاذى بهما اذنيه واخذ شماله بيمينه فلما
اراد ان يركع رفع يديه فلما رفع راسه من الركوع رفع يديه فلما
سجد وضع يديه فسجد بينهما ثم جلس فوضع يده اليسرى على
فخذه اليسرى ومرفقه اليمنى على فخذه اليمنى ثم عقد الخنصر
والبنصر ثم حلق الوسطى بالابهام واشار بالسبابة (السنن الكبرى
للإمام البيهقي - ج ٢ / ص ١٣١)

हदीस १०१ (३८) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज़ ने ख़बर दी, उन्हें अली बिन हमशाज़ और अबू सईद अहमद बिन याकूब सक़्फी ने, दोनों ने कहा हमें मुहम्मद बिन अय्यूब ने ख़बर दी, उन्हें मुसद्दद ने, उन्हें खालिद बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज्र रज़ि० से कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों के बराबर रफा यदैन की और बाएं हाथ को दाएं हाथ के साथ पकड़ा। जब रुकूअ का इरादा किया तो रफा यदैन की और जब रुकूअ से सर उठाया तो भी रफा यदैन की। जब आपने सज्दा किया तो दोनों हाथ ज़मीन पर रखे और उन दोनों के दर्मियान सज्दा किया। फिर आप बैठे तो बायां हाथ बाएं रान पर और दाए कुहनी को दाएं रान पर रखा, छंगुलिया और साथ वाली उंगली को बन्द किया और फिर दर्मियान वाली उंगली और अंगूठे से हल्का बनाया और शहादत की उंगली से इशारा किया। (जिल्द २, स० १३१)

١٠٢- (٣٩) (اخبرنا) ابو عمرو الاديب انبا ابو بكر الاسماعيلي ثنا إبراهيم بن يوسف بن خالد حدثنا حسين بن معاذ حدثنا عبد الأعلى (ح واخبرنا) ابو عبد الله الحافظ حدثني ابو الحسن على بن عيسى بن إبراهيم الحيري حدثنا إبراهيم بن ابي طالب ثنا إسماعيل بن بشر بن منصور ثنا عبد الأعلى بن عبد الأعلى عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر كان إذا دخل في الصلوة كبر ورفع يديه وإذا ركع رفع يديه وإذا قال سمع الله لمن حمده رفع يديه وإذا قام من الركعتين رفع يديه ورفع ذلك ابن عمر إلى النبي صلى الله عليه وسلم (السنن الكبرى للإمام البيهقي- (ج ٢ / ص ١٣٦)

हदीस १०२ (३६) : हमें अबू अम्र अदीब ने ख़बर दी, उन्हें अबू बक्र इस्माईली ने, उन्हें इब्राहीम बिन यूसुफ़ बिन खालिद ने, उन्हें हुसैन बिन मुआज़ ने, उन्हें अब्दुल आला ने।

दूसरी सनद : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफिज़ ने ख़बर दी, उन्हें अबू हसन अली बिन ईसा बिन इब्राहीम हैरी ने, उन्हें इब्राहीम बिन अबी तालिब ने, उन्हें इस्माईल बिन बिश्र बिन मन्सूर ने, उन्हें अब्दुल आला बिन अब्दु

आला ने, उन्हें उबैदुल्लाह ने, उन्हें नाफ़े ने कि इब्ने उमर रज़ि० जब नमाज़ में दाखिल होते तक्बीर कहते और रफा यदैन करते। जब रुकूअ करते तो (भी) रफा यदैन करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तो भी रफा यदैन करते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो भी रफा यदैन करते और हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने मरफूअन यह बताया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ऐसे ही किया करते थे।(जिल्द २, स० १३६)

١٠٣- (٤٠) (اخبرنا) ابو الحسن محمد بن الحسين بن الفضل القطان ببغداد انبا اسمعيل بن محمد الصفار ثنا عبد الله بن محمد بن شاكر ثنا ابو اسامة ثنا عبد الحميد بن جعفر ثنا محمد بن عمرو بن عطاء قال سمعت ابا حميد يقول كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة استقبل القبلة ثم رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم يقول الله اكبر وإذا ركع كبر حين يركع ويرفع يده ثم عدل صلبه فلم يصوبه ولم يقنعه ثم رفع رأسه فقال سمع الله لمن حمده ثم رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم اعتدل حتى جاء كل عضو إلى موضعه معتدلا ثم يفعل في الركعة الاخرى مثل ذلك حتى إذا قام من الركعتين كبر ورفع يديه كما صنع في ابتداء الصلوة حتى إذا كانت السجدة التى تكون خلة الصلوة رفع رأسه فيها وقعد متوركا (السنن الكبرى للبيهقي - ج ٢ / ص ١٣٧)

हदीस १०३ (४०) : हमें अबुल हसन मुहम्मद बिन हुसैन बिन फज़्ल क़त्तान ने बग़दाद में ख़बर दी, उन्हें इसमाईल बिन मुहम्मद सफ़्फ़ार ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन शाकिर ने ख़बर दी, उन्हें अबू उसामा ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल हमीद बिन जअ्फर ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने ख़बर दी कि मैंने अबू हुमैद रज़ि० को कहते हुए सुना के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते ी किब्ला की तरफ मुँह करते, फिर मोंढों के बराबर रफा यदैन करते और फेर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ करते तो **अल्लाहु अकबर** कहते ौर रफा यदैन करते फिर अपनी पीठ बराबर की, न तो उसको ज़्यादा

झुकाया न ही बुलन्द रखा। फिर अपने सर को रुकूअ् से उठाया … समिअल्लाहुलिमन हमिदह कहा। फिर मोंढों के बराबर दोनों हाथ उठा… फिर सीधे खड़े हो गये यहाँ तक कि हर जोड़ अपनी असली जगह पर … गया। फिर उसी तरह दूसरी रकअत में करते, फिर जब दो रकअत पढ़ … खड़े हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा और रफ़ा यदैन की जिस तरह शुरू न… में किया। यहाँ तक जब आखिरी सज्दा हुआ जिसके बाद नमाज़ खत्म … है, आप ने अपना सर उठाया और तवर्रुक बैठे। (जिल्द २, स० १३७)

-١٠… (٤١) (واخبرنا) أبو عبد الله الحافظ ثنا أبو العباس محمد … يعقوب ثنا محمد بن سنان القزاز ثنا أبو عاصم عن عبد الحميد … جعفر قال حدثنى محمد بن عمرو بن عطاء قال سمعت ابا … يد الساعدي في عشرة من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم … هم أبو قتادة الحارث بن ربعى فقال أبو حميد انا اعلمكم بصلوة … ول الله صلى الله عليه وسلم فذكر الحديث وذكر فيه رفع … يه حتى يحاذي بهما منكبيه إذا قام إلى الصلوة وعند الركوع … ند رفع الرأس منه قال ثم إذا قام من الركعتين كبر ورفع يديه … ى يحاذي بهما منكبيه كما فعل إذا كبر عند افتتاح الصلوة … صنع مثل ذلك في بقية صلوته (السنن الكبرى للإمام البيهقي ج ٢ / ص ١٣٧)

हदीस १०४ (४१) : हमें अबू अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने खबर दी, … अबुल अब्बास मुहम्मद बिन याकूब ने, उन्हें मुहम्मद बिन सिनान कज़… ने, उन्हें अबू आसिम ने, उन्हें अब्दुल हमीद बिन ज'फर ने उन्होंने कहा … मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने हदीस सुनाई कि मैंने अबू हुमैद साइदी … को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा रज़ि० … मौजूदगी में सुना, उनमें अबू क़तादा हारिस बिन रिबई रज़ि० भी थे। … हुमैद ने कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को … से ज्यादा जानता हूँ। रावी ने पूरी हदीस ज़िक्र की, और उसमें ज़िक्र … कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े … और रुकूअ् के वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त मोंढों के बराबर …

यदैन की। फिर जब दो रकअत पढ़ कर खड़े हुए तो भी रफ़ा यदैन की जिस तरह नमाज़ शुरू करने के वक़्त किया था। फिर इसी तरह आपने बाक़ी नमाज़ में किया। (जिल्द २, स० १३७)

-١٠٥ (٤٢) (اخبرنا) أبو طاهر الفقيه انبأ أبو عثمان عمرو بن عبد الله البصري ثنا محمد بن عبد الوهاب ثنا سليمان بن داود الهاشمي ثنا عبد الرحمن بن ابى الزناد عن موسى بن عقبة عن عبد الله بن الفضيل الهاشمي عن عبد الرحمن الاعرج عن عبيدالله بن ابى رافع عن على بن ابى طالب رضى الله عنه قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلوة المكتوبة كبر ورفع يديه حذو منكبيه ويصنعه إذا قضى قراءته واراد ان يركع وإذا رفع راسه من الركوع فعل مثل ذلك ولا يرفع يديه في شئ من صلوته وهو قاعد وإذا قام من السجدتين كبر ورفع يديه كذلك (السنن الكبرى للإمام البيهقي - ج ٢ / ص ١٣٧)

हदीस १०५ (४२) : हमें अबू ताहिर फ़क़ीह ने खबर दी, उन्हें अबू उस्मान अम्र बिन अब्दुल्लाह बसरी ने, उन्हें मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने, उन्हें सुलेमान बिन दाऊद हाशमी ने, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन अबू ज़िनाद ने, उन्हें मूसा बिन उक़्बा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल हाशमी ने, उन्हें अब्दुर्रहमान अ'रज ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अबू राफ़े ने, उन्हें अली इब्ने अबू तालिब रज़ि० ने हदीस सुनाई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते। और इसी तरह करते जब किरअत पूरी करते और रुकूअ् करने का इरादा करते। और जब रुकूअ् से सर उठाते तो भी ऐसा ही करते। नमाज़ में बैठने की हालत में रफ़ा यदैन न करते। और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और उसी तरह रफ़ा यदैन करते। (जिल्द १, स० १३७)

❖❖❖

(१०) मुसनद अल हुमैदी

١٠- (١) حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِىُّ قَالَ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ سَمِعْتُ
زَيْدَ بْنَ وَاقِدٍ يُحَدِّثُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا أَبْصَرَ
رَجُلًا يُصَلِّى لَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ كُلَّمَا خَفَضَ وَرَفَعَ حَصَبَهُ حَتَّى يَرْفَعَ يَدَيْهِ.
(مسند الحميدي – ص:٢٧٧ج:٢)

हदीस १०६ (१) : हमें अबू हुमैदी ने ख़बर दी, उन्हें वलीद बिन मु... ने,उन्होंने कहा कि मैंने ज़ैद बिन वाक़िद को सुना, वह नाफ़े से हदीस ... करते थे कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब किसी आदमी को नमाज़ ... हुए देखते, और वह रफ़ा यदैन न करता, तो आप रज़ि० उसे कंकरियों ... करते थे। यहाँ तक कि वह रफ़ा यदैन करता। (जिल्द २, स० २७...

١٠- (٢) حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِىُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ
كُلَيْبٍ الْجَرْمِىُّ قَالَ سَمِعْتُ أَبِى يَقُولُ سَمِعْتُ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ
الْحَضْرَمِىَّ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا افْتَتَحَ
الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَبَعْدَ مَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ،
وَرَأَيْتُهُ إِذَا جَلَسَ فِى الصَّلَاةِ أَضْجَعَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى ، وَنَصَبَ الْيُمْنَى ،
وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَبَسَطَهَا ، وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى
عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ ثِنْتَيْنِ ، وَحَلَّقَ حَلْقَةً وَدَعَا هٰكَذَا. وَنَصَبَ
الْحُمَيْدِىُّ السَّبَّابَةَ قَالَ وَائِلٌ : ثُمَّ أَتَيْتُهُمْ فِى الشِّتَاءِ فَرَأَيْتُهُمْ يَرْفَعُونَ
أَيْدِيَهُمْ فِى الْبَرَانِسِ (مسند الحميدي – ص:٣٩٢ج:٢)

हदीस १०७ (२) : हदीस बयान की हमें हुमैदी ने, वह कहते है... सुफ़ियान ने, वह कहते है हमें आसिम बिन कुलैब अल जरमी ने, उन्होंने ... कि मैं अपने वालिद को कहते हुए सुना कि मैंने हज़रत वाइल बिन ... रज़ि० से सुना कि उन्होंने कहा मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ... देखा कि जब आप ने नमाज़ शुरू की तो रफ़ा यदैन की और जब ... किया और रुकूअ़ से सर उठाया तो रफ़ा यदैन की और मैंने देखा कि...

आप बैठे नमाज़ में तो बाएं क़दम को बिछा लिया और दाएं को खड़ा किया और अपने दाएं हाथ को दाएं रान पर और बाएं हाथ को बाएं रान पर रखा और दो उंगलियों को बन्द किया और हल्का बनाया और दुआ पढ़ी। इसी तरह हुमैदी ने इशारा से समझाया हज़रत वाइल रज़ि० कहते हैं कि मैं फिर सर्दियों में आया तो देखा कि वह अपने हाथों को कपड़ों के अन्दर उठाते थे।
(जिल्द २, स० ३६२)

(११) मुसनद अबी अवाना

١٠٨- (١) حدثنا عبد الله بن أيوب المخرمي وسعدان بن نصر وشعيب بن عمرو في آخرين قالوا ثنا سفيان بن عيينة عن الزهري عن سالم عن أبيه قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلوة رفع يديه حتى يحاذي بهما وقال بعضهم: حذو منكبيه، وإذا أراد أن يركع وبعد ما يرفع رأسه من الركوع لا يرفعهما وقال بعضهم، ولا يرفع بين السجدتين والمعنى واحد.
(ص:٤٢٣ ج:١)

हदीस १०८ (१) : हमें अब्दुल्लाह बिन अय्यूब मख़रमी, सअ़दान बिन नस्र, और शुऐब बिन अम्र ने हदीस सुनाई, उन्हें सुफ़ियान बिन उयैना ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने उन्हें उनके वालिद ने, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ़ का इरादा करते और रुकूअ़ से सर उठाने के बाद मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। और दो सज्दों के दर्मियान नहीं करते थे। बाज़ रावियों ने कहा कि सज्दों के दर्मियान रफ़ा यदैन न करते थे और दोनों के मानी एक ही है। (जिल्द : १, स० ४२३)

١٠٩- (٢) حدثنا الربيع قال ثنا الشافعي أن مالك أخبره عن ابن شهاب عن سالم عن أبيه أن النبي صلى الله عليه وسلم كان اذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه واذا رفع راسه من الركوع رفعهما وكان لا يفعل ذلك في السجود. (ص:٤٢٤ ج:١)

हदीस १०९ (२) : हमें रबीअ़ ने उन्हें शाफ़ई रह० ने, उन्हें मालिक रह०

ने उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने, उन्होंने अपने वालिद से कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। और सज्दों में ऐसा नहीं करते थे। (जिल्द : १, स० ४२४)

١١٠- (٣) حدثنا اسحاق بن ابراهيم الصنعاني قال: انبأ عبد الرزاق قال اخبرني ابن جريج قال حدثني ابن شهاب عن سالم ان ابن عمر كان يقول كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا قام الى الصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم كبر، واذا اراد ان يركع فعل مثل ذلك واذا رفع من الركوع فعل مثل ذلك، ولا يفعله حين يرفع رأسه من السجود. (ص:٤٢٤ ج:١)

हदीस ११० (३) : हमें इसहाक़ बिन इब्राहीम सनआनी ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें इब्ने उमर रज़ि० ने आप फ़रमाया करते थे 'के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो हमेशा मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते थे फिर आप **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ़ का इरादा करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो भी रफ़ा यदैन किया करते थे। जब सज्दे से सर उठाते तो ऐसा नहीं किया करते थे। (जिल्द : १, स० ४२४)

١١١- (٤) حدثنا ابو محمد يحيى بن اسحاق ابن سافري واحمد بن الوريد الفحام قالا ثنا زكريا بن عدي قال انبأ ابن المبارك عن يونس ومعمر وعبيد الله ابن عمر ومحمد ابن أبي حفصة عن الزهري عن سالم عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم انه كان يرفع يديه إذا افتتح الصلاة واذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع، ولا يفعل ذلك بين السجدتين. (ص:٤٢٤ ج:١)

हदीस १११ (४) : हमें अबू मुहम्मद यहया बिन इस्हाक़ बिन साफ़री और अहमद बिन वरीद फ़हहाम ने हदीस सुनाई, उन दोनों ने कहा हमें ज़करिया बिन अदी ने, उन्हें इब्ने मुबारक ने, उन्हें यूनुस, मअमर, उबैदुल्लाह बिन उमर और मुहम्मद बिन अबी हफ़्सा ने हदीस सुनाई, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें इब्ने उमर रज़ि० ने कि नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते और दो सज्दों के दर्मियान ऐसा नहीं करते थे। (जिल्द : १, स० ४२४)

١١٢- (٥) حدثنا مسلم بن الحجاج قال ثنا يحيى بن يحيى قال ثنا خالد بن عبد الله عن خالد عن ابي قلابة انه راى مالك ابن الحويرث اذا صلى كبر ثم رفع يديه واذا اراد أن يركع رفع يديه وحدث أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يفعل هكذا. (ص:٤٢٦ ج:١)

हदीस ११२ (५) : हदीस बयान की हमें मुस्लिम बिन हज्जाज ने, वह कहते हैं कि हमें यहया बिन यहया ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें ख़ालिद ने, उन्हें अबू किलाबा ने, कि उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस को देखा कि जब उन्होंने नमाज़ पढ़ी, **अल्लाहु अकबर** कहा फिर रफ़ा यदैन की फिर जब रुकूअ़ का इरादा किया और रुकूअ़ से सर उठाया तो भी रफ़ा यदैन की। मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने हदीस सुनाई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह किया करते थे। (जिल्द : १, स० ४२६)

١١٣- (٦) حدثنا بشر بن موسى قال ثنا الحميدي قال ثنا معاذ بن هشام الدستوائي قال ثنا ابي عن قتادة عن نصر بن عاصم الليثي عن مالك بن الحويرث: أن نبي الله صلى الله عليه وسلم كان اذا دخل في الصلاة كبر، ثم رفع يديه حتى يجعلهما حيال أذنيه، وربما قال: حذاء اذنيه، فاذا ركع فعل مثل ذلك، واذا رفع رأسه من الركوع فعل مثل ذلك. (ص:٤٢٦ ج:١)

हदीस ११३ (६) : हमें बिश्र बिन मूसा ने ख़बर दी, उन्हें हुमैदी ने, उन्हें मुआज़ बिन हिशाम दस्तवाई ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें क़तादा ने, उन्हें नस्र बिन आसिम लैसी ने, उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने, कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ में दाख़िल होते तो हमेशा कानों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। और जब रुकूअ़ का इरादा करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो उसी तरह किया करते। यानी कानों के बराबर रफ़ा यदैन करते थे। (जिल्द : १, स० ४२६)

١١٤- (٧) حدثنا ابو قلابة قال ثنا عبد الصمد ابن عبد الوارث وابو الوليد ح وحدثنا ابو امية قال ثنا ابو الوليد كلاهما عن شعبة، عن قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك ابن الحويرث أن النبي صلى الله عليه وسلم كان اذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو اذنيه واذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع هذا لفظ ابي قلابة.
(ص:٤٢٦ ج:١)

हदीस ११४ (७) : हमें अबू किलाबा ने हदीस सुनाई, उन्हें अब्दुस्स बिन अब्दुल वारिस और अबुल वलीद ने, **दूसरी सनद** : हमें अबू उमैया हदीस सुनाई उन्हें अबुल वलीद ने, इन दोनों को शो'बा ने, उन्हें क़तादा उन्हें नस्र बिन आसिम ने, उन्हें मालिक बिन हुवैरिस ने, कि नबी अक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ़ क और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो कानों के बराबर रफ़ा यदैन करते।
(जिल्द : १, स० ४

١١٤- (٨) حدثنا معاوية بن صالح ومحمد ابن اسماعيل الصائغ وعثمان بن خرزاذ والصغاني قالوا: ثنا عفان قال: ثنا همام قال: ثنا محمد بن حجادة قال حدثني عبد الجبارين وائل عن علقمة بن وائل ومولى لهم أنهما حدثاه عن أبيه وائل بن حجر أنه راى رسول الله صلى الله عليه وسلم رفع يديه حين دخل في الصلاة فكبر ووصف تمام حيال أذنيه، ثم التحف بثوبه ثم وضع يده اليمنى على اليسرى فلما اراد أن يركع أخرج يديه من الثوب، ثم رفعهما وكبر فركع، فلما قال سمع الله لمن حمده رفع يديه فلما سجد سجد بين كفيه. (ص:٤٢٨ ج:١)

हदीस ११५ (८) : हमें मुआविया बिन सालेह और मुहम्मद बि इस्माईल साइग़, उस्मान बिन ख़रज़ाज़ और सग़ानी ने ख़बर दी उन्हें कहा हमें अफ़्फ़ान ने, उन्हें हम्माम ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुहादा ने, उ अब्दुल जब्बार बिन वाइल ने, उन्हें अल्क़मा बिन वाइल और उनके ए मौला ने, उन दोनों ने अपने वालिद वाइल इब्ने हुज्र रज़ि० से रिवायत कि

कि उन्होंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज में दाख़िल हुए तो रफ़ा यदैन की और तक्बीर कही। हम्माम ने बताया कि कानों के बराबर, फिर आपने कपड़ा लपेट लिया। फिर दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रखा फिर जब रुकूअ़ का इरादा किया तो कपड़े से हाथों को निकाला रफ़ा यदैन की और **अल्लाहु अकबर** कहा, फिर रुकूअ़ किया, जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो (भी) रफ़ा यदैन की और जब सज्दा किया तो दोनों हथेलियों के दर्मियान सज्दा किया। (जिल्द : १, स० ४२८)

(١٢) شرح السنة:

١١٦- (١) أخبرنا أبو عثمان الضبي،أنا أبو محمد الجراحي،نا أبوالعباس المحبوبي،نا أبو عيسى الترمذي،نا محمد بن بشار،ومحمد ابن المثنى قالا : نا يحيى بن سعيد، نا عبد الحميد بن جعفر،نا محمد ابن عمرو بن عطاء عن أبي حميد الساعدي قال: سمعته وهو في عشرة من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم احدهم : أبو قتادة بن ربعي يقول:أنا أعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا: ما كنت أقدمنا له صحبة،ولا أكثرنا له إتيانا قال : بلى ، قالوا : فاعرض ، فقال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة اعتدل قائما ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ، فإذا أراد أن يركع رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ، ثم قال : الله أكبر ، وركع، ثم اعتدل ، فلم يصب رأسه ، ولم يقنع ، ووضع يديه على ركبتيه ، ثم قال : سمع الله لمن حمده ، ورفع يديه ، واعتدل حتى يرجع كل عظم في موضعه معتدلا ، ثم هوى إلى الأرض ساجدا ، ثم قال : الله أكبر، ثم جافى عضديه عن إبطيه ، وفتخ أصابع رجليه ، ثم ثنى رجله اليسرى ، وقعد عليها ، ثم اعتدل حتى يرجع كل عظم في موضعه معتدلا ، ثم هوى ساجدا ، ثم قال : الله أكبر ، ثم ثنى رجله وقعد واعتدل حتى يرجع كل عضو في موضعه ، ثم نهض ،ثم صنع في الركعة الثانية مثل ذلك ، حتى إذا قام من السجدتين ، كبر ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه كما صنع حين افتتح الصلاة ، ثم

منع كذلك حتى كانت الركعة التي تنقضي فيها صلاته ، اخر رجله اليسرى ، وقعد على شقه متوركا ، ثم سلم.(شرح السنة- البغوي – ص:١٢، ١١ج:٣)

हदीस ११६ (१) : हमें उस्मान ज़ब्बी ने खबर दी, उन्हें अबू मुहम्मद जर्राही ने, उन्हें अबुल अब्बास महबूबी ने, उन्हें अबू ईसा तिर्मिज़ी रह० ने, उन्हें मुहम्मद बिन बश्शार और मुहम्मद बिन मुसन्ना ने, इन दोनों को यहया बिन सईद ने, उन्हें अब्दुल हमीद बिन जा'फर ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने, उन्होंने अबू हुमैद साइदी रज़ि० को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस सहाबा रज़ि० की मौजूदगी में कहते हुए सुना, उन में से एक अबू क़तादा रज़ि० भी थे, कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को तुम से ज़्यादा जानता हूँ उन्होंने कहा, तुम सुहबत के लिहाज़ से हम से मुक़द्दम नहीं और न ही तुम हम से ज़्यादा रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आते थे। उन्होंने कहा क्यों नहीं। तो मौजूद सहाबा रज़ि० ने कहा तुम पेश करो। आपने कहा : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो सीधे खड़े हो जाते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते। फिर जब रुकूअ् का इरादा करते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। और रुकूअ् करते न तो सर को ऊंचा करते, और न झुकाते और दोनों हाथ घुटनों पर रखते। फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और रफ़ा यदैन करते, और सीधे खड़े हो जाते, यहाँ तक कि हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती। फिर सज्दे के लिए ज़मीन की तरफ़ झुकते और **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर दोनों बाज़ुओं को अपने बग़लों से दूर रखते। और दोनों पैरों की उंगलियों को खुला रखा। फिर बाएं पैर को मोड़ा और उस पर बैठ गये फिर ऐतदाल किया। यहाँ तक कि हर जोड़ अपनी असली जगह पर आ गया। फिर सज्दा की तरफ़ झुके फिर **अल्लाहु अकबर** कहा फिर अपने पाँव को मोड़ा और उस पर बैठ गये और ऐतदाल किया हत्ता कि हर जोड़ अपनी जगह पर लौट आया। फिर आप उठे और दूसरी रकअत में भी ऐसे ही किया। यहाँ तक कि जब दो रकअतों से खड़े हुए, तो भी मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन की। जैसे शुरु नमाज़ में किया था। यहाँ तक कि जब आख़िरी रकअत पर पहुंचे जिसमें नमाज़ पूरी होती है, बायाँ पाँव को दायाँ पाँव के नीचे से निकाला और तवर्रुक बैठे यानी बायें सुरीन पर बैठे फिर सलाम फेरा। (जिल्द ३, स० ११, १२)

١١٧- (٢) اخبرنا أبو الحسن الشيرزي ، انا زاهر بن أحمد ،اناابو إسحاق الهاشمي ، انا أبو مصعب ، عن مالك ، عن ابن شهاب،عن سالم بن عبد الله عن عبد الله بن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه ، وإذا ركع ، وإذا رفع راسه من الركوع رفعهما كذلك ، وقال : سمع الله لمن حمده ، ربنا لك الحمد ، وكان لا يفعل ذلك في السجود.

شرح السنة - البغوي - ص:٢٠ ج:٣)

हदीस ११७ (२) : हमें अबुल हसन शीरज़ी ने ख़बर दी, उन्हें ज़ाहिर बिन अहमद ने, उन्हें अबू इसहाक़ हाशमी ने, उन्हें अबू मुस्अब ने, उन्हें मालिक ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा जब नमाज़ शुरू करते तो रफ़ा यदैन करते मोंढों तक और जब रुकुअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो इसी तरह रफ़ा यदैन करते और **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना लकल-हम्द"** कहा। और सज्दे में ऐसा नहीं करते थे। (जिल्द ३, स० २०)

١١٨- (٣) اخبرنا أبو سعد احمد بن محمد بن العباس الحميدي،انا أبو عبد الله محمد بن عبد الله الحافظ ، حدثني ابو الحسن علي بن عيسى بن إبراهيم الجيرمي ، نا إبراهيم بن ابي طالب ، نا سماعيل ابن بشر بن منصور ، حدثنا عبد الأعلى بن عبد الأعلى ، عن عبيد الله ابن عمر ، عن نافع أن ابن عمر كان إذا دخل في الصلاة كبر ورفع يديه ، وإذا ركع رفع يديه ، وإذا قال : سمع الله لمن حمده رفع يديه ، وإذا قام من الركعتين رفع يديه ، ورفع ذلك ابن عمر إلى النبي صلى الله عليه وسلم. هذا حديث صحيح ، أخرجه محمد ، عن عياش بن الوليد ، عن عبد الأعلى. (شرح السنة - البغوي - ص:٢١ ج:٣)

हदीस ११८ (३) : हमें अबू सअद अहमद बिन मुहम्मद बिन अब्बास हुमैदी ने ख़बर दी, उन्हें अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाफ़िज़ ने,

उन्हें अबुल हसन अली बिन ईसा बिन इब्राहीम जीरमी ने, उन्हें इब्राहीम बिन अबू तालिब ने, उन्हें इसमाईल बिन बिश्र बिन मन्सूर ने, उन्हें अब्दुल आला बिन अब्दुल आला ने उन्हें उबैदुल्लाह बिन उमर ने, उन्हें नाफे ने, कहा कि :

इब्ने उमर रजि० जब नमाज़ में दाख़िल होते तो **अल्लाह अकबर** कहते और रफा यदैन करते। और जब रुकूअ् का इरादा करते और जब **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कहते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो रफा यदैन करते। इब्ने उमर रजि० ने यह हदीस नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मरफूअ् बयान फरमाई। यह हदीस सही है इसको मुहम्मद ने अय्याश बिन वलीद से, उन्होंने अब्दुल आला से बयान फरमाई। (जिल्द 3, स० २१)

١١٩- (٤) أخبرنا عمر بن عبد العزيز ، أنا القاسم بن جعفر ، أنا أبو علي اللؤلؤي ، حدثنا أبو داود ، نا محمد بن المصفى الحمصي، نا بقية ، نا الزبيدي ، عن الزهري ، عن سالم عن عبد الله بن عمر قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ، ثم كبر ، وهما كذلك ، فركع ، ثم إذا أراد أن يرفع صلبه رفعهما حتى تكونا حذو منكبيه ، ثم قال : سمع الله لمن حمده ، ولا يرفع يديه في السجود ، ويرفعهما في كل تكبيرة يكبرها قبل الركوع حتى تنقضي صلاته. (شرح السنة - البغوي - ص:٢٢ ج:٣)

हदीस ११९ (४) : हमें उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने ख़बर दी, उन्हें कासिम बिन ज'फर ने, उन्हें अबू अली लुलुई ने, उन्हें अबू दाऊद ने, उन्हें मुहम्मद बिन मुसफ्फा हिम्सी ने उन्हें बकीया ने, उन्हें जुबैदी ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर ने कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे, फिर जब रुकूअ् के लिए **अल्लाहु अकबर** कहते तो भी रफा यदैन करते फिर जब पीठ रुकूअ् से उठाते तो भी मोंढों के बराबर रफा यदैन करते, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और सज्दों में रफा यदैन नही किया करते थे। और रुकूअ् से पहले हर तक्बीर में रफा यदैन किया करते थे यहाँ तक कि आप की नमाज़ पूरी हो जाती। (जिल्द 3, स० २१)

١٢٠- (٥) أخبرنا عمر بن عبد العزيز ، أنا القاسم بن جعفر الهاشمي ، أنا أبو علي اللؤلؤي ، نا أبو داود ، نا مسدد ، حدثنا بشر بن المفضل ، عن عاصم بن كليب ، عن أبيه عن وائل بن حجر قال : قلت : لأنظرن إلى صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلي قال : فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم فاستقبل القبلة ، فكبر ، فرفع يديه حتى حاذتا أذنيه ، ثم أخذ شماله بيمينه ، فلما أراد أن يركع رفعهما مثل ذلك ، ثم وضع يديه على ركبتيه ، فلما رفع رأسه من الركوع رفعهما مثل ذلك ، فلما سجد وضع رأسه بذلك المنزل من بين يديه ، ثم جلس فافترش رجله اليسرى ، ووضع يده اليسرى على فخذه اليسرى ، وحد مرفقه الأيمن على فخذه اليمنى ، وقبض ثنتين ، وحلق حلقة ، ورأيته يقول : هكذا ، وحلق بشر الإبهام والوسطى ، وأشار بالسبابة.(شرح السنة - البغوي - ص:٢٧ ج:٣)

हदीस १२० (५) : हमें उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने ख़बर दी, उन्हें कासिम बिन ज'फर हाशमी ने, उन्हें अबू अली लुलुई ने, उन्हें अबू दाऊद ने, उन्हें मुसद्दद ने, उन्हें बिश्र बिन मुफ़ज्जल ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें उनके वालिद ने, कि वाइल बिन हुज्र ने कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को क़स्दन देखूंगा कि आप कैसे नमाज़ पढ़ते हैं। आप रजि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हुए, किबला की जानिब रुख किया, और **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों के बराबर रफा यदैन किया, फिर बाएं हाथ को दाएं हाथ से पकड़ा। फिर जब रुकूअ् का इरादा किया, उसी तरह रफा यदैन किया, फिर अपने हाथों को घुटनों पर रखा, फिर जब रुकूअ् से सर उठाया तो उसी तरह रफा यदैन किया। फिर जब सज्दा किया तो अपने सर को उसी जगह पर दोनों हाथों के दर्मियान रखा। फिर जब बैठे तो बाएं पाँव को बिछाया। और दाएं हाथ को दाएं रान पर रखा। और दाहिने हाथ की कुहनी दाहिनी रान से जुदा रखी। और दो उंगलियों को बन्द कर लिया और एक हल्का बना लिया। (बीच की उंगली और अंगूठे से) और मैंने उनको इस

तरह कहते देखा। और बिश्र ने अंगूठे और बीच की उंगली का हल्क़ा बनाया और कलिमे की उंगली से इशारा किया। (जिल्द ३, स० २७)

١٢١- (٦) نامحمد بن سليمان الأنباري،نا وكيع،عن شريك ،عن عاصم بن كليب ، عن علقمة بن وائل ابن حجرعن وائل بن حجر قال : أتيت النبي صلى الله عليه وسلم في الشتاءفرأيت أصحابه يرفعون أيديهم في ثيابهم في الصلاة.(شرح السنة - البغوي - ص:٢٨ ج:٣)

हदीस १२१ (६) : हमें मुहम्मद बिन सुलेमान अंबारी ने ख़बर दी, उन्हें वकीअ् ने, उन्हें शरीक ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें अल्क़मा बि वाइल बिन हुज्र ने वाइल बिन हुज्र रज़ि० से रिवायत की कि मैं नबी अकर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास सर्दियों में आया, तो मैंने आप सहाबा को देखा कि वह नमाज़ में कपड़ों के अन्दर से रफ़ा यदैन करते थे (जिल्द ३, स०

١٢٢- (٧) أخبرنا عمر بن عبد العزيز ، أنا القاسم بن جعفر ، أنا أبو علي اللؤلؤي ، نا أبو داود ، نا حفص بن عمر ، نا شعبة ، عن قتادة ، عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث قال : رأيت النبي صلى الله عليه وسلم رفع يديه إذا كبر،وإذا ركع،وإذا رفع رأسه من الركوع حتى يبلغ بهما فروع أذنيه (شرح السنة - البغوي - ص:٢٩ ج:٣)

हदीस १२२ (७) : हमें उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ख़बर दी, उन्हें कासिम बिन जअ्फर ने, उन्हें अबू अली लुलुई ने, उन्हें अबू दाऊद ने, उन्हें हफ्स बिन उमर ने, उन्हें शो`बा ने, उन्हें क़तादा ने, उन्हें नस्र बिन आसिम ने उन्हें मालिक बिन हुवैरिस ने, कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को देखा कि आप जब तक्बीर कहते तो रफ़ा यदैन करते, और ज रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो कानों के बराबर रफ़ा यदै किया करते थे। (जिल्द ३, स० २६)

❖❖❖

(१३) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़

١٢٣- (١) عبد الرزاق عن بن جريج قال حدثني بن شهاب عن سالم بن عبد الله أن بن عمر كان يقول كان رسول الله صلى الله عليه و سلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو منكبيه ثم يكبر وإذا أراد أن يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع من الركوع فعل مثل ذلك ولا يفعله حين يرفع رأسه من السجود(مصنف عبد الرزاق - ص:٦٧ج:٢)

हदीस १२३ (१) : हमें अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते थे कि रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते थे, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ् का इरादा करते तो उसी तरह करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो उसी तरह करते और जब सज्दे से सर उठाते तो रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द २, स० ६७)

١٢٤- (٢) عبد الرزاق عن عبد الله بن عمر عن بن شهاب عن سالم قال كان بن عمر إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه وإذا ركع رفعهما فإذا رفع رأسه من الركعة رفعهما وإذا قام من مثنى رفعهما ولا يفعل ذلك في السجود قال ثم يخبرهم أن رسول الله صلى الله عليه و سلم كان يفعله قال عبد الله سمعت نافعا يحدث عن بن عمر مثل هذا إلا أنه قال يرفع يديه حتى يكونا حذو أذنيه (مصنف عبد الرزاق - ص:٦٨- ٦٧ج:٢)

हदीस १२४ (२) : अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने अब्दुल्लाह बिन उमर से बयान किया, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सालिम से, कि इब्ने उमर रज़ि० जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो रफ़ा यदैन किया करते थे और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते और दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो इसी

तरह मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे और सज्दों में रफ़ा
नहीं करते थे। फिर उनको ख़बर देते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलै
सल्लम ऐसा करते थे। अब्दुल्लाह कहते हैं मैंने नाफ़े को सुना वह इब्ने
रज़ि० से इसी तरह हदीस बयान करते थे। मगर उस में यह अल्फ़ा
कि कानों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स० ६८

-१٢ (٣) عبد الرزاق عن معمر عن قتادة ان رسول الله صلى الله
عليه و سلم كان يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع راسه من الركوع
حتى يكونا حذو اذنيه(مصنف عبد الرزاق - ص:٦٨ج:٢)

हदीस १२५ (३) : अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने मअमर से ख़बर दी, उन्होंने क़
से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रुकूअ़ करते और
रुकूअ़ से सर उठाते तो कानों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे
(जिल्द २, स०

-١٢ (٤) عبد الرزاق عن هشيم قال اخبرني ابو حمزة مولى بني
اسد قال رأيت بن عباس إذا افتتح الصلاة يرفع يديه وإذا ركع وإذا
رفع راسه من الركوع (مصنف عبد الرزاق - ص:٦٩ج:٢)

हदीस १२६ (४) : अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने हुशैम से ख़बर दी, उन्होंने
मुझे अबू हम्ज़ा मौला बनी असद ने ख़बर दी उन्होंने कहा मैंने
अब्बास रज़ि० को देखा कि जब नमाज़ शुरू करते और जब रु
करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते
(जिल्द २, स०

-١٢ (٥) عبد الرزاق عن داود بن إبراهيم قال رأيت وهب بن منبه
إذا كبر في الصلاة رفع يديه حتى تكونا حذو اذنيه وإذا ركع
وإذا رفع رأسه من الركوع (مصنف عبد الرزاق - ص:٦٩ج:٢)

हदीस १२७ (५) : अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने दाऊद बिन इब्राहीम से बयान
किया, उन्होंने कहा मैंने वहब बिन मुनब्बह को देखा, जब नमाज़ के
अल्लाहु अकबर कहते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से
उठाते तो कानों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द २, स०

١٢٨- (٦) عبد الرزاق عن بن جريج قال أخبرني حسن بن مسلم قال سمعت طاوسا وهو يسال عن رفع اليدين في الصلاة فقال رايت عبد الله وعبد الله وعبد الله يرفعون ايديهم في الصلاة لعبد الله بن عمر وعبد الله بن عباس وعبد الله بن الزبير (مصنف عبد الرزاق - ص:٦٩ج:٢)

हदीस १२८ (६) : अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने इब्ने जुरैज से बयान किया, उन्होंने कहा मुझे हसन बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मैंने ताऊस को सुना उन से नमाज़ में रफ़ा यदैन के मुतअल्लिक़ पूछा गया। उन्होंने कहा मैंने अब्दुल्लाह और अब्दुल्लाह और अब्दुल्लाह को देखा नमाज़ में अपने हाथों को उठाते थे। यानी अब्दुल्लाह बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन अब्बास और अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हुम को। (जिल्द २, स० ६६)

١٢٩- (٧) عبد الرزاق عن بن جريج قال قلت لعطاء وفي التطوع من اليدين مثل ما في المكتوبة؟ قال نعم في كل صلاة(مصنف عبد الرزاق - ص:٧٠ج:٢)

हदीस १२६ (७) : अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने इब्ने जुरैज से बयान किया कि मैंने अता से कहा कि जिस तरह फ़रज़ नमाज़ों में रफ़ा यदैन की जाती है, क्या उसी तरह नवाफ़िल में भी करनी चाहिए? आपने कहा हां, हर नमाज़ में करनी चाहिए। (जिल्द २, स० ७०)

(१४) सुननुद्दारमी

١٣٠- (١) أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ : أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا دَخَلَ الصَّلَاةَ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ، وَإِذَا رَكَعَ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ،وَلاَ يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ أَوْ فِى السُّجُودِ. (سنن الدارمي —ص:٢٢٩ج:١)

हदीस १३० (९) : हमें उसमान बिन उमर ने ख़बर दी, उन्हें मालिक ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्होंने अपने वालिद से कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में दाख़िल होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् करते **अल्लाहु अकबर** कहते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो उसी तरह रफ़ा यदैन करते और दो सज्दों के दर्मियान रफ़ा यदैन नहीं करते थे या सज्दों में रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द १, स० २२६)

١٣١- (٢) أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ : أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ أُذُنَيْهِ ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ،وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ. (سنن الدارمي – ص:٢٢٩ج:١)

हदीस १३१ (२) : हमें अबुल वलीद त्यालिसी ने ख़बर दी, उन्हें शो'बा ने, उन्हें क़तादा ने, उन्हें नस्र बिन आसिम ने, उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने, कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब **अल्लाहु अकबर** कहते तो कानों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। उसी तरह जब रुकूअ् का इरादा करते और रुकूअ् से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २२६)

١٣٢- (٣) أَخْبَرَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو الْبَخْتَرِيِّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْيَحْصُبِيِّ عَنْ وَائِلٍ الْحَضْرَمِيِّ: أَنَّهُ صَلَّى مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَكَانَ يُكَبِّرُ إِذَا خَفَضَ وَإِذَا رَفَعَ ، وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ عِنْدَ التَّكْبِيرِ وَيُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ يَسَارِهِ. قَالَ قُلْتُ : حَتَّى يَبْدُوَ وَضَحُ وَجْهِهِ؟ قَالَ : نَعَمْ. (سنن الدارمي –ص:٢٢٩ج:١)

हदीस २३२ (३) : हमें सहल बिन हम्माद ने ख़बर दी, उन्हें शो'बा ने, उन्हें अम्र बिन मुर्रह ने, उन्हें अबुल बख़तरी ने, उन्हें अब्दुर्रहमान यहसुबी ने, उन्हें वाइल हज़रमी रज़ि० ने कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी। जब झुकते और रुकूअ् से सर उठाते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रफ़ा यदैन करते और दाएं बाएं सलाम फेरते। रावी ने कहा मैंने कहा यहाँ तक कि चेहरे की चमक ज़ाहिर हो जाती उन्होंने कहा हाँ। (जिल्द १, स० २२६)

١٣٣- (٤) أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا حُمَيْدٍ السَّاعِدِيَّ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَحَدُهُمْ أَبُو قَتَادَةَ قَالَ: أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلاَةِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالُوا: لِمَ؟ فَمَا كُنْتَ أَكْثَرَنَا لَهُ تَبَعَةً وَلاَ أَقْدَمَنَا لَهُ صُحْبَةً. قَالَ : بَلَى. قَالُوا : فَاعْرِضْ. قَالَ : كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ حَتَّى يَقَرَّ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ ، ثُمَّ يَقْرَأُ ثُمَّ يُكَبِّرُ وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ، ثُمَّ يَرْكَعُ وَيَضَعُ رَاحَتَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ ، وَلاَ يُصَوِّبُ رَأْسَهُ وَلاَ يُقْنِعُ ، ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيَقُولُ « سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ». ثُمَّ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ فظنّ أَبُو عَاصِمٍ أَنَّهُ قَالَ : حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلاً ، ثُمَّ يَقُولُ « اللَّهُ أَكْبَرُ ». ثُمَّ يَهْوِي إِلَى الأَرْضِ فَيُجَافِي يَدَيْهِ عَنْ جَنْبَيْهِ ثُمَّ يَسْجُدُ ، ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا وَيَفْتَحُ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ إِذَا سَجَدَ ، ثُمَّ يَعُودُ فَيَسْجُدُ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيَقُولُ « اللَّهُ أَكْبَرُ ». وَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا مُعْتَدِلاً حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلاً ، ثُمَّ يَقُومُ فَيَصْنَعُ فِي الرَّكْعَةِ الأُخْرَى مِثْلَ ذَلِكَ ، فَإِذَا قَامَ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا فَعَلَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلاَةِ ، ثُمَّ يَصْنَعُ مِثْلَ ذَلِكَ فِي بَقِيَّةِ صَلاَتِهِ حَتَّى إِذَا كَانَتِ السَّجْدَةُ أَوِ الْقَعْدَةُ الَّتِي يَكُونُ فِيهَا التَّسْلِيمُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَجَلَسَ مُتَوَرِّكاً عَلَى شِقِّهِ الأَيْسَرِ. قَالَ قَالُوا: صَدَقْتَ هَكَذَا كَانَتْ صَلاَةُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم. (سنن الدارمي – ص:٢٥٥- ٢٥٤ ج:١)

हदीस १३३ (४) : हमें अबू आसिम ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल हमीद बिन

ज॰फर ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने, उन्होंने कहा मैंने अबू हुमैद साइदी रज़ि० को दस सहाबा रज़ि० की मौजूदगी में कहते सुना। उन में से एक अबू कतादा रज़ि० थे, कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को तुम से ज़्यादा जानता हूं। उन्होंने कहा कैसे? न तो तुम हम से ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत करते थे, और न सुहबत के लिहाज़ से हम से मुक़द्दम थे। उन्होंने कहा क्यों नहीं। इस पर उन्होंने कहा अच्छा तो फिर पेश करो। उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथों को कन्धों के बराबर उठाते फिर रुकूअ् करते और अपनी हथेलियों को अपने घुटनों पर रखते हत्ता कि हर हड्डी अपनी जगह पर लौट जाती, रुकूअ् में आप पीठ को बराबर करते, न तो सर को ज़्यादा झुकाते और न ही ज़्यादा बुलन्द करते। फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और सर उठाते और मोंढों के बराबर रफा यदैन करते। अबू आसिम का ख्याल है कि उन्होंने कहा यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती। फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और ज़मीन की तरफ़ झुकते, हाथों को पहलुओं से दूर रखते, फिर सज्दा करते, फिर अपना सर उठाते फिर बायां पाँव मोड़ते और उस पर बैठ जाते और पाँव की उंगलियाँ सज्दा के वक्त खुली रखते फिर वापस होते और सज्दा करते फिर सर उठाते और **अल्लाहु अकबर** कहते और बायाँ पाँव मोड़ते और सीधे उस पर बैठ जाते। यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मकाम पर आ जाती, फिर खड़े होते और दूसरी रकअत में भी उसी तरह करते। पस जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो भी रफा यदैन करते, जिस तरह नमाज़ शुरू करते वक्त किया था। फिर इसी तरह बाकी नमाज़ में करते। फिर जब क़अ्दे में होते जिस में सलाम है, बायाँ पाँव को दायाँ पाँव के नीचे से निकालते और बाएं जानिब सुरीन पर बैठ जाते। सब सहाबा रज़ि० ने कहा तुम ने सच कहा, रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे ही नमाज़ पढ़ा करते थे। (जिल्द : १, स० २५४)

١٣٤- (٥) أَخْبَرَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا زَائِدَةُ بْنُ قُدَامَةَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ أَخْبَرَنِي أَبِي أَنَّ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ أَخْبَرَهُ قَالَ قُلْتُ: لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم كَيْفَ يُصَلِّي؟ فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ فَقَامَ فَكَبَّرَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا بِأُذُنَيْهِ ، وَوَضَعَ يَدَهُ

الْيُمْنَى عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى قَالَ ثُمَّ لَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا فَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَرَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا ثُمَّ سَجَدَ فَجَعَلَ كَفَّيْهِ بِحِذَاءِ أُذُنَيْهِ، ثُمَّ قَعَدَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ وَرُكْبَتِهِ الْيُسْرَى، وَجَعَلَ مِرْفَقَهُ الْأَيْمَنَ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى، ثُمَّ قَبَضَ ثِنْتَيْنِ فَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَفَعَ إِصْبَعَهُ، فَرَأَيْتُهُ يُحَرِّكُهَا يَدْعُو بِهَا قَالَ: ثُمَّ جِئْتُ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي زَمَانٍ فِيهِ بَرْدٌ فَرَأَيْتُ عَلَى النَّاسِ جُلَّ الثِّيَابِ يُحَرِّكُونَ أَيْدِيَهُمْ مِنْ تَحْتِ الثِّيَابِ. (سنن الدارمي – ص:٢٥٥ج:١)

हदीस १३४ (५) : हमें मुआविया बिन अम्र ने खबर दी, उन्हें ज़ाइदा बिन क़ुदामा ने ख़बर दी, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी कि वाइल बिन हुज्र रज़ि० ने कहा, कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ की तरफ़ देखूंगा कि आप कैसे नमाज पढ़ते है? मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ देखा, आप खड़े हुए, तो आपने **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों के बराबर रफा यदैन की और दाएं हाथ को बाएं हाथ की पुश्त पर रखा। फिर जब रुकूअ् का इरादा किया तो पहले की तरह रफा यदैन की। पस हाथों को घुटनों पर रखा। फिर आपने रुकूअ् से सर उठाया तो उसी तरह रफा यदैन की। फिर सज्दा किया और दोनों हथेलियों को कानों के बराबर किया। फिर बैठ गये पस बायाँ पाँव फैलाया। और बाएं हथेली को अपने रान पर और बाएं घुटने पर रखा। और दाएं कुहनी को दाएं रान पर रखा। फिर दो उंगलियों को बन्द किया और हल्का बनाया फिर उंगली को उठाया। मैंने उसे हरकत देते हुए देखा। फिर मैं सर्दियों के मौसम पर आया। और लोगों पर भारी भारी कपड़े देखे और कपड़ों के नीचे से ही उनके हाथों को रफा यदैन के लिए हरकत करते हुए देखा। (जिल्द १, स० २५५)

(१५) सुनन दारु कुतनी

١٣٥- (١) حدثنا ابو بكر النيسابوري حدثنا بحر بن نصر حدثنا ابن وهب أخبرني ابن أبي الزناد ح وحدثنا ابو بكر حدثنا أحمد بن

حدثنا سليمان بن داود الهاشمى حدثنا ابن أبى الزناد عن بن عقبة عن عبد الله بن الفضل عن عبد الرحمن الأعرج عن الله بن ابى رافع عن على قال كان رسول الله صلى الله عليه إذا قام إلى الصلاة المكتوبة كبر ورفع يديه حذو منكبيه مثل ذلك إذا قضى قراءته فأراد أن يركع ويصنعه إذا رفع الركوع ولا يرفع يديه فى شىء من صلاته وهو جالس فإذا قام السجدتين رفع يديه كذلك وكبر. (سنن الدارقطني - ص: ٢٨٧)

हदीस १३५ (१) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने हदीस सुनाई, उन्हें बिन नस्र ने, उन्हें इब्ने वहब ने, उन्हें इब्ने अबी ज़िनाद ने ख़बर दी (**सनद**) हमें अबू बकर ने हदीस सुनाई, उन्हें अहमद बिन मन्सूर ने, सुलेमान बिन दाऊद हाशमी ने, उन्हें इब्ने ज़िनाद ने, उन्हें मूसा बिन ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल ने, उन्हें अब्दुर्रहमान अ'रज़ ने, उन्हें उबैदु बिन अबू राफ़े ने, उन्हें हज़रत अली रज़ि० ने, उन्होंने कहा कि रसूलु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े हो **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते। और किरअत पूरी करते और रुकूअ़ का इरादा करते और रुकूअ़ से सर तो भी रफ़ा यदैन करते। बैठने की हालत में रफ़ा यदैन नहीं करते थे जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो उसी तरह रफ़ा यदैन करते। (जिल्द १, स० २

-١٣٦ (٢) حدثنا أبو بكر النيسابورى عبد الله بن محمد بن زياد حدثنا عبد الرحمن بن بشر بن الحكم والحسن بن يحيى قالا حدثنا عبد الرزاق أخبرنا ابن جريج حدثنى ابن شهاب عن سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر كان يقول كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه ثم يكبر وإذا أراد أن يركع فعل مثل ذلك وإذا رفع راسه من الركوع فعل مثل ذلك ولا يفعله حين يرفع رأسه من السجود. (سنن الدارقطني ـص:٢٨٧ - ٢٨٨ ج:١)

हदीस १३६ (२) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन ज़ियाद ने, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन बिश्र बिन हकम और हसन बिन यहया ने, दोनों ने कहा हमें अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहा करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ़ करने का इरादा करते तो उसी तरह करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो उसी तरह करते और जब सज्दे से सर उठाते तो रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द १, स० २८७, २८८)

-١٣٧ (٣) حدثنا الحسين بن إسماعيل المحاملى ومحمد بن سليمان الباهلى قالا حدثنا أبو عتبة أحمد بن الفرج حدثنا بقية حدثنا الزبيدى عن الزهرى عن سالم عن أبيه قال كان النبى صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى إذا كانتا حذو منكبيه كبر ثم إذا أراد أن يركع رفعهما حتى يكونا حذو منكبيه وهما كذلك ثم يركع ثم إذا أراد أن يرفع صلبه رفعهما حتى يكونا حذو منكبيه ثم قال « سمع الله لمن حمده ». ثم سجد فلا يرفع يديه فى السجود ويرفعهما فى كل تكبيرة يكبرها قبل الركوع حتى ينقضى صلاته (سنن الدارقطني ـص:٢٨٨ج:١)

हदीस १३७ (३) : हमें हुसैन बिन इसमाईल महामली और मुहम्मद बिन सुलेमान बाहिली ने हदीस सुनाई, दोनों ने कहा हमें अबू उत्बा अहमद बिन फरज ने, उन्हें बक़िया ने, उन्हें ज़ुबैदी ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने उन्हें उनके वालिद ने, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे और **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर जब रुकूअ़ का इरादा करते तो भी रफ़ा यदैन करते मोंढों के बराबर फिर रुकूअ़ करते। और जब पीठ को रुकूअ़ से उठाते तो दोनों हाथों को मोंढों के बराबर उठाते फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। फिर सज्दा करते और सज्दों में रफ़ा

यदैन नही करते थे और रुकूअ से क़ब्ल हर तक्बीर में रफा यदैन करते यहाँ तक कि आप की नमाज पूरी हो जाती। (जिल्द १, स० २८८)

١٣٨- (٤) حدثنا أبو بكر النيسابوري حدثنا عيسى بن إبراهيم القافقي أبو موسى حدثنا عبد الله بن وهب قال أخبرني يونس عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه ثم يكبر وكان يفعل ذلك حين يكبر للركوع ويفعل ذلك حين يرفع رأسه من الركوع ويقول « سمع الله لمن حمده». ولا يفعل ذلك حين يرفع رأسه من السجود.(سنن الدارقطني –ص:٢٨٨ج:١)

हदीस १३८ (४) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने ख़बर दी, उन्हें ईसा बिन इब्राहीम गाफेकी ने, उन्हें अबू मूसा ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन वहब ने, उन्हें यूनुस ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, कि अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आप नमाज के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे, फिर तक्बीर कहते और उसी तरह करते जब रुकूअ के लिए **अल्लाहु अकबर** कहते। और उसी तरह करते जब रुकूअ से सर उठाते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। और जब सज्दों से सर उठाते तो उस वक़्त रफा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द १, स० २८८)

١٣٩- (٥) حدثنا أبو بكر النيسابوري حدثنا يوسف بن سعيد حدثنا حجاج حدثنا ليث حدثني عقيل ح وحدثنا أبو بكر حدثنا محمد بن عزيز حدثنا سلامة عن عقيل عن ابن شهاب عن سالم عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم بهذا يرفع ثم يكبر (سنن الدارقطني – ص:٢٨٨ج:١)

हदीस १३९ (५) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने ख़बर दी, उन्हें यूसुफ बिन सईद ने, उन्हें हज्जाज ने, उन्हें लैस ने, उन्हें अक़ील ने, **(दूसरी सनद)** हमें अबू बकर ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अज़ीज ने, उन्हें सलामा ने,

उन्हें अक़ील ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें इब्ने उमर रजि० ने उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कि इसी तरह आप रफा यदैन करते फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। (जिल्द १, स० २८८)

١٤٠- (٦) حدثنا أبو بكر حدثنا محمد بن يحيى ومحمد بن إسحاق قالا حدثنا يعقوب بن إبراهيم حدثنا ابن أخي ابن شهاب عن عمه أخبرني سالم عن عبد الله قال كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى إذا كانتا حذو منكبيه كبر نحوه. (سنن الدارقطني – ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४० (६) : हमें अबू बकर ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन यहया और मुहम्मद बिन इसहाक़ ने, दोनों ने कहा हमें याक़ूब बिन इब्राहीम ने, उन्हें इब्ने अपने इब्ने शिहाब (इब्ने शिहाब के भतीजे ने) उन्होंने अपने चचा (इब्ने शिहाब) से उन्होंने सालिम से, उन्होंने अब्दुल्लाह रजि० से, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन करते, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। (पहली हदीस की तरह) (जिल्द १, स० २८९)

١٤١- (٧) حدثنا أبو بكر حدثنا محمد بن يحيى وأحمد بن يوسف السلمي قالا حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن الزهري عن سالم عن ابن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه حين يكبر حتى يكونا حذو منكبيه أو قريبا من ذلك ثم ذكر نحوه .(سنن الدارقطني – ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४१ (७) : हम को अबू बकर ने ख़बर दी, उनको मुहम्मद बिन यहया और अहमद बिन यूसुफ ने, उन्होंने कहा हम को अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने मअमर से ख़बर दी, उन्होंने जुहरी से उन्होंने सालिम से उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से उस ने कहा कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब **अल्लाहु अकबर** कहते तो अपने दोनों हाथों को अपने कन्धों के बराबर या उस से जरा करीब बुलन्द करते फिर पहली हदीस की तरह ज़िक्र किया। (जिल्द १, स० २८९)

-١٤ (٨) حدثنا أبو بكر حدثنا محمد بن إسحاق حدثنا على بن
عياش وأبو اليمان قالا حدثنا شعيب عن الزهرى بهذا إذا افتتح
التكبير فى الصلاة رفع يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذو
منكبيه نحوه. (سنن الدارقطني – ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४२ (८) : हमें अबू बकर ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन इस्हा
ने उन्हें अली बिन अय्याश ने और अबू यमान ने, दोनों ने कहा हमें शुऐ
ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने कि जब नमाज़ में तक्बीर शुरू करते तो मोंढ़ों
बराबर रफ़ा यदैन करते, मज़्कूरा हदीस की तरह। (जिल्द २, स० २८

-١٤ (٩) حدثنا أحمد بن محمد بن أبى بكر الواسطى حدثنا
عبد الله بن سعد حدثنى عمى حدثنا ابن أخى الزهرى عن عمه
أخبرنى سالم أن عبد الله قال كان رسول الله صلى الله عليه
وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى إذا كانتا حذو منكبيه
كبر ثم إذا أراد أن يركع رفعهما حتى يكونا حذو منكبيه
وكبر وهما كذلك ثم يركع ثم إذا أراد ان يرفع صلبه رفعهما
حتى تكونا حذو منكبيه ثم قال سمع الله لمن حمده ثم يسجد فلا
يرفع يديه فى شىء من السجود ويرفعهما فى كل ركعة وتكبيرة
يكبرها قبل الركوع حتى ينقضى صلاته. (سنن الدارقطني –
ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४३ (६) : हमें अहमद बिन मुहम्मद बिन अबू बकर वासिती
ख़बर दी, उन्हें उबैदुल्लाह बिन सअद ने, उन्हें उनके चचा ने, उन्हें इ
अख़ी ज़ुहरी (ज़ुहरी के भतीजे) ने उनको उनके चचा (इब्ने शिहाब ज़ु
ने, उन्हें सालिम ने कि अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा कि रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो मोंढ़ों
बराबर रफ़ा यदैन करते फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर जब रुकूअ़
इरादा करते तो (भी) मोंढ़ों के बराबर रफ़ा यदैन करते, फिर रुकूअ़ क
फिर जब रुकूअ़ से पीठ उठाते तो भी मोंढ़ों के बराबर रफ़ा यदैन करते
समिअल्लाहुलिमन हमिदह कहते फिर सज्दा करते। सज्दा में रफ़ा य
नहीं करते थे। और रुकूअ़ से पहले हर रकअत और तक्बीर में रफ़ा य

किया करते थे। यहाँ तक कि आप की नमाज़ पूरी हो जाती।
(जिल्द १, स० २८६)

-١٤٤ (١٠) حدثنا أبو بكر النيسابورى حدثنا عيسى بن أبى
عمران حدثنا الوليد بن مسلم حدثنا زيد بن واقد عن نافع قال
كان ابن عمر إذا رأى رجلا يصلى لا يرفع يديه كلما خفض ورفع
حصبه حتى يرفع. (سنن الدارقطني –ص:٢٨٩ج:١)

हदीस १४४ (१०) : हमें अबू बकर नीशापुरी ने ख़बर दी, उन्हें ईसा बिन अबू इमरान ने, उन्हें वलीद बिन मुस्लिम ने, उन्हें ज़ैद बिन वाक़िद ने, उन्हें नाफ़े ने उन्होंने कहा कि इब्ने उमर रज़ि० जब किसी आदमी को देखते कि नमाज़ में रफ़ा यदैन नहीं करता तो उसे कंकरियाँ मारा करते थे यहाँ तक कि रफ़ा यदैन कर लेते। (जिल्द १, स० २८६)

-١٤٥ (١١) حدثنا الحسين بن إسماعيل حدثنا على بن شعيب
حدثنا سفيان بن عيينة عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن
حجر قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة
رفع يديه حتى حاذتا منكبيه وحين أراد أن يركع وبعد ما يرفع
رأسه من الركوع ووضع يده اليمنى على فخذه الأيمن ويده اليسرى
على فخذه الأيسر وحلق حلقة ودعا هكذا وأشار سفيان بإصبعه
السبابة، قال: وأتيتهم يعنى أصحاب رسول الله صلى الله عليه
وسلم فوجدتهم يرفعون أيديهم فى برانسهم فى الشتاء. (سنن
الدارقطني – ص:٢٩٠- ٢٩١ ج:١)

हदीस १४५ (११) : हमें हुसैन बिन इस्माईल ने ख़बर दी, उन्हें अली बिन शुऐब ने, उन्हें सुफ़ियान बिन उयैना ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें वाइल बिन हुज्र रज़ि० ने, उन्होंने कहा मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब नमाज़ शुरू करते तो मोंढ़ों के बराबर रफ़ा यदैन करते थे, और जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाने के बाद भी रफ़ा यदैन किया करते थे और दायाँ हाथ दाएं रान पर रखते और बायाँ हाथ बाएं रान पर और उंगलियों का हल्क़ा बनाते और इस तरह दुआ की। और सुफ़ियान ने शहादत की उंगली से इशारा किया।

वाइल बिन हुज्र रज़ि० कहते हैं कि फिर मैंने उनको देखा यानी
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कि वह चादरों के
सर्दियों में रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २६०,२६१)

١٤٦- (١٢) حدثنا الحسين بن إسماعيل حدثنا يوسف بن موسى حدثنا جرير عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر قال رأيت النبى صلى الله عليه وسلم حين افتتح الصلاة يرفع يديه إلى أذنيه وإذا ركع وإذا قال « سمع الله لمن حمده ». رفع يديه. (سنن الدارقطني – ص:٢٩٢ج:١)

हदीस १४६ (१२) : हमें हुसैन बिन इस्माईल ने ख़बर दी, उन्हें
बिन मूसा ने, उन्हें जरीर ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्होंने
वालिद से उन्होंने वाइल बिन हुज्र रज़ि० से, कि मैंने नबी
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब नमाज़ शुरू करते और
रुकूअ़ करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तो कानों
बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २६२)

١٤٧- (١٣) حدثنا ابن مبشر حدثنا أحمد بن سنان ح وحدثنا محمد بن جعفر بن رميس حدثنا محمد بن حسان قالا حدثنا عبد الرحمن بن مهدى حدثنا شعبة يعنى عن قتادة. وحدثنا عبد الله بن عبد العزيز حدثنا أبو كامل حدثنا أبو عوانة عن قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه إذا استفتح الصلاة وإذا أراد أن يركع وبعد ما يرفع رأسه من الركوع قال ابن مبشر إن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا استفتح الصلاة رفع يديه وإذا أراد أن يركع وإذا رفع رأسه من الركوع. وقال أبو عوانة كان يرفع يديه إذا كبر وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع فقال « سمع الله لمن حمده ». يرفع يديه حذو منكبيه.(سنن الدارقطني –ص:٢٩٢ج:١)

हदीस १४७ (१३) : हमें इब्ने मुबश्शिर ने ख़बर दी, उन्हें
बिन सिनान ने (**दूसरी सनद**) हमें मुहम्मद बिन ज'फर बिन

ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन हस्सान ने दोनों ने कहा हमें अब्दुर्रहमान
महदी ने ख़बर दी, उन्हें शो'बा ने उन्हें कतादा ने (**तीसरी सनद**)
और हमें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ ने उन्हें अबू कामिल ने, उन्हें
अबू अवाना ने, उन्हें कतादा ने, उन्हें नस्र बिन आसिम ने, उन्हें
मालिक बिन हुवैरिस ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ़ का इरादा करते और रुकूअ़
से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते थे। इब्ने मुबश्शिर ने कहा
कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते
और जब रुकूअ़ का इरादा करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा
यदैन किया करते थे। और अबू अवाना ने कहा कि जब **अल्लाहु
अकबर** कहते और जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो
समिअल्लाहुलिमन हमिदह कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन
किया करते थे। (जिल्द १, स० २६२)

١٤٨- (١٤) حدثنا دعلج بن أحمد حدثنا عبد الله بن شيرويه حدثنا إسحاق بن راهويه حدثنا النضر بن شميل حدثنا حماد بن سلمة عن الأزرق بن قيس عن حطان بن عبد الله عن أبى موسى الأشعرى قال هل أريكم صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم؟ فكبر ورفع يديه ثم كبر ورفع يديه للركوع ثم قال سمع الله لمن حمده ثم رفع يديه ثم قال هكذا فاصنعوا ولا يرفع بين السجدتين. (سنن الدارقطني –ص:٢٩٢ج:١)

हदीस १४८ (१४) : हमें द'लज बिन अहमद ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह
बिन शीरवैह ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ बिन राहवैह ने ख़बर दी, उन्हें नज़्र बिन
शुमैल ने, उन्हें हम्माद बिन सलमा ने, उन्हें अजरक़ बिन क़ैस ने, उन्हें हित्तान
बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें अबू मूसा अशअरी रज़ि० ने, उन्होंने कहा क्या मैं तुम
को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ न दिखाऊं? पस
अल्लाहु अकबर कहा और रफ़ा यदैन की, फिर **अल्लाहु अकबर** कहा और
रुकूअ़ के लिए रफ़ा यदैन की, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा फिर
रफ़ा यदैन की फिर फरमाया तुम भी इसी तरह किया करो। और दो सज्दों
के दर्मियान रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द १ स० २६२)

١٤٩- (١٥) حدثنا أبو سعيد محمد بن عبد الله بن إبراهيم بن مشكان المروزى حدثنا عبد الله بن محمود حدثنا عبد الكريم بن عبد الله عن وهب بن زمعة عن سفيان بن عبد الملك عن عبد الله بن المبارك قال لم يثبت عندى حديث ابن مسعود أن رسول الله صلى الله عليه وسلم رفع يديه أول مرة ثم لم يرفع. وقد ثبت عندى حديث من يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع. قال ابن المبارك ذكره عبيد الله العمرى ومالك ومعمر وسفيان ويونس ومحمد بن أبى حفصة عن الزهرى عن سالم عن أبيه عن النبى صلى الله عليه وسلم. (سنن الدارقطني –ص:٢٩٣ج:١)

हदीस १४६ (१५) : हमें अबू सईद मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन इब्राहीम बिन मुशकान मरवज़ी ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन महमूद ने, उन्हें अब्दुल करीम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्हें वहब बिन ज़मआ ने, उन्हें सुफ़ियान बिन अब्दुल मलिक ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने, उन्होंने कहा कि मेरे नज़दीक अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० की यह हदीस साबित ही नहीं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ पहली दफ़ा रफ़ा यदैन किया करते थे, फिर नहीं करते थे"। बल्कि मेरे नज़दीक रुकूअ़ जाते और रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन करने की हदीस साबित है। इब्ने मुबारक रह० ने कहा उसको उबैदुल्लाह उमरी, मालिक, मअमर, सुफ़यान यूनुस और मुहम्मद बिन अबू हफ़्सा ने ज़ुहरी से, उन्होंने सालिम से, उन्होंने अपने वालिद से उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान की है।
(जिल्द : १, स० २६३)

١٥٠- (١٦) حدثنا ابن صاعد حدثنا لوين محمد بن سليمان حدثنا صالح بن عمر الواسطى عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر قال أتيت النبى صلى الله عليه وسلم لأنظر كيف يصلى فاستقبل القبلة فكبر فرفع يديه حتى حاذي أذنيه فلما ركع رفع يديه حتى جعلهما بذلك المنزل فلما رفع رأسه من الركوع رفع يديه حتى جعلهما بذلك المنزل فلما سجد وضع يديه من رأسه بذلك المنزل. (سنن الدارقطني –ص:٢٩٥ج:١)

हदीस १५० (१६) : हमें इब्ने साइद ने, उन्हें लुवैन मुहम्मद बिन सुलेमान ने उन्हें सालेह बिन उमर वासिती ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्होंने अपने वालिद से उन्होंने वाइल बिन हुज्र रज़ि० से कि मै नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया, ताकि देखूं कि आप कैसे नमाज़ पढ़ते है। आपने क़िब्ला की तरफ़ मुँह किया, **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों के बराबर रफ़ा यदैन की, रुकूअ़ किया तो फिर भी कानों के बराबर रफ़ा यदैन की, फिर जब रुकूअ़ से सर उठाया तो भी उसी जगह तक रफ़ा यदैन की, फिर जब सज्दा किया तो अपने हाथों को उसी जगह पर रखा। (जिल्द १, स० २६५)

١٥١- (١٧) حدثنا ابن صاعد حدثنا لوين حدثنا أبو الأحوص عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر عن النبى صلى الله عليه وسلم نحوه إلا أنه لم يذكر السجود . (سنن الدارقطني – ص:٢٩٥ج:١)

हदीस १५१ (१७) : हमें इब्ने साइद ने हदीस बयान की कहते है हमें लुवैन ने हदीस बयान की, वह कहते है हमें अबुल अहवस ने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने हज़रत वाइल बिन हज्र रज़ि० से, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहली हदीस की ही तरह मगर इसमें सज्दा का ज़िक्र नहीं (यानी फलम्मा सजदा वजआ) अल्फ़ाज़ इस हदीस में नहीं। (जिल्द १, स० २६५)

١٥٢- (١٨) حدثنا أبو القاسم عبد الله بن محمد ابن عبد العزيز ثنا عثمان بن أبي شيبة ثنا إسماعيل بن عياش أبو عتبة عن صالح بن كيسان عن الأعرج عن أبي هريرة و صالح بن كيسان عن نافع عن ابن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع.(سنن الدارقطني –ص:٢٩٦، ٢٩٥ج:١)

हदीस १५२ (१८) : हमें अबुल कासिम अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ख़बर दी, उन्हें उसमान बिन अबू शैबा ने, उन्हें इसमाईल बिन अय्याश ने, उन्हें अबू उतबा ने, उन्हें सालेह बिन कैसान ने, उन्हें अ'रज

ने उन्हें अबू हुरैरह रज़ि० ने (**दूसरी सनद**) और सालेह बिन कैसान ने, उन्हें नाफे ने, उन्हें इब्ने उमर रज़ि० उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाया करते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन किया करते थे।

(जिल्द १, स० २६५, २६६)

❖❖❖

(१६) अल-मुन्तक़ा लेइब्निल-जारूद

(वफ़ात 307 हिजरी)

١٥٢- (١) حدثنا ابن المقرئ، وهارون بن إسحاق،ويوسف بن موسى،قالوا: ثنا سفيان عن الزهري،عن سالم،عن أبيه،رضي الله عنه انه رأى النبي صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذي منكبيه وإذا أراد أن يركع وبعدما يرفع رأسه من الركوع ولا يرفع بين السجدتين (المنتقى لابن الجارود– ص:٦٩)

हदीस १५३ (१) : हमें इब्ने मुकरी, हारून बिन इसहाक और यूसुफ़ बिन मूसा ने हदीस सुनाई, उन्हें सुफ़ियान ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उनको उनके वालिद (अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०) ने कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि वह जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ् का इरादा करते और रुकूअ् से सर उठाने के बाद मोंढों बराबर रफा यदैन किया करते थे। और दो सज्दों के दर्मियान रफा यदैन नहीं किया करते थे। (स० ६६)

١٥٤- (٢) حدثنا علي بن خشرم قال: ثنا عبد الله يعني ابن إدريس عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر رضي الله عنه قلت: لأنظرن إلى صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: فلما افتتح الصلاة كبر ورفع يديه فرأيت إبهاميه قريبا من أذنيه وذكر الحديث ، فسجد فوضع رأسه بين يديه على مثل مقدارهما حين افتتح الصلاة (المنتقى لابن الجارود –ص:٧٩)

हदीस १५४ (२) : हमें अली बिन खशरम ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह

यानी इब्ने इदरीस ने, उन्होंने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज्र रज़ि० से, उन्होंने कहा मैं ज़रूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ देखूंगा। उन्होंने कहा जब आपने नमाज़ शुरू की तो **अल्लाहु अकबर** कहा और रफ़ा यदैन की, मैंने आपके अंगूठों को कानों के बराबर देखा और पूरी हदीस ज़िक्र की। उन्होंने कहा, फिर आपने सज्दा किया, फिर अपने सर को हाथों के दर्मियान रखा उसकी मिस्ल जब नमाज़ शुरू की। (स० ७६)

١٥٥- (٢) حدثنا محمد بن يحيى قال: ثنا يعقوب بن إبراهيم بن سعد قال: ثني ابن أخي ابن شهاب عن عمه قال: أخبرني سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى إذا كانتا حذو منكبيه كبر ثم إذا أراد أن يركع رفعهما حتى يكونا حذو منكبيه كبر وهما كذلك فركع ثم إذا أراد أن يرفع صلبه رفعهما حتى يكونا حذو منكبيه ثم قال: سمع الله لمن حمده ثم يسجد فلا يرفع يديه في السجود ورفعهما في كل ركعة وتكبيرة كبرها قبل الركوع حتى تنقضي صلاته (المنتقى لابن الجارود . ص:٦٩)

हदीस १५५ (३) : हमें मुहम्मद बिन यहया ने खबर दी, उन्हें याकूब बिन इब्राहीम बिन सअद ने, उन्हें इब्ने शिहाब के भाई के लड़के ने, उन्हें उनके चचा ने उन्होंने कहा मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने खबर दी कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो कन्धों के बराबर रफा यदैन करते, फिर **अल्लाहु अकबर** कहते। फिर जब रुकूअ् का इरादा करते तो रफा यदैन करते और जब हाथ मोंढों के बराबर होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रुकूअ् करते फिर जब पीठ उठाने का इरादा करते तो मोंढों के बराबर रफा यदैन करते फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते। फिर जब सज्दा करते तो सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे। रुकूअ् से पहले हर रकअत और तक्बीर पर रफा यदैन करते। यहाँ तक कि आपकी नमाज़ पूरी हो जाती। (स० ६६)

١٥٦- (٤) حدثنا محمد بن يحيى ، قال : أنا أبو عاصم ، عن عبد الحميد بن جعفر ، عن محمد بن عمرو بن عطاء ، قال : سمعت أبا حميد الساعدي ، في عشرة من أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم أحدهم أبو قتادة رضي الله عنهم قال : إني لأعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا : لم فوالله ما كنت أكثرنا له تبعا ولا أقدمنا أو قال : أطول له منا صحبة قال : بلى قالوا : فاعرض قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم كبر حتى يقر كل عظم في موضعه معتدلا ثم يقرأ ثم يكبر ويرفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه حتى يرجع كل عظم إلى مفصله ثم يركع ويضع راحتيه على ركبتيه ثم يعتدل ولا يصوب ولا يقنع ثم يرفع رأسه فيقول : « سمع الله لمن حمده » ، يرفع يديه حتى يحاذي منكبيه معتدلا قال أبو عاصم : أظنه قال : حتى يرجع كل عظم إلى موضعه ثم يقول : « الله أكبر » ، ثم يهوي إلى الأرض مجافيا يديه عن جنبيه ثم يسجد ثم يرفع رأسه فيثني رجله اليسرى فيقعد عليها وكان يفتح أصابع رجليه إذا سجد ثم يعود فيسجد ثم يرفع رأسه فيقول : « الله أكبر » ويثني رجله اليسرى فيقعد عليها معتدلا حتى يرجع كل عظم إلى موضعه ثم يصنع في الركعة الأخرى مثل ذلك حتى إذا قام من الركعتين كبر ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه كما فعل عند افتتاح الصلاة ثم صنع في بقية صلاته مثل ذلك حتى إذا كانت السجدة التي فيها التسليم أخر رجله اليسرى وجلس متوركا على شقه الأيسر قالوا : صدقت هكذا كان يفعل (المنتقى لابن الجارود -ص:٧٤- ٧٥)

हदीस १५६ (४) : हमें मुहम्मद बिन यहया ने खबर दी, उन्हें अबू आसिम ने, उन्हें अब्दुल हमीद बिन जा'फर ने, उन्हें मुहम्मद बिन अम्र बिन

अता ने उन्होंने कहा, मैंने अबू हुमैद साइदी रज़ि० को दस सहाबा की मौजूदगी में सुना। उन में से एक अबू कतादा रज़ि० थे। उन्होंने कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज को तुम से ज़्यादा जानता हूँ। उन्होंने कहा कैसे? तुम अल्लाह की क़सम हम से ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करने वाले न थे और न ही हम से ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुहबत में रहे। आपने कहा क्यों नहीं? उन्होंने ने कहा तो फिर पेश करो। आप ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज के लिए खड़े होते तो मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते थे फिर **अल्लाहु अकबर** कहते यहाँ तक कि हर हड्डी अपनी असली जगह पर आ जाती। फिर आप किरअत करते। फिर **अल्लाहु अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते, यहाँ तक कि हर हड्डी अपनी असली जगह पर आ जाती। फिर रुकूअ् करते और अपनी हथेलियाँ घुटनों पर रखते। फिर पीठ बराबर करते, न तो उसे ज़्यादा झुकाते और न बुलन्द रखते। फिर अपना सर उठाते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते। अबू आसिम कहते हैं कि मेरा ख्याल है कि उस ने कहा है कि यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मक़ाम पर आ जाती। फिर अल्लाहु **अकबर** कहते, फिर ज़मीन की तरफ़ झुकते, अपने हाथों को पहलुओं से दूर रखते, फिर सज्दा करते, फिर अपना सर उठाते, फिर बायाँ पाँव मोड़ते और उस पर बैठते और दोनों पाँव की उंगलियाँ खोलते सज्दे के वक़्त फिर लौटते, पस सज्दा करते, फिर अपना सर उठाते और अल्लाहु **अकबर** कहते और बायाँ पाँव मोड़ते और सीधे बैठ जाते, यहाँ तक कि हर हड्डी अपने असली मक़ाम पर आ जाती। फिर दूसरी रकअत में भी ऐसा ही करते। फिर जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो अल्लाहु **अकबर** कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते, जिस तरह शुरू नमाज़ में करते। फिर बाक़ी नमाज़ में उसी तरह करते, यहाँ तक कि जब सलाम वाला क़अ्दा होता तो बायाँ पाँव को दायाँ पाँव के नीचे से निकालते और बाएं तरफ़ सुरीन पर टेक लगा कर बैठते। उन्होंने कहा (यानी मौजूद सहाबा ने) तूने सच कहा है, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे ही किया करते थे। (स०, ७४, ७५)

١٥٧- (٥) حدثنا إسحاق بن منصور ، قال : ثنا عبد الرحمن يعني ابن مهدي ، عن زائدة بن قدامة ، عن عاصم بن كليب ، قال : اخبرني ابي ان وائل بن حجر ، رضي الله عنه قال : قلت : لأنظرن إلى رسول الله صلى الله عليه وسلمؐ كيف يصلي قال : فنظرت إليه قام فكبر ورفع يديه حتى حاذتا بأذنيه ثم وضع كفه اليمنى على ظهر كفه اليسرى والرسغ والساعد ثم ركع فرفع يديه مثلها ثم سجد فجعل كفيه بحذاء أذنيه ثم جلس فافترش رجله اليسرى ووضع كفه اليسرى على فخذه وركبته اليسرى ووضع حد مرفقه اليمنى على فخذه اليمنى ثم قبض ثنتين من أصابعه وحلق حلقة ثم رفع إصبعه فرأيته يحركها يدعو ثم جئت بعد ذلك في زمن فيه برد فرأيت الناس وعليهم جل الثياب تحرك أيديهم من تحت الثياب (المنتقى لابن الجارود – ص:٨١)

हदीस १५७ (५) : हमें इसहाक़ बिन मन्सूर ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुर्रहमान यानी इब्ने महदी ने, उन्हें ज़ाइदा बिन क़ुदामा ने, उन्हें आसिम बिन कुलैब ने, उन्होंने कहा, मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी कि हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० ने कहा कि मैं ज़रूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ देखूंगा कि आप कैसे नमाज़ पढ़ते हैं, उन्होंने कहा, मैंने आपकी तरफ़ देखा, आप खड़े हुए पस **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों के बराबर रफ़ा यदैन की। फिर दाएं हथेली को बाएं हथेली और पहुंचे पर रखा फिर रुकूअ़ किया और रफ़ा यदैन की और हाथों को कानों के बराबर रखा, फिर आप बैठे बायाँ पाँव बिछाया और बाएं हथेली को रान और बाएं घुटने पर रखा और दाएं कुहनी के सिरे को दाएं रान पर। फिर दो उंगलियाँ बन्द कीं और हल्का बनाया, फिर शहादत की उंगली को उठाया। और मैंने देखा कि उसको हरकत देते थे। फिर मैं उसके बाद सर्दियों के मौसम में आपके पास आया तो लोगों को देखा उन पर बड़े बड़े कपड़े थे और उनके हाथ रफ़ा यदैन के लिए कपड़ों के नीचे से ही हरकत करते थे। (स० ८१)

❖❖❖

(१७) जुज़ओ रफ़इल यदैन इमाम बुख़ारी रह:

١٥٨- (١) أخبرنا إسماعيل بن أبي يونس ، حدثني عبد الرحمن بن أبي الزناد ، عن موسى بن عقبة ، عن عبد الله بن الفضل الهاشمي ، عن عبد الرحمن بن هرمز الأعرج ، عن عبيد الله بن أبي رافع ، عن علي بن أبي طالب ، رضي الله تعالى عنه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم : كان يرفع يديه إذا كبر للصلاة حذو منكبيه ، وإذا أراد أن يركع ، وإذا رفع رأسه من الركوع ، وإذا قام من الركعتين فعل مثل ذلك (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١)

हदीस १५८ (१) : हमें इस्माईल बिन अबू यूनुस ने ख़बर दी है, वह कहते हैं मुझे अब्दुर्रहमान बिन अबु ज़िनाद ने मूसा बिन उक़्बा से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल हाशमी से, उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन हरमुज़ अ'रज से, उन्होंने उबैदुल्लाह बिन अबू राफ़े से, उन्होंने हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि० से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिए तक्बीर कहते वक़्त और रुकूअ़ को जाते वक़्त और रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त और दो रकअत से (तीसरी के लिए) उठते वक़्त कन्धों के बराबर तक अपने दोनों हाथों को उठाते थे। (हदीस नम्बर : १)

١٥٩- (٢) أخبرنا علي بن عبد الله ، حدثنا سفيان ، حدثنا الزهري عن سالم بن عبد الله عن أبيه قال : رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا كبر، وإذا رفع رأسه من الركوع ، ولا يفعل ذلك بين السجدتين، قال علي بن عبد الله وكان أعلم زمانه: رفع اليدين حق على المسلمين بما روى الزهري عن سالم عن أبيه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢)

हदीस १५९ (२) : हमें अली बिन अब्दुल्लाह ने हदीस बयान की है वह कहते हैं, हमें सुफ़ियान ने, वह कहते हैं ज़ुहरी ने सालिम बिन अब्दुल्लाह से,

सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद रज़ि० से रिवायत की है, उन्हों
बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा।
आप जब तक्बीर कहते तो रफ़ा यदैन करते, और जब रुकूअ् से सर उठा
तो रफ़ा यदैन करते और दो सज्दों के दर्मियान रफ़ा यदैन नहीं करते थे
अली बिन अब्दुल्लाह जो अपने ज़माना के बहुत बड़े आलिम हैं उन्होंने फैसला
किया है कि इब्ने शिहाब ज़ुहरी की इस हदीस की बिना पर जिस को सालिम
ने अपने वालिद अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत किया है, रफ़ा यदैन
करना तमाम मुसलमानों पर हक़ और ज़रूरी है। (हदीस नम्बर : २)

١٦٠- (٣) حدثنا مسدد ، حدثنا يحيى بن سعيد ، حدثنا عبد الحميد بن جعفر ، حدثنا محمد بن عمرو قال : شهدت أبا حميد في عشرة من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ، أحدهم أبو قتادة بن ربعي رضي الله عنه يقول : « أنا أعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ، قالوا كيف ؟ فوالله ما كنت أقدمنا له صحبة ، ولا أكثرنا له اتباعا ، قال : بل رقبته،قالوا: فاذكر قال: كان إذا قام إلى الصلاة رفع يديه،وإذا ركع ،وإذا رفع رأسه من الركوع ،وإذا قام من الركعتين فعل مثل ذلك،» قال البخاري: سألت أبا عاصم عن حديث عبد الحميد بن جعفر فعرفه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢)

हदीस १६० (३) : हमें मुसद्दद ने हदीस बयान की, वह कहते हैं, हमें यहया बिन सईद ने, वह कहते हैं हमें अब्दुल हमीद बिन ज'फर ने, वह कहते हैं मुहम्मद बिन अम्र से रिवायत है कि वह अबू हुमैद रज़ि० के पास आया जब कि वह दस सहाबा रज़ि० की जमाअत में तशरीफ़ फरमा थे। उन में से एक अबू कतादा रज़ि० थे। उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को मैं तुम से ज़्यादा जानता हूँ। उन्होंने पूछा, वह किस तरह? अल्लाह तआला की कसम न हम से पहले तुम को सहाबी बनने का शर्फ़ हासिल है और न ही तुम ने हम से ज़्यादा (अरसा) उनकी पैरवी की है। उस ने जवाब दिया कि मैंने आपकी नमाज़ को पूरी तवज्जोह से देखा है, तो सहाबा रज़ि० ने कहा कि बताओ। फिर उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते और जब दो रकअत से (तीसरी के लिए) उठते तो बदस्तूर रफ़ा यदैन करते। इमाम बुखारी ने कहा कि मैंने अब्दुल हमीद बिन ज'फर की हदीस के मुतअल्लिक अबू आसिम से पूछा तो उन्होंने उसको जान पहचान लिया। (हदीस नम्बर : ३)

١٦١- (٤) حدثني عبد الله بن محمد،عنه حدثنا عبد الحميد بن جعفر،حدثنا محمد بن عمرو بن عطاء قال: شهدت أبا حميد في عشرة من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم أحدهم أبو قتادة بن ربعي قال : « أنا أعلمكم بصلاة النبي صلى الله عليه وسلم ، فذكر مثله ، فقالوا كلهم : صدقت (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٤)

हदीस १६१ (४) : बुख़ारी ने कहा कि मुझ को अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने उस (अबू आसिम) से हदीस सुनाई। अबू आसिम ने अब्दुल हमीद बिन ज'फ़र से, उस ने कहा कि मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने हदीस सुनाई, उस ने कहा कि मैं अबू हुमैद रज़ि० के पास आया और वह दस सहाबा रज़ि० की जमाअत में तशरीफ़ फरमा थे। उन में अबू कतादा बिन रिबई रज़ि० भी थे। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को तुम से ज़्यादा जानता हूँ। पस उस ने पहली हदीस की मिस्ल हदीस बयान की। सुन कर सब सहाबा रज़ि० ने कहा 'सदक्ता' आपने सच कहा है। (हदीस नम्बर : ४)

١٦٢- (٥) حدثني عباس بن سهل قال : اجتمع أبو حميد،وأبو أسيد ، وسهل بن سعد ، ومحمد بن مسلمة فذكروا صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ، فقال أبو حميد : أنا أعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم ، قام فكبر فرفع يديه ، ثم رفع يديه حين كبر للركوع ،فوضع يديه على ركبتيه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥)

हदीस १६२ (५) : अब्बास बिन सहल से रिवायत है कि अबू हुमैद

रज़ि०, अबू उसैद रज़ि०, सहल बिन सअद रज़ि०, मुहम्मद बिन सलमा रज़ि० यह (एक जगह) जमा हुए तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ का ज़िक्र किया। अबू हुमैद रज़ि० ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को मैं तुम सबसे ज्यादा जानता हूँ कि वह खड़े हुए, तक्बीर कही, रफा यदैन की। फिर उस वक्त रफा यदैन की जब रुकूअ् के लिए तक्बीर कही। फिर अपने दोनों हाथ अपने दोनों घुटनों पर रखे। (हदीस नम्बर : ५)

١٦٢- (٦) حدثنا عبيد بن يعيش ، حدثنا يونس بن بكير ، أخبرنا ابن إسحاق ، عن العباس بن سهل الساعدي قال : كنت بالسوق مع أبي قتادة ، وأبي أسيد ، وأبي حميد كلهم يقول : أنا أعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم . فقالوا لأحدهم : صل . فكبر ثم قرا ثم كبر وركع،فقالوا : أصبت صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٦)

हदीस १६३ (६) : अब्बास साइदी से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मैं बाज़ार में अबू कतादा रज़ि०, अबू उसैद रज़ि०, अबू हुमैद रज़ि० के साथ था। उन में से हर एक यह कह रहा था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को मैं तुम से ज्यादा जानता हूँ। उन्होंने अपने में से एक को कहा कि नमाज़ पढ़ (कर दिखाइए) पस उसने तक्बीर कही, फिर किरअत की, फिर तक्बीर कही, और रुकूअ् किया पस सब ने शहादत दी कि हकीकत में तूने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ पढ़ी है। (हदीस नम्बर : ६)

١٦٤- (٧) حدثنا أبو الوليد هشام بن عبد الملك ، وسليمان بن حرب قالا : أخبرنا شعبة ، عن قتادة ، عن نصر بن عاصم ، عن مالك بن الحويرث قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا كبر رفع يديه ، وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: ص: ٢٨)

हदीस १६४ (७) : हमें अबुल वलीद हिशाम बिन अब्दुल मलिक और सुलेमान बिन हर्ब ने हदीस बयान की, दोनों ने कहा हमें शो'बा ने क़तादा से हदीस बयान की, उन्होंने नस्र बिन आसिम से रिवायत की है कि मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीर कहते तो रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो भी रफा यदैन किया करते थे। (हदीस नम्बर : ३८)

١٦٥- (٨) حدثنا محمد بن عبد الله بن حوشب ، حدثنا عبد الوهاب ، حدثنا حميد ، عن أنس رضي الله عنه قال : كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه عند الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٨)

हदीस १६५ (८) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें अब्दुल वहहाब ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं कि हमें हुमैद ने रिवायत किया है कि अनस रज़ि० ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ् के वक्त रफा यदैन करते थे। (हदीस नम्बर : ८)

١٦٦- (٩) حدثنا أبو نعيم الفضل بن دكين ، أنبأنا قيس بن سليم العنبري قال : سمعت علقمة بن وائل بن حجر ، حدثني أبي قال: صليت مع النبي صلى الله عليه وسلم فكبر حين افتتح الصلاة ورفع يديه ، ثم رفع يديه حين أراد أن يركع ، وبعد الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٠)

हदीस १६६ (९) : हमें अबू नईम फज़्ल बिन दुकैन ने हदीस बयान की, उन्होंने कहा हमें क़ैस बिन सुलैम अंबरी ने ख़बर दी, वह कहते हैं मैंने अल्क़मा बिन वाइल बिन हुज्र से सुना है, अल्क़मा बिन वाइल ने अपने वालिद से रिवायत की है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, आपने तक्बीर कही, नमाज़ शुरू की और रफा यदैन की। फिर जब रुकूअ् का इरादा किया रफा यदैन की और रुकूअ् के बाद भी रफा यदैन की। (हदीस नम्बर : १०)

١٦٧- (١٠) حدثنا عبد الله بن يوسف،أنبأنا مالك،عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله عن أبيه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه حذو منكبيه إذا افتتح الصلاةوإذا كبر للركوع، وإذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك ، وكان لا يفعل ذلك في السجود ، (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٢)

हदीस १६७ (१०) : हमें अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने हदीस बयान की वह कहते हैं कि हमें मालिक ने इब्ने शिहाब ज़ुहरी से खबर दी, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से, सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कन्धों के बराबर तक रफ़ा यदैन किया करते जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ के लिए तक्बीर कहते और जब रुकूअ से अपना सर उठाते बदस्तूर रफ़ा यदैन किया करते और सज्दों में नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : १२)

١٦٨- (١١) حدثنا الحميدي ، أنبأنا الوليد بن مسلم ، قال سمعت زيد بن واقد يحدث عن نافع أن ابن عمر ، كان إذا رأى رجلا لا يرفع يديه إذا ركع ، وإذا رفع رماه بالحصى (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٥)

हदीस १६८ (११) : हमें हुमैदी ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें वलीद बिन मुस्लिम ने खबर दी है, वह कहते हैं मैंने ज़ैद बिन वाक़िद को नाफ़े से हदीस बयान करते सुना है। नाफ़े से रिवायत है उसने बयान किया कि इब्ने उमर जब किसी को रुकूअ के वक्त और रुकूअ से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन न करता देखते तो उसको कंकरियाँ मारते। (हदीस नम्बर : १५)

١٦٩- (١٢) حدثنا مالك بن إسماعيل حدثنا شريك عن ليث عن عطاء قال : رأيت ابن عباس وابن الزبيروأبا سعيد وجابرا يرفعون أيديهم إذا افتتحوا الصلاة،وإذا ركعوا (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٨)

हदीस १६९ (१२) : हमें मालिक बिन इस्माईल ने हदीस बयान की, उन्हें शरीक ने लैस से, उन्होंने अता से रिवायत की, उन्होंने बयान किया

कि मैंने इब्ने अब्बास रज़ि०, इब्ने ज़ुबैर रज़ि०, अबू सईद रज़ि०, और जाबिर रज़ि० को देखा है, वह रफ़ा यदैन करते थे जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते। (हदीस नम्बर : १८)

١٧٠- (١٣) حدثنا محمد بن الصلت ، حدثنا أبو شهاب عبد ربه ، عن محمد بن إسحاق ، عن عبد الرحمن الأعرج ، عن أبي هريرة ، أنه كان إذا كبر رفع يديه ، وإذا ركع ، وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ١٩)

हदीस १७० (१३) : हमें मुहम्मद बिन सल्त ने हदीस बयान की, उन्हें अबू शिहाब बिन अब्दे रब्बा ने मुहम्मद बिन इसहाक से, उन्होंने अब्दुर्रहमान अ'रज से रिवायत की है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० जब तक्बीर कहते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते। (रफ़ा यदैन करते) (हदीस नम्बर : १६)

١٧١- (١٤) حدثنا مسدد حدثنا عبد الواحد بن زيادعن عاصم الأحول قال : رأيت أنس بن مالك رضي الله عنه « إذا افتتح الصلاة كبر ، ورفع يديه ، ويرفع كلما ركع ورفع رأسه من الركوع ، (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٠)

हदीस १७१ (१४) : हमें मुसद्दद ने हदीस बयान की, उन्हें अब्दुल वाहिद बिन ज़्याद ने, उन्होंने आसिम अहवल से रिवायत की है, उन्होंने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक रज़ि० को देखा है जब नमाज़ शुरू करते तक्बीर कहते और रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ करते, रुकूअ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : २०)

١٧٢- (١٥) حدثنا مسددحدثنا هشيم عن أبي حمزة قال : رأيت ابن عباس يرفع يديه حيث كبر ، وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢١)

हदीस १७२ (१५) : हमें मुसद्दद ने हदीस बयान की है, उन्हें हुशैम ने अबू हम्ज़ा से। अबू हम्ज़ा से रिवायत है उस ने बयान किया कि मैंने इब्ने अब्बास रज़ि० को देखा है कि वह रफ़ा यदैन करते जब तक्बीर कहते और जब अपना सर रुकूअ से उठाते। (हदीस नम्बर : २१)

١٧٣- (١٦) حدثنا سليمان بن حرب، حدثنا يزيد بن إبراهيم، عن قيس بن سعد ، عن عطاء قال : صليت مع أبي هريرة فكان يرفع يديه إذا كبر وإذا رفع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٢)

हदीस १७३ (१६) : हमें सुलेमान बिन हर्ब ने हदीस बयान की, उन्हें यज़ीद बिन इब्राहीम ने क़ैस बिन सईद से, उन्होंने अता से, अता ने बयान किया कि मैंने अबू हुरैरह रज़ि० के पीछे नमाज़ पढ़ी, पस वह रफ़ा यदैन करते जब तक्बीर कहते और जब (रुकूअ़ से) उठते। (हदीस नम्बर : २२)

١٧٤- (١٧) حدثنا مسدد ، حدثنا خالد حدثنا حصين ، عن عمرو بن مرة قال : دخلت مسجد حضرموت فإذا علقمة بن وائل يحدث عن أبيه قال : « كان النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه قبل الركوع » (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٣)

हदीस १७४ (१७) : हमें मुसद्दद ने हदीस बयान की, उन्हें ख़ालिद ने, उन्हें हुसैन ने अम्र बिन मुर्रह से हदीस बयान की है, उन्होंने कहा कि मैं हज़रे मौत (शहर) की मस्जिद में दाख़िल हुआ। पस उस वक़्त अल्क़मा बिन वाइल अपने वालिद रज़ि० की तरफ़ से हदीस बयान कर रहे थे, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ़ में जाने से पहले रफ़ा यदैन करते थे। (हदीस नम्बर : २३)

١٧٥- (١٨) حدثنا خطاب عن إسماعيل عن عبد ربه بن سليمان بن عمير قال : رأيت أم الدرداء ترفع يديها في الصلاة حذو منكبيها (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٤)

हदीस १७५ (१८) : हमें ख़त्ताब बिन इस्माईल ने अब्दे रब्बेह बिन सुलेमान बिन उमैर से हदीस बयान की है, उन्होंने बयान किया कि मैंने उम्मे दरदा रज़ि० को देखा है कि वह नमाज़ में अपने कन्धों के बराबर तक रफ़ा यदैन करती थीं। (हदीस नम्बर : २४)

١٧٦- (١٩) حدثنا محمد بن مقاتل حدثناعبدالله بن المبارك أخبرنا إسماعيل حدثني عبد ربه بن سليمان بن عمير قال رأيت أم الدرداء ترفع يديها في الصلاة حذو منكبيهاحين تفتتح الصلاة،

وحين تركع فإذا قالت: سمع الله لمن حمده رفعت يديها ،وقالت: ربنا ولك الحمد (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث٢٥)

हदीस १७६ (१९) : हमें मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, वह कहते हैं हमें इस्माईल ने, वह कहते हैं मुझे अब्दे रब्बेह ने हदीस बयान की है। अब्दे रब्बेह बिन सुलेमान बिन उमैर ने बयान किया कि मैंने उम्मे दरदा रज़ि० को देखा कि वह नमाज़ में अपने कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करती थीं जब नमाज़ शुरू करतीं और जब रुकूअ़ करतीं और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहतीं तो रफ़ा यदैन करतीं और कहतीं **रब्बना व लकल हम्द।** (हदीस नम्बर : २५)

١٧٧- (٢٠) حدثنا إسحاق بن إبراهيم الحنظلي ، حدثنا محمد بن فضيل ، عن عاصم بن كليب ، عن محارب بن دثار قال : رأيت ابن عمر رفع يديه في الركوع فقلت له ما ذلك؟ فقال : « كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام من الركعتين كبر ، ورفع يديه » (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٦)

हदीस १७७ (२०) : हमें इसहाक बिन इब्राहीम हन्ज़ली ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने मुहारिब बिन दिसार से, उन्होंने बयान किया कि मैंने इब्ने उमर रज़ि० को देखा है कि वह रुकूअ़ के वक़्त रफ़ा यदैन करते थे। मैंने उस की वजह दरयाफ़्त की तो उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दो रकअतें पढ़ कर खड़े होते तो तक्बीर कहते और रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : २६)

١٧٨- (٢١) حدثنا مسلم بن إبراهيم ، حدثنا شعبة ، حدثنا عاصم بن كليب ، عن أبيه ، عن ، وائل بن حجر الحضرمي ، رضي الله عنه أنه صلى مع النبي صلى الله عليه وسلم فلما كبر رفع يديه، فلما أراد أن يركع رفع يديه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٢٧)

हदीस १७८ (२१) : हमें मुस्लिम बिन इब्राहीम ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं, हमें शो'बा ने, वह कहते हैं, हमें आसिम बिन कुलैब ने और

उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज्र हज़रमी से रिवायत की है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी। पस जब तक्बीर कहते, रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् करते तो रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : २७)

١٧٩- (٢٢ حدثنا محمد بن مقاتل ، أخبرنا عبد الله ، أخبرنا زائدة بن قدامة ، حدثنا عاصم بن كليب الجرمي ، حدثنا أبي ان وائل بن حجر ، أخبره قال : قلت لأنظرن إلى صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلي؟ قال: فنظرت إليه قال: فكبر ورفع يديه، ثم لما أراد أن يركع رفع يديه مثلها ، ثم رفع رأسه فرفع يديه مثلها،ثم جئت بعد ذلك في زمان فيه برد عليهم جل الثياب تحرك أيديهم من تحت الثياب » (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٣١)

हदीस १७६ (२२) : हमें मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी है, वह कहते हैं हमें ज़ाइदा बिन क़ुदामा ने, वह कहते हैं, हमें आसिम बिन कुलैब ने वाइल बिन हुज्र रज़ि० से रिवायत की है, उन्होंने बयान किया कि मैं आप स० की नमाज़ ज़रूर देखूंगा कि आप नमाज़ कैसे पढ़ते हैं? तो मैंने आपको देखा आपने तक्बीर कही और रफ़ा यदैन किया। फिर जब रुकूअ् करने का इरादा किया बदस्तूर रफ़ा यदैन की। फिर अपने सर को उठाया और रफ़ा यदैन किया। फिर मैंने सर्दी के मौसम में देखा कि सहाबा रज़ि० मोटे कपड़े ओढ़े हुए हैं, उनके हाथ कपड़े के नीचे से हरकत करते थे। (हदीस नम्बर : ३१)

١٨٠- (٢٣) حدثنا أبو اليمان ، أنبأنا شعيب ، عن الزهري ، عن سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر ، قال : رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم : إذا افتتح التكبير في الصلاة رفع يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذو منكبيه ، وإذا كبر للركوع فعل مثل ذلك وإذا قال : سمع الله لمن حمده فعل مثل ذلك وقال: ربنا لك الحمدولا يفعل ذلك حين يسجد،ولا حين يرفع رأسه من السجود (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٤٢)

हदीस १८० (२३) : हमें अबुल यमान ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें इन्ने शिहाब ज़ुहरी से, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है कि जब नमाज़ में तक्बीर का इफ़्तिताह करते तो रफ़ा यदैन करते हत्ता कि उनको अपने कन्धों के बराबर करते और जब रुकूअ् के लिए तक्बीर कहते तो बदस्तूर रफ़ा यदैन करते। जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते, रफ़ा यदैन करते और **रब्बना लकल-हम्द** कहते। सज्दा करते वक़्त और सज्दों से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : ४२)

١٨١- (٢٤) حدثنا عبد الله بن صالح ،حدثني الليث،حدثني يونس عن ابن شهاب ، أخبرني سالم بن عبد الله أن عبد الله يعني ابن عمر قال : رأيت رسول الله إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه ثم يكبر ، ويفعل ذلك حين يرفع رأسه من الركوع ، ويقول: سمع الله لمن حمده، ولا يرفع حين يرفع رأسه من السجود (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٤٧)

हदीस १८१ (२४) : हमें अब्दुल्लाह बिन सालेह ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं मुझे लैस ने, वह कहते हैं मुझे यूनुस ने इन्ने शिहाब ज़ुहरी से, इन्ने शिहाब कहते हैं कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है जब वह नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने हाथों को अपने कन्धों तक ले जाते, फिर तक्बीर कहते और ऐसा ही उस वक़्त करते जब अपने सर को रुकूअ् से उठाते और कहते **समिअल्लाहुलिमन हमिदह**। जब अपने सर को सज्दों से उठाते तो रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : ४७)

١٨٢- (٢٥) حدثنا أبو النعمان حدثنا عبد الواحد بن زياد الشيباني حدثنامحارب بن دثار وقال: رأيت عبد الله بن عمر: إذا افتتح الصلاة كبر،ورفع يديه،وإذا أراد أن يركع رفع يديه،وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري رقم الحديث ٤٨)

हदीस १८२ (२५) : हमें अबू नुअ्मान ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने, वह कहते हैं, हमें मुहारिब बिन दिसार ने बयान किया कि मैंने इब्ने उमर को देखा है जब नमाज़ शुरू करते तो

तक्बीर कहते और रफा यदैन करते और जब रुकूअ् का इरादा करते तो रफ़
यदैन करते और जब अपने सर को रुकूअ् से उठाते (तो रफा यदैन करते)
(हदीस नम्बर : ४८)

١٨٢- (٢٦) حدثنا العياش بن الوليدحدثنا عبد الأعلى حدثنا عبيد الله عن نافع عن ابن عمر: أنه كبر ورفع يديه وإذا ركع رفع يديه وإذا قال: سمع الله لمن حمده رفع يديه ويرفع ذلك ابن عمر إلى النبي صلى الله عليه وسلم (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٤٩)

हदीस १८३ (२६) : हमें अय्याश बिन वलीद ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें अब्दुल आला ने, वह कहते हैं, हमें उबैदुल्लाह ने नाफे से, नाफ़े ने इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत की है कि इब्ने उमर रज़ि० ने तक्बीर कही और रफा यदैन किया और जब रुकूअ् किया तो रफा यदैन किया, और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा रफा यदैन किया इब्ने उमर रज़ि० इस अमल को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ निस्बत करते है। (यानी आप स० का अमल भी इसी तरह था) (हदीस नम्बर : ४९)

١٨١- (٢٧) حدثنا إبراهيم بن المنذر حدثنا معمر حدثنا إبراهيم بن طهمان عن أبي الزبير قال : رأيت ابن عمر حين قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يحاذي بأذنيه وحين يرفع رأسه من الركوع فاستوى قائما فعل مثل ذلك (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٠)

हदीस १८४ (२७) : हमें इब्राहीम बिन मुंज़िर ने हदीस बयान की है वह कहते हैं, हमें म'मर ने, वह कहते हैं हमें इब्राहीम बिन तहमान ने अबू जुबैर से, अबू जुबैर ने बताया कि मैंने इब्ने उमर रज़ि० को देखा है जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने हाथ अपने कानों के बराबर तक उठाते और जब रुकूअ् से सर उठाते, सीधे खड़े हो जाते तो बदस्तूर रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ५०)

١٨٥- (٢٨) حدثنا عبد الله بن صالح حدثنا الليث ، أخبرني نافع أن عبد الله بن عمر : كان إذا استقبل الصلاة يرفع يديه ، وإذا

ركع، وإذا رفع رأسه من الركوع ، وإذا قام من السجدتين كبر ورفع يديه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥١)

हदीस १८५ (२८) : हमें अब्दुल्लाह बिन सालेह ने हदीस बयान की वह कहते हैं हमें लैस ने, वह कहते हैं मुझे नाफे ने हदीस बयान की है। नाफे ने बताया कि अब्दुल्लाह रज़ि० जब नमाज की तरफ मुतवज्जह होते तो रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते, और जब रुकूअ् से सर उठाते और जब दो सज्दों (दो रकअत) से (तीसरी रकअत के लिए) उठते रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ५१)

١٨٦- (٢٩) حدثنا موسى بن إسماعيل حدثنا حماد بن سلمة عن أيوب عن نافع عن ابن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا كبر رفع يديه وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٢)

हदीस १८६ (२६) : हमें मूसा बिन इसमाईल ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से रिवायत बयान की है, अय्यूब ने नाफे से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से, इब्ने उमर रज़ि० ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीर कहते रफा यदैन करते और जब अपना सर रुकूअ् से उठाते तो भी (रफा यदैन करते)। (हदीस नम्बर : ५२)

١٨٧- (٣٠) حدثنا موسى بن إسماعيل حدثنا حماد بن سلمة عن أيوب عن نافع عن ابن عمرأن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا كبر رفع يديه،وإذا ركع،وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٣)

हदीस १८७ (३०) : हमें मूसा बिन इसमाईल ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से, उन्होंने नाफे से, उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक्बीर कहते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ५३)

١٨٨- (٣١) حدثنا موسى بن إسماعيل،حدثنا حماد بن سلمة، اخبرنا قتادة،عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث أن النبي صلى الله عليه وسلم كان إذا دخل في الصلاة رفع يديه إلى فروع اذنيه وإذا رفع رأسه من الركوع فعل مثله(جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٤)

हदीस १८८ (३१) : हमें मूसा बिन इसमाईल ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें हम्माद बिन सलमा ने, वह कहते हैं हमें क़तादा ने नस्र बिन आसिम से रिवायत की है, नस्र बिन आसिम ने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में दाख़िल होते तो अपने हाथ कानों के ऊपर के हिस्से तक उठाते और जब अपना सर रुकूअ् से उठाते तो बदस्तूर इस तरह (रफा यदैन) करते। (हदीस नम्बर : ५४)

١٨٩- (٣٢) حدثنا محمود قال انا خالد أن أبا قلابة،كان يرفع يديه إذا ركع، وإذا رفع رأسه من الركوع ، وكان إذا سجد بدا بركبتيه،وكان إذا قام ارم على يديه قال وكان يطمئن في الركعة الأولى ثم يقوم وذكر عن مالك بن الحويرث رضي الله عنه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٥)

हदीस १८९ (३२) : हमें महमूद ने हदीस बयान की है वह कहते हैं हमें ख़ालिद ने ख़बर दी है कि अबू क़िलाबा रफा यदैन करते थे जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते और जब सज्दा करते तो पहले घुटने रखते और जब खड़े होते तो हाथों पर टेक लगाते और पहली रकअत में इत्मीनान पकड़ते फिर खड़े होते और हदीस उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से ज़िक्र की है। (जल्सा इस्तिराहत भी करते) (हदीस नम्बर : ५५)

١٩٠- (٣٣) أخبرنا عبد الله بن محمد أخبرنا أبو عامرحدثنا إبراهيم بن طهمان عن أبي الزبيرعن طاوس أن ابن عباس كان إذا قام إلى الصلاة رفع يديه حتى يحاذي اذنيه وإذا رفع رأسه من الركوع ، واستوى قائما فعل مثل ذلك (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٦٥)

हदीस १९० (३३) : हमें अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने ख़बर दी है, वह कहते हैं हमें अबू आमिर ने ख़बर दी है, वह कहते हैं हमें इब्राहीम बिन तहमान ने अबू ज़ुबैर से रिवायत की है, उन्होंने ताऊस से कि इब्ने अब्बास रज़ि० जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने हाथों को अपने कानों के बराबर करते और जब रुकूअ् से सर उठाते और सीधे खड़े हो जाते तो रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ५५)

١٩١- (٣٤) حدثنا محمد بن مقاتل أخبرنا عافية أخبرنا إسماعيل، حدثني صالح بن كيسان عن الأعرج عن أبي هريرة قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه حذو منكبيه حين يكبر يفتتح الصلاة وحين يركع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٧)

हदीस १९१ (३४) : हमें मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने हदीस बयान की है, उन्हें आफ़िया ने, उन्हें इसमाईल ने, वह कहते हैं मुझे सालेह बिन कैसान ने अ'रज से, अ'रज ने अबू हुरैरह रज़ि० से हदीस बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कन्धों तक रफा यदैन करते जब नमाज़ शुरू करते, तक्बीर कहते वक़्त और जब रुकूअ् को जाते (रफा यदैन करते)। (हदीस नम्बर : ५७)

١٩٢- (٣٥) حدثنا إسماعيل عن نافع أن عبد الله بن عمر كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٥٨)

हदीस १९२ (३५) : हमें इसमाईल ने नाफ़े से हदीस बयान की है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ शुरू करते तो अपने हाथों को अपने कन्धों के बराबर तक उठाते और जब रुकूअ् से सर उठाते (रफा यदैन करते) (हदीस नम्बर : ५८)

١٩٣- (٣٦) حدثنا محمد بن مقاتل عن عبد الله أخبرنا شريك عن ليث عن عطاء قال : رأيت جابر بن عبد الله وأبا سعيد الخدري وابن عباس وابن الزبير : يرفعون أيديهم حين يفتتحون الصلاة ،

وإذا ركعوا ، وإذا رفعوا رؤوسهم من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٦١)

हदीस १६३ (३६) : हमें मुहम्मद बिन मुकातिल ने अब्दुल्लाह से हदीस सुनाई है कि वह कहते हैं कि हमें शरीक ने लैस से, लैस ने अता से, उन से रिवायत है कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि०, अबू सईद खुदरी रज़ि०, इब्ने अब्बास रज़ि०, इब्ने ज़ुबैर रज़ि० को देखा है कि वह रफ़ा यदैन करते जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ् करते और जब अपना सर रुकूअ् से उठाते। (हदीस नम्बर : ६१)

١٩٤- (٣٧) حدثنا موسى بن إسماعيل حدثنا عبد الواحد بن زياد حدثنا عاصم قال : رأيت أنس بن مالك إذا افتتح الصلاة كبر ورفع يديه كلما ركع ، ورفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٦٥)

हदीस १६४ (३७) : हमें मूसा बिन इसमाईल ने हदीस सुनाई, वह कहते है हमें अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने हदीस बयान की, वह कहते है हमें आसिम ने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक रज़ि० को देखा है कि वह जब नमाज़ शुरू करते तक्बीर कहते और रफ़ा यदैन करते। फिर जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते, (तो भी) रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ६५)

١٩٥- (٣٨) حدثنا خليفة بن خياط حدثنا يزيد بن زريع حدثنا سعيد ، عن قتادة أن نصر بن عاصم حدثهم عن مالك بن الحويرث قال : رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع حتى يحاذي بهما فروع أذنيه (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٦٦)

हदीस १६५ (३८) : हमें खलीफ़ा बिन खय्यात ने हदीस बयान की है वह कहते हैं हमें यज़ीद बिन ज़ुरैई ने वह कहते है हमें सईद ने क़तादा से कि नस्र बिन आसिम ने उन्हें मालिक बिन हुवैरिस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रफ़ा यदैन करते देखा है जब आप रुकूअ् गये और जब आपने रुकूअ्

से अपना सर मुबारक उठाया यहाँ तक कि अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कानों के ऊपर के (लव) तक उठाया। (हदीस नम्बर : ६६)

١٩٦- (٣٩) حدثنا إسماعيل بن أبي أويس حدثنا مالك عن نافع أن عبد الله بن عمر كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه وإذا رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٧٣)

हदीस १६६ (३६) : हमें इसमाईल बिन अबू उवैस ने हदीस बयान की, वह कहते है हमें इमाम मालिक ने नाफ़े से रिवायत की है, उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ शुरू करते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् से अपना सर उठाते। (रफ़ा यदैन करते) (हदीस नम्बर : ७३)

١٩٧- (٤٠) حدثنا عياش حدثنا عبد الأعلى حدثنا حميد عن أنس أنه كان يرفع يديه عند الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٧٤)

हदीस १६७ (४०) : हमें अय्याश ने हदीस बयान की, वह कहते है हमें अब्दुल आला ने, वह कहते हैं हमें हुमैद ने अनस से रिवायत की है कि वह रुकूअ् के वक़्त रफ़ा यदैन करते थे। (हदीस नम्बर : ७४)

١٩٨- (٤١) حدثنا محمد بن أبي بكر المقدمي حدثنا معتمر عن عبيد الله بن عمر عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله عن أبيه عن النبي صلى الله عليه وسلم أنه كان يرفع يديه إذا دخل في الصلاة وإذا أراد أن يركع ورفع رأسه وإذا قام من الركعتين يرفع يديه في ذلك كله وكان عبد الله يفعله (جزء رفع اليدين للإمام البخاري؛ رقم الحديث: ٧٧)

हदीस १६८ (४१) : हमें मुहम्मद बिन अबू बकर मुकद्दमी ने हदीस बयान की वह कहते है हमें मु'तमिर ने उबैदुल्लाह बिन उमर से, उन्होंने इब्ने शिहाब ज़ुहरी से, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद से रिवायत की है। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रफ़ा यदैन करते थे जब नमाज़ में दाखिल होते और जब रुकूअ् का इरादा करते और जब रुकूअ् से सर उठाते और जब दो रकअत पढ़ कर उठते, इन तमाम जगहों में रफ़ा यदैन करते और

अब्दुल्लाह रज़ि० भी रफ़ा यदैन किया करते थे) (हदीस नम्बर : ७७)

١٩٩- (٤٢) حدثنا قتيبة حدثنا هشيم عن الزهري عن سالم عن ابيه قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا استفتح الصلاة وإذا ركع يرفع يديه وإذا رفع رأسه من الركوع(جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٧٨)

हदीस १९६ (४२) : हमें कुतैबा ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें हुशैम ने इब्ने शिहाब ज़ुहरी से, उन्होंने सालिम से, सालिम ने अपने वालिद रज़ि० से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रफ़ा यदैन करते जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ् करते, और जब अपना सर रुकूअ् से उठाते। (हदीस नम्बर : ७८)

٢٠٠- (٤٣) حدثنا عبد الله بن صالح حدثني الليث حدثنا عقيل عن ابن شهاب قال أخبرني سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم: إذاافتتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه وإذا أراد أن يركع ويعدما رفع رأسه من الركوع (جزء رفع اليدين للإمام البخاري رقم الحديث٧٩

हदीस २०० (४३) : हमें अब्दुल्लाह बिन सालेह ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं मुझे लैस ने अकील से, उन्होंने इब्ने शिहाब ज़ुहरी से, वह कहते हैं कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो अपने दोनों हाथ उठाते हत्ता कि उनको अपने कन्धों के बराबर तक करते और जब रुकूअ् का इरादा करते और रुकूअ् से सर उठाने के बाद रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ७९)

٢٠١- (٤٤) حدثنا محمد بن عبد الله بن حوشب حدثنا عبد الوهاب حدثنا عبيد الله عن نافع عن ابن عمر أنه كان يرفع يديه إذا دخل في الصلاة وإذا ركع وإذا قال: سمع الله لمن حمده وإذا قام من الركعتين يرفعهما (جزء رفع اليدين للإمام البخاري: رقم الحديث: ٨٠)

हदीस २०१ (४४) : हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने हदीस बयान की है, वह कहते हैं हमें अब्दुल वहहाब ने, वह कहते हैं हमें अब्दुल्लाह ने नाफ़े से रिवायत की है कि इब्ने उमर रज़ि० रफ़ा यदैन करते जब नमाज में दाखिल होते और जब रुकूअ् करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और जब दो रकअत पढ़ कर उठते तो बदस्तूर रफ़ा यदैन करते। (हदीस नम्बर : ८०)

(१८) इब्ने अबी शैबा

٢٠٢- (١) حدثنا أبو بكر حدثنا سفيان بن عيينة ،عن الزهري ، عن سالم عن أبيه قال : رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا افتتح الصلاة،وإذا ركع وبعدما يرفع ولا يرفع بين السجدتين (مصنف ابن أبي شيبة - (١ / ٢٣٤))

हदीस २०२ (१) : हमें अबू बकर बिन अबी शैबा ने हदीस सुनाई, उन्हें सुफ़ियान बिन उयैना ने ज़ुहरी से, उन्होंने सालिम से उन्होंने अपने वालिद से बयान किया कि उन्होंने फरमाया, कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आप नमाज शुरू करते और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से उठने के वक्त रफ़ा यदैन करते और सज्दों में रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (जिल्द १, स० २३४)

٢٠٣- (٢) حدثنا ابن إدريس عن عاصم بن كليب عن أبيه عن وائل بن حجر،قال : رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه كلما ركع ورفع. (مصنف ابن أبي شيبة - ١ / ٢٣٤)

हदीस २०३ (२) : हमें इब्ने इदरीस ने आसिम बिन कुलैब से हदीस सुनाई, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज्र रज़ि० से कहा मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २३४)

٢٠٤- (٣) حدثنا ابن نمير عن ابن أبي عروبةعن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث قال: رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يكبر

ويرفع يديه إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع حتى يحاذي بهما فروع اذنيه. (مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٤)

हदीस २०४ (३) : हमें इब्ने नुमैर ने इब्ने अबू अरूबा से हदीस सुनाई, उन्होंने नस्र बिन आसिम से बयान फरमाया, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से उन्होंने कहा कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, आप जब रुकूअ् के लिए **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो कानों की लव के बराबर रफा यदैन करते। (जिल्द १, स० २३४)

٢٠٥- (٤) حدثنا هشيم عن الزهري عن سالم عن ابن عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه إذا افتتح وإذا ركع وإذا رفع رأسه ولا يجاوز بهما اذنيه.(مصنف ابن ابي شيبة١/ ٢٣٤)

हदीस २०५ (४) : हमें हुशैम ने जुहरी से हदीस सुनाई, उन्होंने सालिम से बयान किया, उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से बयान फरमाया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो (कानों की लव के बराबर) रफा यदैन किया करते थे लेकिन हाथों को कानों से ऊपर नहीं ले जाते थे। (जिल्द १, स० २३४)

٢٠٦- (٥) حدثنا هشيم قال: أخبرنا يحيى بن سعيد عن سليمان بن يسار عن النبي صلى الله عليه وسلم مثل ذلك. (مصنف ابن ابي شيبة - (١ / ٢٣٥))

हदीस २०६ (५) : हमें हुशैम ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा, हमें यहया बिन सईद ने सुलेमान बिन यसार से हदीस सुनाई, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान फरमाया, जैसा कि हदीस इब्ने उमर रज़ि० में गुजरा है। (जिल्द १, स० २३५)

٢٠٧- (٦) حدثنا هشيم قال : أخبرنا ليث عن عطاء قال: رأيت أبا سعيد الخدري وابن عمر وابن عباس وابن الزبير يرفعون أيديهم نحوا من حديث الزهري. (مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २०७ (६) : हमें हुशैम ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा हमें लैस ने खबर दी है, उन्होंने अता से बयान फरमाया, उन्होंने कहा, मैंने हजरत अबू सईद खुदरी रज़ि०, इब्ने उमर रज़ि०, इब्ने अब्बास और इब्ने जुबैर

रज़ि० को इसी तरह रफा यदैन करते हुए देखा, जैसा कि जुहरी की हदीस में मज़कूर है। (जिल्द १, स० २३५)

٢٠٨- (٧) حدثنا هشيم قال: أخبرنا أبو حمزة قال: رأيت ابن عباس يرفع يديه إذا افتتح الصلاة وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع. (مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २०८ (७) : हमें हुशैम ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा हमें अबू हम्ज़ा ने खबर दी, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास रज़ि० को देखा जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते। (जिल्द १, स० २३५)

٢٠٩- (٨) حدثنا هشيم قال : أخبرنا عبد الحميد بن جعفر الأنصاري عن محمد بن عمرو بن عطاء القرشي قال: رأيت أبا حميد الساعدي مع عشرة رهط من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ، فقال : ألا أحدثكم عن صلاة النبي صلى الله عليه وسلم؟ قالوا : هات ، قال: فرأيته إذا كبر عند فاتحة الصلاة رفع يديه، وإذا ركع رفع يديه، وإذا رفع رأسه من الركوع رفع يديه، ثم يمكث قائما حتى يقع كل عظم في موضعه ثم يهبط ساجدا ويكبر.(مصنف ابن ابي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २०९ (८) : हमें हुशैम ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा, हमें अब्दुल हमीद बिन जफर अंसारी ने मुहम्मद बिन अम्र बिन अता कुरशी ने खबर दी, उन्होंने कहा, मैंने अबू हुमैद साइदी रज़ि० को दस सहाबा की जमाअत में देखा, उन्होंने कहा, क्या मैं तुम को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज न बताऊं? सहाबा ने कहा क्यों नहीं ज़रूर बताओ। हजरत अबू सईद रज़ि० ने फरमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आपने नमाज शुरू करने के लिए **अल्लाहु अकबर** कहा और जब रुकूअ् किया और जब रुकूअ् से सर उठाया तो रफा यदैन की। फिर आप सीधे खड़े रहे यहाँ तक कि हर जोड़ अपने असली मकाम पर आ गया, फिर आप **अल्लाहु अकबर** कहते और सज्दे के लिए झुकते। (जिल्द १ स० २३५)

٢١٠- (٩) حدثنا معاذ بن معاذ عن حميد عن أنس أنه كان يرفع يديه إذا دخل في الصلاة وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع. (مصنف ابن أبي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २१० (९) : हमें मुआज़ बिन मुआज़ ने हुमैद से हदीस सुनाई, उन्होंने हज़रत अनस रज़ि० से बयान फरमाया कि वह जब नमाज़ में दाख़िल होते और जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २३५)

٢١١- (١٠) حدثنا معاذ بن معاذ عن ابن أبي عروبة عن قتادة، عن الحسن قال: كان أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم في صلاتهم كان أيديهم المراوح إذا ركعوا، وإذا رفعوا رؤوسهم. (مصنف ابن أبي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस २११ (१०) : हमें मुआज़ बिन मुआज़ ने इब्ने अबू अरूबा से हदीस सुनाई, उन्होंने क़तादा से, उन्होंने हसन से, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा जब रुकूअ़ को जाते और रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते थे और उनके हाथ ऐसे मालूम होते जैसे पंखे हैं। (जिल्द : १, स० २३५)

٢١٢- (١١) حدثنا ابن علية عن خالد أن أبا قلابة كان يرفع يديه إذا ركع ، وإذا رفع رأسه من الركوع. (مصنف ابن أبي شيبة - ١ / ٢٣٥)

हदीस : २१२ (११) हमें इब्ने उलैय्या ने ख़ालिद से हदीस सुनाई कि अबू क़िलाबा जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते थे। (जिल्द १, स० २३५)

❖ ❖ ❖

(١٤) मुसनद इमाम अहमद रह०

٢١٣- (١) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ أَوْ قَرِيبًا مِنْ ذَلِكَ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَهُمَا وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا وَلَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (مسند أحمد- (رقم الحديث:٦٣٤٥)

हदीस २१३ (१) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें अब्दुर्रज़्ज़ाक ने, हमें म'मर ने, उन्होंने ज़ुहरी से रिवायत किया, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने उमर से, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए तक्बीर कहते तो कन्धों के बराबर या उनके क़रीब रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो (इसी तरह) रफ़ा यदैन करते और सज्दों में रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ६३४५)

٢١٤- (٢) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى إِذَا كَانَتَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ كَبَّرَ ثُمَّ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَهُمَا حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ كَبَّرَ وَهُمَا كَذَلِكَ رَكَعَ ثُمَّ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْفَعَ صُلْبَهُ رَفَعَهُمَا حَتَّى يَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ثُمَّ يَسْجُدُ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي السُّجُودِ وَيَرْفَعُهُمَا فِي كُلِّ رَكْعَةٍ وَتَكْبِيرَةٍ كَبَّرَهَا قَبْلَ الرُّكُوعِ حَتَّى تَنْقَضِيَ صَلَاتُهُ (مسند أحمد - (رقم الحديث:٦١٧٥)

हदीस २१४ (२) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें याक़ूब ने, हमें इब्ने शिहाब के भाई के बेटे ने, उन्होंने अपने चचा से, मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर सुनाई कि अब्दुल्लाह ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो कन्धों के

बराबर रफा यदैन करते और तक्बीर कहते। फिर जब रुकूअ् का इरादा करते तो कन्धों तक रफा यदैन करते और तक्बीर कहते, फिर जब उठ कर अपनी कमर को सीधा करते तो कन्धों तक रफा यदैन करते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते फिर सज्दा करते और सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे और रुकूअ् से पहले हर रकअत में रफा यदैन करते और तक्बीर कहते, यहाँ तक कि आपकी नमाज़ ख़त्म हो जाती।

(मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ६७०५)

٢١٥- (٣) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ إِلَى الصَّلَاةِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (مسند احمد - (رقم الحديث:٥٠٨١)

हदीस २१५ (३) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने हमें इस्माईल बिन इब्राहीम ने, हमें म'मर ने जुहरी से, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद से, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप जब नमाज़ मे दाखिल होते, और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो रफा यदैन करते, और सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे।(मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ५०८१)

٢١٦- (٤) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَبَعْدَمَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ وَأَكْثَرُ مَا كَانَ يَقُولُ وَبَعْدَمَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ (مسند احمد - رقم الحديث:٤٥٤٠)

हदीस २१६ (४) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने हमें सुफियान ने जुहरी से, उन्होंने सालिम से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, जब आप नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाने के बाद

कन्धों के बराबर रफा यदैन करते। सुफियान कहते हैं कि एक रिवायत में उन्होंने कहा **"इज़ा रफ़अ रासहू"** (माज़ी के सेग़ा से) लेकिन अक्सर वक़्तवा (मुज़ारे के सेग़ा से) बयान करते **"बाद मा यरफओ रासहू"** और सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : ४५४०)

٢١٧- (٥) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا مَالِكٌ حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ قَالَ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَلَا يَصْنَعُ مِثْلَ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ (رقم الحديث:٤٦٧٤)

हदीस २१७ (५) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें यह्या बिन मालिक ने ख़बर दी, मुझे ज़ुहरी ने सालिम से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो कन्धों के बराबर रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते तो उसी तरह करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो भी उसी तरह रफा यदैन करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते तो साथ ही **"रब्बना व लकल-हम्द"** भी कहते और सज्दों में रफा यदैन नहीं करते थे। (हदीस नम्बर : ४६७४)

٢١٨- (٦) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ أَخْبَرَنِي جَابِرٌ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ فَعَلَ ذَلِكَ مِثْلَ حَدِيثِ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ فِي رَفْعِ الْيَدَيْنِ (مسند احمد - (رقم الحديث:٥٠٩٨)

हदीस २१८ (६) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें अब्दुल्लाह बिन वलीद ने, हमें सुफियान ने, मुझे जाबिर ने सालिम से, उन्होंने इब्ने उमर से, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान फरमाया, कि उन्होंने उसी तरह किया जैसे कि यह्या बिन सईद की हदीस में रफा यदैन का ज़िक्र है। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ५०९८)

٢١٩- (٧) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا دَخَلَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ (مسند أحمد - (رقم الحديث: ٥٧٦٢)

हदीस २१६ (७) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने हमें अफ़्फ़ान ने, हमें हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से, उन्होंने नाफ़े से, उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में दाख़िल होते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ५७६२)

٢٢٠- (٨) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ قَالَ رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ كُلَّمَا رَكَعَ وَكُلَّمَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ فَقُلْتُ لَهُ مَا هَذَا قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ (مسند أحمد - (رقم الحديث: ٦٣٢٨)

हदीस २२० (८) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने आसिम से, उन्होंने इब्ने कुलैब से, उन्होंने मुहारिब बिन दिसार से, उन्होंने कहा मैंने इब्ने उमर को देखा कि जब रुकूअ़ करते या रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते। मैंने पूछा, यह क्या है? फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह करते थे और जब दो रकअत पढ़ कर उठते उस वक़्त भी रफ़ा यदैन करते थे।

(मुसनद अहमद, हदीस नम्बर ६३२८)

٢٢١- (٩) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ قَالَ رَأَيْتُ طَاوُسًا حِينَ يَفْتَتِحُ الصَّلَاةَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ وَحِينَ يَرْكَعُ وَحِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَحَدَّثَنِي رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ أَنَّهُ يُحَدِّثُهُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (مسند أحمد - (رقم الحديث: ٥٠٣٣)

हदीस २२१ (९) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें मुहम्मद बिन जा'फ़र ने, हमें शो'बा ने हकम से, उन्होंने कहा मैंने ताऊस को देखा कि वह जब नमाज़ शुरू करते और रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते। और बयान करते कि इब्ने उमर रज़ि० के शागिर्दों में से एक ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह करते थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ५०३३)

٢٢٢- (١٠) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جَابِرٍ سَمِعْتُ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يُحَدِّثُ أَنَّهُ رَأَى أَبَاهُ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ فَزَعَمَ أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصْنَعُهُ (مسند أحمد - (رقم الحديث: ٥٠٥٦)

हदीस २२२ (१०) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें मुहम्मद बिन जा'फ़र ने, हमें शो'बा ने जाबिर से, उन्होंने कहा मैंने सालिम बिन अब्दुल्लाह को हदीस सुनाते हुए सुना कि उस ने अपने बाप को देखा, जब वह शुरू में तक्बीर कहते तो रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ जाते और जब रुकूअ़ से सर उठाते उस वक़्त भी रफ़ा यदैन करते। सालिम कहते हैं मैंने वालिद से पूछा, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह करते थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : ५०५६)

٢٢٣- (١١) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ شُعْبَةَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ إِلَى أُذُنَيْهِ (رقم الحديث: ٢٠٨٠٥)

हदीस २२३ (११) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें यहया बिन सईद ने शो'बा से, हमें क़तादा ने नस्र बिन आसिम से, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से और वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे, उन्होंने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ में दाख़िल होते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो कानों तक रफ़ा यदैन करते थे।

(मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : २०८०५)

٢٢٤- (١٢) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ وَأَبُو عَامِرٍ قَالَا حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا قَرِيبًا مِنْ أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ صَنَعَ مِثْلَ ذَلِكَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ (رقم الحديث:٢٠٨٠٩)

हदीस २२४ (९२) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें अब्दुस्समद और अबू आमिर ने दोनों ने कहा, हमें हिशाम ने क़तादा से हदीस बयान की, उन्होंने नस्र बिन आसिम से, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब **अल्लाहु अकबर** कहते तो कानों के करीब तक रफा यदैन करते और जब रुकूअ् करते तो उसी तरह (रफा यदैन) करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो भी उसी तरह रफा यदैन करते। (हदीस नम्बर : २०८०६)

٢٢٥- (١٣) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ نَصْرِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ حَتَّى حَاذَتَا فُرُوعَ أُذُنَيْهِ (رقم الحديث:٢٠٨١٠)

हदीस २२५ (९३) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने हमें इस्माईल ने सईद बिन अबी अरूबा से हदीस सुनाई, उन्होंने क़तादा से बयान किया, उन्होंने नस्र बिन आसिम से, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से उन्होंने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आप नमाज शुरू करते और जब रुकूअ् करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो कानों की लव तक रफा यदैन करते। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : २०८१०)

٢٢٦- (١٤) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا عَفَّانُ قَالَ ثنا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الْجَبَّارِ بْنُ وَائِلٍ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلٍ وَمَوْلًى لَهُمْ أَنَّهُمَا حَدَّثَاهُ عَنْ أَبِيهِ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَصَفَ

هَمَّامٌ حِيَالَ أُذُنَيْهِ ثُمَّ الْتَحَفَ بِثَوْبِهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ أَخْرَجَ يَدَيْهِ مِنْ الثَّوْبِ ثُمَّ رَفَعَهُمَا فَكَبَّرَ فَرَكَعَ فَلَمَّا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ سَجَدَ بَيْنَ كَفَّيْهِ (رقم الحديث:١٩٠٧١)

हदीस २२६ (९४) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने हमें अफ्फान ने, उन्होंने कहा, हमें हम्माम ने हदीस सुनाई, हमें मुहम्मद बिन जुहादा ने, मुझे अब्दुल जब्बार बिन वाइल ने अल्कमा बिन वाइल से और उनके मौला ने, उन दोनों ने उसके वालिद वाइल बिन हुज्र से हदीस बयान की कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि जब आप नमाज में दाखिल हुए तो रफा यदैन की और तक्बीर कही। हम्माम रावी कहते हैं कि कानों तक रफा यदैन की। फिर (सर्दी की वजह से) कपड़ा लपेटा। फिर दायां हाथ बाएं पर बांधा, फिर जब रुकूअ् का इरादा किया तो अपने हाथों को कपड़े से निकाला और रफा यदैन की और तक्बीर कही और रुकूअ् किया। फिर जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो रफा यदैन किया, और फिर जब सज्दा किया तो दोनों हथेलियों के दर्मियान सज्दा किया। (मुसनद अहमद,हदीस नम्बर ९६०७९)

٢٢٧- (١٥) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَبَّرَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ كَبَّرَ يَعْنِي اسْتَفْتَحَ الصَّلَاةَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ رَكَعَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ وَسَجَدَ فَوَضَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ أُذُنَيْهِ ثُمَّ جَلَسَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَوَضَعَ ذِرَاعَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ أَشَارَ بِسَبَّابَتِهِ وَوَضَعَ إِبْهَامَهُ عَلَى الْوُسْطَى وَقَبَضَ سَائِرَ أَصَابِعِهِ ثُمَّ سَجَدَ فَكَانَتْ يَدَاهُ حِذَاءَ أُذُنَيْهِ (رقم الحديث:١٩٠٦٣)

हदीस २२७ (९५) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने हमें अब्दुर्रज्जाक ने हदीस सुनाई, हमें सुफियान ने आसिम बिन कुलैब

से हदीस सुनाई, उन्होंने अपने वालिद से बयान किया, उन्होंने वाइल बिन हुज्र से, उन्होंने कहा कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, जब आपने शुरू नमाज़ में तक्बीर कही तो रफा यदैन की, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा तो रफा यदैन की और सज्दा किया तो दोनों हाथ अपने कानों के बराबर (ज़मीन पर) रखे, फिर बैठे तो बायाँ पाँव बिछाया और बायाँ हाथ बाएं घुटने पर रखा और दायां बाज़ू दाएं रान पर रखा और सब्बाबा उंगली से इशारा किया और अपना अंगूठा दर्मियानी उंगली पर रखा और बाक़ी उंगलियों को बन्द रखा और सज्दा में हाथ कानों के बराबर रखे। (हदीस नम्बर : १६०६३)

٢٢٨- (١٦) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا شَرِيكٌ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الشِّتَاءِ قَالَ فَرَأَيْتُ أَصْحَابَهُ يَرْفَعُونَ أَيْدِيَهُمْ فِي ثِيَابِهِمْ (رقم الحديث:١٩٠٥٢)

हदीस २२८ (१६) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें शरीक ने आसिम बिन कुलैब से, उन्होंने अल्क़मा बिन वाइल बिन हुज्र से, उन्होंने अपने वालिद से उन्होंने कहा, जब मैं सर्दियों में आया तो देखा तमाम सहाबी कपड़ों में रफा यदैन करते थे। (मुसनद अहमद,हदीस नम्बर : १६०५२)

٢٢٩- (١٧) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ الْحَضْرَمِيِّ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ كَيْفَ يُصَلِّي قَالَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى كَانَتَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ قَالَ ثُمَّ أَخَذَ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ قَالَ فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى كَانَتَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ فَلَمَّا رَكَعَ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى كَانَتَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ وَضَعَ يَدَيْهِ مِنْ وَجْهِهِ بِذَلِكَ الْمَوْضِعِ فَلَمَّا قَعَدَ افْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَوَضَعَ حَدَّ مِرْفَقِهِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَعَقَدَ ثَلَاثِينَ وَحَلَّقَ وَاحِدَةً وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ (رقم الحديث:١٩٠٥٥)

हदीस २२६ (१७) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें यूनुस बिन मुहम्मद ने हदीस सुनाई, हमें अब्दुल वाहिद ने ख़बर दी, हमें आसिम बिन कुलैब ने अपने वालिद से, उन्होंने वाइल बिन हुज्र हज़रमी से रिवायत किया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया, मैंने कहा कि मैं ज़रूर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखूंगा। (मैंने आपकी नमाज़ देखी) आपने क़िब्ला रू हो कर तक्बीर कही, फिर कन्धों तक रफा यदैन की। फिर बायां हाथ दाएं हाथ से पकड़ा, फिर जब रुकूअ् किया तो कन्धों तक रफा यदैन की और रुकूअ् में अपने हाथ घुटनों पर रखे, फिर रुकूअ् से सर उठाया तो रफा यदैन की कन्धों तक, फिर जब सज्दा किया तो अपने हाथों को ज़मीन पर उसी मक़ाम पर रखा यानी कन्धों के बराबर फिर जब बैठे तो बायां पाँव बिछाया और बायां हाथ बाएं घुटना पर रखा, और दाएं कुहनी के किनारे को दाएं रान पर रखा और तीस की गिरह लगाई और एक उंगली से हल्का बना कर सब्बाबा उंगली से इशारा किया। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १६०५५)

٢٣٠- (١٨) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ أَخْبَرَنِي أَبِي أَنَّ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ الْحَضْرَمِيَّ أَخْبَرَهُ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي قَالَ فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ قَامَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى وَالرُّسْغِ وَالسَّاعِدِ ثُمَّ قَالَ لَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَرَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَهَا ثُمَّ سَجَدَ فَجَعَلَ كَفَّيْهِ بِحِذَاءِ أُذُنَيْهِ ثُمَّ قَعَدَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ وَرُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَجَعَلَ حَدَّ مِرْفَقِهِ الْأَيْمَنِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ قَبَضَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ فَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَفَعَ إِصْبَعَهُ فَرَأَيْتُهُ يُحَرِّكُهَا يَدْعُو بِهَا ثُمَّ جِئْتُ بَعْدَ ذَلِكَ فِي زَمَانٍ فِيهِ بَرْدٌ فَرَأَيْتُ النَّاسَ عَلَيْهِمُ الثِّيَابُ تُحَرِّكُ أَيْدِيهِمْ مِنْ تَحْتِ الثِّيَابِ مِنَ الْبَرْدِ (رقم الحديث: ١٩٠٥٧)

हदीस २३० (१८) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें अब्दुस्समद ने हदीस सुनाई, हमें ज़ाइदा ने, हमें आसिम बिन कुलैब

ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने वाइल बिन हुज्र हज़रमी से ख़बर दी कि उन्होंने कहा कि मैं आपकी नमाज़ ज़रूर देखूंगा कि कैसे पढ़ते हैं. मैंने देखा कि जब आप खड़े होते तो तक्बीर के साथ कानों तक रफा यदैन करते, फिर दायां हाथ बाएं हाथ की कुहनी और बाज़ू पर रखते। फिर जब रुकूअ़ का इरादा करते तो उसी तरह रफा यदैन करके हाथ दोनों घुटनों पर रखे, फिर रुकूअ़ से सर उठाया तो उसी तरह रफा यदैन की, फिर सज्दा किया तो ज़मीन पर दोनों हथेलियाँ कानों के बराबर रखीं, फिर बैठे तो बायां पाँव बिछा कर बैठे और बायां हाथ बाएं रान और घुटने पर रखा और दाएं कुहनी दाएं रान पर रखी, फिर मुट्ठी बन्द करके दो उंगलियों का हल्क़ा बना कर उंगली उठाई। मैंने देखा अपनी उंगली को हरकत दे रहे थे और दुआ कर रहे थे। उसके बाद दोबारा सर्दी के मौसम में आया तो देखा कि लोग कपड़ों में रफा यदैन कर रहे थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १६०५७)

٢٣١- (١٩) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا يَزِيدُ أَخْبَرَنَا أَشْعَثُ بْنُ سَوَّارٍ عَنْ عَبْدِ الْجَبَّارِ بْنِ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ لِي مِنْ وَجْهِهِ مَا لَا أُحِبُّ أَنَّ لِي بِهِ مِنْ وَجْهِ رَجُلٍ مِنْ بَادِيَةِ الْعَرَبِ صَلَّيْتُ خَلْفَهُ وَكَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ كُلَّمَا كَبَّرَ وَرَفَعَ وَوَضَعَ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ وَيُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ (رقم الحديث:١٩٠٦٦)

हदीस २३१ (१६) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें यज़ीद ने हदीस सुनाई, हमें अशअश बिन सव्वार ने ख़बर दी, उन्होंने अब्दुल जब्बार बिन वाइल से बयान किया, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और मुझे सबसे ज़्यादा बात महबूब थी कि मैं किसी और के बजाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ कर देखूं और जब आपने तक्बीर कही और रुकूअ़ से सर उठाया तो रफा यदैन की और सज्दों में रफा यदैन न करते और दाएं बाएं सलाम फेरते। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १६०६६)

٢٣٢- (٢٠) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني ابي حَدَّثَنَا أَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ أَخْبَرَهُ قَالَ قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ كَيْفَ يُصَلِّي فَقَامَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ أَخَذَ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ ثُمَّ قَالَ حِينَ أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا أُذُنَيْهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ رَفَعَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ سَجَدَ فَوَضَعَ يَدَيْهِ حِذَاءَ أُذُنَيْهِ ثُمَّ قَعَدَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى فَخِذِهِ فِي صِفْةِ عَاصِمٍ ثُمَّ وَضَعَ حَدَّ مِرْفَقِهِ الْأَيْمَنِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ ثِنْتَانِ وَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَأَيْتُهُ يَقُولُ هَكَذَا وَأَشَارَ زُهَيْرٌ بِسَبَّابَتِهِ الْأُولَى وَقَبَضَ إِصْبَعَيْنِ وَحَلَّقَ الْإِبْهَامَ عَلَى السَّبَّابَةِ الثَّانِيَةِ قَالَ زُهَيْرٌ قَالَ عَاصِمٌ وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْجَبَّارِ عَنْ بَعْضِ أَهْلِهِ أَنَّ وَائِلًا قَالَ أَتَيْتُهُ مَرَّةً أُخْرَى وَعَلَى النَّاسِ ثِيَابٌ فِيهَا الْبَرَانِسُ وَفِيهَا الْأَكْسِيَةُ فَرَأَيْتُهُمْ يَقُولُونَ هَكَذَا تَحْتَ الثِّيَابِ (رقم الحديث:١٩٠٨١)

हदीस २३२ (२०) : हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, मुझे मेरे वालिद ने, हमें असवद बिन आमिर ने हदीस सुनाई, हमें ज़ुहैर बिन मुआविया ने आसिम बिन कुलैब से हदीस सुनाई, कि उसके वालिद ने ख़बर दी कि वाइल बिन हुज्र ने कहा है कि मैंने अपने दिल में कहा कि मैं ज़रूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखूंगा। पस आप खड़े हुए और कानों के बराबर रफा यदैन की। फिर आपने बायां हाथ दाएं हाथ से पकड़ा, फिर आपने जब रुकूअ़ का इरादा किया तो कानों के बराबर रफा यदैन की। फिर अपने हाथों को घुटनों पर रखा, फिर आपने रुकूअ़ से सर उठाया तो उसी तरह रफा यदैन की, फिर आपने सज्दा किया, पस हाथों को कानों के बराबर रखा, फिर आप बैठे तो बायां पाँव बिछा कर बैठे और बायां हाथ बाएं घुटने पर रखा। आसिम कहता है कि दाएं कुहनी दाएं रान पर रखी और तीन उंगलियाँ बन्द करके इसी तरह उंगली से इशारा किया और ज़ुहैर रावी ने इशारा करके दिखाया, और बगूठे और दर्मियानी उंगली का हल्क़ा बनाया।ज़ुहैर की रिवायत में है कि अब्दुल जब्बार ने अपने बाज़ घर वालों से बयान किया कि वाइल दूसरी मरतबा आया तो लोगों ने कपड़े, ब्रांडियां और चादरें ओढ़ी हुई थीं और वह उनके नीचे से रफा यदैन करते थे। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १६०८९)

٢٣٢- (٢١) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ عَنْ وَائِلٍ الْحَضْرَمِيِّ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى فَكَبَّرَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَخَوَّى فِي رُكُوعِهِ وَخَوَّى فِي سُجُودِهِ فَلَمَّا قَعَدَ يَتَشَهَّدُ وَضَعَ فَخِذَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ وَحَلَّقَ بِالْوُسْطَى (رقم الحديث:١٩٠٨٣)

हदीस २३३ (२१) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें हाशिम बिन कासिम ने ख़बर दी, हमें शो'बा ने आसिम बिन कुलैब से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अपने वालिद को वाइल हज़रमी से रिवायत करते हुए सुना कि उस ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आपने **अल्लाहु अकबर** कहा और रफ़ा यदैन की, फिर जब रुकूअ् किया तो भी रफा यदैन की, पस जब रुकूअ् से सर उठाया तो भी रफा यदैन की, रुकूअ् और सज्दा में हाथों को जिस्म से अलग रखा। जब तशह्हुद में बैठे तो अपनी दाएं रान को बाएं पाँव के ऊपर रखा और अपने दाएं हाथ को रखा और शहादत की उंगली से इशारा किया और बीच वाली उंगली से हल्का बनाया। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : १६०८३)

٢٣٤- (٢٢) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ سَمِعْتُهُ وَهُوَ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدُهُمْ أَبُو قَتَادَةَ بْنُ رِبْعِيٍّ يَقُولُ أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا لَهُ مَا كُنْتَ أَقْدَمَنَا صُحْبَةً وَلَا أَكْثَرَنَا لَهُ تَبَاعَةً قَالَ بَلَى قَالُوا فَاعْرِضْ قَالَ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ اعْتَدَلَ قَائِمًا وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَى بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ قَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ فَرَكَعَ ثُمَّ اعْتَدَلَ فَلَمْ يَصُبَّ رَأْسَهُ وَلَمْ يُقْنِعْهُ وَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ثُمَّ رَفَعَ وَاعْتَدَلَ حَتَّى رَجَعَ كُلُّ

عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ هَوَى سَاجِدًا وَقَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ جَافَى وَفَتَحَ عَضُدَيْهِ عَنْ بَطْنِهِ وَفَتَحَ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ ثُمَّ ثَنَى رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ عَلَيْهَا وَاعْتَدَلَ حَتَّى رَجَعَ كُلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ ثُمَّ هَوَى سَاجِدًا وَقَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ ثَنَى رِجْلَهُ وَقَعَدَ عَلَيْهَا حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عُضْوٍ إِلَى مَوْضِعِهِ ثُمَّ نَهَضَ فَصَنَعَ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذَلِكَ حَتَّى إِذَا قَامَ مِنْ السَّجْدَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا صَنَعَ حِينَ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ ثُمَّ صَنَعَ كَذَلِكَ حَتَّى إِذَا كَانَتْ الرَّكْعَةُ الَّتِي تَنْقَضِي فِيهَا الصَّلَاةُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ عَلَى شِقِّهِ مُتَوَرِّكًا ثُمَّ سَلَّمَ (رقم الحديث:٢٣٩٩٧)

हदीस २३४ (२२) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें यह्या बिन सईद ने अब्दुल हमीद बिन जा'फर से हदीस सुनाई, उन्होंने कहा, मुझे मुहम्मद बिन अता ने अबी हुमैद साइदी से हदीस सुनाई। उस ने कहा मैंने उसे दस सहाबा की मौजूदगी में कहते हुए सुना, जिन में अबू क़तादा बिन रिबई भी थे। कहा, कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को अच्छी तरह जानता हूँ। उन्होंने कहा, न तो तू हम से पहले मुसलमान हुआ है, न ही हम से ज़्यादा आपकी रिफाकत है, उन्होंने कहा कि क्यों नहीं, तो उन्होंने कहा, अच्छा फिर पेश करो, आपकी नमाज कैसी होती थी? उसने कहा कि जब आप ठीक खड़े हो जाते तो कन्धों तक रफा यदैन करते, फिर जब रुकूअ् करते तो भी कन्धों तक रफा यदैन करते और रुकूअ् में न सर को ऊंचा रखते न नीचा और हाथ अपने घुटनों पर रखते, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कह कर खड़े हो जाते और रफा यदैन करते। फिर सज्दा में जाते तो **अल्लाहु अकबर** कहते, फिर अपने बाएं पाँव को बिछा कर उस पर बैठ जाते हत्ता कि जिस्म का हर जोड़ अपनी अपनी जगह पर आ जाता। फिर उठते और उसी तरह दूसरी रकअत में भी करते, फिर दो रकअतों से जब उठते तक्बीर कह कर कन्धों तक रफा यदैन करते, जिस तरह पहली मरतबा किया था, उसी तरह सारी नमाज में करते हत्ता कि वह रकअत आ जाती जिसमें नमाज खत्म होती है तो फिर बायाँ पाँव आगे निकाल कर अपने सुरीन पर बैठ जाते, फिर सलाम फेरते। (मुसनद अहमद, हदीस नम्बर : २३६६७)

٢٣٥- (٢٣) حَدَّثَنَا عبد الله حدثني أبي حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ يَعْنِي ابْنَ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْفَضْلِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ فُلَانِ بْنِ رَبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ الْهَاشِمِيِّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَيَصْنَعُ مِثْلَ ذَلِكَ إِذَا قَضَى قِرَاءَتَهُ وَأَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَيَصْنَعُهُ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرُّكُوعِ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلَاتِهِ وَهُوَ قَاعِدٌ وَإِذَا قَامَ مِنْ السَّجْدَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ كَذَلِكَ وَكَبَّرَ (رقم الحديث:٧١٧)

हदीस २३५ (२३) : हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, मुझे मेरे वालिद ने, हमें सुलेमान बिन दाऊद ने हदीस सुनाई, हमें अब्दुर्रहमान यानी इब्ने अबी ज़िनाद ने मूसा बिन उक्बा से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन फ़ुज़ैल बिन अब्दुर्रहमान बिन फ़ुलान बिन रबीआ बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब हाशमी से बयान किया, उन्होंने अब्दुर्रहमान अ'रज से बयान किया, उन्होंने उबैदुल्लाह बिन अबू राफ़े से बयान किया, उन्होंने अली बिन अबू तालिब से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते और इसी तरह जब क़िरअत ख़त्म करके रुकूअ् का इरादा करते और जब रुकूअ् से सर को उठाते तो (भी रफ़ा यदैन) करते। बैठने की हालत में रफ़ा यदैन न करते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो उसी तरह रफ़ा यदैन करते और **अल्लाहु अकबर** कहते।

(हदीस नम्बर : ७१७)

❖❖❖

(२०) सही इब्ने हिब्बान

٢٣٦- (١) أخبرنا الحسن بن سفيان حدثنا حبان بن موسى أخبرنا عبد الله بن المبارك عن مالك عن ابن شهاب عن سالم، عن ابن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه وإذا كبر للركوع وإذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك أيضا وقال: سمع الله لمن حمده ربنا ولك الحمد وكان لا يفعل ذلك في السجود (صحيح ابن حبان –ج:٣، ص:١٦٨)

हदीस २३६ (१) : हमें हसन बिन सुफ़ियान ने ख़बर दी। हमें हिब्बान बिन मूसा ने, हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने मालिक से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ् के वक़्त **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रबना व लकल हम्द** कहते और सज्दा में ऐसे न करते (यानी रफ़ा यदैन न करते। (सही इब्ने हिब्बान जिल्द ३, स० ९६८)

٢٣٧- (٢) أخبرنا الحسن بن سفيان قال: حدثنا محمد بن عبد الله بن نمير ، وأبو الربيع الزهراني ، قالا : حدثنا سفيان عن الزهري عن سالم عن أبيه قال : رأيت النبي صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه، فإذا أراد أن يركع وبعد ما يرفع رأسه من الركوع ولا يرفع بين السجدتين (صحيح ابن حبان –ص:١٦٩، ج:٣)

हदीस २३७ (२) : हमें हसन बिन सुफ़ियान ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर और अबू रबीअ् ज़हरानी ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमें सुफ़ियान ने ज़ुहरी से हदीस सुनाई, उन्होंने सालिम से उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने कहा कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम को देखा कि जब आप नमाज़ शुरू करते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते, फिर जब रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो भी रफ़ा यदैन करते और सज्दों में रफ़ा यदैन नहीं करते थे।
(इब्ने हिब्बान, जिल्द ३, स० १६६)

٢٣٨- (٣) اخبرنا ابو خليفة قال حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا شعبةعن قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث أن النبي صلى الله عليه وسلم ، كان إذا كبر رفع يديه إذا دخل في الصلاة حتى يحاذي بهما اذنيه وإذا ركع رفع رأسه من الركوع (صحيح ابن حبان – ص:١٦٩، ج:٣)

हदीस २३८ (३) : हमें अबू ख़लीफ़ा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमें सुलेमान बिन हर्ब ने ख़बर दी, हमें शो'बा ने क़तादा से ख़बर दी, उन्होंने नस्र बिन आसिम से बयान किया, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से बयान किया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और रुकूअ् करते और रुकूअ् से सर उठाते तो कानों के बराबर रफ़ा यदैन करते। (सही इब्ने हिब्बान, जिल्द ३, स० १६६)

٢٣٩- (٤) أخبرنا الفضل بن الحباب قال حدثنا أبو الوليد الطيالسي قال حدثنا زائدة بن قدامة قال حدثنا عاصم بن كليب قال حدثني أبي أن وائل بن حجر الحضرمي اخبره قال: لأنظرن إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم كيف يصلي فنظرت إليه حين قام فكبر ورفع يديه حتى حاذتا أذنيه ثم وضع يده اليمنى على ظهر كفه اليسرى والرسغ والساعد ثم لما أراد أن يركع رفع يديه مثلها ثم ركع فوضع يديه على ركبتيه ثم رفع رأسه فرفع يديه مثلها ثم سجد فجعل كفيه بحذاء أذنيه ثم جلس فافترش فخذه اليسرى وجعل يده اليسرى على فخذه وركبته اليسرى وجعل حد مرفقه الأيمن على فخذه اليمنى وعقد ثلاثين من أصابعه وحلق حلقة ثم رفع إصبعه فرأيته يحركها يدعو بها ثم جئت بعد ذلك في زمان فيه برد فرأيت الناس عليهم جل الثياب تتحرك أيديهم تحت الثياب (صحيح ابن حبان – ص:١٦٧، ج:٣)

हदीस २३९ (४) : हमें फ़ज़ल बिन हुबाब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमें अबुल वलीद त्यालसी ने ख़बर दी, हमें ज़ाइदा बिन कुदामा ने ख़बर दी, हमें आसिम बिन कुलैब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा, मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी कि वाइल बिन हुज्र हज़रमी ने उसे ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ देखूंगा कि किस तरह पढ़ते हैं। फिर देखा कि जब खड़े हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा और रफ़ा यदैन की कानों तक। फिर अपना दायां हाथ बाएं हाथ की पुश्त और पहुंचे और कलाई पर रखा, फिर जब रुकूअ् का इरादा किया तो पहले की तरह रफ़ा यदैन किया, फिर रुकूअ् किया, पस अपने हाथों को रखा फिर सर को उठाया फिर अपने हाथों को उठाया पहले की तरह ही, फिर सज्दा किया और अपनी हथेलियों को अपने कानों के बराबर रखा फिर बैठे पस बाएं पाँव को बिछाया और अपने दाएं हाथ को दाएं रान पर रखा। और उंगलियों से तीस की गिरह बांधी और उंगलियों का हल्क़ा बना कर उंगली से इशारा किया और उसे हरकत दी। उसके बाद जब दोबारा आया तो सर्दी का मौसम था। लोग मोटे कपड़े ओढ़े हुए थे। मैंने देखा कि लोग कपड़ों के नीचे से ही रफ़ा यदैन करते थे। (सही इब्ने हिब्बान, जिल्द ३, स० १६७)

٢٤٠- (٥) اخبرنا ابو يعلى قال: حدثنا إبراهيم بن الحجاج الشامي قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا محمد بن جحادة، قال حدثنا عبد الجبار بن وائل بن حجر قال كنت غلاما لا أعقل صلاة أبي فحدثني وائل بن علقمة عن وائل بن حجر قال: صليت خلف رسول الله صلى الله عليه وسلم : فكان إذا دخل في الصف رفع يديه وكبر ، ثم التحف فادخل يده في ثوبه ، فاخذ شماله بيمينه فإذا أراد أن يركع أخرج يديه ورفعهما وكبر ثم ركع فإذا رفع رأسه من الركوع رفع يديه فكبر فسجد ثم وضع وجهه بين كفيه قال ابن جحادة: فذكرت ذلك للحسن بن أبي الحسن فقال: هي صلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم فعله من فعله وتركه من تركه (صحيح ابن حبان – ص:١٦٨، ج:٣)

हदीस २४० (५) : हमें अबू याला ने ख़बर दी, हमें इब्राहीम बिन हज्जाज

शामी ने ख़बर दी, हमें अब्दुल वारिस ने ख़बर दी, हमें मुहम्मद बिन जुहादा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैं बच्चा था, नमाज़ के मसाइल न समझ सकता था। चुनांचे मेरे भाई अल्क़मा ने मुझे बताया कि मेरे वालिद वाइल ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, जब आप नमाज़ शुरू करते तो रफ़ा यदैन करते और कपड़ा लपेट लेते और दायां हाथ बाएं पर रखते, फिर जब रुकूअ् करते तो हाथों को निकाल कर रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ् से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते। फिर जब तक्बीर कह कर सज्दा करते तो अपने चेहरे को दोनों हाथों के दर्मियान रखते।

इब्ने जुहादा कहते हैं मैंने हसन बिन अबू हसन से पछा तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ इसी तरह थी लेकिन जो करते हैं करते हैं और जिस ने छोड़ा वह सुन्नत से महरूम रहा। (सही इब्ने हिब्बान, जिल्द ३, स० १६८)

٢٤١- (٦) أخبرنا إبراهيم بن علي الهراوي بسارية قال حدثنا عمرو بن علي العلاسي قال حدثنا يحيى بن سعيد القطان عن عبد الحميد بن جعفر قال: حدثني محمد بن عمرو بن عطاء عن أبي حميد قال: سمعته في عشرة من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم أحدهم أبو قتادة قال: أنا أعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله عليه وسلم قالوا: ما كنت أقدمنا له صحبة ولا أكثرنا له بيعة قال: بلى قالوا: فاعرض قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا قام إلى الصلاة استقبل القبلة ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم قال: الله أكبر وإذا ركع كبر ورفع يديه حين ركع ثم يعتدل في صلبه ولم ينصب رأسه ولم يقنعه، ثم رفع رأسه وقال: سمع الله لمن حمده، ورفع يديه حتى يحاذي بهما منكبيه ثم اعتدل ثم سجد واستقبل بأطراف رجليه القبلة ثم رفع رأسه فقال: الله أكبر فثنى رجله اليسرى وقعد عليها واعتدل حتى يرجع كل عظم إلى موضعه معتدلا ثم قال: الله أكبر وإذا قام من الركعتين كبر ثم قام حتى إذا كانت الركعة التي تنقضي فيها أخر رجله اليسرى وقعد على رجله متوركا ثم سلم (صحيح ابن حبان ج:٣، ص:١٦٩)

हदीस २४१ (६) : हमें इब्राहीम बिन अली हरावी ने सारिया में ख़बर दी, हमें अम्र बिन अली अलासी ने ख़बर दी, हमें यह्या बिन सईद क़त्तान ने अब्दुल हमीद बिन ज'फर से हदीस सुनाई, मुझे मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ने अबू हुमैद से ख़बर दी, उन्होंने कहा, मैंने उसे दस सहाबा की मौजूदगी में कहते हुए सुना, उन में से एक अबू क़तादा भी थे, उन्होंने कहा, कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ को तुम से ज़्यादा जानता हूँ, उन्होंने कहा, न तो तुम सुहबत के लिहाज़ से मुक़द्दम हो और न ही बैअत के लिहाज़ से। आप रज़ि० ने कहा, क्यों नहीं, उन्होंने कहा तो फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ पेश करो, उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो क़िब्ला की तरफ़ मुँह करते और कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते फ़िर **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ् करते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रुकूअ् के वक़्त रफ़ा यदैन करते। फिर पीठ को बराबर करते और न सर को बुलन्द रखते और न ही ज़्यादा झुकाते। फिर आपने अपना सर रुकूअ् से उठाया और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा और रफ़ा यदैन की। फिर पुश्त सीधी की, फिर सज्दा किया और पाँव की उंगलियों का रुख़ क़िब्ला की तरफ़ किया, फिर सज्दा से सर को उठाया और **अल्लाहु अकबर** कहा, पस बायाँ पाँव मोड़ा और उस पर बैठ गये और सीधे हो गये, यहाँ तक कि हर जोड़ अपनी जगह पर आ गया। फिर **अल्लाहु अकबर** कहा और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े हुए तो **अल्लाहु अकबर** कहा फिर खड़े हुए, यहाँ तक कि जब आख़िरी रकअत हुई जिसमें नमाज़ ख़त्म होती है, बायाँ पाँव मुअख़्ख़र किया और पाँव पर तवर्रुक बैठे, फिर सलाम फेरा। (इब्ने हिब्बान : जिल्द ३, स० १६६)

(२१) मुसनद अबू दाऊद त्यालसी

٢٤٢- (١) حدثنا أبو داود قال : حدثنا سلام بن سليم ، قال : حدثنا عاصم بن كليب ، عن أبيه ، عن وائل الحضرمي ، قال : صليت خلف النبي صلى الله عليه وسلم فقلت : لأحفظن صلاته فافتتح الصلاة فكبر ورفع يديه حتى بلغ أذنيه ، وأخذ شماله

يمينه فلما اراد ان يركع كبر ورفع يديه كما رفعهما حين افتتح الصلاة ، ووضع كفيه على ركبتيه حين ركع ، فلما رفع رأسه من الركوع رفع يديه كما رفعهما حين افتتح الصلاة ، ثم سجد فافترش قدمه اليسرى فقعد عليها قال : ثم وضع كفه اليمنى على فخذه اليمنى ويده اليسرى على فخذه اليسرى وجعل يدعو هكذا يعني بالسبابة يشير بها (مسند الطيالسي —الجزء الرابع : ص ١٣٧)

ह़दीस २४२ (१) : हमें अबू दाऊद ने ख़बर दी, हमें सलाम बिन सलीम ने, हमें आसिम बिन कुलैब ने अपने वालिद से ख़बर दी, उन्होंने वाइल हज़रमी से बयान किया, उन्होंने कहा, मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी, मैंने कहा, मै ज़रूर आपकी नमाज़ को याद करूंगा। आपने नमाज़ शुरू की, **अल्लाहु अकबर** कहा और कानों तक रफ़ा यदैन की और बाएं हाथ को दाएं हाथ से पकड़ा फिर जब रुकूअ़ का इरादा किया तो **अल्लाहु अकबर** कहा फिर रफ़ा यदैन किया। फिर जब रुकूअ़ से सर उठाया तो फिर भी रफ़ा यदैन की, उसी तरह जैसे पहले दफ़ा किया था, फिर सज्दा किया, फिर बैठे तो बायां पाँव बिछा कर उसके ऊपर बैठे और दायां हाथ दाएं रान पर रखा और बायां हाथ बाएं रान पर रखा और उंगली से दुआ करते, यानी उसको हरकत देते। (अबू दाऊद त्यालसी, जिल्द : ४, स० १३७)

٢٤٣- (٢) حدثنا أبو داود قال : حدثنا شعبة عن قتادةعن نصر بن عاصم ، عن مالك بن الحويرث قال: كان النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا افتتح الصلاة وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع (مسند الطيالسي —الجزء السادس. ص:١٧٦)

ह़दीस २४३ (२) : हमें अबू दाऊद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमें शो'बा ने क़तादा से ह़दीस सुनाई, उन्होंने नस्र बिन आसिम से बयान किया, उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस से, उन्होंने कहा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन किया करते थे। (मुसनद अबू दाऊद त्यालसी, जिल्द : ६, स० १७६)

❖❖❖

(२२) मुसनद शाफ़ई रह०

٢٤٤- (١) اخبرنا سفيان عن الزهري عن سالم عن ابيه قال: رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا افتتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذي منكبيه ، وإذا اراد ان يركع ، وبعد ما يرفع ، ولا يرفع بين السجدتين (مسند الشافعي)

ह़दीस २४४ (१) : हमें सुफ़ियान ने ज़ुहरी से ख़बर दी, उन्होंने सालिम से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि जब आप नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन किया करते और सज्दों में रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

(२३) मुअत्ता इमाम मुहम्मद रह०

٢٤٥- (١) اخبرنا مالك حدثنا الزهري عن سالم بن عبد الله بن عمر ان عبد الله بن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا افتتح الصلوة رفع يديه حذاء منكبيه واذا كبر للركوع رفع يديه واذارفع رأسه من الركوع رفع يديه ثم قال سمع الله لمن حمده ربناولك الحمد- (موطا امام محمد ص:٨٩)

ह़दीस २४५ (१) : हमें मालिक ने ख़बर दी, हमें ज़ुहरी ने सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से ह़दीस सुनाई। सालिम ने कहा, अब्दुल्लाह बिन उमर ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ़ के लिए **अल्लाहु अकबर** कहते और जब रुकूअ़ से सर उठाते कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** कहते। (मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ८९)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रबीउल अव्वल ११ हि० को फ़ौत हुए और अपनी उम्र की आख़िरी नमाज़ तक रफ़ा यदैन करते रहे। अगर यह फ़ेअ़्ल ग़ैर साबित शुदह, नाजाइज़ या मन्सूख़ होता तो आपके

बाद खुलफाए राशिदीन, अशरह मुबश्शरह और दीगर अकाबिर सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन न खुद रफा यदैन करते और न लोगों को रफा यदैन करने का हुक्म देते।

सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम में से बाज़ रावियाने अहादीस रफा यदैन के अस्माए गिरामी मआ हवाला कुतुब -

१. हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि०, (सुनने कुबरा स० ७३, जिल्द २)
२. हज़रत अबू उबैदह रज़ि०, (जुज़ सुबकी स. १२)
३. हज़रत उबई बिन कअ्ब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, प. ३, स. ७७४)
४. हज़रत उमर फारूक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (अस्सुननुल कुबरा स० ७३, जिल्द २)
५. हज़रत तलहा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन स. १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, प. ३, स. ७७४)
६. हज़रत अबु दरदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा (महल्ली इब्ने हज़्म स० ८६, जिल्द ४)
७. हज़रत उम्मे दरदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा (जुज़ रफअ् यदैन बुखारी, स० २८)
८. हज़रत सलमान फारसी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ४, प० १)
९. हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प. ३)
१०. हज़रत जुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
११. हज़रत ज़ियाद बिन हारिस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
१२. हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
१३. हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (अबू दाऊद स० ११५,११६ जिल्द १)
१४. हज़रत अबू मसऊद अन्सारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी)
१५. हज़रत अम्र बिन आस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (अस्सुननुल कुबरा स० ७४, जिल्द २)

१६. हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (इब्ने माजा स० ६२, जिल्द १)
१७. हज़रत अदी बिन अजलान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२)
१८. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७५४, प० ३)
१९. हज़रत वाइल बिन हुज्र हजरमी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (मुसनद अहमद मअ् कन्जुल उम्माल जिल्द, ४, स० ३१८)
२०. हज़रत सईद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
२१. हज़रत अबू हुमैद साइदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (स० २६८, जिल्द १, सहीइब्ने खुज़ैमा)
२२. हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (सुनन दारा कुतनी स० २६२, जिल्द १)
२३. हज़रत उमैर लैसी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
२४. हज़रत अबू कतादा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन इमाम बुखारी, स० १८)
२५. हज़रत सअ्द बिन अबी वक्कास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
२६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा (बुखारी जिल्द १, स० १०२)
२७. हज़रत अबू उसैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३, अस्सुननुल कुबरा, जिल्द २, स० १०१)
२८. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन इमाम बुखारी २७)
२९. हज़रत हसन बिन अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (तस्हीलुल कारी, स० ७७४)
३०. हज़रत उक्बा बिन आमिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२, नीज़ तस्हीलुल कारी, स० ७७४, प० ३)
३१. हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफअ् यदैन सुबकी स० १२)
३२. हज़रत बुरैदह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (तस्हीलुल कारी, स० ७७४)
३३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (मुसन्नफ

अब्दुर्रज़्ज़ाक)

३४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाबिर अल बयाज़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (बैहकी)

३५. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफ़अ् यदैन सुबकी स० ६, १०)

३६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (सुनने कुबरा स० ७४, जिल्द २)

३७. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (इब्ने माजा स० ६२, जिल्द १)

३८. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जुज़ रफ़अ् यदैन ४६)

३९. एक अ'राबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (इमाम सुबकी, स० १३)

४०. हज़रत सहल बिन सअ्द रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (इब्ने माजा स० ६२, जिल्द १)

४१. हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (इब्ने अबी शैबा, स० २३५, जिल्द १)

४२. हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (बुखारी जिल्द १, स० १०३)

४३. हज़रत अबू उमामा अल बाहली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (मौज़ूआते कबीर अल्लामा जौज़ी, स० ६८)

४४. हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (जौज़ी, स० ६८)

४५. हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (स० २)

❖❖❖

रफ़ा यदैन पर सहाबा का इज्मा

(१) : हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने आम सहाबा रज़ि० के सामने मस्जिदे नबवी में रफा यदैन से नमाज़ पढ़ाई :

فقال القوم هكذا كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلي بنا- (تخريج الهداية زيلعي)

यानी : तमाम जमाअते सहाबा रज़ि० ने कहा, बेशक रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह हमें नमाज़ पढ़ाया करते थे (जिस तरह आप ने रफा यदैन से नमाज पढ़ाई है)

(२) : हज़रत अबू हुमैद साइदी रज़ि० ने जमाअते सहाबा रज़ि० के सामने रुकूअ् के वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफा यदैन करके दिखाया तो :

فقالوا صدقت هكذا كان يصلي (ابوداودص: ١٩٤، ج:١)

यानी : सब सहाबा रज़ि० ने कहा बेशक रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह नमाज़ पढ़ा करते थे। तमाम सहाबा रज़ि० का (**काना पुवल्ली**) कहना इस अम्र की बैयिन दलील है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० नमाज़ में रफा यदैन किया करते थे।

(३) : इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं :

لم يثبت عن أحد من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم يرفع يديه (جزء رفع اليدين - ص:٥٤)

यानी : किसी एक सहाबी रज़ि० से भी साबित नहीं है कि उन्होंने रफा यदैन न की हो। (जुज़ओ रफइल यदैन स० ५४)

(४) : हसन बसरी और हुमैद बिन हिलाल फरमाते हैं :

كان أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفعون أيديهم لم يستثن أحدا من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم دون أحد، ولم يثبت عند أهل العلم عن أحد من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ما وصفنا (جزء رفع اليدين -

यानी : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तमाम सहाबा रज़ि० रफा यदैन करते थे। उन्होंने किसी एक सहाबी रज़ि० को मुस्तस्ना नहीं किया (कि वह रफा यदैन न करता हो) और अहले इल्म के नज़दीक भी (इस्तिस्ना) किसी एक सहाबी रज़ि० से साबित नहीं। (जुज़ओ रफइल यदैन स० ३४)

रफ़ा यदैन करने वाले ताबईन व तबअ् ताबईन और अइम्मा मुज्तहेदीन

१. इमाम बुखारी रह०, इमाम बैहकी रह० और अल्लामा तकीयुद्दीन सुबकी फरमाते हैं कि :

१. सईद बिन जुबैर २. अता बिन अबी रिबाह ३. मुजाहिद ४. कासिम बिन मुहम्मद ५. हसन बसरी ६. सालिम बिन अब्दुल्लाह ७. उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ८. नौमान बिन अबी अय्याश ९. इब्ने सीरीन १०. अब्दुल्लाह बिन दीनार ११. नाफे १२. हसन मुस्लिम १३. कैस बिन सअद १४. मकहूल १५. ताऊस १६. अबू नज़रह १७. इब्ने अबी नजीह १८. अबू अहमद १९. इस्हाक़ बिन राहवैह २०. इमाम औज़ाई २१. इस्माईल २२. इसहाक़ बिन इब्राहीम २३. इब्ने मुईन २४. अबू उबैदह २५. अबू सौर २६. हुमैदी २७. इमाम इब्ने जरीर २८. हसन बिन ज'फर २९. सालिम बिन अब्दुल अज़ीज़ ३०. अली बिन हुसैन ३१. अब्द बिन उमर ३२. ईसा बिन मूसा ३३. अली बिन हसन ३४. क़तादा ३५. अली बिन अब्दुल्लाह ३६. अब्दुल्लाह बिन उस्मान ३७. अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ३८. अब्दुल्लाह बिन जुबैर ३९. अली इब्ने मदीनी ४०. अब्दुर्रहमान ४१. मुहम्मद बिन सलाम ४२. मुतमर ४३. कअब बिन सअद ४४. कअब बिन सईद ४५. यह्या बिन यह्या ४६. यह्या बिन मुईन ४७. यह्या बिन सईद ४८. याकूब ४९. इब्ने मुबारक ५०. इमाम जुहरी ५१. मालिक बिन अनस ५२. अहमद बिन हंबल रह० ५३. इमाम शाफई वगैरहुम।

انهم يرفعون ايديهم عند الركوع ورفع الراس منه (جزء بخاري: ص:٧)

यानी : यह सब हज़रात व दीगर बेशुमार अइम्म–ए–दीन रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक्त रफा यदैन किया करते थे। (जुज़ बुखारी अरबी स० ७, २२, २३, बैहकी जिल्द २, स० २५, जुज़ सुबकी स० १०, अत्तालीक अल मुमज्जद स० ६१)

२. **इमाम तिर्मिज़ी की शहादत :**

इमाम अबू ईसा तिर्मिज़ी रह० फरमाते हैं कि :

ومن التابعين حسن بصري و عطاء وطاؤس و مجاهد و نافع وسالم بن عبد الله و سعيد بن جبير و غيرهم وبه يقول عبد الله بن المبارك والشافعي و احمد واسحاق (ترمذي - ص:٢٦)

यानी : ताबईन में से जिन के नाम ज़िक्र किए गये हैं और उनके अलावा दीगर बेशुमार अइम्मा और अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह०, इमाम शाफई रह०, इमाम अहमद और इसहाक, सबके सब रफा यदैन किया करते थे। (तिर्मिज़ी स० २६)

३. अय्यूब फरमाते हैं कि मैंने अता बिन अबी रिबाह के साथ नमाज़ें पढ़ी, आप :

يرفع يديه اذا افتتح الصلوة واذا ركع واذا رفع راسه من الركوع (بيهقي ج:٢ ص:٧٣)

यानी : नमाज़ शुरू करने और रुकूअ् जाने और रुकूअ् से सर उठाने के वक्त रफा यदैन किया करते थे। (बैहकी जिल्द २, स० ७३)

४. हम्माद बिन ज़ैद कहते हैं कि मैंने अय्यूब सख्तियानी के साथ बारहा नमाज़ अदा की आप :

فكان يرفع يديه اذا افتتح الصلوة واذا ركع واذا رفع راسه من الركوع- (بيهقي ج:٢ ص:٧٣)

यानी : शुरू नमाज़ और रुकूअ् जाने और रुकूअ् से सर उठाने के वक्त रफा यदैन किया करते थे। (बैहकी जिल्द २, स० ७३)

५. मुहम्मद बिन इस्माईल कहते हैं कि मैंने मुहम्मद बिन फजल के साथ नमाज़ पढ़ी :

فرفع يديه حين افتتح الصلوة وحين ركع وحين رفع راسه من الركوع (بيهقي ج:٢ ص:٧٣)

यानी : वह शुरू नमाज़ और रुकूअ् जाने और रुकूअ् से सर उठाने के वक्त रफा यदैन किया करते। (बैहकी, जिल्द २, स० ७३)

मक्का, मदीना, हिजाज़, इराक़, शाम, बसरा, यमन और खुरासान के अइम्मा-ए-दीन

इमाम बुखारी रह०, इमाम बैहकी रह० और अल्लामा तक़ीयुद्दीन सुबकी रह० फरमाते हैं :

من اهل مكة والمدينة والحجاز واليمن والشام والعراق والبصرة ومن اهل خراسان إنهم يرفعون أيديهم عند الركوع و رفع الرأس منه- (بيهقي ج:٢ ص:٧٥ جزء بخاري مترجم ص: ١٤ جزء سبكي ص: ١٠٠)

यानी : अहले मक्का, अहले मदीना, हिजाज़, यमन, शाम, इराक़, बसरा, खुरासान, इन बड़े बड़े इस्लामी शहरों के तमाम बड़े बड़े उलमा रुकूअ जाने और रुकूअ से सर उठाने के वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे।

(जुज़ बुखारी, मुतर्जिम स० १४, बैहकी जिल्द २, स० ७५, जुज़ सुबकी, स० १

इमाम ज़ुहरी व हसन बसरी रह० का फ़रमान

انهما كان يقولان اذا كبر احدكم للصلوة فليرفع يديه حين يكبر وحين يرفع رأسه من الركوع- (جزء بخاري عربي ص:١٧)

यानी : इमाम ज़ुहरी और हसन बसरी यह दोनों फ़रमाया करते थे कि मुसलमानों को तक्बीर तहरीमा और रुकूअ जाने और रुकूअ से सर उठाने के वक़्त रफ़ा यदैन ज़रूर करनी चाहिए। (जुज़ बुखारी अरबी, स० १७)

अली बिन मदीनी का इरशाद

अली बिन मदीनी फ़रमाते हैं :

حق على المسلمين أن يرفعوا أيديهم عند الركوع والرفع منه - (جزء بخاري عربي ص:٧ ، تحفة الأحوذي ج:١ ، ص:٢١٩)

यानी- : रुकूअ जाने और रुकूअ से सर उठाने के वक़्त रफ़ा यदैन करना मुसलमानों पर वाजिब है क्योंकि हुज़ूर रफ़ा यदैन करते रहे।

(जुज़ बुखारी मुतर्जम स० ७, तुहफ़तुल-अहवज़ी, जिल्द १, स० २१९

शाह वलीयुल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी रह० का फ़तवा

हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी फरमाते है कि :

فاذا اراد ان يركع رفع يديه حذو منكبيه او اذنيه وكذلك اذا رفع راسه من الركوع والذي يرفع احب الى ممن لا يرفع فإن أحاديث الرفع اكثر واثبت- (حجة الله البالغة ج:٢ ص:٨)

यानी : जब रुकूअ करने का इरादा करे तो रफ़ा यदैन करे और जब रुकूअ से सर उठाए उस वक़्त भी रफ़-उल-यदैन करे। मैं रफ़ा यदैन करने वालों को न करने वालों से अच्छा समझता हूँ। क्योंकि रफ़ा यदैन करने की हदीसें बहुत ज़्यादा हैं और बहुत सही है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा, जिल्द २, स० ८)

शैख़ अब्दुल-क़ादिर रह० जीलानी का फरमान

शैख़ अब्दुल-कादिर जीलानी रह० फरमाते है :

رفع اليدين عند الافتتاح و الركوع والرفع منه (غنية الطالبين - ص: ٧)

यानी : नमाज़ में तक्बीरे ऊला के वक़्त और रुकूअ में जाते वक़्त और रुकूअ से उठते वक़्त रफ़ा यदैन करना सुन्नत है। (गुनियतुतालेबीन स० ७)

मौलाना अब्दुल-हई हन्फ़ी का फ़तवा

मौलाना अब्दुल-हई हन्फ़ी रह० फरमाते है :

والحق أنه لا شك في ثبوت رفع اليدين عند الركوع والرفع منه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وكثير من الصحابة بالطرق القوية والأخبار الصحيحة (سعاية ج:١ ، ص:٢١٣)

यानी : हक़ बात यह है कि रुकूअ के वक़्त और रुकूअ से उठते वक़्त रफ़ा यदैन के सुबूत में कोई शक नहीं, क़वी सनद और सही तरीक़ से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के सहाबा रज़ि० क्या करते थे। (सआयह जिल्द १, स० २१३)

रफ़ा यदैन को बिदअत कहने वाला रिसालत मआब, सहाबा और दीगर अइम्मा का गुस्ताख़ है!

जिस शख़्स ने कहा कि रफ़ा यदैन बिदअत है उस ने रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० और सलफ़ और बाद में आने वाले तमाम उलमा और दर्ज जैल अइम्मा को मल्ऊन किया है।

अहले हिजाज़, अहले मदीना, अहले इराक़ में से कुछ उलमा अहले शाम, अहले यमन और अहले खुरासान के उलमा उन में से इब्ने मुबारक रह० भी हैं हत्ता कि हमारे शुयूख ईसा बिन मूसा, अबू अहमद, कअब बिन सईद, अल हसन बिन ज'फर, मुहम्मद बिन सलाम, सिवाए अह्लुर्राय के, अली बिन अल हसन व अब्दुल्लाह बिन उसमान, यह्या बिन यह्या, सदक़ा इसहाक़, इब्ने मुबारक के तमाम असहाब, सौरी, वकीअ् और कूफ़ियों में से बाज़ वह हैं जो रफ़ा यदैन नहीं करते रफ़ा यदैन के मुतअल्लिक़ उन्होंने बहुत सी अहादीस रिवायत की हैं और रफ़ा यदैन करने वालों को बुरा नहीं कहा। (जुजओ रफ़ा यदैन, स० ५३)

❖❖❖

रफ़ा यदैन न करने वाले उलमा से बाज़ सहाबा रज़ि० की औरतों को ज़्यादा इल्म है

इमाम बुखारी फ़रमाते हैं :

ونساء بعض اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم هن اعلم من هؤلاء حين رفعن ايديهن في الصلوة - (جزء رفع يدين مترجم : ص:٢٩)

यानी : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाज़ सहाबा रज़ि० की औरतें उन लोगों से ज़्यादा इल्म रखती हैं, जबकि वह नमाज़ में रफ़ा यदैन करती हैं। (जुज रफ़ा यदैन मुतर्जिम स० २६)

❖❖❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖
❖❖❖
❖❖
❖

अद्मे

रफ़उल यदैन

के

38 दलाइल के मुदल्लल व मुस्किल जवाब

(हिस्सा दोम)

जमा व तरतीब
मौलाना अब्दुर्रशीद अंसारी

अनुवाद
रज़िया आलम

प्रकाशक
सलफ़ी बुक सेन्टर
C-187/A-G.F., शाहीन बाग, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-25

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नाम किताब : इस्बाते रफउल यदैन अहादीस की रोशनी में

मुअल्लिफ़ : मौलाना अब्दुर्रशीद अंसारी

नाशिर : सलफ़ी बुक सेन्टर

प्रथम हिन्दी संस्करण: 2013

संख्या : 1100

क़ीमत :

Published by :

Salafi Book Centre

C-187/A,G.F., Shaheen Bagh, Jamia Nagar,
Okhla, New Delhi -25

विषय सूची

क्या ? कहाँ ?

१. मुक़द्दमा १६२
२. सीधे रास्ते पर चलने की तल्क़ीन १६३
३. दीने इस्लाम पर चलने की पाबन्दी १६३
४. मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही करनी चाहिए १६५
५. वाइज़ को अपने वअ्ज़ पर ज़रूर अमल करना चाहिए १६६
६. ग़लत बयानी की तहक़ीक ज़रूरी है १६८
७. अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम कलामे इलाही लोगों तक पहुंचाते रहे १६६
८. अहकामे इलाही की हिफ़ाज़त अल्लाह तआला के ज़िम्मा है २००
९. बग़ैर इल्म के गुफ़्तगू मत करो २०१
१०. इल्म को छुपाने वाले की सज़ा २०२
११. मुबल्लिग़ के लिए हुज़ूर (स०) की दुआ २०३
१२. इल्म को ज़ाहिर न करने वाले के लिए वईद २०३
१३. खुलास-ए-कलाम २०५
१४. रफ़ा यदैन न करने वालों के दलाइल और उनके जवाबात २०६
१५. मुसन्निफ़ की पहली दलील का जवाब २०६
१६. मुसन्निफ़ की दूसरी दलील और उसका जवाब २११
१७. दूसरी दलील का पहला जवाब २११
१८. दूसरी दलील का दूसरा जवाब २१२
१९. मुसन्निफ़ की दूसरी दलील का तीसरा जवाब २१३
२०. मुसन्निफ़ की दलील का चौथा जवाब २१३
२१. मुसन्निफ़ की तीसरी दलील और उसका जवाब २१४
२२. मुसन्निफ़ की चौथी दलील और उसका जवाब २१४
२३. मुसन्निफ़ की पाँचवीं और सातवीं दलील और उसका जवाब २१७

२४. छठी दलील और उसका जवाब २१९
२५. मुसन्निफ़ की आठवीं दलील और उसका जवाब २१९
२६. मुसन्निफ़ की नवीं दलील और उसका जवाब २२०
२७. मुसन्निफ़ की दसवीं दलील और उसका जवाब २२०
२८. मुसन्निफ़ की ग्यारहवीं दलील और उसका जवाब २२२
२९. मुसन्निफ़ की बारहवीं दलील और उसका जवाब २२२
३०. मुसन्निफ़ की तेरहवीं दलील और उसका जवाब २२४
३१. मुसन्निफ़ की चौदहवीं दलील और उसका जवाब २२४
३२. मुसन्निफ़ की पन्द्रहवीं दलील और उसका जवाब २२६
३३. मुसन्निफ़ की सोलहवीं दलील और उसका जवाब २२६
३४. मुसन्निफ़ की सत्तरहवीं दलील और उसका जवाब २२६
३५. मुसन्निफ़ की अट्ठरहवीं दलील और उसका जवाब २२७
३६. मुसन्निफ़ की उन्नीसवीं दलील और उसका जवाब २२९
३७. मुसन्निफ़ की बीसवीं दलील और उसका जवाब २२९
३८. मुसन्निफ़ की २१,२२,२३वीं दलील और उसका जवाब २३१
३९. मुसन्निफ़ की चौबीसवीं दलील और उसका जवाब २३२
४०. मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील २३२
४१. मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील का पहला जवाब २३३
४२. मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील का दूसरा जवाब २३३
४३. मुसन्निफ़ की छब्बीसवीं दलील और उसका जवाब २३४
४४. मुसन्निफ़ की सत्ताईसवीं दलील और उसका जवाब २३४
४५. मुसन्निफ़ की अट्ठाईसवीं दलील और उसका जवाब २३६
४६. मुसन्निफ़ की २९, ३०, ३१, ३२, ३३वीं दलील २३६
४७. मुसन्निफ़ की ३४ वीं दलील और उसका जवाब २३९
४८. मुसन्निफ़ की ३५ वीं दलील और उसका जवाब २४०
४९. मुसन्निफ़ की ३६ वीं दलील और उसका जवाब २४१
५०. मुसन्निफ़ की ३७ वीं दलील और उसका जवाब २४१
५१. मुसन्निफ़ की ३८ वीं दलील और उसका जवाब २४३
५२. ग़ैर मुक़ल्लेदीन के मसलक और अमल का नम्बरवार जाइज़ा और उसका जवाब २४५
५३. मुसन्निफ़ के एतराज़ात का खुलासा २४५
५४. मुसन्निफ़ के एतराज़ात का जवाब २४५

५५. (अ) अब्दुल्लाह शीआ नहीं बल्कि सिक़ह रावी है २४६
५६. (ब) इब्ने उमर रज़ि० की रिवायत, हदीसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है। २४६
५७. (ज) हदीसे इब्ने उमर रज़ि० में सज्दा का ज़िक्र २५०
५८. इमाम बुख़ारी का फ़ैसला २५०
५९. (द) हमेशगी का ज़िक्र नहीं २५१
६०. (ह) अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि० रफ़ा यदैन किया करते थे २५१
६१. अबू हुमैद साइदी रज़ि० की रिवायत २५२
६२. मुसन्निफ़ की तन्क़ीद का खुलासा और उसका जवाब २५२
६३. अबू हुरैरह रज़ि० की हदीस २५३
६४. हज़रत अली रज़ि० की ग़ैर मुहव्वला हदीस २५४
६५. दूसरी और चौथी रकअत में रफ़ा यदैन साबित नहीं २५४
६६. अल्लामा सिंधी (हन्फ़ी) का जवाब २५६
६७. मुसन्निफ़ की दूसरी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त २५६
६८. मुसन्निफ़ की तीसरी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त २५७
६९. मुसन्निफ़ की चौथी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त २५८
७०. मुसन्निफ़ की पांचवीं मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त २५९
७१. मुसन्निफ़ की छठी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त २६१
७२. रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन २६१
७३. मुसन्निफ़ के दलाइल का खुलासा और उनका जवाब २६२
७४. अबू क़िलाबा सिक़ह रावी हैं २६४
७५. ख़ालिद सिक़ह हैं २६५
७६. नस्र बिन आसिम पर तन्क़ीद का जवाब २६५
७७. नसाई की रिवायत में सज्दा का ज़िक्र और उसका जवाब २६६
७८. वाइल बिन हुज्र रज़ि० की हदीस में सज्दा की रफ़ा यदैन का ज़िक्र और उसका जवाब २६७
७९. सज्दा की रफ़ा यदैन का मसअला और मुसन्निफ़ की पेश करदह रिवायात का जवाब २७०
८०. मुसन्निफ़ की पेश करदह रिवायात का जवाब २७१
८१. तन्क़ीद २७१

❖❖❖

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुक़द्दमा

इलाही! हज़ार हज़ार शुक्र तेरी ज़ात पाक का है कि हम को तूने हज़ारों नेमतें दीं। इरशादे बारी तआला है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلرَّحْمٰنُ ۙ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۙ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ (پ ۲۷، سورۃ الرحمٰن)

तर्जमा : "बड़े रहम वाले (खुदा) ने कुरआन अपने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सिखाया। उसी ने हज़रत इंसान को पैदा किया, उसको बात करना, बोलना सिखाया"।

दूसरे मकाम पर इरशाद बारी तआला है :

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ (پ ۲۱، ع ۱۴، سورۃ السجدۃ ۹)

तर्जमा : "फिर उसको ठीक किया, पुतला बनाया दुरुस्त किया और उसमें अपनी तरफ से जान फूंकी और तुमको (सुनने के लिए) कान दिए और (देखने के लिए आंखें दीं और (समझने के लिए) दिल दिए और तुम बहुत थोड़ा शुक्र करते हो"।

यानी खुदा की नेमतें तुम्हारे पास बेशुमार हैं, तुम को ठीक ठाक और खूबसूरत बनाया, तुम्हारे अन्दर रूह डाली, कानों को सुनने और आंखों को देखने की ताकत दी। फिर इरशाद फरमाता है :

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۝ (پ ۲۹، سورۃ الدھر)

तर्जमा : "हम ही ने उसे रास्ता दिखाया, अब या वह शुक्र गुज़ार बने या ना शुक्रा। यानी अक्ल और समझ भी दी और उसकी तरफ़ पैगम्बर भी भेजे जिन्होंने उस पर शुक्रगुज़ारी और नाशुक्री के रास्ते वाज़ेह कर दिए और दोनों पर चलने के अंजाम से खबरदार किया।

सीधे रास्ते पर चलने की तल्क़ीन

इरशाद बारी तआला है :

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۭ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ (پ ۱۲، سورۃ ھود ۱۱۲)

तर्जमा : "जैसा हुक्म हुआ है उस दीन पर कायम रह और तेरे साथ जिन लोगों ने तौबा की है, वह भी उस पर चलते रहें और हद से मत बढ़ो, बेशक वह तुम्हारे कामों को देख रहा है"।

यानी अल्लाह के हुक्म और शरीअत पर कायम रहें। शरीअत की इताअत के लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो हदें मुकर्रर कर दी हैं अपने आपको उन्हीं के अन्दर रखो, उन से बाहर निकलने की कोशिश न करो।

यह भी इरशाद है :

وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ (البقرۃ، پ ۲، الآیۃ ۱۹۰)

तर्जमा : "ज़्यादती मत करो, अल्लाह तआला ज़्यादती करने वालों को पसन्द नहीं करता"।" यानी हर तरह के जुल्म व ज़्यादती से मना फरमा दिया है।

दीने इस्लाम पर चलने की पाबन्दी

इरशादे बारी तआला है :

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ (یونس، پ ۱۱)

तर्जमा : "और यह कि सब दीनों से अलग हो कर उसी दीन (इस्लाम) पर अपना मुँह सीधा रख और हरगिज़ मुश्रिकों में से मत हो। यानी "ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! तुम दीन पर साबित कदम रहो किसी हाल में भी तौहीद से लग्ज़िश न करो। हनीफ़ वह है जो अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो तमाम चीज़ों से मुँह फेर कर।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا (البقرة، آيت ٨٣)

तर्जमा : "और लोगों से नर्मी के साथ बात करो"। इस में हर वह चीज़ दाख़िल है जिस पर शरई लिहाज़ से हुस्न और अच्छा होने का इत्लाक़ हो सकता हो और यह लफ़्ज़ भलाई के हुक्म देने और बुराई से रोकने को भी शामिल है।

हज़रत अबू ज़र रज़ि० अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : किसी नेकी को हक़ीर न समझो अगर तुम कुछ और न कर सको तो कम से कम अपने भाई के साथ ख़न्दा पेशानी के साथ पेश आ जाओ। (सही मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

इरशाद बारी तआला है :

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ (لقمان، آيت ١٨)

तर्जमा : "लोगों से अपना मुँह फेर कर बात न कर"। यानी गुरूर और तकब्बुर न कर बल्कि तवाज़ु व इंकिसारी के साथ हर एक की बात सुन जब तू अपने मुसलमान भाई से मिले तो कुशादा पेशानी से उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हो जा और तकब्बुर यह है कि हक़ बात से मुँह फेरे और लोगों को हक़ीर जाने **"अल-किब्रू बतरुल-हक़्क़े व ग़म्तुन्नासे"** (मिश्कात शरीफ़ स० ४३३, बाबुल ग़ज़बे वल किब्र)

इरशाद बारी तआला है :

وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ـ (پ ١٤، النحل، آيت ١٢٥)

तर्जमा : "और उनके साथ बहस कर इस तौर से जो पसन्दीदा हो यानी निहायत ही नर्मी और मुहब्बत से। अख़्लाक़, तहज़ीब के दाइरे के अन्दर रहते हुए न कि झिड़क कर।

और इरशाद होता है :

ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ
وَلِيٌّ حَمِيمٌ

तर्जमा : "तुम बुराई को बेहतरीन तरीक़े से दूर कर दिया करो (ऐसा करेगा तो देख लेगा) जो तेरा दुश्मन था वह एक दम से ऐसा हो जाएगा जैसा कि वह तेरा क़रीबी दोस्त है"।

एक दाई इलल्लाह का यह मक़सद होना चाहिए कि बुराई का जवाब बुराई से न दे, बल्कि जहाँ तक गुंजाइश हो बुराई के मुक़ाबले में भलाई से पेश आए और अगर उस से कोई सख़्त बात करे या बुरा मुआमला करे तो उसके मुक़बाले में वह तर्ज़ व तरीक़ा अख़्तियार करना चाहिए जो उस से बेहतर हो। बहरहाल दावत इलल्लाह के मन्सब पर फ़ाइज़ होने वालों को बहुत ज़्यादा सब्र व इस्तिक़्लाल और हुस्ने ख़ुल्क़ की ज़रूरत है।

हदीस में है कि जब ज़ालिम का हाथ पकड़ कर ज़ुल्म से न रोका जाए और भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने को छोड़ कर बैठे तो क़रीब है कि अल्लाह तआला ऐसा आम अज़ाब भेजे जो किसी को न छोड़े।

(मिश्कात स० ४३६)

हाँ! मुस्लेहीन इस्लाह करते रहें और लोग अपनी हालत दुरुस्त कर लें तो ख़ुदा ज़ालिम नहीं है कि ख़्वाह मख़्वाह उन्हें हिलाक करे और अज़ाब भेजे।

तिर्मिज़ी शरीफ़ सफ़ः २२ जिल्द दोम में है कि अबुल अहवस के बाप ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि अगर कोई हमारी मेहमान नवाज़ी, ख़ैर ख़बर न ले तो हम भी उसके बदला में ऐसा ही करें? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया नहीं, बल्कि बुराई का बदला नेकी से दो। दूसरी रिवायत में है कि अपने नफ़्सों को दबाओ, सब्र और दरगुज़र करो।

मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही करनी चाहिए

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर छः हक़ हैं। पूछा गया या रसूलुल्लाह! वह कौन से हैं? (१) फ़रमाया कि जब तू किसी मुसलमान से मुलाक़ात करे तो उसको सलाम कहे। (२) जब तुझे कोई दावत दे तो उसकी दावत क़बूल कर। (३) जब तुझ से कोई नसीहत या ख़ैर ख़्वाही चाहे तो उसको नसीहत कर। (४) जब कोई छींके और फिर **अल्हम्दुलिल्लाह** कहे तो उसकी छींक का जवाब दे यानी **यरहमुकल्लाह** कहे। (५) जब कोई बीमार हो तो उसकी इयादत करो। (६) जब कोई मर जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाओ। (मुस्लिम, मिश्कात जिल्द १, किताबुल जनाइज)

इस हदीस से यह भी साबित होता है कि मुसलमान को नसीहत करनी और उसकी ख़ैर ख़्वाही करनी चाहिए, जैसा कि आप (स.) ने फ़रमाया है :

عَنْ تَمِيْمٍ الدَّارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الدِّيْنُ النَّصِيْحَةُ ثَلَاثًا قُلْنَا لِمَنْ هِيَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ لِلّٰهِ وَلِكِتَابِهِ وَلِرَسُوْلِهِ وَلِأَئِمَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ وَعَامَّتِهِمْ أَخْرَجَهُ مُسْلِمٌ۔ (بلوغ المرام مترجم ص ٣١٣)

तर्जमा : "हज़रत तमीम दारी रज़ि० कहते हैं कि तीन मरतबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है। अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह किस की? फरमाया अल्लाह तआला के वास्ते, अल्लाह की किताब के हक़ में, अल्लाह के रसूल के हक़ में, मुसलमानों के हाकिम के लिए और मुसलमानों के लिए"। (मुस्लिम शरीफ़, बुलूगुल मराम, किताबुल जामे, स० ३१३)

अल्लाह तआला की ख़ैर ख़्वाही से मुराद यह है कि उस पर सच्चे दिल से ईमान लाया जाए और उसके हुक्म के मुताबिक हर काम अंजाम दिए जाएं। किताब की ख़ैर ख़्वाही से मुराद यह है कि उसे अल्लाह तआला की किताब मानते हुए उस पर खुलूसे नीयत से अमल करें। अल्लाह के रसूल की ख़ैर ख़्वाही यह है कि उन्हें अल्लाह का रसूल माने और उनकी इताअत करे। मुसलमान हाकिम की ख़ैर ख़्वाही यह है कि अगर वह अल्लाह और रसूल के हुक्म के मुताबिक काम करे तो उसके साथ मदद की जाए। इसी तरह दूसरे मुसलमानों की भी ख़ैर ख़्वाही यह है कि उन में मौजूद नकाइस की इस्लाह की जाए और उन्हें किसी किस्म की तक्लीफ़ न दे और जो वह दीन के बारे में न जानते हों उन्हें सिखा दे और अम्र बिल मारूफ़, नही अनिल मुंकर के अमल को जारी रखे।

वाइज़ को अपने वअ़ज़ पर ज़रूर अमल करना चाहिए

जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं :

وَمَا أُرِيْدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلٰى مَا أَنْهٰكُمْ عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيْدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيْقِيْ إِلَّا بِاللّٰهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيْبُ ۝ (پ ١٢ هود ٨٨)

तर्जमा : "और मैं नही चाहता कि तुम को एक काम से मना करूं फिर खुद उसको करने लगूं, मैं तो चाहता हूँ जहाँ तक मुझ से हो सके तुम को

...वार हूँ और मेरी तौफ़ीक अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ रुजूअ् करता हूँ"।

यानी मै जिस चीज़ से तुम को मना करता हूँ ख़ुद वह काम छुप कर न करूंगा। तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और इस उम्मत के सलफ़े सालेहीन का भी यही तरीक़ा रहा है।

इरशादे बारी तआला है :

وَأَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ (الانفال)

तर्जमा : "अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कहा मानो और आपस में (नाहक़) इख़्तिलाफ़ मत रखो, नहीं तो बुज़दिल हो जाओगे, और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।"

यानी आपस की ना इत्तिफ़ाक़ी, बदसुलूकी, इख़्तिलाफ़ात, हसद व कीना, बुग़्ज़ व अदावत बुरी चीज़ है। यानी उनकी वजह से नेकियाँ उसी तरह मिट जाती है जिस तरह उस्तरा बालों को दूर कर देता है। तमाम मुसलमानों को इख़्तिलाफ़ात ख़त्म करके एक अक़ीदा, एक मज़्हब हो कर एक दूसरे के हमदर्द हो कर रहना चाहिए। जैसा कि अल्लाह ने फरमाया है :

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۚ (آل عمران، آيت ١٠٣، پ ٤)

तर्जमा : "और तुम सब मिल कर अल्लाह तआला की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और गुटबन्दी न करो"।

यानी उसके दीन या जमाअत या क़ुरआन को थामे रहो, फूट न करो। यानी किताबुल्लाह वही हब्लुल्लाह है जिसने उसकी पैरवी की वह हिदायत पर है और जिसने उसको छोड़ दिया वह गुमराह हुआ।

इस आयत में मुसलमानों के लिए जमाअती जिन्दगी का हुक्म और तफ़रीक़ और जुदाई की मुमानेअत है।

इरशादे बारी तआला है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ۝ (پ ٢٦ سورة محمد آيت ٣٣)

तर्जमा : " ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल का कहा मानो और अपने आमाल को बर्बाद न करो"।

मालूम हुआ कि बसाऔक़ात नाफ़रमानी से नेक अमल ज़ाए हो जाते

हैं और नेकी उसी सूरत में नफ़ा दे सकती है, कि इंसान अल्लाह तआला और उसके रसूल पाक का फ़रमांबरदार रहे।

दरअस्ल तुम्हारा हामी व नासिर तो अल्लाह तआला है। उसी पर भरोसा रखोगे तो दुनिया की कोई ताक़त तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती जैसे कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं :

• بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ (پ ٤، آل عمران، آیت ١٥٠)

तर्जमा : "बल्कि अल्लाह तआला तुम्हारा कारसाज़ है और उसी की मदद सब से बेहतर है"।

जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म मानता है अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि हक़ को ग़ालिब रखूंगा। जैसा कि इरशादे बारी तआला है :

• وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ (پ ١١، یونس آیت ٨٢)

तर्जमा : "अल्लाह तआला हक़ बात को हक़ कर दिखाएगा चाहे मुजरिम को कितना ही बुरा लगे"।

यानी हक़ बात की तहक़ीक़ हर इंसान को अपनी ताक़त के मुताबिक़ करनी चाहिए ताकि आदमी गुमराह हो कर न मरे बल्कि हक़ की तलाश में कोशिश करता रहे।

ग़लत बयानी की तहक़ीक़ ज़रूरी है

जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

• يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَاۗءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا
قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰي مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ٥ (پ ٢٦، الحجرات ٦)

तर्जमा : "ऐ ईमान वालों! (जल्दी मत किया करो) अगर कोई फ़ासिक़ शख़्स कोई ख़बर ले आए तो उसकी तहक़ीक़ कर लिया करो ऐसा न हो कि तुम बेजाने बूझे (तहक़ीक़ किए बग़ैर) किसी क़ौम पर चढ़ दौड़ो। फिर अपने किये पर पछताओ"।

इसलिए किसी काम में जल्दी न करो बल्कि पैग़म्बर अलैहिस्सलाम की तरफ़ रुजूअ् करो और जो इरशाद वहाँ से पाओ उस पर अमल करो, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अल्लाह तआला के हुक्म पर अमल करता है उसमें उसका भला है। **अमले सालेह** वह है कि जो

ख़ालिस अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हो और सुन्नते ताहिरा के मुवाफ़िक़ हो और उसमें रियाकारी या किसी क़िस्म की ज़ाती या क़ौमी मस्लेहत को दख़ल न हो वरना वह अमल मरदूद हो जायेगा। जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं :

• اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ
يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ٥ (پ ١٦، الکہف، آیت ١٠٣)

तर्जमा : "यह वह लोग हैं जिनकी दुनियावी ज़िन्दगी की सभी कोशिश बेकार हो गई और वे इसी भ्रम में रहे कि वे बहुत अच्छे काम कर रहे हैं"।

मालूम होता है जो आदमी अमल करे उसकी पड़ताल करनी उस पर ज़रूरी है। ऐसा न हो कि उसका अमल किसी काम न आवे और फिर वह पछतावे। हदीस शरीफ़ में है कि कुरआन मजीद की एक आयत सीख लेना एक सौ रकअत नफ़्ल पढ़ने से ज़्यादा सवाब होता है और मसअला सीख लेना हज़ार रकअत नवाफ़िल से अफ़ज़ल है। (इब्ने माजा स० १२०, जिल्द १)

अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम कलामे इलाही लोगों तक पहुंचाते रहे

इरशादे बारी तआला है :

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ
مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ٥ (پ ٢٤، المؤمن آیت ٧٨)

तर्जमा : "बेशक हम आपसे पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं, जिन में से कुछ के (वाक़िआत) हम आप को सुना चुके हैं और उन में से कुछ की बातें तो हम ने आपको सुनाई ही नहीं"। यानी बाज़ का तफ़्सीली हाल बयान किया और बाज़ का नहीं किया। बहरहाल सब पर ईमान लाना ज़रूरी है, जैसा कि इरशाद है :

"لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ" (البقرة : ٢٨٥)

तर्जमा : यानी ऐसा नहीं है कि हम बाज़ अंबियाए किराम को मानते हों और बाज़ का इंकार करते हों बल्कि हम तमाम अंबियाए किराम को मानते हैं।

मुसनद अहमद में हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि आदम

अलैहिस्सलाम की औलाद में से एक लाख चौबीस हज़ार नबी व पैग़म्बर हुए हैं।

आख़िरी रसूल के मुतअल्लिक जैसा कि अल्लाह तआला फरमाते हैं :

"مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا" (پ۲۲ الاحزاب ۴۰)

तर्जमा : "हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम में से किसी मर्द के बाप नहीं है, अल्बत्ता वह अल्लाह तआला के रसूल है और सारे नबियों में आख़िरी है और अल्लाह तआला हर चीज़ को अच्छी तरह जानने वाला है"।

इस से कतई तौर पर मालूम हुआ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहती दुनिया तक अल्लाह के नबी हैं। आपके बाद कोई नया नबी नहीं होगा और फिर अहादीसे सहीहा में ख़ातमुन्नबीयीन होने की तशरीह कर दी गई है जिसके बाद किसी शुबह की गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नुज़ूल, ख़त्मे नुबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं है। क्योंकि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की शरीअत पर चलेंगे वह नए नबी नहीं बल्कि आप से पहले के नबी हैं।

अहकामे इलाही की हिफ़ाज़त अल्लाह तआला के ज़िम्मा है

इरशादे बारी तआला है :

"إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ" (پ۱۴ الحجر آیت ۹)

तर्जमा : "बेशक कुरआन मजीद को हम ही ने उतारा है और हम ही उसके मुहाफ़िज़ हैं"।

कुरआन के अलावा दुनिया में कोई किताब ऐसी नहीं है जो चौदह सौ साल गुज़र जाने के बावजूद इस तरह महफ़ूज़ हो कि उसके किसी एक हरफ़ में भी रदो बदल न हुआ हो और दुनिया भर में कुरआन के जितने नुस्ख़े मौजूद हैं उनमें अदना सा भी इख़्तिलाफ़ नहीं है। इसके अलावा लाखों इंसानों के सीनों में महफ़ूज़ है। यह है कुदरत की तरफ़ से हिफ़ाज़त जो किसी और किताब को नसीब नहीं हुई।

इल्मे दीन के हासिल करने के लिए भी अल्लाह तआला का इरशाद है :

"وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ" (پ۱۱ التوبہ ۱۲۲)

तर्जमा : "और मुसलमानों को यह न चाहिए कि सब के सब निकल खड़े हों, पस क्यों न निकले हर फ़िरक़े से उन में एक जमाअत ताकि वे दीन को समझ बूझ कर हासिल करें और ताकि डरावें अपनी कौम को जब कि वे उनके पास आएं, शायद कि वे डर जायें"।

मिश्कात स० २२ में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"مَنْ يُرِدِ اللّٰهُ بِهٖ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ"

तर्जमा : "अल्लाह तआला जिस किसी के साथ बेहतरी चाहता है तो उसको दीन की समझ अता फरमा देता है"।

ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर क़बीले में से कुछ लोग निकलते, इल्म हासिल करते और वापस आ कर अपने क़बीले के लोगों को भी दीन के अहकाम से ख़बरदार करते ताकि वह बुरी बातों से परहेज़ करते।

आयत के अल्फ़ाज़ में इन हर दो मफ़्हूम का यक्साँ एहतमाल है और उसकी रू से जिहाद और तलबे इल्म दोनों के लिए निकलना मुसलमानों के लिए फ़र्ज़े किफ़ाया की हैसियत रखता है।

यानी उसकी ज़िम्मेदारी बहैसियत मज्मूई सब पर आइद होती है और उन में से बाज़ अफ़राद का उसे अंजाम देना ज़रूरी है वरना सब गुनहगार होंगे।

बग़ैर इल्म के गुफ़्तगू मत करो!

अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं :

"وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا" (پ۱۵ بنی اسرائیل ۳۶)

तर्जमा : "और जो बात तू नहीं जानता उसके पीछे न पड़ा रह, इसलिए कि कान और आंख और दिल इन सब से (क़यामत के दिन) पूछ होगी"।

यानी बेतहक़ीक़ किसी बात की अंधा धुन्ध पैरवी न कर, इसमें झूठी गवाही, ग़लत तोहमत और सुनी सुनाई बातों पर किसी की बुराई करना सब शामिल है।

नीज़ इस से मालूम हुआ कि कुरआन व हदीस की दलील होते हुए किसी की शख़्सी राय और क़ियास पर अमल करना मम्नूअ् है।

इल्म को छुपाने वाले की सज़ा

अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं :

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ (پ ۲، البقرۃ، آیت ۱۵۹)

तर्जमा : "जो हमने अपनी कुदरत की खुली निशानियाँ और हिदायत की बातें उतारीं, अब उसके बाद जो लोग उनको छुपाते हैं उन पर अल्लाह लानत करता है और सब लानत करने वाले भी लानत करते हैं"। यानी ऐसा करने वाला मल्ऊन है।

अल-बैय्येनात से मुराद वाज़ेह दलाइल और **'अल हुदा'** से अहकामे शरीअत मुराद हैं, जिसने दुनिया के मक़सद के वास्ते हक़ छुपाया वह सब उस में दाख़िल हैं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि जिससे इल्म का सवाल किया गया और उस ने बावजूद इल्म होने के छुपाया तो क़यामत के दिन उसको आग की लगाम पहनाई जाएगी। (मिश्कात, स० ३४)

एक रिवायत में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से यूं आया है कि अगर दो आयात किताबुल्लाह में न होतीं तो मैं किसी से भी कोई हदीस बयान न करता। एक तो यही आयत और दूसरी "**व इज़ अख़ज़ल्लाहु अलख़।**
(प० ४, आले इमरान, १८७)

मालूम हुआ कि हदीस भी अल्लाह की जानिब से उतरी है और उसको छुपाने वाला मुंकिर जो बग़ैर तौबा मरा वह मल्ऊन है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है "**बल्लेग़ू अन्नी वलौ आयतन**" यानी "मेरी तरफ़ से बात दूसरों को पहुंचाओ अगरचे एक आयत ही हो"। हमें अल्लाह और रसूल का हुक्म मान कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहादीस दूसरों तक पहुंचाना चाहिए ताकि दूसरों पर दीन की हुज्जत क़ायम हो सके। (मिश्कात)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"هَلْ بَلَّغْتُ؟ قَالُوا بَلَىٰ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ (مشکوۃ)

तर्जमा : "अल्लाह के बन्दो! मुझे जवाब दो, क्या मैंने अल्लाह के हुक्मों

की तबलीग़ कर दी? सबने जवाब दिया कि हाँ! या रसूलल्लाह! बेशक आपने हम को पहुंचा दिया। आपने फरमाया कि तुम में से जो हाज़िर हो उस पर फ़र्ज़ है कि जो हाज़िर नहीं है उनको मेरी यह हदीसें पहुंचा दें"।

मुबल्लिग़ के लिए हुज़ूर की दुआ

نَضَّرَ اللَّهُ امْرَأً سَمِعَ مِنَّا شَيْئًا فَبَلَّغَهُ كَمَا سَمِعَهُ

तर्जमा : "ख़ुदा तआला उस शख़्स को हरा भरा रखे जिस ने मुझ से कुछ सुना फिर उसे जूं का तूं पहुंचा दिया। (तिर्मिज़ी)

इल्म को ज़ाहिर न करने वाले के लिए वईद(सज़ा)

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है :

"وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ (الآیۃ، پ ۱، سورۃ البقرۃ)

तर्जमा : "और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा कि ख़ुदा की गवाही जो उसके पास हो छुपाए"।

इससे मालूम हुआ कि अगर किसी के पास इल्म (किताब व सुन्नत का) हो फिर उसे उसके बयान करने का हक़ पहुंचता है, अगर बयान नहीं करता तो इसका मतलब उस आयत पर अमल नहीं है और अपने इल्म को ज़ाहिर न करने की बिना पर बहुत बड़ी वईद भी बता दी है।

दूसरे मक़ाम पर अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं :

"قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا (پ ۸، سورۃ الانعام، آیت ۱۴۹)

तर्जमा : "कह दीजिए, क्या तुम्हारे पास कुछ इल्म है तो उसे हमारे लिये निकालो"। (ज़ाहिर करो)

इस से मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुक्म दिया कि ऐलान कीजिए अगर आपके पास कोई इल्म है तो उसे ज़ाहिर करें ताकि हक़ बात का पता चल जाए।

इन दो आयात की ताईद मुन्दरजा ज़ैल अहादीस से भी होती है :

(الف) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ إِنَّ مِنْ أَشَرِّ النَّاسِ عِنْدَ اللَّهِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَالِمٌ لَا يَنْتَفِعُ بِعِلْمِهِ (رواہ الدارمی، مشکوٰۃ، کتاب العلم ص ۳۰)

तर्जमा : "हज़रत अबू दर्दा रज़ि० फरमाते हैं कि ख़ुदा के नज़्दीक क़यामत के दिन मरतबा के एतबार से सब से बदतर शख़्स वह आलिम होगा जिसके इल्म से नफ़ा हासिल न किया जाए"।

इस हदीस से यह मालूम होता है कि जिस आलिम ने भी इल्म को ज़ाहिर नहीं किया, क़यामत के दिन सबसे बदतर होगा।

(ब) وَعَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ عِلْمٍ لَا یُنْتَفَعُ کَمَثَلِ کَنْزٍ لَا یُنْفَقُ مِنْهُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ۔ (رواہ احمد والدارمی) مشکوٰۃ ص ۳۰

तर्जमा : "हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं, फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि उस इल्म की मिसाल जिस से नफ़ा न उठाया जाए उस ख़ज़ाना की मानिन्द है जिस में से खुदा की राह में कुछ ख़र्च न किया जाए"।

इस हदीस से मालूम होता है कि उस आलिम ने भी अल्लाह तआला की राह में कोई ख़र्च न किया, ख़ज़ाना उसके पास था मगर अल्लाह तआला की राह में ख़र्च न किया। अगर ख़र्च करता तो लोगों को नफ़ा होता और लोग फाइदा उठाते तो उसको भी सवाब मिलता। सवाब से यूं महरूम रहा। सब ख़ज़ाना अपने पास ही रखा उसने भी अपने इल्म को ज़ाहिर नहीं किया।

(ज) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَوْحَی اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ اِلٰی جِبْرَائِیْلَ عَلَیْهِ السَّلَامُ اَنِ اقْلِبْ مَدِیْنَةَ کَذَا وَکَذَا بِاَهْلِهَا فَقَالَ یَا رَبِّ اِنَّ فِیْهِمْ عَبْدَکَ فُلَانًا لَمْ یَعْصِکَ طَرْفَةَ عَیْنٍ فَقَالَ اقْلِبْهَا عَلَیْهِ وَعَلَیْهِمْ فَاِنَّ وَجْهَهٗ لَمْ یَتَمَعَّرْ فِیَّ سَاعَةً قَطُّ۔ (مشکوٰۃ باب الامر بالمعروف)

तर्जमा : "हज़रत जाबिर रज़ि० कहते है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है, कि खुदा तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि फलां शहर को जो ऐसा और ऐसा है उसके बाशिन्दों समेत उलट दे। जिब्रील ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवरदिगार! उसके बाशिन्दों में तेरा फुलाँ बन्दा भी है जिसने एक लम्हा के लिए भी तेरी नाफरमानी नहीं की। खुदा तआला ने फरमाया, उस पर और सारे बाशिन्दों पर शहर को उलट दे। इसलिए कि उस शख़्स का चेहरा एक लम्हे के लिए भी मेरी खुशनूदी के लिए मुतग़ैयर नहीं हुआ"। (बैहक़ी)

इस हदीस से मालूम हुआ कि बन्दा इबादत करता था जिस ने एक लम्हा के लिए भी नाफरमानी नहीं की उस बन्दा ने भी इल्म को ज़ाहिर नहीं किया और अगर करता तो उसकी जान हिलाक न होती। ख़ामोशी अख़्तियार की। यह बन्दा भी उनके साथ हिलाक हो गया। ❖

खुलास-ए-कलाम

मुसलमान मुसलमान का शीशा है। अगर एक मुसलमान से ग़लती हो जाए तो दूसरा मुसलमान याद करा दे। अल्लाह तआला फरमाते हैं :

وَقَالُوْا لَوْ کُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا کُنَّا فِیْ اَصْحٰبِ السَّعِیْرِ۔

(پ ۲۹، سورۃ الملک : آیت ۱۰)

तर्जमा : "कहेंगे काश कि हम सुनते होते या समझते होते तो हम आग वालों में न होते"।

इससे मालूम होता है कि आदमी को चाहिए कि बात को सुने या समझे जिसकी बात हक़ हो, वह क़बूल कर ले। अगर क़बूल नहीं करेगा फिर पछताएगा। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाते हैं :

اَلَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ اُولٰٓئِکَ الَّذِیْنَ هَدٰهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِکَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ۔ (پ ۲۳، سورۃ الزمر، آیت ۱۸)

तर्जमा : "वह लोग जो बात सुनते है फिर वह अच्छी बात की पैरवी करते हैं, यही वह लोग हैं, जिनको अल्लाह तआला ने हिदायत दी और यही लोग अक्ल वाले हैं"।

यानी वह कुरआन व हदीस को दिल लगा कर सुनते है और फिर अमल के लिए उस हुक्म को अख़्तियार करते हैं जो अफ़ज़ल होता है। यानी रुख़सत की बजाए अज़ीमत की राह पर कार्बन्द होते हैं, जिन्होंने अपनी अक्लों को सही इस्तेमाल किया। क्योंकि वही लोग ऐसे होते हैं जो फ़िक्र करते हैं और असल हक़ीकत को समझ लेते हैं।

नोट : जवाब जो हमने दिया है वह अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म समझ कर दिया है। हम तरतीबवार उनकी हक़ीकत से पर्दा उठाते हैं। अल्लाह तआला हमें हक बात करने, कहने और उस पर अमल करने की तौफीक बख़्शे।

आमीन या रब्बल-आलमीन।

❖❖❖

रफ़ा यदैन न करने वालों के दलाइल और उनके जवाबात

पहली दलील :

عن جابر بن سمرة قال خرج علينا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ما لي أراكم رافعي أيديكم كأنها أذناب خيل شمس، اسكنوا في الصلوة (صحيح مسلم ص ١٨١ ج ١، ابو داؤد ص ١٥٠ ج ١، نسائي ص ١٢٦، طحاوي ص ١٥٠ ج ١، مسند احمد ص ٩٣ ج ٥) وسنده صحيح جليل۔

तर्जमा : "हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ि० से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास नमाज़ पढ़ने की हालत में तशरीफ़ लाए और हम (नमाज़ के अन्दर रफ़ा यदैन कर रहे थे) तो बड़ी नाराज़गी से फरमाया कि मैं तुम को नमाज़ में शरीर घोड़ों की दुमों की तरह रफ़ा यदैन करते क्यों देखता हूँ, नमाज़ में साकिन और मुत्मइन रहो।

मुसन्निफ़ की पहली दलील का जवाब

१. मुसन्निफ़ की पेशकर्दाह हदीस का जवाब ख़ुद सही मुस्लिम में मौजूद है, चुनांचे मुलाहिज़ा फरमाएं :

(۱) حدثني القاسم بن زكريا قال نا عبيد الله بن موسى عن إسرائيل عن فرات يعني القزاز عن عبيد الله عن جابر بن سمرة قال صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فكنا إذا سلمنا قلنا بأيدينا السلام عليكم، السلام عليكم، فنظر إلينا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ما شأنكم تشيرون بأيديكم كأنها أذناب خيل شمس، إذا سلم أحدكم فليلتفت إلى صاحبه ولا يومئ

तर्जमा : मुझे कासिम बिन ज़करिया ने हदीस सुनाई, उन्हें उबैदुल्लाह बिन मूसा ने, उन्होंने इस्राईल से, उन्होंने फुरात यानी क़ज़्ज़ाज़ से, उन्होंने उबैदुल्लाह से, उन्होंने कहा कि हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ि० ने फरमाया कि :

हम लोग रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़

पढ़ते तो ख़त्मे नमाज़ पर **"अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि"** कहते हुए हाथ से इशारा भी करते थे। यह देख कर रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हें यह क्या हो गया है? तुम अपने हाथों से इस तरह इशारा करते हो गोया वह शरीर घोड़ों की दुमें है तुम में से जब कोई नमाज़ ख़त्म करे तो अपने भाई की जानिब मुँह करके सिर्फ़ ज़बान से "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि" कहे और हाथ से इशारा न करे।

(۲) حدثنا أبو بكر بن أبي شيبة قال نا وكيع عن مسعر ح وحدثنا أبو كريب واللفظ له قال أنا ابن أبي زائدة عن مسعر قال حدثني عبيد الله بن القبطية عن جابر بن سمرة قال كنا إذا صلينا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم قلنا السلام عليكم ورحمة الله، السلام عليكم ورحمة الله، وأشار بيده إلى الجانبين فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم علام تومئون بأيديكم كأنها أذناب خيل شمس، إنما يكفي أحدكم أن يضع يده على فخذه ثم يسلم على أخيه من على يمينه وشماله۔ (مسلم ص ١٨١ ج ١)

तर्जमा : "हमें अबू बकर बिन अबी शैबा ने हदीस सुनाई,० उन्हें वकीअ़ ने, उन्होंने मिस्अर से बयान किया (दूसरी सनद) हमें अबू कुरैब ने हदीस सुनाई, उन्होंने कहा हमें इब्ने अबी ज़ाइदा ने, उन्हें मिस्अर ने उन्हें उबैदुल्लाह बिन कुतैबा ने उन्होंने कहा कि हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ि० ने फरमाया कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जब हम लोग नमाज़ पढ़ते तो नमाज़ के ख़त्म पर दाएं बाएं **"अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह"** कहते हुए हाथ से इशारा भी करते थे। यह देख कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया :

तुम लोग अपने हाथ से इस तरह इशारा करते हो जैसे शरीर घोड़ों की दुमें हिलती हैं। तुम्हें यही काफी है कि तुम क़अ़्दा में अपनी रानों पर हाथ रखे हुए दाएं और बाएं मुँह मोड़ कर **"अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह"** कहा करो।

यही हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ि० वाली हदीस मुसनद इमाम अहमद रह० (स० ४३ जिल्द ४) में इस तरह है :

(३) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ حَدَّثَنِي أَبِي ثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ ثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ عُبَيْدِ اللّٰهِ بْنِ الْقِبْطِيَّةِ قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ سَمُرَةَ قَالَ كُنَّا نَقُولُ خَلْفَ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَلَّمْنَا السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يُشِيرُ أَحَدُنَا بِيَدِهِ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا بَالُ الَّذِينَ يُومِئُونَ بِأَيْدِيهِمْ فِي الصَّلَاةِ كَأَنَّهَا أَذْنَابُ الْخَيْلِ الشُّمُسِ أَوَلَا يَكْفِي أَحَدَكُمْ أَنْ يَضَعَ يَدَهُ عَلَى فَخِذِهِ ثُمَّ يُسَلِّمَ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ (ص ٢٣ ج ٤)

तर्जमा : "हमें अब्दुल्लाह ने हदीस सुनाई, उन्हें उनके बाप ने, उन्हें मुहम्मद बिन उबैद ने उन्हें मिस्अर ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन क़िब्तियह ने, उन्होंने कहा मैंने हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ि० को फरमाते हुए सुना कि :

हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ते वक़्त (इख़्तिताम पर) अस्सलामु अलैकुम कहते हुए दाएं बाएं हाथ से इशारा करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुलाहिज़ा फरमा कर इरशाद फरमाया :

उन लोगों का क्या हाल होगा जो शरीर घोड़ों की दुमों की तरह अपने हाथ हिलाते हैं। क्या तुम्हें यही काफी नहीं है कि तुम क़अ्दा में अपनी रानों पर हाथ रखे हुए दाएं बाएं सलाम फेर लिया करो।

यह तीनों हदीसें सही मुस्लिम और मुस्नद इमाम अहमद में मौजूद हैं और अल्फ़ाज़ (**अज़्नाबु ख़ैलिन शुम्सिन**) भी तीनों में वारिद हैं जो इत्तिहादे वाक़या की बैय्यिन दलील है।

फिर इमाम नौवी रह० और दीगर मुहद्देसीन रह० ने इन अहादीस पर इस तरह अबवाब क़ायम किए हैं :

नाम किताब **बाब** **बाब का तर्जमा** **सफ़: मआ जिल्द**

१. सही मुस्लिम मआ शरह नौवी :

بَابُ الْأَمْرِ بِالسُّكُونِ فِي الصَّلَاةِ وَالنَّهْيِ عَنِ الْإِشَارَةِ بِالْيَدِ وَرَفْعِهَا عِنْدَ السَّلَامِ۔

नमाज़ में बेजा हरकत, और सलाम के लिए हाथ उठाने की मुमानेअत। (सफ़: १८१, जिल्द १)।

२. अबू दाऊद : بَابٌ فِي السَّلَامِ सलाम के मुतअल्लिक बाब।

३. किताबुल उम लि शाफ़ई : بَابُ السَّلَامِ فِي الصَّلَاةِ नमाज़ में सलाम कहने का बाब।

४. मुस्नद अहमद : بَابُ حَذْفِ السَّلَامِ وَكَرَاهَةِ الْإِشَارَةِ بِالْيَدِ مَعَهُ۔

सलाम को हज़्फ़ करना और उसके साथ इशारा करना मना है।

(सफ़: ४२, जिल्द ३)

५. कन्ज़ुल-उम्माल : مَنْعُ الْإِشَارَةِ بِالْيَدِ وَقْتَ السَّلَامِ

सलाम के वक़्त हाथ के साथ इशारा करना मना है। (सफ़: १०४, जिल्द ४)

६. मुन्तक़ा अल-अख़्बार : بَابُ الْخُرُوجِ مِنَ الصَّلَاةِ بِالسَّلَامِ

नमाज़ से अस्सलामु अलैकुम कह कर निकलना। (सफ़: ६७)

७. बैहक़ी : بَابُ كَرَاهَةِ الْإِيمَاءِ بِالْيَدِ عِنْدَ التَّسْلِيمِ

सलाम के वक़्त हाथ के साथ इशारा करना मक्रूह है। (सफ़: ८१, जिल्द २)

८. नसाई : بَابُ السَّلَامِ بِالْيَدَيْنِ

दोनों हाथों के साथ सलाम कहने का बाब। (सफ़: १५६, जिल्द १)

९. नसाई : بَابُ مَوْضِعِ الْيَدَيْنِ عِنْدَ السَّلَامِ

सलाम के वक़्त हाथों की जगह। (सफ़: १५५, जिल्द १)

अल-ग़रज़ मुहद्देसीन ने हज़रत जाबिर रज़ि० की हदीस से यही समझा है कि इस में सलाम फेरने के वक़्त हाथों से इशारा करना मना है और मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में एक ही वाक़िआ का ज़िक्र है।

लिहाज़ा तमाम अहादीस का हासिले मतलब यह होगा कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और नमाज़ पढ़ाई। हम ने आपके साथ नमाज़ पढ़ी तो हम ने सलाम के वक़्त हाथ उठाए। आपने देखा तो फरमाया कि तुम मुँह ज़ोर घोड़ों की दुमों की तरह सलाम के वक़्त हाथ क्यों उठाते हो। नमाज़ में आराम करो और अपने दाएं और बाएं ज़बान से सलाम कहना काफी है। हाथ से इशारा करने की ज़रूरत नहीं।

नीज़ रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद (**उस्कुनू फ़िस्सलाते**) और दूसरी में **"ला यूमी बेयदेही"** जिनका मतलब एक ही है। आपने सहाबा रज़ि० को उस वक़्त फरमाया, जब वह सलाम के वक़्त दाएं बाएं हाथों से इशारा करते थे, जिस से साफ़ ज़ाहिर है कि यह वाक़िआ तशह्हुद का है न कि रुकूअ् के वक़्त रफ़ा यदैन करने का।

चुनांचे हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

"ولا دليل فيه على منع الرفع على الهيئة المخصوصة في الموضع المخصوص وهو الركوع والرفع منه لأنه مختصر من حديث طويل" (تلخيص ص ٢٢١ ج ١)

तर्जमा : यानी हज़रत की पहली हदीस से रुकूअ़ के वक़्त रफ़ा यदैन के मना पर दलील लाना दुरुस्त नही क्योंकि पहली हदीस दूसरी तवील हदीस की मुख़्तसर है। नीज़ हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० इमाम बुख़ारी रह० से नकल करते है :

"من احتج بحديث جابر بن سمرة على منع الرفع عند الركوع فليس له حظ من العلم" (تلخيص الحبير ص ٢٢١ ج ١)

तर्जमा : हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ि० की हदीस से रुकूअ़ के वक़्त रफ़ा यदैन के मना पर दलील पकड़ने वाला जाहिल व बेइल्म है"।

इमाम बुख़ारी रह० फ़रमाते हैं :

"فأما احتجاج بعض من لا يعلم بحديث جابر بن سمرة ..... فإنما كان هذا في التشهد لا في القيام، كان يسلم بعضهم على بعض فنهى النبي صلى الله عليه وسلم عن رفع الأيدي في التشهد ولا يحتج بهذا من له حظ من العلم" (جزء رفع اليدين مترجم ص ٣٦، ٣٧)

तर्जमा : बाज़ लोग जो इल्म से नावाकिफ़ हैं वह जाबिर रज़ि० की हदीस से रफ़ा यदैन के मना पर दलील लाते हैं। उस हदीस में हाथ उठाने का जो ज़िक्र है वह तशहहुद की हालत में है क़याम की हालत में नहीं। बाज़ सहाबा रज़ि० बाज़ पर (हाथ के इशारा से) सलाम कहते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तशहहुद की हालत में हाथों के साथ इशारा करने से रोक दिया। जिस शख़्स को थोड़ा बहुत इल्म का हिस्सा मिला है वह इस हदीस से अदमे रफ़ा यदैन पर इस्तिदलाल नहीं करता।

अल्लामा सिन्धी रह० हन्फ़ी फ़रमाते हैं :

"(ارفعوا أيديكم) أي بالسلام ولذا أعقبه بالرواية الثانية والمقصود النهي عن الإشارة باليد عند السلام ولا دلالة فيه على النهي عن الرفع عند الركوع وعند الرفع منه ولذلك قال النووي الاستدلال به على النهي عن الرفع عند الركوع وعند الرفع منه جهل قبيح، إلا أن قال قد صح وثبت الرفع عند الركوع وعند الرفع منه ثبوتا

لا مرد له فيجب حمل هذا النهي على خصوص التسليم توفيقا ودفعا للتعارض" (حاشية نسائي ص ١٠٦)

तर्जमा : जाबिर बिन समुरह की हदीस में जो "**राफ़ेऊ ऐदीना**" है। उसका मतलब यह है कि सलाम के वक़्त हाथ उठाते थे। जैसा कि दूसरी हदीस से मालूम होता है। इसमें सलाम के वक़्त हाथ उठाने की मुमानिअत है न कि रुकूअ़ के वक़्त रफ़ा यदैन करने की।

इसी वास्ते इमाम नौवी रह० शारेह मुस्लिम ने फ़रमाया है कि इस हदीस से रुकूअ़ जाने और रुकूअ़ से सर उठाने के वक़्त रफ़ा यदैन के न करने पर इस्तिदलाल करने वाला जिहालते क़बीहा का मुर्तकिब है और बात यह है कि रुकूअ़ के वक़्त रफ़ा यदैन करना सही व साबित है जिसका रद नहीं हो सकता है। पस नहीं ख़ास जिसके लिए ख़ास कर कहा गया, सिर्फ़ उस ख़ास पर महमूल होगी ताकि दोनों में तत्बीक़ व मुवाफ़िक़त हो और तआरुज़, ख़त्म हो जाए।

इमाम इब्ने हिब्बान रह० फ़रमाते हैं :

"إنما أمروا بالسكون في الصلاة عند الإشارة بالتسليم دون الرفع الثابت عند الركوع" (تلخيص الحبير ص ٢٢١ ج ١)

तर्जमा : कि "**उस्कुनू फ़िस्सलाति**" का मतलब यह है कि सहाबा रज़ि० को सलाम के वक़्त हाथों से इशारा करने से मना किया गया, न कि रुकूअ़ के वक़्त रफ़ा यदैन करने से, क्योंकि वह तो (बेशुमार दलाइल से) साबित है।

मुसन्निफ़ की दूसरी दलील और उसका जवाब

قد أفلح المؤمنون۔ الذين هم في صلاتهم خاشعون۔ قال ابن عباس: الذين لا يرفعون أيديهم في صلاتهم۔

तर्जमा : "कामयाब हो गये वह मोमिन जो अपनी नमाज़ों में ख़ुशूअ़ करते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, यानी जो नमाज़ों के अन्दर रफ़ा यदैन नहीं करते"।

दूसरी दलील का पहला जवाब

आयत का शाने नुज़ूल :

१. क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती लिखते हैं :

"हाकिम ने हस्बे शर्ते शैख़ैन हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की रिवायत से

बयान किया है और उसको सही करार दिया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ने में अपनी नज़र को ऊपर आसमान की तरफ़ उठा लेते थे।

इस पर यह आयात नाज़िल हुई :

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ (پ١٨ المؤمنون ٢)

तर्जमा : "बेशक उन मोमिनों ने (आख़िरत में) फ़लाह पाई जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ़ करने वाले हैं"।

इस आयत के नाज़िल होने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना सर नीचे झुका लिया।

इब्ने मरदवैह की रिवायत इन अल्फ़ाज़ के साथ है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आसमान में इधर उधर नज़र घुमा लिया करते थे, इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

इमाम बग़वी ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का बयान नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी रज़ि० नमाज़ के अन्दर आसमान की तरफ़ अपनी नज़र उठा लिया करते थे। जब आयत मज़्कूरा नाज़िल हुई तो सज्दागाह पर नज़र जमाने लगे।

इब्ने अबी हातिम ने इब्ने सीरीन की मुरसल रिवायत नक़ल की है कि सहाबा रज़ि०, नमाज़ के अन्दर आसमान की तरफ़ नज़रें उठा लेते थे। इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (तफ़्सीर मज़्हरी मुतर्जम स० १६१, जिल्द ८)

अल-ग़रज़ आयत के शाने नुज़ूल से यह बात वाज़ेह हो गई कि इस आयत को अदमे रफ़ा यदैन से कोई तअल्लुक़ नहीं।

दूसरी दलील का दूसरा जवाब

दूसरा जवाब यह है कि चूंकि यह कौल बुख़ारी और मुस्लिम की सरीह रिवायत के ख़िलाफ़ है। चुनांचे शरह वक़ाया जिल्द नम्बर १, सफ़: ६ में है, सही हदीस के कई दर्जे हैं, पहला दरजा यह है कि इत्तिफ़ाक़ किया उस पर बुख़ारी व मुस्लिम ने। यानी दोनों की किताबों में वह हदीस मौजूद हो। पस हदीसे रफ़ा यदैन बुख़ारी और मुस्लिम दोनों में मौजूद है। चुनांचे सही बुख़ारी में है :

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذٰلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ فِي السُّجُودِ۔ (بخاری ج١ ص١٠٢، مسلم ج١ ص١٦٨)

तर्जमा : हम से अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़नबी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने अपने बाप (अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०) से कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो दोनों मोंढों तक हाथ उठाते और जब रुकूअ़ की तक्बीर कहते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तब भी इसी तरह दोनों हाथ उठाते और **समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द** कहते और सज्दों के बीच में हाथ न उठाते।

हन्फ़ी मज़्हब के उसूल के मुताबिक़ हदीस रफ़ा यदैन चूंकि दोनों किताबों में मौजूद है इसलिए कौले इब्ने अब्बास रज़ि० की कोई हैसियत न रही।

मुसन्निफ़ की दूसरी दलील का तीसरा जवाब

नीज़ ख़ुद इब्ने अब्बास रज़ि० से रफ़ा यदैन की हदीस मरवी है इसलिए उनके इस कौल को उनकी रिवायात करदह हदीस की रोशनी में देखना चाहिए। चुनांचे आप रज़ि० की हदीस यह है :

أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ ثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ طَاوُسٍ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتّٰى يُحَاذِيَ بِهِمَا أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَاسْتَوٰى قَائِمًا فَعَلَ مِثْلَ ذٰلِكَ۔ (جزء رفع يدين امام بخاری مترجم ص٣٠)

तर्जमा : "इब्ने अब्बास रज़ि० जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने हाथों को अपने कानों के बराबर करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते और सीधे खड़े हो जाते तो रफ़ा यदैन करते"।

मुसन्निफ़ की दूसरी दलील का चौथा जवाब

१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की इस तफ़्सीर में तस्रीह नहीं है। अगर तस्रीह है तो साबित करें।

२. जब नमाज़ी अपनी नमाज़ शुरू करता है तो अल्लाहु अकबर कह कर रफ़ा यदैन करता है।

३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की इस तफ़्सीर में मुतलक़ रफ़ा यदैन करने की नफ़ी है, न कि रुकूअ़ को जाते और सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन को बल्कि वित्र में रफ़ा यदैन न करने को भी शामिल है और आप उसके क़ाइल व फ़ाइल हैं।

४. और जब नफ़ी मुतलक़ है तो आप उसे रुकूअ़ के पहले और रुकूअ़ के बाद रफ़ा यदैन करने पर क्यों महमूल करते हैं। इफ़्तिताह में रफ़ा यदैन न करने पर क्यों महमूल नहीं करते ताकि यह तफ़्सीर आपके ख़िलाफ़ भी हो। आख़िर आप भी तो रफ़ा यदैन करते हैं, ख़्वाह इफ़्तिताह में सही। **"इज़ा जाअल-एहतिमाल, बतलल-इस्तिदलाल"** जब उसके कई एहतमालात हो सकते हैं तो आपका इससे इस्तिदलाल ग़लत हुआ।

मुसन्निफ़ की तीसरी दलील और उसका जवाब

"يَا أَيُّهَا الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ"

तर्जमा : "ऐ ईमान वालो! अपने हाथों को रोक कर रखो जब तुम नमाज़ पढ़ो"।

इस आयत से भी बाज़ लोगों ने नमाज़ के अन्दर रफ़ा यदैन के मना पर दलील ली है। (तहक़ीक़ मस्अला रफ़ा यदैन स० ६)

जवाब

यह ख़ुद साख़्ता आयत है। क़ुरआन मजीद की ६६६६ आयात में से कोई आयत नहीं है। यह महज़ मुसन्निफ़ साहब का ख़ुदा के ज़िम्मे इफ़्तिरा व बुहतान है। जिसके मुतअल्लिक़ इरशादे ख़ुदा वन्दी है :

"وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ" (سورة انعام، آيت ٢١)

तर्जमा : "और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाये और उसकी निशानियों को झूठा माने, बेशक ज़ालिम कामयाब नहीं होते"।

मुसन्निफ़ की चौथी दलील और उसका जवाब

"أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي"

तर्जमा : "मेरे ज़िक्र के लिए नमाज़ क़ायम करें"।

ज़ेरे बहस मसअला रफ़ा यदैन और जल्स-ए-इस्तिराहत के लिए मौक़े मुक़द्दसा में कोई ज़िक्र मुक़र्रर नहीं है इसलिए यह नमाज़ से ग़ैर मुतअल्लिक़ अफ़आल हुए। (तहक़ीक़ मस्अला रफ़ा यदैन स० ६)

जवाब

इसका जवाब यह है कि सारी नमाज़ ही ज़िक्र है। अल्लाहु अकबर से लेकर सलाम तक जैसा कि इब्ने कसीर में है कि एक मानी "लेज़िकरी" के यह है कि जब तुझे याद आए तो उसको अदा करे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"जब तुम में से कोई नमाज़ से सो जाए या उस से ग़ाफ़िल हो जाए तो जब नमाज़ याद आवे पढ़ ले। इसलिए कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: **अक़िमिस्सलाता लेज़िकरी**।

बाक़ी जल्स-ए-इस्तिराहत का ज़िक्र कुतुबे अहादीस में वारिद है, जैसे नसाई शरीफ़, (जिल्द १, स० १३६) में आता है :

"أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلَاتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ جَالِسًا"

तर्जमा : "हज़रत मालिक बिन हुवैरिस फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा है, जब आपकी नमाज़ की ताक़ रकअत (१,३) होती तो आप खड़े नहीं होते थे, यहाँ तक कि आप मुकम्मल तशह्हुद की तरह बैठ जाते"।

एक और हदीस मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

"أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ كَانَ مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ يَأْتِينَا فَيَقُولُ أَلَا أُحَدِّثُكُمْ عَنْ صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُصَلِّي فِي غَيْرِ وَقْتِ صَلَاةٍ فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السَّجْدَةِ الثَّانِيَةِ فِي أَوَّلِ الرَّكْعَةِ اسْتَوَى قَاعِدًا ثُمَّ قَامَ فَاعْتَمَدَ عَلَى الْأَرْضِ"

तर्जमा : "हज़रत अबू क़िलाबा कहते हैं कि हमारे पास हज़रत मालिक

बिन हुवैरिस तशरीफ़ लाया करते थे तो फ़रमाया करते थे कि मैं तुम्हें रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ के मुतअल्लिक़ न बताऊं? तो वह (मालिक रज़ि०) फ़र्ज़ नमाज़ के औक़ात के अलावा वक़्त (में नफ़्ल नमाज़) पढ़ते। तो जब वह पहली रकअत के दूसरे सज्दा से सर उठाते तो सीधे हो कर बैठ जाते, (जल्स–ए–इस्तिराहत करते) फिर खड़े होते और ज़मीन पर टेक लगा लेते"। (नसाई जिल्द १, स० १३६)

तीसरी सनद देखें :

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ نَا هُشَيْمٌ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلٰوتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتّٰى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا۔

तर्जमा : "हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० फ़रमाते हैं कि उन्होंने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है कि जब आप अपनी ताक़ नमाज़ (रकअत) में होते तो आप खड़े नहीं होते थे यहाँ तक कि आप सीधे बैठ जाते"। (यह तीनों असानीद अबू दाऊद, किताबुस्सलात स० १२२ की हैं) अब जामे तिर्मिज़ी शरीफ़ (स० ६१) मुलाहिज़ा फ़रमाएं। आपने भी किताबुस्सलात में इस तरह बाब बांधा है। "बाबुन कैफ़न्नहूज़ु मिनस्सुजूदे"

अब सनद मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ نَا هُشَيْمٌ عَنِ الْحَذَّاءِ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ اللَّيْثِيِّ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فَكَانَ إِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلٰوتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتّٰى يَسْتَوِيَ جَالِسًا۔ قَالَ أَبُو عِيسٰى حَدِيثُ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ"

तर्जमा : "पहले गुज़र चुका है। इस हदीस के मुतअल्लिक़ इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं कि यह हदीस हसन सही है।

कारेईने किराम! हम ने कुतुबे अहादीस (बुख़ारी शरीफ़, अबू दाऊद शरीफ़, जामे तिर्मिज़ी शरीफ़, सुनन नसाई शरीफ़) से साबित कर दिया है कि जल्स–ए–इस्तिराहत हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल है। मगर किसी शख़्स को यह अहादीस नज़र न आएं तो उसमें हमारा क़ुसूर क्या है? यह हदीस शरीफ़ तो एक मामूली पढ़े लिखे हुए

आदमी को मिशकात शरीफ़ स० ७५ पर नज़र आ जाती है।

मुसन्निफ़ की पाँचवीं और सातवीं दलील और उसका जवाब

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تُرْفَعُ الْأَيْدِي إِلَّا فِي سَبْعِ مَوَاطِنَ حِينَ يَفْتَتِحُ الصَّلٰوةَ۔" (رواه الطبراني۔ زيلعي ص ٣٩٠ ج ١، تحقيق رفع يدين ص ١٠٦)

तर्जमा : "हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि०, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया न रफ़ा यदैन करो मगर सात जगह। १. जब नमाज़ शुरू करो, बाक़ी जगह हज में"।

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُرْفَعُ الْأَيْدِي فِي سَبْعِ مَوَاطِنَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلٰوةِ" الحديث (ابن أبي شيبة بحواله زيلعي ص ٣٩١ ج ١)

तर्जमा : "हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया सात जगह रफ़ा यदैन की जाए नमाज़ के शुरू करते वक़्त और बाक़ी छः जगह हज में।

जवाब

अली बिन मस्हर रह० और इमाम बुख़ारी रह० ने कहा है कि इब्ने अबी लैला ने हकम से और उन्होंने इब्ने अब्बास रज़ि० से और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो रिवायत की है। शो'बा ने वज़ाहत की है कि हकम ने मिक़्सम से सिर्फ़ चार हदीसें सुनी हैं उन चार में मज़्कूरा बाला हदीस नहीं है।

दूसरी बात यह है कि यह हदीस जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ मन्सूब है वह महफ़ूज़ नहीं है। इसलिए कि नाफ़े के अस्हाब ने नाफ़े की मुख़ालिफ़त की है और हकम की जो हदीस मिक़्सम से मरवी है वह मुरसल है। और मुहद्देसीन के नज़्दीक मुरसल हदीस क़ाबिले हुज्जत नहीं होती।

मज़ीद यह कि ताऊस, अबू जमरा, अता इन सब ने इब्ने अब्बास रज़ि० को देखा है वह रुकूअ़ के वक़्त और जब रुकूअ़ से सर उठाते थे रफ़ा यदैन करते थे। इब्ने अबी लैला की हदीस अगर सही हो कि वह सात जगहों में

रफ़ा यदैन करते थे (मगर) वकीअ़ की हदीस में यह तो नहीं कहा है कि उन सात जगहों के सिवा किसी दूसरी जगह रफ़ा यदैन न की जाए। बल्कि उसका मतलब यह है कि उन जगहों में भी हाथ उठाए जाएं। उनके अलावा रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त भी रफ़ा यदैन की जाए ताकि सब अहादीस पर अमल हो जाए और उसमें कोई तज़ाद नहीं है। उन लोगों ने यह भी कहा है, ईदैन, फ़ित्र और अज़्हा की तक्बीरात में रफ़ा यदैन की जाए और उसके क़ौल के मुताबिक़ चौदह तक्बीरें हैं। इब्ने अबी लैला की हदीस में उनका कोई ज़िक्र नहीं।

बाज़ कूफ़ियों ने कहा है कि जनाज़ा की तक्बीरात में रफ़ा यदैन की जाए और वह चार तक्बीरें हैं। और यह सब की सब इब्ने अबी लैला की हदीस में बयान करदह जगहों के अलावा हैं।

मज़ीद बहुत सी असानीद हैं जिन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उन सात जगहों के अलावा दूसरे मक़ामात पर रफ़ा यदैन का बयान है। (जुज़ओ रफ़इल यदैन मुतर्जम स० ५७, ५८, ५६)

नीज़ इमाम ज़ैलई रह० जिनके हवाला से मुसन्निफ़ ने हदीस नक़ल की है, उन रिवायात पर तब्सरा करते हुए लिखते हैं :

• غَرِيْبٌ بِهٰذَا اللَّفْظِ ..... اِبْنُ اَبِيْ لَيْلٰى لَمْ يَكُنْ بِالْحَافِظِ قَالَ شُعْبَةُ لَمْ يَسْمَعِ الْحَكَمُ مِنْ مِقْسَمٍ اِلَّا اَرْبَعَةَ اَحَادِيْثَ لَيْسَ هٰذَا مِنْهَا فَهُوَ مُرْسَلٌ وَغَيْرُ مَحْفُوْظٍ (زيلعى ص ٣٠٥ ج ١)

नीज़ इस सनद में मुहम्मद बिन उस्मान बिन अबी शैबा रावी है जो कि निहायत कमज़ोर क़िस्म का रावी है, चुनांचे उनके बारे में अब्दुल्लाह बिन अहमद फ़रमाते हैं : "**कज़्ज़ाब**"। इब्ने ख़राश कहते हैं :

"**काना यज़-उल-हदीस**" (झूठी हदीस बनाया करता था) इमाम बुरक़ानी फ़रमाते हैं: "لَمْ ازل اَسْمَعُهُمْ يَذكرون أنه مَقْدوحٌ فيه۔ (ميزان : ١٠١ ج ٢)

लोग हमेशा इस पर जिरह किया करते थे।

नीज़ इस सनद में मुहम्मद बिन इमरान बिन अबी लैला भी हैं। यहया बिन सईद उसे ज़ईफ़ कहते थे। (तहज़ीब) इमाम अहमद फ़रमाते हैं "**काना सैयुल-हिफ़्ज़े मुज़्तरेबुल-हदीस**" (तहज़ीब) नीज़ फ़रमाया कि इब्ने अबी लैला ज़ईफ़ है इमाम शो'बा फ़रमाते हैं **मा रऐतु अहदन अस्वआ हिफ़्ज़न**

मिन इब्ने अबी लैला। यानी इब्ने अबी लैला से बढ़ कर बुरे हाफ़िज़े वाला मैंने नहीं देखा (तहज़ीब) इब्ने हिब्बान फ़रमाते हैं : **काना फ़ाहिशुल-ख़ता रदीयुल-हिफ़्ज़ फ़कसरतुल-मनाकीर फ़ी रिवायतिही** (तहज़ीब) फ़ाहिश ग़लती और हाफ़िज़ा रद्दी होने की वजह से उसकी रिवायत में मुंकर बातें बकसरत हैं। इमाम दार कुतनी फ़रमाते हैं : **काना रदीयुल-हिफ़्ज़े कसीरुल वहमि**। (तहज़ीब) कसीरुलवहम और रद्दी हाफ़िज़ा वाला था।

लिहाज़ा इब्ने अबी लैला भी जरह से महफ़ूज़ नहीं है। लिहाज़ा यह हदीस भी क़ाबिले हुज्जत नहीं है।

छठी दलील और उसका जवाब

وَعَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ وَارْفَعِ الْاَيْدِيَ اِذَا قُمْتَ لِلصَّلٰوةِ رواه الطبراني (زيلعى ص ٣٩٠ ج ١)

तर्जमा : "हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तू रफ़ा यदैन उस वक़्त कर जब तू नमाज़ के लिए खड़ा हो"।

जवाब

यह रिवायत मुन्दरजा ज़ैल सनद के साथ आई है :

• حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُثْمَانَ بْنِ اَبِيْ شَيْبَةَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِمْرَانَ ابْنِ اَبِيْ لَيْلٰى عَنِ الْحَكَمِ عَنْ مِقْسَمٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ .....

यह सनद वही है जिस पर हदीस नम्बर पाँच और सात के ज़िम्न में मुफ़स्सल जरह गुज़र चुकी है। लिहाज़ा यह अदमे रफ़ा यदैन के लिए हुज्जत नहीं है।

मुसन्निफ़ की आठवीं दलील और उसका जवाब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ख़ुद भी उसके मुवाफ़िक़ फ़तवा दिया करते थे। (इब्ने अबी शैबा, ज़ैलई स० ३६१ जिल्द १, तहक़ीक़ मसअला रफ़ा यदैन स० ६)

जवाब

यह इमाम ज़ैलई रह० पर बहुत बड़ी तोहमत है। उनकी किताब में यह

फतवा कहीं भी मज़्कूर नहीं है।

नीज़ अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रफ़ा यदैन करने की तो इतनी रिवायात आई हैं कि किसी दूसरे से नहीं आईं बल्कि वह तो रफ़ा यदैन के इस क़द्र पाबन्द थे कि न करने वाले को कंकरियाँ मारा करते थे। मुलाहिज़ा हो (तल्ख़ीसुल–हबीर स० २२०, जिल्द १)

मुसन्निफ़ की नवीं दलील और उसका जवाब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० भी उसके मुवाफ़िक़ फ़तवे देते थे। जैलई स० ३६१ जिल्द १ (तहक़ीक़ मस्अला रफ़ा यदैन स० ७)

जवाब

यह अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० पर महज़ इल्ज़ाम है। इमाम जैलई रह० फरमाते हैं :

رَوٰى جَمَاعَةٌ مِّنَ التَّابِعِيْنَ بِالْأَسَانِيْدِ الصَّحِيْحَةِ الْمَأْثُوْرَةِ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ وَعَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَبَّاسٍ اَنَّهُمَا كَانَا يَرْفَعَانِ اَيْدِيَهُمَا عِنْدَ الرُّكُوْعِ وَبَعْدَ رَفْعِ الرَّأْسِ مِنَ الرُّكُوْعِ وَقَدْ اَسْنَدَاهُ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (نصب الراية ص ٣٩١ ج١)

तर्जमा : यानी ताबेईन की कसीर तादाद ने सही सनदों के साथ इब्ने उमर रज़ि० और इब्ने अब्बास रज़ि० से नकल किया है, कि यह दोनों हज़रात रुकूअ़ जाते और रुकूअ़ से सर उठाते वक्त रफ़ा यदैन किया करते थे और दोनों हज़रात ने अपने अमल की निस्बत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ की है। (यानी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० दोनों फरमाते हैं कि हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी रफ़ा यदैन किया करते थे।

मुसन्निफ़ की दस्वीं दलील और उसका जवाब

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَاِذَا اَرَادَ اَنْ يَّرْكَعَ وَبَعْدَ مَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ فَلَا يَرْفَعُ وَلَا بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ (مسند حميدى ص ٢٧٧ ج٢ صحيح ابوعوانة ص ٩٠ ج٢ مسئلة تحقيق رفع يدين ص ٨)

जवाब

इस रिवायत पर इमाम अबू अवाना ने इस तरह बाब क़ायम किया है :

بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِيْ افْتِتَاحِ الصَّلٰوةِ قَبْلَ التَّكْبِيْرِ حِذَاءَ مَنْكِبَيْهِ وَلِلرُّكُوْعِ وَلِرَفْعِ رَأْسِهِ مِنَ الرُّكُوْعِ وَاَنَّهُ لَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ۔

तर्जमा : यानी यह बयान है कि नमाज़ के आग़ाज़ में फिर रुकूअ़ को जाते और रुकूअ़ से सर उठाते हुए कन्धों तक रफ़ा यदैन करने के बारे में और यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो सज्दों के माबैन रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

१. बाब के बाद इमाम अबू अवाना ने सबसे पहले यही रिवायत दर्ज की है इसलिए यह रफ़ा यदैन करने की दलील होगी न कि अदम रफ़ा यदैन की।

२. रिवायत को समझने के लिए उसके अल्फ़ाज़ पर ग़ौर फरमाएं कि **यरफ़उहुमा** का तअल्लुक़ किस से है। मा–क़बल की जज़ा है या उसका तअल्लुक़ बाद के जुमला के साथ है। दरअस्ल इमाम अबू अवाना ने जैसे रफ़ा यदैन की कैफ़ियत के बारे में रावियों का इख़्तिलाफ़ बयान किया है कि बाज़ ने **हत्ता युहाज़िया बेहेमा** कहा है और बाज़ ने **हज़्वा मनकिबैहि** कहा है। इसी तरह अगले अल्फ़ाज़ में भी यही मक़्सूद है कि बाज़ ने **ला यरफ़उहुमा** और बाज़ ने **वला यरफ़ओ बैनस्सज्दतैन** कहा है और उसकी, इमाम साहब के अल्फ़ाज़ **वल-माना वाहिदुन** (मानी व मक़्सद एक ही है) से भी ताईद होती है। यानी **ला यरफ़ओहुमा** कहा जाए या **ला यरफ़ओ** मानवी एतबार से कोई फ़र्क़ नहीं है।

अगर **ला यरफ़ओ** मा क़ब्ल की जज़ा है तो फिर उसके बाद **वक़ाला बाज़ुहुम व ला यरफ़ओ बैनस्सज्दतैने वल मा'ना वाहिदुन** में बाज़ का ज़िक्र करके किस जुमला से तअरुज़ व इख़्तिलाफ़ का इशारा है और कौन से दो लफ़्ज़ हैं कि फरमाया जा रहा है कि मानी एक ही है। अगर यहाँ दो लफ़्ज़ नहीं तो मानी वाहिद कहने का क्या मतलब?

३. नीज़ इमाम अबू अवाना ने उसके बाद मुसलसल सात अहादीस ज़िक्र फरमाई हैं जिन में रफ़ा यदैन रुकूअ़ जाते हुए और उठते हुए करने का ज़िक्र है।

मुसन्निफ़ की ग्यारहवीं दलील और उसका जवाब

وَعَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ اِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ ۔ (بيهقى فى الخلافيات للزيلعى ص ٤٠٢ ج ١) تعليق مسئلة رفع يدين ص ٨)

तर्जमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से ही रिवायत है कि बेशक नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू फरमाते तो रफ़ा यदैन करते। फिर सारी नमाज़ में किसी जगह रफ़ा यदैन नहीं करते थे"।

जवाब

१. हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

وَهُوَ مَقْلُوْبٌ مَوْضُوْعٌ ۔ (تلخيص ص ٢٢٢ ج ١)

तर्जमा : यह रिवायत मौज़ू (बनावटी) है।

२. : अल्लामा ज़ैलई लिखते हैं :

قَالَ الْبَيْهَقِيُّ قَالَ الْحَاكِمُ، هٰذَا بَاطِلٌ مَوْضُوْعٌ وَلَا يَجُوْزُ اَنْ يُّذْكَرَ اِلَّا عَلٰى سَبِيْلِ الْقَدْحِ ۔ (نصب الراية ص ٤١٢ ج ١ فى المجلس العلمى)

तर्जमा : यानी इमाम बैहकी रह० ने इमाम हाकिम रह० से नकल किया है कि उन्होंने इस हदीस को बातिल और मौज़ू करार दिया है और कहा है कि जरह के बग़ैर उसका ज़िक्र करना जाइज़ नहीं।

३. मौलाना अब्दुल हई हन्फी ने भी उसको मरदूद तस्लीम किया है। (अत्तालीकुल मुमज्जद, स० १६३)

अल ग़रज़ इमाम हाकिम रह०, इमाम बैहकी रह० और हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० के कौल के मुताबिक यह रिवायत बातिल, मौज़ूअ् और मक्लूब है।

मुसन्निफ़ की बारहवीं दलील और उसका जवाब

عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عُمَرَ فَلَمْ يَكُنْ يَرْفَعُ يَدَيْهِ اِلَّا فِى التَّكْبِيْرَةِ الْاُوْلٰى مِنَ الصَّلٰوةِ، سَنَدُهٗ صَحِيْحٌ ۔ (ابن ابى شيبة ص ٢٣٧ ج ١ طحاوى)

तर्जमा : हज़रत मुजाहिद फरमाते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के पीछे नमाज़ पढ़ी। पस आप नमाज़ में सिर्फ़ पहली तक्बीर के वक़्त रफ़ा यदैन करते थे। उसके बाद नमाज में किसी जगह रफ़ा यदैन नहीं करते थे। उसकी सनद सही है।

जवाब

१. इस रिवायत की सनद यूं है :

حَدَّثَنَا ابْنُ اَبِىْ دَاوٗدَ قَالَ حَدَّثَنَا اَحْمَدُ بْنُ يُوْنُسَ قَالَ حَدَّثَنَا اَبُوْ بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ صَلَّيْتُ الخ

(अ) : इस सनद में अबू बकर बिन अय्याश है जिसके मुतअल्लिक मुहद्दसीन ने जिरह की है जिसके मुतअल्लिक मीज़ानुल एतदाल में है: **"सुदूकुन सबत फिल-किरअते लकिन्नहू फिल-हदीस यग्लुतु व यहिमु"** (स० ४६६, जिल्द ४) किरअत में सच्चा और मो'तबर है लेकिन हदीस बयान करते हुए ग़लती कर जाता था नीज़ वहमी शख़्स था। मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने उसे ज़ईफ़ कहा है। (मीज़ान स० ४६६, जिल्द ४) अबू नईम रह० फरमाते हैं : **"लम यकुन फी शुयूखिना अहदुन अक्सरा ग़लतन मिन्हु"** (मीज़ान स० ५००, जिल्द ४) हमारे असातिज़ा में उस से ज़्यादा ग़लतियाँ करने वाला कोई नहीं था। इब्ने मदीनी फरमाते हैं मैंने यहया बिन सईद को फरमाते हुए सुना। **लौ काना अबू बकर बिन अय्याश इन्दी मा सअल्तुहू अन शैइन।** (मीज़ान स० ५००, जिल्द ४) अगर मेरे पास अबू बकर बिन अय्याश होता तो मैं उस से कुछ न पूछता।

यहया बिन सईद के नज़्दीक उनका तज़्किरा होता तो नफ़्रत व हिकारत से उनकी तेवरी पर बल पड़ जाते। (मीज़ानुल-एतदाल, स० [illegible], जिल्द ४)

(ब) हुसैन बिन अब्दुर्रहमान के बारे में इमाम हाकिम फरमाते हैं कि **"सिकतुन साआ हिफ़्ज़ुहू फिल आख़िरे"** यानी "वह सिका रावी थे मगर आख़िरी उम्र में उनका हाफ़िज़ा बिगड़ गया था"। और इमाम नसाई फ़रमाते हैं कि **"तग़य्यरा हिफ़्ज़ुहू"** यानी उनका हाफ़िज़ा बिगड़ गया था। अलगरज़ जिस सनद के रावियों की यह हालत हो वह हुज्जत के क़ाबिल कैसे हो सकती है?

(२) नीज़ इमाम बुख़ारी रह० ने जवाब देते हुए कहा है कि अह्ले इल्म ने मुजाहिद रह० से रिवायत किया है कि वह इब्ने उमर रज़ि० से महफ़ूज़ नहीं कर सके। इल्ला यह कि वह भूल गये हैं। जैसा कि इंसान नमाज़ में एक के बाद दूसरी चीज़ को भूल जाता है। जैसा कि बसाऔकात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० भूलते थे। चुनांचे

दो रकअत में सलाम फेर देते और तीन में सलाम फेर देते। तुम देखते नहीं कि इब्ने उमर रज़ि० रफ़ा यदैन न करने वालों को कंकरियाँ मारते थे तो वह ऐसे काम को कैसे छोड़ सकते हैं जिसके करने का वह दूसरों को हुक्म देते हों। मज़ीद यह कि उन्होंने खुद बयान किया है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को **रफ़ा यदैन** करते देखा है।

इमाम बुख़ारी रह० ने बयान किया है कि यहया बिन मुईन ने कहा है कि हदीस अबी बकर की जो हुसैन से मरवी है वह वहम है उसका कोई असल नहीं। (जुज़ओ रफ़इल यदैन २५, २४६)

मुसन्निफ़ की तेरहवीं दलील और उसका जवाब

عن عبد العزيز بن حكيم قال رأيت ابن عمر يرفع يديه حذاء أذنيه في أول تكبيرة افتتاح الصلوة ولم يرفعهما فيما سوى ذلك۔ (موطا امام محمد ص ۹) تحقيق مسئله رفع يدين ص ۹)

तर्जमा : "अब्दुल अजीज़ बिन हकीम कहते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को नमाज़ के शुरू में कानों के बराबर रफ़ा यदैन करते देखा है। उसके अलावा किसी जगह पर भी उन्होंने रफ़ा यदैन नहीं की"।

जवाब

इस हदीस की सनद इस तरह है :

• قال محمد اخبرنا محمد بن ابان بن صالح عن عبد العزيز بن الخ

मुहम्मद बिन अबान बिन सालेह कूफ़ा का रहने वाला है। इमाम अबू दाऊद और इब्ने मईन ने उसको ज़ईफ़ क़रार दिया है। (मीज़ान स० ४५३, जिल्द ३)

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं : **"लैसा बिल-क़वीये"** (मीज़ान स० ४५३, जिल्द ३) यह रावी (मुहम्मद बिन अबान) क़वी हाफ़िज़ा वाला न था।

लिहाज़ा यह हदीस भी, सही रिवायात का मुक़ाबला नहीं कर सकती और उस से इस्तिदलाल करना ग़लत है।

मुसन्निफ़ की चौदहवीं दलील और उसका जवाब

عن علقمة قال قال عبد الله بن مسعود الا اصلي بكم صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم فصلى فلم يرفع يديه الا في اول مرة۔

तर्जमा : हज़रत अल्क़मा से रिवायत है कि वह फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने एक मरतबा फ़रमाया कि मैं तुम को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसी नमाज़ न पढ़ाऊं? उसके बाद उन्होंने नमाज़ पढ़ाई और पहली मरतबा के बाद किसी जगह रफ़ा यदैन न की। इमाम तिर्मिज़ी रह० फ़रमाते हैं कि बहुत से अहले इल्म सहाबा किराम और ताबईन का यही मस्लक है। हज़रत सुफ़ियान सौरी और अहले कूफ़ा का भी यही मस्लक है। (तिर्मिज़ी, स० ३५, जिल्द १, तहक़ीक़ रफ़ा यदैन स० १५)

जवाब

१. अब्दुल्लाह बिन मुबारक फ़रमाते हैं कि :

وقال عبد الله بن المبارك قد ثبت حديث من يرفع وذكر حديث الزهري عن سالم عن ابيه ولم يثبت حديث ابن مسعود ان النبي صلى الله عليه وسلم لم يرفع الا في اول مرة۔ (ترمذي ج ۱ ص ۳۵)

२. : इमाम बैहक़ी फ़रमाते हैं **"लम यस्बुत इन्दी हदीसु इब्ने मसऊदिन"**। (बैहक़ी स० ७६, जिल्द १)

तर्जमा : मेरे नज़्दीक इब्ने मसऊद रज़ि० की हदीस साबित ही नहीं।

३. इमाम अबू दाऊद फ़रमाते हैं :

• هذا حديث مختصر من حديث طويل وليس هو بصحيح على هذا اللفظ (ابو داؤد مصري ص ۱۹۹ ج ۱)

तर्जमा : यह एक लम्बी हदीस से मुख़्तसर है और इन अल्फ़ाज़ से यह हदीस सही नहीं है"।

४. इमाम अहमद फ़रमाते हैं :

وقال احمد وشيخه يحيى بن آدم هو ضعيف (تلخيص الحبير ص ۲۲۲ ج ۱)

तर्जमा : "इमाम अहमद और उनके उस्ताद यहया बिन आदम फ़रमाते हैं कि यह हदीस ज़ईफ़ है"।

५. इमाम बुख़ारी रह० भी उसका ज़ुअफ़ नक़ल करके उसकी ताईद करते हैं। (तल्ख़ीस स० २२२, जिल्द १)

६. इब्ने अबी हातिम फ़रमाते हैं :

"हाज़ा हदीसुन ख़तउन"। (तल्ख़ीस स० २२२, जिल्द १) यानी यह हदीस ग़लत है।

७. इमाम इब्ने हिब्बान फरमाते हैं :

"कूफ़ियों के पास इस से बेहतर रफा यदैन को छोड़ने में और कोई रिवायत नहीं मगर हकीकत में यह बहुत ज़ईफ है। क्योंकि उसमें ऐसी ख़राबियाँ हैं जो उसको बातिल कर देती हैं। (तल्खीस स० २२२, जिल्द १)

मुसन्निफ़ की पन्द्रहवीं दलील और उसका जवाब

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِصَلٰوةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فَقَامَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ اَوَّلَ مَرَّةٍ ثُمَّ لَمْ يَعُدْ وَفِيْ رِوَايَةٍ ثُمَّ لَمْ يَرْفَعْ

(نسائی شریف ص ۱۵۸ ج ۱)، تحقیق رفع یدین ص ۱۵)

तर्जमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रजि० ने फरमाया, क्या मैं तुम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा न बताऊं? पस आप खड़े हुए तो सिर्फ़ पहली दफा शुरू नमाज़ में रफा यदैन की, उसके बाद पूरी नमाज़ में किसी जगह रफा यदैन नहीं की।

जवाब

इस हदीस का मुफस्सल जवाब हदीस नम्बर १४ में गुज़र चुका है।

मुसन्निफ़ की सोलहवीं दलील और उसका जवाब

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ لَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ اِلَّا عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلٰوةِ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ (مسند امام اعظم)

(تحقیق مسئله رفع یدین ص:۱۱)

जवाब

दलील नम्बर १४ के जवाब में गुज़र चुका है।

मुसन्निफ़ की सत्तरहवीं दलील और उसका जवाब

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَبِيْ بَكْرٍ وَعُمَرَ فَلَمْ يَرْفَعُوْا اَيْدِيَهُمْ اِلَّا عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلٰوةِ۔

(اخرجه البیهقی تحقیق مسئله رفع یدین ص ۱۱)

तर्जमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रजि० और हज़रत

उमर रजि० के पीछे नमाज़ें पढ़ी हैं, तो यह हज़रात शुरू नमाज़ के बाद किसी जगह हाथ नहीं उठाते थे।

जवाब

इस हदीस की सनद इस तरह है :

عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَابِرٍ عَنْ حَمَّادِ بْنِ اَبِيْ سُلَيْمَانَ عَنْ اِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ۔ الخ۔

१. अली बिन अम्र रहे : फरमाते हैं :

"मुहम्मद बिन जाबिर इस रिवायत में मुंफरिद है और ज़ईफ है"। (बैहक़ी स० ८०)

२. इमाम अहमद रह० फरमाते हैं :

"مُحَمَّدُ بْنُ جَابِرٍ، لَا شَيْءَ وَلَا يُحَدَّثُ عَنْهُ اِلَّا مَنْ هُوَ شَرٌّ مِنْهُ"

यानी मुहम्मद बिन जाबिर हदीस के मुआमला में कुछ भी नहीं। उस से बदतर लोग उस से हदीस बयान करते हैं। (तल्खीसु हबीर, स० २२२)

३. इब्ने जौज़ी ने इस हदीस को मौज़ू बताया है।

(नइनूलुल औतार स० १८१, जिल्द १)

४. इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं (**लैसा बिल-क़वीये**)

(नसबुर्रायह स० ३६७, जिल्द १)

"कि मुहम्मद बिन जाबिर सिक़ह रावी नहीं वह ज़ईफ रावी है।

५. इब्ने मईन फरमाते हैं : "**ज़ईफ**" (नसबुर्रायह स० ३६७, जिल्द १)

अल-ग़रज़ यह हदीस ग़ैर सही होने की वजह से अदमे रफा यदैन की दलील नहीं बन सकती।

मुसन्निफ़ की अट्ठारहवीं दलील और उसका जवाब

عَنِ الْاَسْوَدِ قَالَ رَاَيْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ قَالَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِيْ اَوَّلِ تَكْبِيْرَةٍ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ۔ (طحاوی ص ۱۳۲ ج ۱۔ تحقیق مسئله رفع یدین ص ۱۱)

तर्जमा : "हज़रत अस्वद से रिवायत है कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रजि० खलीफा राशिद को देखा वह अपने हाथों को सिर्फ पहली तक्बीर के वक़्त उठाते थे। फिर नहीं उठाते थे।

जवाब

उसकी सनद इस तरह है :

حدثنا ابن ابي داود قال حدثنا الحماني قال حدثنا يحيى بن آدم عن الحسن بن عياش عن عبد الملك بن ابجر عن الزبير بن عدي عن ابراهيم عن الاسود۔

१. इस सनद में हम्मानी रावी मज्हूल है। (मीज़ान एतदाल, स० २८३, जिल्द १)

२. नीज इस ज़ईफ असर के बरखिलाफ हज़रत उमर रजि० से रफ़ा यदैन करना साबित है। चुनांचे मुलाहिज़ा फरमाएं :

"عن سليمان بن كيسان المدني عن عبد الله بن القاسم قال بينما الناس يصلون في المسجد اذ خرج عليهم عمر فقال اقبلوا علي بوجوهكم اصلي بكم صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم رفع يديه حتى يحاذي منكبيه ثم كبر ثم ركع وكذالك حين رفع فقال القوم هكذا كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلي بنا۔ قال الشيخ رجال اسناده معروفون۔"

(تخريج الهداية ص : ٢١٦)

तर्जमा : "अब्दुल्लाह बिन कासिम फरमाते हैं, लोग मस्जिदे नबवी में नमाज (नफ्ल वगैरह) पढ़ रहे थे कि हजरत उमर रजि० तशरीफ लाए और फरमाया मेरी तरफ देखो, मैं तुम को नमाज़ पढ़ाता हूँ, जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद पढ़ाया करते थे और जिस तरह पढ़ने का हुक्म दिया करते थे। फिर आप किब्ला रू खड़े हो गये और तक्बीर तहरीमा और रुकूअ के वक्त और रुकूअ से उठते वक्त अपने कन्धों तक हाथ उठाए। जब नमाज़ से फारिग हुए तो सब सहाबा रजि० ने कहा, बेशक इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज पढ़ाया करते थे।

"इमाम तकीयुद्दीन इब्ने दकीकुल ईद फरमाते हैं, इस सनद के सब रावी मशहूर व मारूफ हैं" (तख़रीज जैलई स० २१६, देराया इब्ने हजर रह० स० ८६)

अल-ग़रज़ हजरत उमर रजि० के कौल व फेअ्ल (अमल) से साबित हो गया कि रफ़ा यदैन उनके नज़्दीक दुरुस्त और सुन्नते नबवी है।

मुसन्निफ़ की उन्नीसवीं दलील और उसका जवाब

"عن الاسود قال صليت مع عمر فلم يرفع يديه في شيء من صلوته الا حين افتتح الصلوة ورأيت الشعبي وابراهيم وابا اسحق لا يرفعون ايديهم الا حين يفتتحون الصلوة" (مصنف ابن ابي شيبه ص ١٢، تحقيق مسئله رفع يدين)

तर्जमा : "हज़रत अस्वद रिवायत करते हैं कि मैंने हजरत उमर रजि० के साथ नमाज़ अदा की। आप पहली तक्बीर के बाद कभी रफ़ा यदैन नहीं करते थे और (रईसुल मुहद्देसीन) इमाम शाबी रईसुल फुक्हा इब्राहीम नख़ई और इमाम अबू इसहाक़ भी पहली तक्बीर के बाद कहीं रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

जवाब

इमाम हाकिम फरमाते हैं :

ان هذه رواية شاذة لا يقوم بها الحجة ولا تعارض بها الاخبار الصحيحة عن طاؤس بن كيسان عن ابن عمر ان عمر كان يرفع يديه في الركوع وعند الرفع منه۔ (نصب الراية ص ٣٠٥)

तर्जमा : "यह रिवायत सही रिवायात के खिलाफ है। इसलिए यह दलील नहीं बन सकती और सही अहादीस जो ताऊस बिन कैसान अन इब्ने उमर रजि० (कि हज़रत उमर रजि० रुकूअ और रुकूअ से सर उठाने के वक्त रफ़ा यदैन करते थे) मरवी है इस का मुकाबला नहीं कर सकती और यह असर ग़ैर महफ़ूज़ है और जो सुफियान सौरी ने जुबैर बिन अदी से बयान किया है वह ग़ैर महफ़ूज़ है उस में "**ला यऊद**" और "**ला यरफ़ुउहुमा**" का लफ़्ज़ नहीं है। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने कहा है। **व कद रवाहुस्सौरी वहुवल-महफ़ूज़।** (देरायह)

मुसन्निफ़ की बीसवीं दलील और उसका जवाब

"عن علي ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه في التكبيرة الاولى التي يفتتح بها الصلوة ثم لا يرفعهما في شيء من الصلوة" (دارقطني في العلل بحواله حاشيه درايه ص ١٣٢ ج ١، مسئله تحقيق رفع يدين ص ١٣)

तर्जमा : "हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ की पहली तक्बीर के बाद सारी नमाज़ में कहीं भी रफ़ा यदैन नहीं करते थे"।

जवाब

इमाम दार कुतनी ने अपनी इस किताबुल एलल में वही अहादीस दर्ज की हैं जो ज़ईफ़ और कम्ज़ोर हैं और साथ ही उसमें ज़ुअ्फ़ के सबब भी बयान कर दिया है यह दार कुतनी के अलावा अलग किताब है।

१. तो इस हदीस की सनद में अबू बकर नहशली है, उसके मुतअल्लिक उसमान दारमी लिखते हैं कि :

• ليس ابو بكر النهشلي ممن يحتج بروايته او تثبت به سنة لم
يأت بها غيره۔

"यानी अबू बकर की रिवायत काबिले हुज्जत नहीं और न ही उस अकेले से सुन्नत साबित हो सकती है। उसकी हदीस को कोई और मुहद्दिस नहीं लाए"।

२. इस सनद में दूसरा रावी आसिम बिन कुलैब है और उसके मुतअल्लिक हाफ़िज़ इब्ने हजर रहे : फ़रमाते हैं :

"आदमी नेक था, लेकिन फ़िरका-ए-मुर्जीया से तअल्लुक रखने वाला कूफ़ी था"।

३. अली बिन मदीनी रह० फ़रमाते हैं :

"जिस रिवायत का दारो मदार आसिम पर ही हो वह रिवायत काबिले हुज्जत नहीं होती" (मीज़ानुल एतदाल स० ५, जिल्द ३)

मुसन्निफ़ की पेशकरदा रिवायत की सनद में आसिम भी मौजूद है जो मुतफ़र्रिद है।

हाँ जब उस की ताईद दूसरे रावी कर दें तो दुरुस्त है।

४. नीज़ मुसन्निफ़ की पेशकरदा हदीस हज़रत अली रज़ि० की सही रिवायत के मुख़ालिफ़ है लिहाज़ा यह हदीस सही नहीं। सही रिवायत यह है :

• أخبرنا أبو عبد الله الحافظ وأبو سعيد بن أبي عمرو قالا ثنا أبو العباس
محمد بن يعقوب ثنا بحر بن نصر ثنا عبد الله بن وهب أخبرني
ابن أبي الزناد عن موسى بن عقبة عن عبد الله بن الفضل الهاشمي عن
عبد الرحمن الأعرج عن عبيد الله بن أبي رافع عن علي بن أبي طالب

رضي الله عنه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم أنه كان إذا
قام إلى الصلوة المكتوبة كبر ورفع وإذا أراد أن يركع ويصنعه
إذا رفع من الركوع ولا يرفع يديه في شيء من صلوته وهو
قاعد وإذا قام من السجدتين رفع يديه كذلك وكبر
(السنن الكبرى ص ٧٤ ج ٢ ، ابو داؤد ص ١٩٨ ج ١ ، مسند احمد ص ١٦٥ ج ١ ،
ابن ماجه ص ٦٢ ، دارقطنی ص ١٠٧ ، ترمذی ص ٤٩ جزء رفع اليدين)

तर्जमा : "हज़रत अली रज़ि०, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाते हैं कि जब आप फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो तक्बीर कहते और मोंढों के बराबर रफ़ा यदैन करते और उसी तरह जब किरअत से फ़ारिग़ होते और रुकूअ़ का इरादा करते तो उसी तरह रफ़ा यदैन करते। और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो ऐसे ही रफ़ा यदैन करते और बैठने की हालत में रफ़ा यदैन नहीं करते थे और जब दो रकअत पढ़ कर उठते तो भी रफ़ा यदैन करते और अल्लाह अकबर कहते।

अल-ग़रज़ हज़रत अली रज़ि० से रफ़ा यदैन करना साबित है। उन से मना की कोई दलील नहीं।

मुसन्निफ़ की २१, २२ और २३ वीं दलील और उसका जवाब

(٢١) عن عاصم بن كليب عن أبيه أن عليا كان يرفع يديه في أول تكبيرة
من الصلوة ثم لا يرفع بعد (طحاوی ص ١٣٢ ج ١) تحقيق رفع يدين

(٢٢) وعنه أن عليا كان يرفع يديه إذا افتتح الصلوة ثم لا يعود
(ابن ابی شیبه ص : ١٢١ ج ١)

तर्जमा : "आसिम बिन कुलैब से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ि० नमाज़ की पहली तक्बीर के बाद कहीं रफ़ा यदैन नहीं करते थे"।

(٢٣) عن علي بن أبي طالب أنه كان يرفع يديه في التكبيرة الأولى التي
يفتتح بها الصلوة ثم لا يرفعهما في شيء من الصلوة (موطا
امام محمد ص ٩٣ تحقيق مسئله رفع يدين ص ١٣٥)

जवाब

इन तीन रिवायतों में बीसवीं रिवायत की तरह अबू बकर नहशली और आसिम बिन कुलैब मज़्कूर हैं। लिहाज़ा यह ज़ईफ़ अक्वाल व आसार

हज़रत अली रज़ि० की मरफ़ूअ़ हदीस के मुक़ाबला में ग़ैर सही है जैसे बीसवीं हदीस में मज़्कूर हो चुका है।

मुअत्ता इमाम मुहम्मद की सनद मुलाहिज़ा फरमाएं :

قَالَ مُحَمَّدٌ اَخْبَرَنَا اَبُوْ بَكْرِ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ النَّهْشَلِيُّ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ الْجَرْمِيِّ عَنْ اَبِيْهِ وَكَانَ مِنْ اَصْحَابِ عَلِيٍّ اَنَّ عَلِيَّ بْنَ اَبِيْ طَالِبٍ كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهٗ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ ـ الخ

मुसन्निफ़ अगर मुअत्ता सामने रख कर लिखते तो इबारत में ग़लती न करते। लोगों की लिखी हुई इबारतें नोट कर देते हैं।

मुसन्निफ़ की चौबीसवीं दलील और उसका जवाब

عَنْ اَبِيْ اِسْحٰقَ قَالَ كَانَ اَصْحَابُ عَبْدِ اللّٰهِ وَاَصْحَابُ عَلِيٍّ لَا يَرْفَعُوْنَ اَيْدِيَهُمْ اِلَّا فِيْ اِفْتِتَاحِ الصَّلٰوةِ ثُمَّ لَا يَعُوْدُوْنَ ۔ (ابن ابی شیبہ ص ۲۳۱ ج ۱ تحقیق مسئلہ رفع یدین ص ۱۳)

तर्जमा : "मुहद्दिस अबू इसहाक़ रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० के (सैंकड़ों) साथी और हज़रत अली रज़ि० के (हज़ारों) साथी वह सब पहली तक्बीर के बाद रफ़ा यदैन नहीं करते थे"।

जवाब

१. इस रिवायत की सनद में अबू इसहाक़ कूफ़ी है जिसके बारे में हाफिज़ इब्ने हजर रहे० फरमाते हैं, "लैसा बेसिक़तिन" यानी यह सिक़ह और क़ाबिले एतमाद रावी नहीं"।

लिहाज़ा यह असर सही नहीं है।

२. नीज़ हज़रत अली रज़ि० की मरफ़ूअ़ हदीस जो बीसवीं नम्बर में गुज़री है उसके भी मुख़ालिफ़ है। लिहाज़ा यह असर क़ाबिले एतमाद नहीं।

मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील

عَنْ اَبِيْ بَكْرِ بْنِ عَيَّاشٍ قَالَ مَا رَاَيْتُ فَقِيْهًا قَطُّ يَفْعَلُهٗ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِيْ غَيْرِ التَّكْبِيْرَةِ الْاُوْلٰى ۔ (طحاوی شریف ص ۱۳۲ ج ۱ تحقیق مسئلہ رفع یدین ص ۱۳)

तर्जमा : मुहद्दिस अबू बकर बिन अय्याश (पैदाइश १०० वफ़ात १९३) फरमाते हैं कि मैंने (ख़ैरुल क़ुरून में) किसी भी दीन में समझ रखने वाले

को कहीं भी पहली तक्बीर के बाद रफ़ा यदैन करते नहीं देखा"।

मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील का पहला जवाब!

इस असर की सनद में इब्ने अबी दाऊद मज्हूल रावी है। नीज़ अबू बकर बिन अय्याश अस्हाबुल हदीस का सख़्त तरीन मुख़ालिफ़ था। चुनांचे नईम बिन हम्माद फरमाते हैं :

كَانَ اَبُوْ بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ يَبْزُقُ فِيْ وُجُوْهِ اَصْحَابِ الْحَدِيْثِ ۔ (میزان الاعتدال ص ۵۰۲ ج ۴)

यानी अबू बकर बिन अय्याश मुहद्देसीने किराम के चेहरों पर थूका करता था"। (मीज़ानुल एतदाल स० ५०२, जिल्द ४)

नीज़ मुहम्मद बिन नुमैर ने उसे ज़ईफ़ रावी कहा है। (मीज़ानुल-एतदाल, स० ४९९, जिल्द ४)

अबू नईम फरमाते हैं :

لَمْ يَكُنْ فِيْ شُيُوْخِنَا اَكْثَرُ غَلَطًا مِنْهُ ۔ (میزان ص ۵۰۰ ج ۴)

लिहाज़ा यह असर क़ाबिले क़ुबूल और अदमे रफ़ा यदैन की दलील नहीं हो सकता (तर्जमा) हमारे शुयूख़ में से कोई इस से बढ़ कर ग़लती नहीं किया करते थे।

मुसन्निफ़ की पचीसवीं दलील का दूसरा जवाब!

चूंकि अबू बकर बिन अय्याश कूफ़े का रहने वाला था अगर यह कूफ़े से बाहर जाता तो कभी भी यह दावा न करता। चुनांचे इमाम बैहक़ी रह०, इमाम बुख़ारी रह० के हवाला से नक़ल करते हैं कि:

रफ़ा यदैन दस से मरवी है अह्ले मक्का, अह्ले हिजाज़, अह्ले इराक़, अह्ले शाम, अह्ले बसरा और यमन वालों से मन्क़ूल है कि वह रफ़ा यदैन किया करते थे। उन में सईद बिन जुबैर, अता बिन अबी रिबाह, मुजाहिद, क़ासिम बिन मुहम्मद, सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, नौमान बिन अबी अय्याश, हसन, इब्ने सीरीन, ताऊस, मक्हूल, अब्दुल्लाह बिन दीनार, नाफ़े, उबैदुल्लाह बिन उमर, हसन बिन मुस्लिम, क़ैस बिन सअद और उनके अलावा दीगर लोग, (नीज़) अबू क़िलाबा, अबू ज़ुबैर, मालिक बिन अनस, औज़ाई, लैस बिन सअद, इब्ने उयैना, शाफ़ई रह०, यहया बिन सईद क़त्तान, अब्दुर्रहमान बिन महदी, अब्दुल्लाह बिन मुबारक, यहया बिन यहया, अहमद बिन हंबल, इसहाक़ बिन इब्राहीम हन्ज़ली और उनके अलावा दीगर शहरों के लोग। (सुनने कुबरा, बैहक़ी, स० ७५, जिल्द २)

अल-ग़रज़ मुसन्निफ़ का यह दावा बातिल हुआ कि सहाबा रज़ि०, ताबईन रहे० और दीगर अइम्मा में से कोई भी रफ़ा यदैन का काइल नहीं।

मुसन्निफ़ की छब्बीसवीं दलील और उसका जवाब

• عَنْ بَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ اِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ ثُمَّ لَا يَرْفَعُهُمَا حَتّٰى يَنْصَرِفَ ۔ (المدونة الكبرى ص ٦٩ ج ١، ابن ابي شيبة ص ٣١ ج ١، ابوداؤد ص ١٠٩ ج ١، رسالة تحقيق رفع يدين ص ١٣)

तर्जमा : "हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० रिवायत करते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ पहली तक्बीर के वक़्त हाथ उठाते थे। फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होने तक किसी जगह रफ़ा यदैन नहीं करते थे"।

जवाब

इमाम अबू दाऊद इस हदीस को नक़ल करने के बाद फ़रमाते हैं :

"**हाज़ल-हदीसु लैसा बेसहीहिन**। यानी यह हदीस सही नहीं है। (अबू दाऊद स० ११०, जिल्द १) (अबू दाऊद मतबा एच. एम. सईद कम्पनी कराची)

मुसन्निफ़ की सत्ताईसवीं दलील और उसका जवाब

• عَنْ بَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا كَبَّرَ لِافْتِتَاحِ الصَّلٰوةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتّٰى يَكُوْنَ اِبْهَامَاهُ قَرِيْبًا مِنْ شَحْمَتَيْ اُذُنَيْهِ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ ۔ (طحاوی ص ١٣٢ ج ١، ابوداؤد ص ١٠٩ ج ١، دارقطنی ص ١١٠ ج ١، عبد الرزاق)

तर्जमा : "हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० से रिवायत है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरू करने के लिए पहली तक्बीर कहते तो अपने कानों की लव तक हाथ उठाते, फिर सारी नमाज़ में दोबारा हाथ नहीं उठाते थे"। (मसअला तहकीक़ रफ़ा यदैन स० १४)

जवाब

यह रिवायत काबिले इस्तिदलाल नहीं है। क्योंकि इस रिवायत के नक़ल करने वाले ही उसको नाक़ाबिले इस्तिदलाल कह रहे हैं और **'ला यऊदु'** के लफ़्ज़ को सही नहीं मानते। चुनांचे इमाम अबू दाऊद फ़रमाते हैं :

"رَوٰى هٰذَا الْحَدِيْثَ هُشَيْمٌ وَخَالِدٌ وَابْنُ اِدْرِيْسَ عَنْ يَزِيْدَ، لَمْ يَذْكُرُوْا ثُمَّ لَا يَعُوْدُ" (ابوداؤد ص ١٠٩ ج ١)

तर्जमा : "यानी इस हदीस को हैसम, ख़ालिद और इब्ने इदरीस, यज़ीद से नक़ल करते है लेकिन उनकी रिवायात में **'ला यऊदु'** का लफ़्ज़ नहीं।

इमाम हुमैदी फ़रमाते हैं :

"اِنَّمَا رَوٰى هٰذِهِ الزِّيَادَةَ يَزِيْدُ وَيَزِيْدُ يَزِيْدُ" (تلخيص الحبير)

तर्जमा : "यानी यज़ीद के सिवा **ला यऊदु** के लफ़्ज़ को किसी रावी ने ज़िक्र नहीं किया और वह ज़्यादती कर जाया करता था"। उसमान दारमी, इमाम अहमद बिन हंबल रह० से नक़ल करते हैं :

"**ला यसिहहु** (तल्ख़ीस स० २२१, जिल्द १) यानी **'ला यऊदु'** का लफ़्ज़ सही नहीं बल्कि बिल्कुल ग़लत है। यहया बिन मुहम्मद बिन यहया कहते है :

• سَمِعْتُ اَحْمَدَ بْنَ حَنْبَلٍ يَقُوْلُ: هٰذَا حَدِيْثٌ وَاهٍ، قَدْ كَانَ يَزِيْدُ يُحَدِّثُ بِهٖ بُرْهَةً مِنْ دَهْرِهٖ لَا يَقُوْلُ فِيْهِ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ فَلَمَّا لَقَّنُوْهُ تَلَقَّنَ، فَكَانَ يَذْكُرُهٗ

तर्जमा : "मैंने अहमद बिन हंबल को फ़रमाते हुए सुना है कि "यह हदीस कमज़ोर है, यज़ीद कुछ मुद्दत तक उस को **'ला यऊदु'** के लफ़्ज़ के बेग़ैर सुनाता रहा, (लेकिन जब यज़ीद बाद में कूफ़ा आया) तो लोगों के कहने कहाने से **'ला यऊदु'** कहना शुरू कर दिया"। (तल्ख़ीस स० २२१, जिल्द १)

अली बिन आसिम फ़रमाते हैं कि :

قَدِمْتُ الْكُوْفَةَ فَلَقِيْتُ يَزِيْدَ بْنَ اَبِيْ زِيَادٍ فَحَدَّثَنِيْ وَلَيْسَ فِيْهِ "ثُمَّ لَا يَعُوْدُ" فَقَالَ لَا اَحْفَظُ ۔ (تلخيص ص ٢٢٢ ج ١)

तर्जमा : "यह रिवायत मैंने इब्ने अबी लैला से सुनी जिस में **"सुम्मा ला यऊदु"** न था। बाद में कूफ़ा गया तो मालूम हुआ कि यज़ीद अभी ज़िन्दा हैं, उस से जा कर रिवायत की तो उन्होंने **"ला यऊदु"** न कहा। मैंने कहा कि मुहम्मद बिन अबी लैला ने आप से यह रिवायत की है, वह उस में **'ला यऊदु'** कहते हैं। तो फ़रमाने लगे, मुझे याद नहीं। फिर मैंने इसी बात को दुहराया, फ़रमाया मुझे याद नहीं। यानी हाफ़िज़ा इतना कमज़ोर हो गया था कि कुछ याद नहीं रहता।

इमाम बज़्ज़ार फ़रमाते हैं कि :

"**ला यसिहहु क़ौलुहू फ़िल-हदीसे सुम्मा ला यऊदु**"। (तल्ख़ीस स० २२१ जिल्द १)

यानी **"सुम्मा ला यऊदु"** का लफ़्ज़ हदीस में सही नहीं है।

मुसन्निफ़ की अट्ठाईसवीं दलील और उसका जवाब

काज़ी अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला जो इस हदीस के मरकज़ी रावी हैं वह रफ़ा यदैन नहीं करते थे। (इब्ने अबी शैबा स० २३०, जिल्द १, मसअला तहक़ीक़ रफ़ा यदैन स० १४)

जवाब

काज़ी अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला के मुतअल्लिक़ छब्बीसवीं हदीस के ज़ैल में गुज़र चुका है कि उसकी हदीस क़ाबिले हुज्जत नहीं। जब उसकी रिवायत करदह हदीस की ही कोई हैसियत नहीं तो उसके ज़ाती अमल की वजह से सही अहादीस पर क्या असर पड़ सकता है।

मुसन्निफ़ की उन्तीसवीं ३०, ३१, ३२, ३३ वीं दलील और उसका जवाब

२९. हज़रत अम्र बिन मुर्रह ने मस्जिदे आज़म कूफ़ा में हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० की रफ़ा यदैन वाली रिवायत बयान की तो हज़रत इमाम नख़ई (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने फ़रमाया :

"مَا أَدْرِي لَعَلَّهُ لَمْ يَرَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي إِلَّا ذَلِكَ الْيَوْمَ فَحَفِظَ هٰذَا مِنْهُ وَلَمْ يَحْفَظْهُ ابْنُ مَسْعُودٍ وَأَصْحَابُهُ. مَا سَمِعْتُهُ مِنْ أَحَدٍ مِنْهُمْ إِنَّمَا كَانُوا يَرْفَعُونَ أَيْدِيَهُمْ فِي بَدْءِ الصَّلٰوةِ حِينَ يُكَبِّرُونَ" (موطا امام محمد ص ٩٢، تحقيق مسئله رفع يدين ص ٩)

तर्जमा : "मैं नहीं जानता कि शायद हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० ने सिर्फ़ एक उसी दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते देखा और उस ने रफ़ा यदैन को याद रखा, और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० और दूसरे सहाबा रज़ि० जो हमेशा नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहने वाले थे उन में से किसी एक ने भी इस मसअला को याद न रखा। मैंने उन में से किसी एक शख़्स से भी रफ़ा यदैन का मस्अला सुना तक नहीं, वह तो सिर्फ़ पहली ही तक्बीर के वक़्त हाथ उठाते थे"।

३०. दूसरी रिवायत में है :

"فَذَكَرْتُ ذٰلِكَ لِإِبْرَاهِيمَ فَغَضِبَ وَقَالَ رَآهُ هُوَ وَلَمْ يَرَهُ ابْنُ مَسْعُودٍ وَلَا أَصْحَابُهُ" (طحاوی ص ١٣٢ ج ١، تحقيق مسئله رفع يدين ص ١٥)

तर्जमा : "यानी जब मैंने रफ़ा यदैन की रिवायत बयान की तो अल्लामा इब्राहीम नख़ई सख़्त ग़ज़बनाक हुए और फ़रमाया कि अजीब बात है कि हज़रत वाइल रज़ि० जो सिर्फ़ एक आध दिन के लिए हुज़ूर के पास आए उन्होंने तो रफ़ा यदैन देखी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० और दूसरे सहाबा किराम रज़ि० (जो सारी उम्र हुज़ूर के साथ रहे उन्होंने आपको रफ़ा यदैन करते नहीं देखा)

३१. हज़रत मुग़ीरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने जब हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० की रफ़ा यदैन वाली रिवायत हज़रत इब्राहीम नख़ई के सामने बयान फ़रमाई तो आपने फ़रमाया :

"فَإِنْ كَانَ وَائِلٌ رَآهُ مَرَّةً يَفْعَلُ ذٰلِكَ فَقَدْ رَآهُ عَبْدُ اللهِ خَمْسِينَ مَرَّةً لَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ" (طحاوی ص ١٣٢ ج ١، مسئله تحقيق رفع يدين ص ١٦)

तर्जमा : "हज़रत वाइल ने एक दफ़ा यह करते देखा तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने पचास मरतबा देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

३२ और एक रिवायत में यह है कि :

حَمَّادٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ أَنَّهُ قَالَ فِي وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ، أَعْرَابِيٌّ لَمْ يُصَلِّ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةً قَبْلَهَا قَطُّ أَهُوَ أَعْلَمُ مِنْ عَبْدِ اللهِ وَأَصْحَابِهِ حَفِظَ، وَلَمْ يَحْفَظُوا يَعْنِي رَفْعَ الْيَدَيْنِ"

تحقيق مسئله رفع يدين ص١٦ (مسند امام اعظم ص ٥٠)

तर्जमा : "इमाम हम्माद फ़रमाते हैं कि इमाम इब्राहीम नख़ई फ़रमाते हैं कि हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० एक दिहाती बुज़ुर्ग थे। उन्होंने एक आधा दफ़ा के अलावा कभी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ नहीं पढ़ी। क्या वह (हाज़िर बाश) सहाबा रज़ि० हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० वग़ैरह (ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ि०) से ज़्यादा बड़े आलिम थे कि उन्होंने तो रफ़ा यदैन को याद रखा और उनके अकाबिर ने याद नहीं रखा।

३३. और एक रिवायत में यह है कि :

"فَقَالَ هُوَ أَعْرَابِيٌّ لَا يَعْرِفُ الْإِسْلَامَ، لَمْ يُصَلِّ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ إِلَّا صَلٰوةً وَاحِدَةً وَقَدْ حَدَّثَنِي مَنْ لَا أُحْصِي عَنْ عَبْدِ

اللہ بن مسعود انہ رفع یدیہ فی بدء الصلوۃ فقط وحکاہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم وعبد اللہ عالم بشرائع الاسلام وحدودہ متفقد لاحوال النبی صلی اللہ علیہ وسلم ملازم لہ فی اقامتہ واسفارہ وقد صلی مع النبی صلی اللہ علیہ وسلم ما لا یحصی۔ (مسند امام اعظم ص ۱۱۹، ۱۳۰)

तर्जमा : "फरमाया, आप एक दिहाती थे जो इस्लाम से पूरे वाकिफ़ न थे। आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ़ एक ही नमाज़ पढ़ी। मुझे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से बेशुमार लोगों ने बयान किया है कि आप रज़ि० ने सिर्फ़ नमाज़ के इब्तिदा में ही रफ़ा यदैन की थी तो खुद हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी यही अमल बयान किया था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० शरीअ़ते इस्लामिया और हुदूदे इस्लाम के बहुत बड़े आलिम थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हर तरह के अहवाल की टोह में लगे रहते थे, सफर होता या हज़र, वह आपके साथ ही होते थे और उन्होंने आपके साथ बेशुमार दफ़ा नमाज़ पढ़ी थी।

जवाब

मौलाना अब्दुल–हई (हन्फ़ी) इस रिवायत पर तबसरा करते हुए लिखते हैं कि उसके मुतअल्लिक़ बहुत सी बहसें हैं।

१. इमाम बैहक़ी रह० ने किताबुल मारिफ़ा में इमाम शाफ़ई रह० से नक़ल किया है कि उन्होंने कहा बेहतर यह है कि हज़रत वाइल रज़ि० की हदीस को कबूल किया जाए क्योंकि जलीलुल क़द्र सहाबी हैं। उनकी हदीस को कम दर्जे वाले आदमी (यानी इब्राहीम नख़ई) के क़ौल से किस तरह रद्द किया जा सकता है।

२. इमाम बुख़ारी रह० रफ़ा यदैन के रिसाला में फरमाते हैं कि इब्राहीम नख़ई का यह सिर्फ़ अपना ख़्याल है, जिस की बिना पर हज़रत वाइल रज़ि० की हदीस रद्द नहीं हो सकती क्योंकि वाइल रज़ि० ने ख़बर दी है कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रफ़ा यदैन करते हुए देखा। इसी तरह दीगर सहाबा रज़ि० ने भी देखा। जैसा कि हज़रत ज़ाइदा फरमाते हैं :

نا عاصم نا ابی عن وائل بن حجر انہ رأی النبی صلی اللہ علیہ وسلم یرفع یدیہ فی الرکوع وفی الرفع منہ قال ثم اتیتہم بعد ذلک فرأیت الناس فی زمان برد علیہم جل الثیاب تتحرک ایدیہم من تحت الثیاب۔

तर्जमा : "यानी हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि० फरमाते हैं कि : "मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रुकूअ़ जाते और रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन करते देखा। फिर मैं सर्दियों के मौसम में आया तो लोगों को भारी कपड़ों के नीचे से रफ़ा यदैन करते हुए देखा"।

३. इमाम ज़ैलई, फ़क़ीह अबू बकर बिन इसहाक़ से नक़ल करते हैं कि जो इल्लत, इब्राहीम नख़ई ने ज़िक्र की है, वह हज़रत वाइल रज़ि० की हदीस के बराबर नहीं। क्योंकि रफ़ा यदैन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, खुलफ़ाए राशिदीन रज़ि० और ताबईन रज़ि० से साबित है और हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० का रफ़ा यदैन भूल जाना कोई अजीब बात नहीं जैसे वह **मुअव्वज़तैन** के मुतअल्लिक़ भूल गये। इसी तरह रुकूअ़ में तत्बीक़, अरफ़ा में नमाज़ जमा करने की कैफ़ियत, इमाम के पीछे दो आदमियों के खड़ा होने का तरीक़ा, जब यह सब चीज़ें उनको भूल सकती हैं तो रफ़ा यदैन क्यों नहीं भूल सकते।

४. रफ़ा यदैन के सिर्फ़ हज़रत वाइल रज़ि० ही रावी नहीं हैं बल्कि दीगर सहाबा रज़ि० भी हैं। (अत्तालीकुल मुमज्जद अला मुअत्ता इमाम मुहम्मद रह० स० ६३)

अल-ग़रज़ मज़्कूरा वजूहात की बिना पर इब्राहीम नख़ई के अक़्वाल बातिल व मरदूद हैं।

मुसन्निफ़ की ३४ वीं दलील और उसका जवाब

عن ابن مسعود انہ کان یرفع یدیہ اذا افتتح الصلوۃ۔

(موطا امام محمد ص ۵۵، تحقیق مسئلہ رفع یدین ص ۱۸)

(मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ५५, तहक़ीक़ मस्अला, रफ़ा यदैन, स० १८)

जवाब

इसकी सनद इस तरह है :

قَالَ مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا الثَّوْرِيُّ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ

इस सनद में हुसैन बिन अब्दुर्रहमान रावी है जिसके मुतअल्लिक हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

"तग़ैय्यरा हिफ़्ज़ुहू फ़िल-आख़िरे" (तक़रीब स० १८२) यानी आख़िरी उम्र में उसका हाफ़िज़ा खराब हो गया था"। लिहाज़ा यह रिवायत क़ाबिले एहतिजाज नहीं है।

मुसन्निफ़ की ३५वीं दलील और उसका जवाब

حَمَّادٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ النَّخَعِيِّ قَالَ لَا تَرْفَعْ يَدَيْكَ فِي شَيْءٍ مِنَ الصَّلٰوةِ بَعْدَ التَّكْبِيرَةِ الْأُوْلٰى۔ (موطا امام محمد ص ۹۴ تحقیق مسئلہ رفع یدین ص)

तर्जमा : हम्माद से रिवायत है कि हज़रत इमाम इब्राहीम नख़ई फरमाते थे, नमाज़ की पहली तक्बीर के बाद किसी जगह भी रफ़ा यदैन न कर।

जवाब

मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ९२, में इसकी सनद इस तरह है :

"قَالَ مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبَانَ بْنِ صَالِحٍ عَنْ حَمَّادٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ النَّخَعِيِّ"

"इस सनद में एक रावी मुहम्मद बिन अबान हैं। उनके मुतअल्लिक इमाम ज़हबी रह० फरमाते हैं :

इमाम अबू दाऊद और इब्ने मुईन ने उसे ज़ईफ़ कहा है। इमाम बुख़ारी रह० फरमाते हैं **"लैसा बिल-क़वीये,"** यानी यह क़वी और सिक़ह रावी नहीं। बाज़ ने कहा है कि वह फ़िर्क़ा मुर्जिया से तअल्लुक़ रखता था।

लिसानुल मीज़ान में हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं कि :

"इमाम नसाई रह० ने फरमाया कि मुहम्मद बिन अबान कूफ़ी सिक़ह नहीं है"।

इब्ने हिब्बान रह० फरमाते हैं ज़ईफ़ है।

इमाम इब्ने अबी हातिम फरमाते हैं, मैंने अपने आप से उनके मुतअल्लिक पूछा तो उन्होंने फरमाया :

"क़वी नहीं है, उसकी हदीस क़ाबिले एहतिजाज नहीं"।

इमाम बुख़ारी रह० फरमाते हैं :

"लोगों ने उसके हिफ़्ज़ के मुतअल्लिक तन्क़ीद की है और यह रावी क़ाबिले एतमाद नहीं"। (अत्तालीक़ुल मुमज्जद अला मुअत्ता इमाम मुहम्मद स० ७४, हाशिया नम्बर ५)

मुसन्निफ़ की ३६वी दलील और उसका जवाब

عَنْ عَبَّادِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ أَوَّلَ الصَّلٰوةِ ثُمَّ لَمْ يَرْفَعْهُمَا فِي شَيْءٍ حَتّٰى يَفْرُغَ۔ رواہ البیہقی (زیلعی ص ۴۰۴ ج ۱) مسئلہ تحقیق رفع یدین ص ۱۸

तर्जमा : " हज़रत अब्बाद बिन ज़ुबैर रह० रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ शुरू करते वक़्त हाथ उठाते थे। फिर नमाज़ से फ़ारिग होने तक किसी जगह रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

जवाब

अल्लामा ज़ैलई रह० हन्फ़ी फरमाते हैं :

क़ाल शैख़ु फ़िल-इमामे व अब्बादुन हाज़ा ताबेईयुन फ़हुवा मुरसलुन।

तर्जमा : "यानी शैख़ ने अपनी किताब "इमाम" में फरमाया कि अब्बाद ताबई (चूंकि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करता) है। इसलिए यह हदीस मुरसल है"। (नसबुर्रायह स० ४०४, जिल्द १)

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० देरायह में फरमाते हैं :

"وَعَبَّادٌ كَأَنَّهُ ابْنُ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ الزُّبَيْرِ نُسِبَ إِلٰى جَدِّهِ وَهٰذَا مُرْسَلٌ وَفِي إِسْنَادِهِ أَيْضًا مَنْ يُنْظَرُ فِيْهِ۔" (ص ۱۵۲)

तर्जमा : यानी "अब्बाद गोया अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० का बेटा है और दाद की तरफ़ निस्बत है और यह हदीस मुरसल है। नीज़ इस सनद में दीगर रावी भी क़ाबिले गौर हैं।

अल-ग़रज़ यह हदीस मुरसल होने की वजह से क़ाबिले हुज्जत नहीं क्योंकि **हुक्मुल-मुरसले अत्तवक़्क़ुफ़ इन्दा जुम्हूरिल-उलमाए** (मुक़द्दमा मिश्कात लेअब्दिल हक़्क़ स० ४) यानी 'जुमहूर उलमा के नज़्दीक मुरसल हदीस का हुक्म यह है कि तवक़्क़ुफ़ किया जाए'।

मुसन्निफ़ की ३७वीं दलील और उसका जवाब!

عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ الْقَارِيِّ وَنُعَيْمٍ الْمُجْمِرِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ وَيُكَبِّرُ فِي كُلِّ خَفْضٍ وَرَفْعٍ وَيَقُوْلُ إِنِّي أَشْبَهُكُمْ بِصَلٰوةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخْرَجَهُ ابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ فِي التَّمْهِيْدِ۔ (بحوالہ نیل الفرقدین ص ۱۳۳)

तर्जमा : "अबू जाफर कारी और नुअइमुल मुजमिर रिवायत करते है कि हजरत अबू हुरैरह रज़ि० पहली तक्बीर के वक्त हाथ उठाते और हर रफा व खफ्ज में सिर्फ अल्लाहु अक्बर कहते थे और फरमाते थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसी नमाज पढ़ता हूँ"। (तहकीक मस्अला रफा यदैन स० १८)

जवाब

१. यह असर नाकाबिले हुज्जत है क्योंकि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की सही रिवायत से रफा यदैन साबित होती है चुनांचे मुलाहिज़ा फरमाएं :

• حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ ثَنَا أَبُوْ شِهَابٍ عَبْدُ رَبِّهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحٰقَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ

(جزء رفع یدین مترجم ص ۳۰)

तर्जमा : "हमें मुहम्मद बिन सलत ने हदीस बयान फरमाई। उन्हें अबू शिहाब इब्ने अब्दे रबा ने मुहम्मद बिन इस्हाक से, उस ने कहा अब्दुर्रहमान अ'रज से रिवायत है कि हजरत अबू हुरैरह रज़ि० जब तक्बीर कहते रफा यदैन करते और जब रुकूअ़ करते और रुकूअ़ से सर उठाते तब भी रफा यदैन करते"।

२. इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं कि सत्तरह सहाबा रज़ि० से रिवायत है कि वे (क) वह रुकूअ़ को जाते, रुकूअ़ से सर उठाते वक्त रफा यदैन किया करते थे, वह यह हैं :

अबू कतादा अंसारी रज़ि०, अबू सईद साइदी रज़ि०, मुहम्मद बिन मस्लमा बदरी रज़ि०, सहल बिन सअद साइदी रज़ि०, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०, अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि०, अनस बिन मालिक रज़ि० खादिमे रसूल सल्ललल्लाहु अलैहि व सल्लम, अबू हुरैरह रज़ि० दौसी, अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि०, अब्दुल्लाह बिन जुबैर बिन अव्वाम अल करशी, वाइल बिन हुज्र अल हजरमी रज़ि०, मालिक बिन हुवैरिस रज़ि०, अबू मूसा अल अशअरी रज़ि०, अबू हुमैद अस्साइदी अल अंसारी रज़ि०, उमर बिन खत्ताब रज़ि०, अली बिन अबी तालिब रज़ि०, उम्मे दरदा रज़ि०, (जुज़ओ रफइल यदैन मुतर्जम स० १३)

इमाम बुखारी रह० ने इस सत्तरह अस्माए सहाबा रज़ि० में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० को भी रफा यदैन करने के काइलीन व फाइलीन में शुमार किया है।

३. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की रिवायत :

حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ ثَنَا يَزِيْدُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ عَطَاءٍ قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ فَكَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ وَإِذَا رَفَعَ. (جزء رفع یدین ص ۳۸)

तर्जमा : " हमें सुलेमान बिन हर्ब ने हदीस बयान की, उन्हें यज़ीद बिन इब्राहीम ने कैस बिन सईद से, उन्हें अता ने बयान किया कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० के पीछे नमाज़ पढ़ी, पस वह रफा यदैन करते जब तक्बीर कहते और जब (रुकूअ़ से सर) उठाते।

४. इस से सिर्फ़ यह मालूम होता है कि उठते बैठते वक्त अल्फ़ाज़ अल्लाहु अक्बर ही कहते थे कोई दूसरे अल्फाज़ नहीं कहते थे और उसमें रफा यदैन की तरदीद नहीं है, लिहाज़ा काबिले एहतिजाज नहीं हुई।

मुसन्निफ़ की ३८वीं दलील और उसका जवाब

عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكَبِّرُ فِي الصَّلٰوةِ كُلَّمَا خَفَضَ وَرَفَعَ فَلَمْ تَزَلْ تِلْكَ صَلٰوتُهُ حَتّٰى لَقِيَ اللّٰهَ

(موطا امام مالک ص ۳۰، مسئلہ تحقیق رفع یدین ص ۱۹)

तर्जमा : इमाम जैनुल आबेदीन रह० से रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलाम नमाज़ में रुकूअ़ जाते और उठते वक्त अल्लाहु अकबर कहते थे (रफा यदैन नहीं करते थे) और आप ऐसी ही नमाज़ पढ़ते रहे यहाँ तक कि आप खुदा तआला से जा मिले।

जवाब

(मुरसल वह हदीस होती है जिस में सहाबी रज़ि० का वास्ता छूटा हुआ हो और ताबई रह० सहाबी रज़ि० के नाम के बग़ैर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम बयान करें।)

१. चूंकि यह मुरसल हदीस है और मुरसल के मुतअल्लिक मुहद्देसीन का फैसला यह है कि तवक्कुफ किया जाए क्योंकि जैनुल आबेदीन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं देखा जैसा कि पहले दलील के जवाब में गुज़र चुका है।

२. इमाम जैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन बिन अली मुर्तज़ा रसूले खुदा

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्ले बैत में से है, वह भी तक्बीरे तहरीमा के वक़्त और रुकूअ़ जाने और रुकूअ़ से सर उठाने के वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे।

मुसन्निफ़ की पेशकरदा रिवायत में अदमे रफ़ा यदैन का ज़िक्र नहीं है। इसीलिए मुसन्निफ़ ने तर्जमा में "रफ़ा यदैन नहीं करते थे" को कौसैन में ज़िक्र किया है।

३. नीज़ इस में शुरू नमाज़ के वक़्त भी रफ़ा यदैन का ज़िक्र नहीं जिसके मुसन्निफ़ भी काइल हैं।

अल ग़रज़ हज़रत ज़ैनुल आबेदीन से सही सनद से यही साबित है कि वह रफ़ा यदैन के काइल थे न कि मुख़ालिफ़।

४. इमाम ज़ैनुल आबेदीन रह० तो यह फरमा रहे हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तकबीर तहरीमा, रुकूअ़ जाते वक़्त और रुकूअ़ से उठते वक़्त सिर्फ़ अल्लाहु अकबर ही कहते थे न कि दूसरे अल्फ़ाज़ जिस तरह कि अहनाफ़ कहते हैं कि अल्लाहु अकबर की बजाए **अल्लाहु आज़मु, अल्लाहु अजल्लु, अल्लाहु अक्बर, अर्रहमानु अकबर** वग़ैरह कोई भी कलिमा कह सकता है जिस में अल्लाह तआला की बड़ाई हो हत्ता कि फ़ार्सी ज़बान में "ख़ुदा बुज़ुर्ग तर अस्त" कहना भी दुरुस्त है तो इमाम ज़ैनुल आबेदीन रह० उसी की तरदीद फरमा रहे हैं और फरमाते हैं कि नबी (स०) तो सिर्फ़ अल्लाहु अकबर ही कहते थे न कि दूसरे अल्फ़ाज़।

५. इस हदीस में जिस तरह रफ़ा यदैन का ज़िक्र नहीं है न इफ़्तिताहे नमाज़ में न दूसरे मकाम पर। इसी तरह इसमें यह भी ज़िक्र नहीं कि क़याम और रुकूअ़ में क्या पढ़ना है, क़ौमा में क्या पढ़ना है, सज्दों में, सज्दों से उठ कर और तशह्हुद में क्या पढ़ना है, सलाम का भी ज़िक्र नहीं। अगर इस हदीस पर मुकम्मल तौर पर हू बहू इसी तरह ही नमाज़ पढ़ी जाए तो हमारी तो दर किनार आपकी भी नमाज़ नहीं होगी। नीज़ इस हदीस पर अमल से रुकूअ़ से उठते वक़्त भी अल्लाहु अकबर ही कहना पड़ेगा जिसके न आप काइल व फाइल हैं और न ही कोई और।

६. अहनाफ़ जब वित्र नमाज़ में दुआए क़ुनूत पढ़ने लगते हैं तो रफ़ा यदैन करते हैं। अगर सिर्फ़ इफ़्तिताहे नमाज़ में ही रफ़ा यदैन करना मशरू और साबित है तो फिर नमाज़े वित्र में क्यों रफ़ा यदैन करते हैं क्योंकि उसका का तो कोई भी सुबूत नहीं।

७. ईदैन की ज़वाइद तक्बीरों में अहनाफ़ भी रफ़ा यदैन के काइल हैं हालांकि वह तक्बीर तहरीमा के बाद होती हैं।

८. अहादीस के मुताला से साबित होता है कि कुछ लोग लफ़्ज़ अल्लाहु अकबर कहना छोड़ गये थे।

❖❖❖

ग़ैर मुक़ल्लेदीन के मस्लक और अमल का नम्बरवार जाइज़ा और उसका जवाब

ग़ैर मुक़ल्लेदीन के मस्लक का पहला हिस्सा यह है कि नमाज़ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा पहली और तीसरी रकअत के शुरू में रफ़ा यदैन करते थे। इस बारे में वह चार रिवायात बयान करते हैं :

१. रिवायत इब्ने उमर रज़ि० बुख़ारी स० २२, जिल्द १ लेकिन उसकी सनद में उबैदुल्लाह शीआ रावी है और अबू दाऊद ने उस हदीस के मुतअल्लिक़ फरमाया, **"लैसा बेमरफ़ूइन"** यानी यह रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस ही नहीं। नीज़ इसी सनद में सज्दा के वक़्त भी रफ़ा यदैन का ज़िक्र है (जुज़ओ बुख़ारी) और सबसे बढ़ कर यह कि उसमें हमेशगी का कोई लफ़्ज़ नहीं। यही वजह है कि इब्ने उमर रज़ि० ख़ुद रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

(तहक़ीक मसअला रफ़ा यदैन स० २६)

मुसन्निफ़ के एतराज़ात का ख़ुलासा

(अ) रिवायत इब्ने उमर रज़ि० बहवाला बुख़ारी में उबैदुल्लाह शीआ है। (ब) इमाम अबू दाऊद ने हदीस इब्ने उमर रज़ि० के मुतअल्लिक़ फरमाया कि यह हदीसे रसूल ही नहीं। (ज) इस सनद में सज्दा के वक़्त रफ़ा यदैन का ज़िक्र है। (द) इसमें हमेशगी का कोई ज़िक्र नहीं (ह) इब्ने उमर रज़ि० रफ़ा यदैन नहीं किया करते थे।

मुसन्निफ़ के एतराज़ात का जवाब

सही बुख़ारी की हदीस इब्ने उमर रज़ि० :

ज़ैल में मुसन्निफ़ के एतराज़ात के जवाब से पहले हदीस इब्ने उमर रज़ि० मुलाहिज़ा फरमाएं :

• حدثنا عياش قال حدثنا عبد الأعلى قال حدثنا عبيد الله عن نافع أن ابن عمر كان إذا دخل في الصلوة كبر ورفع يديه وإذا ركع رفع يديه وإذا قال سمع الله لمن حمده رفع يديه وإذا قام من الركعتين رفع يديه ورفع ذلك ابن عمر إلى نبي الله ﷺ

(صحيح بخاري شريف ص ١٠٢ ج ١ باب رفع اليدين إذا قام من الركعتين)

तर्जमा : "हज़रत नाफ़े फरमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ में दाख़िल होते तो **अल्लाहु अकबर** कहते और रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ करते फिर भी रफ़ा यदैन करते और जब **समेअल्लाहुलिमन हमेदह** कहते फिर भी रफ़ा यदैन करते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो भी रफ़ा यदैन करते। और इब्ने उमर रज़ि० ने बताया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ऐसा ही किया करते थे। तो हदीसे रसूल (मरफ़ूअ़) हुई, न कि मौक़ूफ़ वग़ैरह।

(अ) अब्दुल्लाह शीआ़ नहीं बल्कि सिक़ह रावी हैं

१. तमाम उलमा–ए फ़न और मुहद्देसीने किराम, उबैदुल्लाह को सिक़ह रावी बताते हैं चुनांचे हाफ़िज़ इब्ने हजर "तक़रीबुत्तहज़ीब" में उबैदुल्लाह के मुतअल्लिक़ लिखते हैं :

• عبيد الله بن عمر بن حفص بن عاصم بن عمر بن الخطاب العمري المدني، أبو عثمان، ثقة ثبت، قدمه أحمد بن صالح على مالك في نافع وقدمه ابن معين في القاسم عن عائشة على الزهري عن عروة عنها من الخامسة (ص ٢٥٣، ج ١)

तर्जमा : "उबैदुल्लाह बिन उमर बिन हफ़्स बिन आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०, उमरी, मदनी, अबू उस्मान, सिक़ह हैं। अहमद बिन सालेह ने नाफ़े की सनद में उबैदुल्लाह को मालिक रह० पर मुक़द्दम किया है और हज़रत आइशा रज़ि० की हदीस की सनद जो ज़ुहरी, उरवह अन आइशा रज़ि० है। इमाम यहया बिन मुईन ने इसमें ज़ुहरी पर उबैदुल्लाह को मुक़द्दम किया है, पाँचवें तबक़ा से तअल्लुक़ रखते हैं।

२. **अल्लामा ख़ज़रजी फरमाते हैं :**

"أحد الفقهاء السبعة والعلماء الأثبات قال النسائي ثقة ثبت وقال ابن معين، عبيد الله عن القاسم عن عائشة الذهب المشبك بالدر وقال أحمد هو أثبت من مالك في نافع (خلاصه ص ٢٥١)

तर्जमा : "उबैदुल्लाह, फ़ुक़्हाए सबआ और सिक़ह उलमा में से हैं। इमाम नसाई रह० फरमाते हैं सिक़ह हैं। इब्ने मुईन फरमाते हैं कि उबैदुल्लाह अनिल क़ासिम अन आइशा, यह सनद सोने के मोतियों की लड़ी है। और इमाम अहमद फरमाते हैं कि उबैदुल्लाह, मालिक से ज़्यादा अस्बत हैं।

३. ख़ातिमतुल-हुफ़्फ़ाज़ हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० तहज़ीबुत्तहज़ीब में लिखते हैं :

• أبو عثمان أحد الفقهاء السبعة ...... (ص ٣٨)

قال عمرو بن علي ذكرت ليحيى بن سعيد قول ابن مهدي إن مالكا أثبت في نافع عن عبيد الله " فغضب وقال قال أبو حاتم عن أحمد عبيد الله أثبتهم وأحفظهم وأكثرهم رواية. وقال عثمان الدارمي قلت لابن معين: "مالك أحب إليك عن نافع أو عبيد الله"؟ قال: كلاهما، ولم يفضل وقال جعفر بن الطيالسي سمعت يحيى بن معين يقول عبيد الله عن القاسم عن عائشة، الذهب المشبك بالدر، فقلت هو أحب إليك أو الزهري عن عروة عن عائشة؟ قال هو إلي أحب وقال أحمد بن صالح " عبيد الله أحب إلي من مالك في حديث نافع وقال عبد الله بن أحمد عن ابن معين عبيد الله بن عمر من الثقات" وقال النسائي ثقة، ثبت وقال أبو زرعة وأبو حاتم ثقة."

وقال ابن منجويه، كان من سادات أهل المدينة وأشراف قريش فضلا وعلما وعبادة وشرفا وحفظا وإتقانا ... وكان ثقة كثير الحديث، حجة " وقال أحمد بن صالح " ثقة، ثبت، مأمون " ليس أحد أثبت في حديث نافع منه " ... وقال ابن معين لم يسمع من ابن عمر " وقال " ثقة، حافظ، متفق عليه (ص ٣٩، ٤٠ جلد ٧)

तर्जमा : "अबू उस्मान (यानी उबैदुल्लाह) फुक़हा-ए-सबआ में से हैं। अम्र बिन अली फरमाते हैं :

"मैं ने यहया बिन सईद के पास इब्ने महदी का यह कौल ज़िक्र किया कि इमाम मालिक, नाफ़े बिन अब्दुल्लाह वाली सनद में उबैदुल्लाह से ज़्यादा असबत हैं तो आप बहुत ग़ज़बनाक हुए (क्योंकि आप उबैदुल्लाह को इमाम मालिक से ज़्यादा अस्बत जानते थे)

इमाम अबू हातिम, इमाम अहमद रह० से नक़ल फरमाते हैं कि

उबैदुल्लाह ज़्यादा कसरत से अहादीस बयान करने वाले, ज़्यादा याद रखने वाले और अस्बत हैं। उस्मान दारमी कहते हैं :

मैंने इब्ने मुईन से पूछा कि नाफ़े से रिवायत करने वाले दो रावी मालिक और उबैदुल्लाह में से कौन आपका पसन्दीदा है? तो आपने फरमाया दोनों बराबर हैं और उन्होंने किसी को दूसरे पर फ़ौक़ियत न दी"।

ज'फर त्यालसी कहते हैं :

"मैंने यहया बिन मुईन से सुना कि उबैदुल्लाह की सनद सोने के मोतियों की लड़ी है, मैंने पूछा, किया हज़रत आइशा रज़ि० से मरवी हदीस की सनद में ज़ुहरी आप का पसन्दीदा है या उबैदुल्लाह तो आपने फरमाया : उबैदुल्लाह।

अहमद बिन सालेह फरमाते हैं :

"नाफ़े वाली सनद में इमाम मालिक रह० से उबैदुल्लाह ज़्यादा पसन्दीदा हैं"।

अब्दुल्लाह बिन अहमद, इब्ने मुईन से बयान फरमाते हैं कि:

"उबैदुल्लाह बिन उमर, सिकह रावियों में से हैं और इमाम नसाई रह० फरमाते हैं कि पक्के और सिकह हैं।

अबू ज़ुरआ और हातिम फरमाते हैं, "सिकह हैं"।

इब्ने संजुवैह फरमाते हैं :

"उबैदुल्लाह अहले मदीना के सरदारों में से हैं। फज़ीलत, इल्म इबादत, बुज़ुर्गी, और हिफ़्ज़ व इत्क़ान में, कुरैश के शुरफा में से थे। कसीरुल हदीस, सिकह और काबिले हुज्जत थे। अहमद बिन सालेह फरमाते हैं सिकह और मामून हैं नाफ़े की हदीस के ज़्यादा याद रखने वाले।

इब्ने मुईन फरमाते हैं, इब्ने उमर रज़ि० से आपका सिमाअ् साबित नहीं।

आपके हाफ़िज़ और सिकह होने पर सबका इत्तिफाक है।

अल-ग़रज़ मज़्कूरा बाला हवालाजात से यह बात रोज़े रोशन की तरह अयाँ हो जाती है कि उबैदुल्लाह सिकह रावी हैं। उनकी रिवायत करदह हदीस क़ाबिले हुज्जत है बल्कि इमाम मालिक रह० से भी ज़्यादा अस्बत हैं। लिहाज़ा मुसन्निफ का उन पर शीआ होने का इल्ज़ाम बेबुनियाद और महज़ इफ़्तिरा है।

नीज़ यह साबित हुआ कि सही बुखारी की इब्ने उमर रज़ि० वाली हदीस जिस को मुसन्निफ ने उबैदुल्लाह की वजह से रद करने की नाकाम कोशिश की है वह बिल्कुल सही और इस्बाते रफा यदैन की बेहतरीन दलील है।

(ब) इब्ने उमर रज़ि० की रिवायत, हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है

मुसन्निफ ने हदीस इब्ने उमर रज़ि० पर तअन के ज़िम्न में यह इमाम अबू दाऊद से नक़ल किया है कि यह हदीसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नहीं। लेकिन इमाम अबू दाऊद के इस क़ौल की सही बुखारी की हदीस पर ज़द नहीं पड़ती।

१. हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

"मु'तमिर और अब्दुलवहाब ने उबैदुल्लाह अन नाफ़े से यह रिवायत माकूफ़ बयान की है। जैसे कि इमाम दार कुतनी ने कहा। लेकिन इन दोनों (यानी मु'तमिर और अब्दुलवहाब) ने उबैदुल्लाह अनिज़्ज़ुहरी अन सालेमिन अन इब्ने उमरा से यह रिवायत मरफ़ू बयान की है जैसे इमाम बुखारी की किताब जुज़ओ रफाइल यदैन में है"। (फतहुल बारी, स० २२२, जिल्द २)

२. यही हदीस इब्ने उमर रज़ि० से जुज़ रफा यदैन में मरफ़ू नक़ल की गई है चुनांचे मुलाहिज़ा हो :

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ ثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي ذٰلِكَ كُلِّهِ وَكَانَ عَبْدُ اللهِ يَفْعَلُهُ" (جزء رفع یدین مترجم ص ۵۵)

तर्जमा : "सालिम बिन अब्दुल्लाह ने अपने बाप से रिवायत की है, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रफ़ा यदैन करते थे, जब नमाज़ में दाखिल होते और जब रुकूअ् का इरादा करते और जब रुकूअ् से सर उठाते, और जब दो रकअत (पढ़ कर) उठते इन तमाम जगहों में रफ़ा यदैन करते और अब्दुल्लाह भी रफ़ा यदैन किया करते थे।

अल-ग़रज़ मज्कूरा दलाइल से यह बात साबित हो गई कि सही बुख़ारी की इब्ने उमर रज़ि० वाली रिवायत हदीसे रसूल है।

(ज) हदीस इब्ने उमर रज़ि० में सज्दा का ज़िक्र

मुसन्निफ़ ने हदीस इब्ने उमर रज़ि० की हदीस में जुज़ रफ़ा यदैन के हवाला से सज्दा के वक़्त रफ़ा यदैन का भी ज़िक्र किया है। चुनांचे ज़ैल में हदीस और इमाम बुख़ारी रह० का फ़ैसला मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

• وزاد وكيع عن العمري عن نافع عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما
عن النبي صلى الله عليه وسلم أنه كان يرفع يديه إذا
ركع وإذا سجد (جزء رفع يدين مترجم ص ۵۶)

तर्जमा : "वकीअ् ने अल उमरी से और उन्होंने नाफ़े से और उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लललाहु अलैहि व सल्लम से बयान किया है कि आप रफ़ा यदैन करते थे, जब रुकूअ् करते और सज्दा करते।

इमाम बुख़ारी रह० का फ़ैसला

इमाम बुख़ारी रह० ने कहा है कि महफ़ूज़ वही रिवायत है जो उबैदुल्लाह, अय्यूब, मालिक, इब्ने जुरैज, लैस रह०, बेशुमार अह्ले हिजाज़, अह्ले इराक़ ने नाफ़े से उन्होंने इब्ने उमर रज़ि० से रफ़ा यदैन के बारे में बयान की है कि वह रुकूअ् के वक़्त और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे। (जुज़ओ रफ़इल यदैन मुतर्जम स० ५६)

अल ग़रज़ मुसन्निफ़ ने जो जुज़ रफ़ा यदैन के हवाला से इब्ने उमर रज़ि० की सज्दा में रफ़ा यदैन वाली हदीस ज़िक्र की है वह महफ़ूज़ नहीं बल्कि सही रिवायत वही है जो सही बुख़ारी में बग़ैर सज्दा के ज़िक्र के मौजूद है। जिसका इमाम बुख़ारी रह० ने खुद अपने फ़ैसला में तज़्किरा

फ़रमाया, चुनांचे वह हदीस यह है :

• حدثنا عياش قال حدثنا عبد الأعلى قال حدثنا عبيد الله عن
نافع أن ابن عمر كان إذا دخل في الصلوة كبر ورفع يديه وإذا
قال سمع الله لمن حمده رفع يديه وإذا قام من الركعتين رفع
يديه ورفع ذلك ابن عمر إلى نبي الله ﷺ (صحیح بخاری ص ۱۰۲ ج ۱)

तर्जमा : "हज़रत नाफ़े फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ में दाखिल होते अल्लाहु अक्बर कहते और रफ़ा यदैन करते, और जब रुकूअ् करते फिर भी रफ़ा यदैन करते और जब **'समिअल्लाहुलिमन हमिदह'** कहते फिर भी रफ़ा यदैन करते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो भी रफ़ा यदैन करते। और इब्ने उमर रज़ि० ने बताया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ऐसे ही किया करते थे"।

(द) हमेशगी का ज़िक्र नहीं!

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० मशहूर सहाबी, क़दीमुल इस्लाम, मुत्तब–ए–सुन्नत और आलिम बड़े दर्जे के हैं, जो **"काना यरफ़ओ यदैह"** से हदीस नक़ल करते हैं जिस से दवाम व इस्तिम्रार साबित होता है।

(ह) अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० रफ़ा यदैन किया करते थे

(१.) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० रफ़ा यदैन किया करते थे, ज़ैल में दलाइल मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

حدثنا محمد بن عبد الله بن حوشب ثنا عبد الوهاب ثنا عبيد
الله عن نافع عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما أنه كان يرفع
يديه إذا دخل في الصلوة وإذا ركع وإذا قال سمع الله لمن حمده
وإذا قام من الركعتين يرفعهما (جزء رفع يدين امام بخاری ص ۵۶)

तर्जमा : "हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें अब्दुल वहाब ने, वह कहते हैं हमें अब्दुल्लाह ने नाफ़े से रिवायत बयान की है कि इब्ने उमर रज़ि० रफ़ा यदैन करते जब नमाज़ में दाखिल होते और जब रुकूअ् करते और जब **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहते और जब दो रकअत पढ़ कर उठते तो बदस्तूर रफ़ा यदैन करते थे"।

२. रफ़ा यदैन न करने वाले को अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० सज़ा दिया करते थे।

حدثنا الحميدي ثنا الوليد بن مسلم قال سمعت زيد بن
واقد يحدث عن نافع أن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما كان إذا
رأى رجلا لا يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع رماه بالحصى
(جزء رفع يدين مترجم ص)

तर्जमा : "हमें हुमैदी ने हदीस बयान की, वह कहते है हमें अबुल वलीद बिन मुस्लिम ने, वह कहते हैं, मैंने ज़ैद बिन वाक़िद को हदीस बयान करते हुए सुना नाफ़े से रिवायत है उसने बयान किया कि इब्ने उमर रज़ि० जब किसी को रफ़ा यदैन न करता देखते तो उसको कंकरियां मारते।

अल ग़रज़ अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० खुद भी रफ़ा यदैन किया करते थे और न करने वालों को सज़ा दिया करते थे। लिहाज़ा मुसन्निफ़ का यह कहना कि "इब्ने उमर रज़ि०, रफ़ा यदैन नहीं करते थे खुद बखुद बातिल हो गया।

अबू हुमैद साइदी रज़ि० की रिवायत

२. अबू हुमैद साइदी रज़ि० की सही रिवायत जो सही बुख़ारी स० ११४ जिल्द १ पर है उस में रुकूअ़ और तीसरी रकअत की रफ़ा यदैन का ज़िक्र नहीं। अबू दाऊद की सनद में अब्दुल हमीद बिन ज'फर, यह बिदअती, तक़्दीर का मुंकिर और ज़ईफ़ रावी है उसने रफ़ा यदैन का इज़ाफ़ा किया है। ग़ैर मुक़ल्लिद बुख़ारी की हदीस छोड़ कर उस झूठी रिवायत पर लट्टू हैं, इसमें भी सिर्फ़ एक दफ़ा रफ़ा यदैन का ज़िक्र है और बस। (तहक़ीक़ मसअला रफ़ा यदैन स० २७)

मुसन्निफ़ की तन्क़ीद का खुलासा और उसका जवाब

अ. अबू हुमैद साइदी रज़ि० की रिवायत में रुकूअ़ और तीसरी रकअत में रफ़ा यदैन का ज़िक्र नहीं।

ब. अबू दाऊद की सनद में अब्दुल हमीद बिन ज'फर बिदअती, तक़्दीर का मुंकिर और जईफ़ रावी है।

ज. रफ़ा यदैन का इज़ाफ़ा अब्दुल हमीद ने किया।

जवाब

अ. बुख़ारी शरीफ़ की इस हदीस में अगरचे रुकूअ़ और तीसरी रकअत के लिए रफ़ा यदैन का ज़िक्र नहीं, लेकिन इसको अदमे रफ़ा यदैन पर

दलील लाना सरासर नाइंसाफ़ी है। क्योंकि उसमें नमाज़ के तमाम अरकान व सुनन का भी ज़िक्र नहीं।

चुनांचे रुकूअ़ की तस्बीहात, एक रकअत में सज्दों की तादाद, और उनकी तस्बीहात, अत्तहीयात, सलाम वग़ैरह का ज़िक्र मौजूद नहीं तो उस से यह लाज़िम आता कि सिरे से यह चीज़ें नमाज़ में शामिल ही नहीं, बल्कि जैसे दीगर अहादीस को देख कर उन से यह चीज़ें ली जाती हैं। इसी तरह रफ़ा यदैन का ज़िक्र जब दीगर रिवायतों में मिलता है, ले लिया जाएगा। अगरचे इस रिवायत में उसका ज़िक्र नहीं।

(ब) जवाब उसका यह है कि खुद इमाम अबू दाऊद ने उसके बाद दूसरी सनद से इस हदीस को रिवायत किया है चुनांचे बज़लुल मज्हूद में है :

قد أخرج المؤلف بعد هذا بسند آخر بهذا السند الحديث
علي بن الحسين بن إبراهيم نا أبو بدر حدثني زهير أبو خيثمة
نا الحسن بن الحر حدثني عيسى بن عبد الله بن مالك عن محمد
ابن عمرو بن عطاء أحد بني مالك عن عباس أو عياش بن سهل

अल ग़रज़ बक़ौल मुसन्निफ़ अब्दुल हमीद के कमज़ोर होने के बावजूद दूसरी सनद से उसकी तौसीक़ हो गई।

२. अल्लामा जैलई फ़रमाते हैं कि "अब्दुल हमीद बिन ज'फर मुक़ल्लिम फ़ीह है लेकिन अक्सर उलमा ने उसकी तौसीक़ की है और इमाम मुस्लिम ने अपनी सही में उन से एहतिजाज किया है और उसका जुअ़फ़ इस क़िस्म का नहीं है जो उसकी हदीस के रद्द करने को वाजिब क़रार देते हों।

३. तहावी ने बावजूद (हन्फ़ी) होने के अब्दुल हमीद बिन ज'फर से एहतिजाज किया है। चुनांचे मुलाहिज़ा हो शरह मआनियुल आसार (बाब बुलुगुस्सवी बेदूनिल एहतलाम, स० १२५, जिल्द २)

रफ़ा यदैन का इज़ाफ़ा अब्दुल हमीद ने नहीं किया बल्कि उसकी पैदाइश से भी पहले लोग रफ़ा यदैन करने वाले मौजूद थे।

अबू हुरैरह रज़ि० की हदीस

अबू हुरैरह रज़ि० की सही हदीस बुख़ारी स० ११० पर है जिस में रफ़ा यदैन का ज़िक्र तक नहीं लेकिन अबू दाऊद की सनद में रफ़ा यदैन का

ज़िक्र है लेकिन रावी इब्ने जुरैज है जिस ने ६० औरतों से मुतआ किया।

दूसरा रावी यहया बिन अय्यूब है जो ज़ईफ़ है, नीज़ उसमें सज्दा की रफ़ा यदैन का भी ज़िक्र है। (तहक़ीक़ मसअला रफ़ा यदैन)

जवाब

बुख़ारी की इस हदीस में अगरचे रफ़ा यदैन का ज़िक्र मौजूद नहीं है लेकिन दूसरी सही रिवायात से इस का सुबूत मिल जाता है।

अल्लामा ज़ैलई, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० वाली रिवायत का ज़िक्र करने के बाद फ़रमाते हैं :

وهو في الرواية عن أبي داود قال الشيخ في الإمام فهو كذلك وكلهم رجال الصحيح۔
آثار السنن ص ٢٠٠

इमाम फ़रमाते हैं, उसके तमाम रावी सही हैं।

सज्दा की रफ़ा यदैन नहीं बल्कि वह रुकूअ़ से उठने के वक़्त की रफ़ा यदैन है।

हज़रत अली की ग़ैर मुहव्वला हदीस

उनकी सही रिवायत में रफ़ा यदैन का ज़िक्र नहीं है। ख़ुद हज़रत अली रज़ि० और उसके हज़ारों साथी रफ़ा यदैन नहीं करते थे। अल्बत्ता एक ज़ईफ़ रिवायत जिस का रावी इब्ने अबी अज़्ज़िनाद है, उसमें रफ़ा यदैन का ज़िक्र है। (तहक़ीक़ मसअला रफ़ा यदैन स० २७)

जवाब

हज़रत अली रज़ि० और आपके तमाम अस्हाब रफ़ा यदैन किया करते थे। चुनांचे जुज़ रफ़ा यदैन स० १२ में है : "हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिए तक्बीर कहते वक़्त और रुकूअ़ को जाते वक़्त और रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त और दो रकअत से तीसरी रकअत के लिए उठते वक़्त अपने कन्धों के बराबर तक अपने हाथ उठाते थे।

दूसरी और चौथी रकअत में रफ़ा यदैन साबित नहीं

मुसन्निफ़ साहब लिखते हैं :

दूसरा हिस्सा दावा का यह है कि दूसरी और चौथी रकअत के शुरू में आपने कभी रफ़ा यदैन नहीं की। इस बारे में ग़ैर मुक़ल्लेदीन के पास एक भी सरीह हदीस नहीं है। मैंने कई बार मुनाज़िरों में मुतालबा किया,

इन्आमी चेलेंज भी दिया। लेकिन आज तक कोई माई का लाल ग़ैर मुक़ल्लिद ऐसी सरीह हदीस पेश नहीं कर सका।

फ़ाइदा : हज़रत उबैदुल्लाह बिन उमर इब्ने माजा स० ६२।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० (इब्ने माजा स० ६२)

अबदुल्लाह बिन उमर रज़ि० (फ़तहुल बारी स० १५२ जिल्द २

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० (तल्ख़ीसुल हबीर)

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० (अबू दाऊद स० ७५, जिल्द १)

हज़रत जाबिर रज़ि० (मज्मउज़्ज़वाइद स० १८२, जिल्द १)

इन छः रिवायात की सनदों का हाल भी रुकूअ़ वाली रिवायत जैसा ही है।

इन छः हदीसों में हर तक्बीर के वक़्त रफ़ा यदैन का ज़िक्र है और माज़ी इस्तिम्रारी भी है। इन रिवायात से साफ़ मालूम हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी कभार दूसरी और चौथी रकअत के शुरू में भी रफ़ा यदैन की। लेकिन ग़ैर मुक़ल्लेदीन इन अहादीस पर अमल नहीं करते। आख़िर वजह फ़र्क़ बताएं। माज़ी इस्तिम्रारी भी है। मुतअख़्ख़िरे इस्लाम सहाबी, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की रिवायत भी है।

हाँ हम तो यह कहते हैं कि यह रिवायात मत्रूकुल अमल हैं, न उनके रावियों ने उन पर अमल किया न ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ि० ने, न ख़ैरुल क़ुरून में उन पर अमल हुआ। अल्बत्ता ग़ैर मुक़ल्लेदीन के उसूल पर इन छः हदीसों से सराहतन इन दो जगहों में नही या नफ़ी साबित नहीं तो ग़ैर मुक़ल्लेदीन अहादीस के मुंकिर और इस सुन्नत के तारिक हुए जवाब सोच कर दें। महज़ औरतों की तरह तअ़्ने बाज़ी न हो। (तहक़ीक़ मस्अला रफ़ा यदैन)

दूसरी और चौथी रकअत में रफ़ा यदैन साबित नहीं

मज़्कूरा इबारत में मुसन्निफ़ ने अपने ख़ुद साख़्ता उसूलों से अह्ले हदीस को मतऊन करने की कोशिश की है कि वह दूसरी और चौथी रकअत में अहादीस मौजूद होने के बावजूद रफ़ा यदैन नहीं करते।

जवाब

मुसन्निफ़ की पेशकरदा तमाम अहादीस, ज़ईफ़ और नाक़ाबिले अमल हैं, ज़ैल में अहादीस और उन पर तन्क़ीद मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

حدثنا هشام بن عمار، ثنا رفدة بن قضاعة الغساني ثنا الأوزاعي عن عبد الله بن عبيد بن عمير عن أبيه عن جده عمير بن حبيب قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه مع كل تكبيرة في الصلوة المكتوبة. (ابن ماجة ص ٢٨٠ ج ١ حديث ٨٦١)

तर्जमा : "हमें हिशाम बिन अम्मार ने हदीस बयान की, वह कहते हैं हमें रफ़दह बिन कुज़ाआ ने वह कहते हैं हमें औज़ाई ने अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर से उन्होंने अपने बाप दादा से उमैर बिन हबीब से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर तक्बीर के वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे फ़र्ज़ नमाज़ में।"

अल्लामा सिंधी (हन्फ़ी) का जवाब

अल्लामा सिन्धी लिखते हैं कि :

"في الزوائد، هذا الإسناد فيه رفدة بن قضاعة، وهو ضعيف و عبد الله لم يسمع من أبيه، حكاه العلائي عن ابن جريج - (سنن ابن ماجة تحقيق محمد فؤاد عبد الباقي ص ٢٨٠ ج ١)

तर्जमा : "ज़वाइद में है कि इस हदीस की सनद में रफ़्दह बिन कुज़ाआ ज़ईफ़ रावी है। (नीज़) अब्दुल्लाह ने अपने बाप से कुछ नहीं सुना।

अल ग़रज़ मुसन्निफ़ की पेशकरदा रिवायत ज़ईफ़ है और पेश करने के क़ाबिल नहीं।

मुसन्निफ़ की दूसरी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त

حدثنا أيوب بن محمد الهاشمي ثنا عمر بن رياح عن عبد الله بن طاوس عن أبيه عن ابن عباس أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه عند كل تكبيرة" (ابن ماجة حديث ٨٦٥ ج ١)

तर्जमा : "हमें हदीस बयान की अय्यूब बिन मुहम्मद हाशमी ने वह कहते हैं हमें उमर बिन रबाह ने अब्दुल्लाह बिन ताऊस से, उन्होंने अपने बाप से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों हाथ उठाते थे हर तक्बीर पर"।

इस हदीस की सनद में उमर बिन रबाह मुत्तफ़ेका तौर पर ज़ईफ़ है। चुनांचे अल्लामा सिन्धी (हन्फ़ी) फ़रमाते हैं :

"في الزوائد، إسناده ضعيف لاتفاقهم على ضعف عمر بن رياح - (ابن ماجه تحقيق محمد فؤاد ص ٢٨١ ج ١)

तर्जमा : "उमर बिन रबाह मुत्तफ़क़ा तौर पर ज़ईफ़ है।

(इब्ने माजा तहक़ीक़ मुहम्मद फ़ुवाद, स० २८१, जिल्द १)

मुसन्निफ़ की तीसरी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त

"يرفع يديه في كل خفض ورفع (ص ٢٢٣ ج ٢ فتح الباري)

तर्जमा : "यानी इब्ने उमर रज़ि० झुकते वक़्त और उठते वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे"। हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं :

"يحمل الخفض على الركوع والرفع على الاعتدال وإلا فحمله على ظاهره يقتضي استحبابه في السجود أيضا وهو خلاف ما عليه الجمهور وقد نفاه ابن عمر" (فتح الباري ص ٢٢٣ ج ٢)

तर्जमा : "लफ़्ज़े 'ख़फ़ज़' से मुराद रुकूअ् के लिए झुकना और रफ़ा से (रुकूअ् से) उठना मुराद है। अगर यह मतलब न लिया जाए तो ज़ाहिरी मफ़्हूम से सज्दा में भी रफ़ा यदैन मुस्तहब मालूम होती है जो जमहूर उलमा के मस्लक के ख़िलाफ़ है। नीज़ हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की (सही हदीस के ख़िलाफ़ भी है) जिसमें उन्होंने उसकी नफ़ी की है।

२. नीज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से सही सनद के साथ हदीस इस तरह है :

"حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر قال رأيت النبي صلى الله عليه وسلم افتتح التكبير في الصلوة فرفع يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذو منكبيه وإذا كبر للركوع فعل مثله وإذا قال سمع الله لمن حمده فعل مثله وقال ربنا ولك الحمد ولا يفعل ذلك حين يسجد ولا حين يرفع رأسه من السجود" (بخاري شريف ص ١٠٢ ج ١)

तर्जमा : "हमें हदीस बयान की अबुल यमान ने वह कहते हैं हमें शुऐब ने जुहरी से, वह कहते हैं सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा जब आपने नमाज़ शुरू की और अल्लाहु अकबर कहा तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन की, इसी तरह जब रुकूअ् के लिए अल्लाहु अकबर कहा और समिअल्लाहुलिमन हमिदह कहा तो इसी तरह किया और **रब्बना व लकल-हम्द** कहा और सज्दा में जाते हुए और सज्दा से सर उठाते हुए रफ़ा यदैन नहीं करते।

अल-ग़रज़ इब्ने उमर रज़ि० का बेसनद असर का वही मतलब है जो हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने बयान किया, क्योंकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से सज्दा की हालत में रफ़ा यदैन की सरीह तौर पर नफ़ी वारिद है।

मुसन्निफ़ की चौथी मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त

عَنْ اَبِیْ سَلَمَةَ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ اَنَّهٗ کَانَ یَرْفَعُ یَدَیْهِ فِیْ کُلِّ خَفْضٍ وَّرَفْعٍ وَیَقُوْلُ اَنَا اَشْبَهُکُمْ صَلٰوةً بِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ۔ (تلخیص ص۲۱۹ ج۱)

तर्जमा : "अबू सलमा फरमाते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० झुकते और उठते वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे और फरमाते क्योंकि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ के तुम सबसे बढ़ कर मुशाबेह नमाज़ पढ़ता हूँ"।

१. इसका जवाब हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की हदीस (नम्बर ३) के ज़िम्न में गुज़र चुका है।

२. इमाम शौकानी रह० इस हदीस और दीगर अहादीस को ज़िक्र करने के बाद फरमाते हैं :

"وَهٰذِهِ الْاَحَادِیْثُ لَا تَنْتَهِضُ لِلْاِحْتِجَاجِ بِهَا عَلَی الرَّفْعِ فِیْ غَیْرِ تِلْكَ الْمَوَاطِنِ فَالْوَاجِبُ الْبَقَاءُ عَلَی النَّفْیِ الثَّابِتِ فِی الصَّحِیْحِ حَتّٰی یَقُوْمَ دَلِیْلٌ صَحِیْحٌ یَقْتَضِیْ تَخْصِیْصَهٗ کَمَا قَامَ فِی الرَّفْعِ عِنْدَ الْقِیَامِ مِنَ التَّشَهُّدِ الْاَوْسَطِ" (نیل الاوطار ص۱۸۲ ج۲)

तर्जमा : "यह अहादीस नमाज़ में साबित शुदह मकामात के अलावा रफ़ा यदैन की दलील नहीं बन सकतीं। पस लाज़िम व ज़रूरी यही है कि सही अहादीस में साबित शुदह नफ़ी पर ही अमल किया जाए। जब तक किसी सही दलील से किसी और जगह की तख़्सीस न हो जाए। जैसा कि तशह्हुदे औसत से उठ कर रफ़ा यदैन करने की तख़्सीस हुई है।

मुसन्निफ़ की पाँचवीं मुहव्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त

حَدَّثَنَا قُتَیْبَةُ بْنُ سَعِیْدٍ نَا ابْنُ لَهِیْعَةَ عَنْ اَبِیْ هُبَیْرَةَ عَنْ مَیْمُوْنِ الْمَکِّیِّ اَنَّهٗ رَاٰی عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ الزُّبَیْرِ وَصَلّٰی بِهِمْ یُشِیْرُ بِکَفَّیْهِ حِیْنَ یَقُوْمُ وَحِیْنَ یَرْکَعُ وَحِیْنَ یَسْجُدُ وَحِیْنَ یَنْهَضُ لِلْقِیَامِ فَیَقُوْمُ فَیُشِیْرُ بِیَدَیْهِ فَانْطَلَقْتُ اِلَی ابْنِ عَبَّاسٍ فَقُلْتُ اِنِّیْ رَاَیْتُ ابْنَ الزُّبَیْرِ صَلّٰی صَلٰوةً لَمْ اَرَ اَحَدًا یُّصَلِّیْهَا فَوَصَفْتُ لَهٗ هٰذِهِ الْاِشَارَةَ فَقَالَ اِنْ اَحْبَبْتَ اَنْ تَنْظُرَ اِلٰی صَلٰوةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَاقْتَدِ بِصَلٰوةِ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ الزُّبَیْرِ۔ (ابوداؤد ص [illegible] ج۱)

तर्जमा : "मैमून मक्की से रिवायत है कि उन्होंने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को देखा जब वह उन्हें नमाज़ पढ़ा रहे थे इशारा किया अपने दोनों हाथों से (रफ़ा यदैन किया) खड़े होते वक़्त और रुकूअ् के वक़्त और सज्दा के वक़्त और फिर खड़े होते वक़्त, खड़े हुए और इशारा किया हाथों से। तो वह गये अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० के पास और उन से कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को इस तरह नमाज़ पढ़ते देखा कि किसी को इस तरह पढ़ते नहीं देखा और मैंने बयान किया हाथों से इशारा करने का। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने कहा, अगर तू चाहता है आप (स०) की नमाज़ देखना तो पैरवी कर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की नमाज़ की।

१. अल्लामा शमसुल हक़ अज़ीमाबादी रह० फरमाते हैं :

"اُسْتُدِلَّ بِهٖ عَلٰی رَفْعِ الْیَدَیْنِ فِی السُّجُوْدِ لٰکِنَّ الْاِسْتِدْلَالَ بِهٖ غَیْرُ تَامٍّ لِاَنَّهٗ یَحْتَمِلُ اَنْ یَّکُوْنَ الْمُرَادُ بِقَوْلِهٖ حِیْنَ یَسْجُدُ حِیْنَ یَرْفَعُ رَاْسَهٗ مِنَ الرُّکُوْعِ کَمَا فِی الرِّوَایَةِ الْمُتَقَدِّمَةِ وَاِذَا جَاءَ الْاِحْتِمَالُ بَطَلَ الْاِسْتِدْلَالُ عَلٰی اَنَّ الْحَدِیْثَ ضَعِیْفٌ لَا یَقُوْمُ بِهٖ حُجَّةٌ" (عون المعبود شرح ابوداؤد ص۲۵۹ ج۱)

तर्जमा : "सज्दों की रफा यदैन के लिए इस हदीस से इस्तिदलाल किया गया है। लेकिन इस हदीस से इस्तिदलाल ग़ैर मुम्किन है क्योंकि **"हीना यस्जुदु"** का मतलब यह भी हो सकता है कि जब रुकूअ् से सज्दा में जाने के लिए सर उठाया तो भी रफा यदैन की, जिस तरह उस से पहली रिवायत में गुजरा है और (यह मशहूर कायदा है कि) जब एक चीज में दो या कई एहतमाल हों तो उस से इस्तिदलाल बातिल हो जाता है। इसके अलावा यह हदीस जईफ और नाकाबिले हुज्जत भी है"।

२. फिर थोड़ा सा आगे चल कर लिखते हैं :

"قَالَ الْمُنْذِرِيُّ فِي إِسْنَادِهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ لَهِيعَةَ وَفِيهِ مَقَالٌ. انْتَهَى قُلْتُ قَالَ الْعَلَّامَةُ الْحَرَّانِيُّ فِي الْحَلَاصَةِ قَالَ أَحْمَدُ إِحْتَرَقَتْ كُتُبُهُ وَهُوَ صَحِيحُ الْكِتَابِ. وَمَنْ كَتَبَ عَنْهُ قَدِيمًا كَيَحْيَى صَحِيحٌ قَالَ يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ لَيْسَ بِالْقَوِيِّ وَقَالَ مُسْلِمٌ تَرَكَهُ وَكِيعٌ وَيَحْيَى بْنُ الْقَطَّانِ وَابْنُ مَهْدِيٍّ، وَقَالَ الْحَافِظُ فِي التَّقْرِيبِ، عَبْدُ اللهِ بْنُ لَهِيعَةَ بِفَتْحِ اللَّامِ وَكَسْرِ الْهَاءِ، ابْنُ عُقْبَةَ الْحَضْرَمِيُّ، أَبُو عَبْدِ الرَّحْمٰنِ الْمِصْرِيُّ الْقَاضِي، صَدُوقٌ، مِنَ السَّابِعَةِ، خَلَطَ بَعْدَ احْتِرَاقِ كُتُبِهِ"

(عون المعبود ص ۲۶۹ ج ۱)

तर्जमा : "इमाम मुन्ज़िरी फरमाते हैं :

"इस हदीस की सनद में इब्ने लहीआ है और उसके मुतअल्लिक इमामों की जरह है"।

अल्लामा खजरजी "खुलासा" में फरमाते हैं कि :

"इमाम अहमद रह० ने फरमाया, इसकी किताबें जल गई थीं और जिस ने किताबें जलने से पहले नकल किया उसका सिमाअ् सही है"।

इमाम यहया बिन मुईन फरमाते हैं :

"लैसा बिल-क़वीये" यानी "यह क़वी रावी नहीं है"!

इमाम मुस्लिम रह० फरमाते हैं कि :

"वकीअ्, यहया बिन कत्तान और इब्ने महदी ने उन से हदीस लेना छोड़ दी थी"।

हाफिज इब्ने हजर फरमाते हैं, सच्चा और सातवीं तबक़ा का है। लेकिन किताबें जल जाने के बाद गड बडी पैदा हो गई।

अल गरज़ हदीस जईफ और नाकाबिले ऐतबार है।

मुसन्निफ़ की छठी मुह्व्वला हदीस और उसकी हक़ीक़त

"عَنِ الزِّبْرِقَانِ بْنِ حَرْمَلَةَ قَالَ سَأَلْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ كَمْ كُنْتُمْ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ؟ قَالَ كُنَّا أَلْفًا وَأَرْبَعَ مِائَةٍ، قَالَ وَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي كُلِّ تَكْبِيرَةٍ مِنَ الصَّلٰوةِ"

(مجمع الزوائد ص ۱۰۱ ج ۲)

तर्जमा : "ज़ब्याल बिन हरमला कहते हैं, मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि० से पूछा, बैअते रिज़वान के दिन सहाबा रजि० की तादाद कितनी थी? फरमाया, चौदह सौ। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ में हर तक्बीर के वक़्त रफ़ा यदैन किया करते थे।

जवाब

अल्लामा हैसमी फरमाते हैं :

"ذٰلِكَ وَهُوَ فِي الصَّحِيحِ خَلَا رَفْعِ الْيَدَيْنِ، رَوَاهُ أَحْمَدُ وَفِيهِ الْحَجَّاجُ بْنُ أَرْطَاةَ، وَاخْتُلِفَ فِيهِ"

तर्जमा : "यह हदीस सही बुखारी में रफ़ा यदैन के ज़िक्र के बैगैर आई है। इमाम अहमद ने भी इसे रिवायत किया है लेकिन इस में हज्जाज बिन अरतात, मुख्तलिफ फ़ीह रावी है"।

अल-ग़रज़ यह हदीस भी नाक़ाबिले इस्तिदलाल है। क्योंकि सही बुखारी की रिवयात के खिलाफ़ है। नीज़ इसमें एक रावी (हज्जाज बिन अरतात) ज़ईफ़ है।

रुकूअ् जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन

मुसन्निफ़ लिखते हैं :

दावा का तीसरा हिस्सा यह है कि रुकूअ् जाते और सर उठाते वक़्त हुज़ूर हमेशा रफ़ा यदैन करते थे और सज्दों के वक़्त कभी रफ़ा यदैन नहीं की। इस हिस्सा के लिए ग़ैर मुकल्लिद मालिक बिन हुवैरिस रजि०, वाइल बिन हुज्र रजि० की रिवायत पेश करते हैं और कहते हैं कि यह दोनों सहाबा

रज़ि० आख़िरी उम्र में इस्लाम लाए। उन्होंने हुज़ूर को रफ़ा यदैन करते देखा। इस से साबित हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आख़िरी उम्र तक रफ़ा यदैन करते रहे मगर इस बारे में वह कई बातें छुपाते है।

१. मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० की एक सनद में अबू क़िलाबा है जो नासबी मज़्हब का था। नीज़ नसाई ने उस से सज्दा की रफ़ा यदैन की रिवायत की है तो अब ग़ैर मुक़ल्लेदीन का आधी हदीस को मानना और आधी को छोड़ना **"अफ़तुमिनूना बेबाज़िल-किताबे व तक्फ़ुरूना बेबाज़िन"** का मिस्दाक़ है।

२. वाइल बिन हुज्र रज़ि० की रिवायत भी दो तरीक़ से है। एक तरीक़ में सज्दा के वक़्त रफ़ा यदैन का ज़िक्र है। (अबू दाऊद स० ७३, जिल्द १) जिसको ग़ैर मुक़ल्लिद छुपाते हैं। उस पर अमल नहीं करते। इस तरह आधी हदीस को माना आधी से रूगरदानी की।

दूसरे तरीक़ में ख़ुद हज़रत वाइल रज़ि० ने वज़ाहत फ़रमा दी है कि जब मैं दूसरी दफ़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया तो हुज़ूर और सहाबा रज़ि० पहली तक्बीर के वक़्त रफ़ा यदैन करते थे। बाद की किसी रफ़ा यदैन का ज़िक्र नहीं फ़रमाया, (अबू दाऊद स० ७३, जिल्द १) और किसी एक सहाबी को भी मुस्तस्ना न फ़रमाया। गोया तमाम सहाबा रज़ि० आख़िर अह्दे नबवी में रफ़ा यदैन के तारिक थे। लेकिन ग़ैर मुक़ल्लिद अवाम के सामने यह बात बिल्कुल बयान नहीं करते।

मुसन्निफ़ के दलाइल का ख़ुलासा और उनका जवाब

१. मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० और वाइल बिन हुज्र रज़ि० की रिवायात पेश करते है।

२. (अ) मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० की सनद में अबू क़िलाबा नासबी है।

(ब) ख़ालिद का हाफ़िज़ा सही न था।

३. (अ) नस्र बिन आसिम ख़ारिजी है।

(ब) नसाई की रिवायत में सज्दा की रफ़ा यदैन का ज़िक्र है।

४. वाइल बिन हुज्र रज़ि० की हदीस में सज्दा का जिक्र है।

५. वाइल रज़ि० ने कहा हुज़ूर सिर्फ़ पहली दफ़ा रफ़ा यदैन करते थे।

जवाब

१. रुकूअ़ जाते और रुकूअ़ से उठते वक़्त रफ़ा यदैन का दीगर सहाबा रज़ि० से सुबूत!

मुसन्निफ़ ने सिर्फ़ दो सहाबा रज़ि० की रिवायात का ज़िक्र किया है, हालांकि उनके अलावा दीगर सहाबा रज़ि० से सही सनद के साथ उन दो मक़ामात पर रफ़ा यदैन का ज़िक्र मिलता है चुनांचे मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ
عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ
يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلٰوةَ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوْعِ، رَفَعَهُمَا
كَذٰلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا
يَفْعَلُ ذٰلِكَ فِي السُّجُوْدِ. (بخاري شريف ص ١٠٢ ج ١)

तर्जमा : "अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ शुरु करते और जब रुकूअ़ के लिए अल्लाहु अक्बर कहते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो रफ़ा यदैन करते और रुकूअ़ से उठते वक़्त **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह" रब्बना व लकल हम्द** कहते और सुजूद में रफ़ा यदैन नहीं करते थे।

٢ - حَدَّثَنَا مُقَاتِلٌ ثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ أَنَا إِسْمَاعِيْلُ حَدَّثَنِيْ
عَبْدُ رَبِّهِ بْنُ سُلَيْمَانَ بْنِ عُمَيْرٍ قَالَ رَأَيْتُ أُمَّ الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ
تَعَالَى عَنْهَا تَرْفَعُ يَدَيْهَا فِي الصَّلٰوةِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهَا حِيْنَ تَفْتَتِحُ
الصَّلٰوةَ وَحِيْنَ تَرْكَعُ وَإِذَا قَالَتْ سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَتْ يَدَيْهَا
وَقَالَتْ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ. (جزء رفع يدين مترجم ص ٢٨)

तर्जमा : "सुलेमान बिन उमैर ने बयान किया कि मैंने उम्मे दर्दा रज़ि० को देखा है कि वह नमाज़ में अपने कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करती थीं। जब नमाज़ शुरू करतीं और जब रुकूअ़ करतीं फिर जब **"समिअल्लाहुलिमन हमिदह"** कहतीं रफ़ा यदैन करतीं और **रब्बना व लकल-हम्द** कहतीं।

٣ - عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ لِلصَّلٰوةِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ
وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ فَعَلَ مِثْلَ ذٰلِكَ.

तर्जमा : हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिए तक्बीर कहते वक़्त और रुकूअ़ को जाते वक़्त और रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त और दो रकअत से (तीसरी रकअत के लिए) उठते वक़्त अपने कन्धों के बराबर तक अपने हाथ उठाते थे।

४. इमाम बुख़ारी रह० फरमाते हैं :

"सत्तरह सहाबा रज़ि० से रिवायत है कि बेशक वह रुकूअ़ को जाते, रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त रफ़ा यदैन करते थे"। (जुज़ओ रफइल यदैन स० १३)

(अ) अबू क़िलाबा सिक़ह रावी हैं

१. अल्लामा ख़ज़रजी फरमाते हैं :

"अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अम्र बिन आमिर जरमी, अबू किलाबा, बसरी, अइम्म–ए–हदीस में से हैं। शाम में रहते थे"।

अय्यूब फरमाते हैं :

• أَبُوْ قِلَابَةَ مِنَ الْفُقَهَاءِ ذَوِي الْأَلْبَابِ ؕ

यानी अबू किलाबा, साहिबे अक़्ल फुक़हा में से थे।

इब्ने सअद फरमाते हैं :

"सिक़तुन, कसीरुल-हदीस"

यानी : "सिक़ह और बकसरत रिवायत करने वाले थे"। (ख़ुलासा स० १६८)

२. हाफ़िज़ इब्ने हजर तहज़ीबुत्तहज़ीब में लिखते हैं :

"अहदुल-अ'लाम" (बहुत बड़े अल्लामा थे)

• ذَكَرَهُ ابْنُ سَعْدٍ فِي الطَّبَقَةِ الثَّانِيَةِ مِنْ أَهْلِ الْبَصْرَةِ وَقَالَ
كَانَ ثِقَةً، كَثِيْرَ الْحَدِيْثِ ؕ

तर्जमा : "इब्ने सअद ने उसे अहले बसरा के दूसरे तबक़ा में ज़िक्र किया है और फरमाया है कि सिक़ह और कसीरुल हदीस थे"।

इब्ने सीरीन फरमाते हैं :

"ज़ालिका अख़ी हक़्क़न" यानी "यह मेरा सच मुच भाई है"।

अय्यूब फरमाते हैं :

• كَانَ وَاللّٰهِ مِنَ الْفُقَهَاءِ ذَوِي الْأَلْبَابِ مَا أَدْرَكْتُ بِهٰذَا الْمِصْرِ رَجُلًا كَانَ
أَعْلَمَ بِالْقَضَاءِ مِنْ أَبِيْ قِلَابَةَ ؕ

तर्जमा : "अल्लाह की क़सम अक़्लमन्द फुक़हा में से थे। इस शहर में मुझे अबू किलाबा से बढ़ कर क़ज़ा के मसाइल जानने वाला नहीं मिला"।

अल्लामा अजली फरमाते हैं :

"बसरीयुन, ताबेईयुन, सिक़तुन" बसरा के रहने वाले, ताबई और सिक़ह थे"।

इब्ने ख़राश फरमाते हैं :

"सिक़तुन" सिक़ह थे। (तहज़ीबुत्तहज़ीब स० २२५, २२६)

ख़ालिद सिक़ह है

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

• خَالِدُ بْنُ مِهْرَانَ الْحَذَّاءُ أَبُو الْمَنَازِلِ الْبَصْرِيُّ أَحَدُ الْأَثْبَاتِ، وَثَّقَهُ
أَحْمَدُ وَابْنُ مَعِيْنٍ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ سَعْدٍ ؕ (مقدمة فتح الباري ص ٤٠٠)

तर्जमा : "ख़ालिद बिन मिहरान क़ाबिले एतमाद रावियों में से है। उसे अहमद, इब्ने मुईन, नसाई और इब्ने सअद ने सिक़ह कहा है"।

अल्लामा ख़ज़रजी फरमाते हैं :

"सिक़तुन" ख़ालिद सिक़ह थे"। (ख़ुलासा स० १०३)

नस्र बिन आसिम पर तन्क़ीद का जवाब

१. हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फरमाते हैं :

• نَصْرُ بْنُ عَاصِمٍ اللَّيْثِيُّ الْبَصْرِيُّ، ثِقَةٌ، رُمِيَ بِرَأْيِ الْخَوَارِجِ وَصَحَّ
رُجُوْعُهُ عَنْهُ مِنَ الثَّالِثَةِ ؕ (تقريب التهذيب ص ٢٩٩ ج ٢)

तर्जमा : "नस्र बिन आसिम, लैसी, बसरी, सिक़ह है। ख़्वारिज की राय रखते थे लेकिन उस से ताइब हो गये थे तीसरे तबक़ा के हैं।

२. नीज़ तहज़ीबुत्तहज़ीब में नक़ल करते हैं : (स० ४२७, जिल्द १)

• قَالَ الْمَرْزُبَانِيُّ فِيْ مُعْجَمِ الشُّعَرَاءِ كَانَ عَلٰى رَأْيِ الْخَوَارِجِ ثُمَّ تَرَكَهُمْ
وَأَنْشَدَ لَهُ ؕ

فَارَقْتُ نَجْدَةَ وَالَّذِيْنَ تَزَرَّقُوْا وَابْنَ الزُّبَيْرِ شِيْعَةَ الْكَذَّابِ

तर्जमा : "मरज़ुबानी मोअ्‌जम अश्शोअ्‌रा में लिखते हैं कि नस्र बिन आसिम ख़्वारिज की राय रखते थे। फिर उनको छोड़ दिया। मरज़ुबानी ने उनका एक शेअ्‌र भी नक़ल किया है, "मैंने नज्दा हरवरी और इब्ने ज़ुबैर और शीआ झूठे मसलक को छोड़ दिया।

अल-ग़रज़ नस्र बिन आसिम ने ख़ारिजीयत से तौबा कर ली थी लिहाज़ा उनकी रिवायत क़ाबिले हुज्जत है।

नसाई की रिवायत में सज्दा का ज़िक्र और उसका जवाब

• أخبرنا محمد بن المثنى حدثنا ابن أبي عدي عن شعبة، عن قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث أنه رأى النبي صلى الله عليه وسلم رفع يديه في صلاته إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع وإذا سجد وإذا رفع رأسه من السجود حتى يحاذي بهما فروع أذنيه (نسائي ص ١٢٩ ج ١)

तर्जमा : "मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रुकूअ़ के वक़्त, रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त, सज्दा करते और सज्दा से सर उठाते वक़्त कानों के बराबर रफ़ा यदैन करते देखा"।

जवाब

इस रिवायत में **"इज़ा सजदा व इज़ा रफ़आ रासुहू मिनस्सुजूदे"** की ज़्यादती दुरुस्त नहीं। यह इज़ाफ़ा ग़लत है। चुनांचे मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपूरी रह० फ़रमाते हैं :

• قلت في إسناده قتادة وهو مدلس ولم يذكر سماعه من نصر بن عاصم في زيادة قوله وإذا سجد وإذا رفع رأسه من السجود ثم قد تفرد بهذه الزيادة نصر بن عاصم عن مالك ابن الحويرث وتفرد بها عنه قتادة وأصحاب قتادة يختلفون فبعضهم يذكرونها وبعضهم لا. ثم الذين يذكرونها قد يذكرونها وقد لا يذكرونها وروى هذا الحديث عن مالك بن الحويرث أبو قلابة الجرمي ولم يذكر هذه الزيادة وروى البخاري حديث مالك بن الحويرث من طريق أبي قلابة دون نصر بن عاصم وروى مسلم في صحيحه حديثه من طريق أبي قلابة أولا ثم روى من طريق نصر بن عاصم من وجهين لكن ليس في واحد منهما ذكر هذه الزيادة. ففي صحة هذه الزيادة نظر.
(ابكار المنن ص ٢٠٦)

तर्जमा : "मैं कहता हूँ इस हदीस की सनद में क़तादा मुदल्लिस है। उस ने नस्र बिन आसिम से **"इज़ा सजदा व इज़ा रफ़आ रासुहू मिनस्सुजूदे"** के लफ़्ज़ नहीं सुने। (दूसरी बात) यह है कि इस ज़्यादती को सिर्फ़ नस्र बिन आसिम ही मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से बयान करते हैं और उन से सिर्फ़ क़तादा बयान करते हैं। और असहाबे क़तादा में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ इस ज़्यादती का ज़िक्र करते हैं, और बाज़ ज़िक्र नहीं करते हैं। फिर जो लोग उस ज़्यादती को ज़िक्र करते, वे कभी उस को ज़िक्र करते हैं और कभी छोड़ देते हैं।

इस हदीस को मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से अबू क़िलाबा जर्मी ने रिवायत किया है और उन्होंने इस ज़्यादती का ज़िक्र नहीं किया और इमाम बुख़ारी रह० ने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० की हदीस अबू क़िलाबा की सनद से नक़ल की है। और इमाम मुस्लिम रह० ने सही मुस्लिम में अबू क़िलाबा की सनद से रिवायत किया है। पहले नस्र बिन आसिम की सनद से दो सनदों के साथ लेकिन उन दोनों में इस ज़्यादती का ज़िक्र नहीं है। पस (व इज़ा सजद अलख़) की ज़्यादती महल्ले नज़र है"।

वाइल बिन हुज रज़ि० की हदीस में सज्दा की रफ़ा यदैन का ज़िक्र और उसका जवाब

१. ख़ुद इमाम अबू दाऊद ने उसके बाद वाली रिवायत में यह तसरीह कर दी है कि इस रिवायत में सज्दों में रफ़ा यदैन के ज़िक्र पर रावियों का इत्तिफ़ाक़ नहीं, चुनांचे फ़रमाते हैं :

• روى هذا الحديث همام عن ابن جحادة لم يذكر الرفع مع الرفع من السجود (ابوداؤد ص ج ١)

तर्जमा : यानी "इस हदीस को हम्माम ने इब्ने जुहादा से रिवायत किया है लेकिन सज्दों की रफ़ा यदैन का ज़िक्र नहीं किया"।

अल अज़्बुल मन्हल में है :

• وغرض المصنف بهذا بيان أنه قد اختلف على محمد بن جحادة في رواية الحديث فرواه عنه عبد الوارث بن سعيد بذكر رفع اليدين في السجود ورواه عنه همام بدونه وهو الصواب
(ص ١٢٥ ج ٥)

तर्जमा : मुसन्निफ़ इन अल्फ़ाज़ से यह बयान करना चाहते है कि मुहम्मद बिन जुहादा के शागिर्दों में इख़्तिलाफ़ है। उस से अब्दुल वारिस बिन सईद सज्दों में रफ़ा यदैन का ज़िक्र करता है और हम्माम इन अल्फ़ाज़ का तज़्किरा नहीं करता, और यही बात ज़्यादा दुरुस्त है कि यह अल्फ़ाज़ हदीस में नहीं है।

एक और जगह फ़रमाते हैं :

○ عَلٰى أَنَّ زِيَادَةَ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي السُّجُوْدِ لَمْ يُتَّفَقْ عَلَيْهَا مِنْ رِوَايَةِ ابْنِ جُحَادَةَ ۔ (العذب المنهل ص ١٤٢ ج ٥)

तर्जमा : यानी " इस रिवायत में रफ़ा यदैन फ़िस्सुजूद की ज़्यादती पर रावियों का इत्तिफ़ाक़ नहीं, जो इब्ने जुहादा की हदीस में"।

नीज़ हज़रत अली रज़ि० की सरीह हदीस के ख़िलाफ़ है।

○ عَنْ عَلِيٍّ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلٰوةِ الْمَكْتُوْبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَيَصْنَعُ مِثْلَ ذٰلِكَ إِذَا قَضٰى قِرَاءَتَهُ فَأَرَادَ أَنْ يَّرْكَعَ وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوْعِ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِيْ شَيْءٍ مِّنْ صَلٰوتِهِ وَهُوَ جَالِسٌ (نسائی، ترمذی، دارقطنی)

तर्जमा : "यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते और जब क़िरअत पूरी करके रुकूअ़ करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते और नमाज़ में बैठने की हालत में रफ़ा यदैन नहीं करते थे। अल ग़रज़ हदीस में सज्दों की रफ़ा यदैन का ज़िक्र दुरुस्त नहीं है। वाइल रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ पहली दफ़ा रफ़ा यदैन करते थे।

जवाब

१. वाइल की इस रिवायत से नमाज़ में इफ़्तिताह के अलावा रफ़ा यदैन की नफ़ी साबित नहीं होती। क्योंकि दीगर रिवायात में दूसरे मक़ामात पर भी रफ़ा यदैन का सुबूत मिलता है चुनांचे मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

حَدَّثَنَا عَاصِمٌ ثَنَا أَبِيْ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّيْ فَرَفَعَ يَدَيْهِ فِي الرُّكُوْعِ وَفِي الرَّفْعِ مِنْهُ قَالَ ثُمَّ أَتَيْتُهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فَرَأَيْتُ النَّاسَ فِيْ زَمَانِ بَرْدٍ عَلَيْهِمْ جُلُّ الثِّيَابِ تَحَرَّكُ أَيْدِيْهِمْ مِنْ تَحْتِ الثِّيَابِ ۔ (نصب الرایۃ ص ٣٠٢ ج ١)

तर्जमा : "हमें हदीस बयान की आसिम ने, उन्हें उनके बाप ने कि हज़रत वाइल बिन हुज्र फ़रमाते हैं कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रुकूअ़ जाते और रुकूअ़ से सर उठाते हुए रफ़ा यदैन करते देखा। वाइल रज़ि० कहते हैं फिर मैं उनके पास सर्दियों में आया तो उन्हें भारी कपड़ों के नीचे से रफ़ा यदैन करते हुए देखा"।

हन्फ़ी मुक़ल्लिद का इस्तिदलाल

फ़ाइदा : मुसन्निफ़ कहता है कि उबैद बिन उमैर रज़ि०, इब्ने अब्बास रज़ि०, इब्ने उमर रज़ि० अबू हुरैरह रज़ि०, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि०, मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० अनस बिन मालिक रज़ि०, यह आठ सहाबा रज़ि० रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सज्दा के वक़्त रफ़ा यदैन करते थे। और सिर्फ़ एक रिवायत में है कि नहीं करते थे। यह रिवायत इब्ने उमर रज़ि० की है और तआरुज की वजह से साक़ित है।

बाक़ी सहाबा रज़ि० की रिवायात पर ग़ैर मुक़ल्लिद अमल नहीं करते। यहाँ माज़ी इस्तिम्रारी भी है और हज़रत वाइल रज़ि० और मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० जैसे मुतअख़्ख़िरुल इस्लाम रावी भी हैं। फिर न मालूम क्या वजह है कि ग़ैर मुक़ल्लिद रुकूअ़ व सुजूद की रिवायात में क्यों फ़र्क़ करते हैं। ख़ुलासा यह कि छः अहादीस से हर तक्बीर के वक़्त रफ़ा यदैन करने का ज़िक्र माज़ी इस्तिम्रारी के सिग़ा से साबित है। गोया चार रकअतों में ३६ बार। मगर ग़ैर मुक़ल्लिद इन अहादीस पर अमल नहीं करते। एक सहाबी इब्ने उमर रज़ि० से सज्दा की रफ़ा यदैन मुतआरिज़ आई है। एक रिवायत में है करो और एक में है न करो। इसलिए वह साक़ितुल एतबार हो गई।

बाक़ी सात सहाबा रज़ि० से सज्दा की रफ़ा यदैन आई है। माज़ी इस्तिम्रारी भी है और वाइल रज़ि०, मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० अबू हुरैरह रज़ि० जैसे मुतअख़्ख़िरुल इस्लाम सहाबा रज़ि० से मरवी भी, गोया चार रकअत में २८ मरतबा रफ़ा यदैन सुन्नत है। मगर ग़ैर मुक़ल्लिद इन रिवायात पर अमल नहीं करते। (तहक़ीक़ मस्अला रफ़ा यदैन स० २९, ३०)

❖ ❖ ❖

सज्दों की रफ़ा यदैन का मस्अला और मुसन्निफ़ की पेशकरदा रिवायात का जवाब!

मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपूरी मरहूम लिखते हैं :

"لَيْسَ فِي هٰذَا الْبَابِ حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ صَرِيْحٌ بَلْ ثَبَتَ بِالْأَحَادِيْثِ الصَّحِيْحَةِ
الصَّرِيْحَةِ نَفْيُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ بِالسُّجُوْدِ فَمِنْهَا مَا رَوَاهُ الشَّيْخَانِ عَنِ ابْنِ
عُمَرَ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلٰوةِ رَفَعَ
يَدَيْهِ حَتّٰى يَكُوْنَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ يُكَبِّرُ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَّرْكَعَ رَفَعَهُمَا
مِثْلَ ذٰلِكَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ رَفَعَهُمَا كَذٰلِكَ أَيْضًا وَقَالَ
سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ. وَلِلْبُخَارِيِّ وَلَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ
حِيْنَ يَسْجُدُ وَلَا حِيْنَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُوْدِ، وَلِمُسْلِمٍ، وَلَا يَفْعَلُ حِيْنَ
يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُوْدِ، وَلَهُ أَيْضًا وَلَا يَرْفَعُهُمَا بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ كَذَا
فِي مُنْتَقَى الْأَخْبَارِ وَمِنْهَا مَا رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ فِي جَامِعِهِ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ
عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلٰوةِ
الْمَكْتُوْبَةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَيَصْنَعُ ذٰلِكَ إِذَا قَضٰى قِرَاءَتَهُ
وَأَرَادَ أَنْ يَّرْكَعَ وَيَصْنَعُهُ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ وَلَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ
فِي شَيْءٍ مِنْ صَلٰوتِهِ وَهُوَ قَاعِدٌ. اَلْحَدِيْثَ، قَالَ التِّرْمِذِيُّ، هٰذَا
حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ. وَمِنْهَا مَا رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيُّ عَنْ أَبِي مُوْسٰى قَالَ أُرِيْكُمْ صَلٰوةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ وَرَفَعَ
يَدَيْهِ لِلرُّكُوْعِ ثُمَّ قَالَ سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ. وَرَفَعَ يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ
هٰكَذَا فَاصْنَعُوْا وَلَا يَرْفَعُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ، قَالَ الْحَافِظُ فِي التَّلْخِيْصِ
رِجَالُهُ ثِقَاتٌ" (ابكار المنن ۲۰۴، ۲۰۵)

तर्जमा : "सज्दा की हालत में रफ़ा यदैन के लिए कोई भी सही और सरीह हदीस नहीं है"। चुनांचे सहीहैन की रिवायत में है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते, फिर अल्लाहु अकबर कहते, फिर जब रुकूअ़ का इरादा करते तो उसी तरह रफ़ा यदैन करते और जब रुकूअ़ से सर उठाते

तो फिर भी रफ़ा यदैन करते। सही बुख़ारी के अलफ़ाज़ यह भी हैं, जब सज्दा करते और सज्दों से सर उठाते तो रफ़ा यदैन नहीं करते थे। और सही मुस्लिम के अलफ़ाज़ हैं और रफ़ा यदैन नहीं करते थे जब सुजूद से सर उठाते। नीज़ यह अलफ़ाज़ भी हैं और वह सज्दों के दर्मियान रफ़ा यदैन नहीं करते थे"।

नीज़ हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो कन्धों के बराबर रफ़ा यदैन करते और उसी तरह जब किरअत पूरी करके रुकूअ़ का इरादा करते तो फिर भी ऐसे ही करते और ऐसे ही रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त करते और बैठने की हालत में रफ़ा यदैन नहीं करते थे, इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं, यह हदीस सही है। नीज़ दारकुतनी में है कि :

अबू मूसा अशअरी रज़ि० से रिवायत है, उन्होंने कहा तुम्हें मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ दिखाऊं! पस आपने अल्लाहु अकबर कहा और रफ़ा यदैन की, फिर अल्लाहु अक्बर कहा और रुकूअ़ के लिए रफ़ा यदैन की, फिर **समिअल्लाहुलिमन हमिदह** कहा और रफ़ा यदैन की फिर फ़रमाया तुम भी ऐसे ही करो। दो सज्दों के दर्मियान रफ़ा यदैन नहीं करते थे। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० तल्ख़ीस में फ़रमाते हैं इसके सब रावी सिक़ह हैं। (अब्कारुल मिनन, स० २५५)

मुसन्निफ़ की पेशकरदा रिवायात का जवाब

मुसन्निफ़ ने सज्दा की रफ़ा यदैन के लिए आठ अहादीस पेश की हैं। उन में से उबैद बिन उमैर रज़ि०, इब्ने अब्बास रज़ि०, इब्ने उमर रज़ि०, अबू हुरैरह रज़ि०, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि०, मालिक बिन हुवैरिस रज़ि०, वाइल बिन हुज्र रज़ि० की रिवायात के मुतअल्लिक़ पिछले सफ़हात में तन्क़ीद गुज़र चुकी है, बाक़ी रही हज़रत अनस रज़ि० की हदीस वह भी मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

"عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي الرُّكُوْعِ وَالسُّجُوْدِ" (رواه ابو يعلى)

तन्क़ीद

१. इसकी सनद सही नहीं है, क्योंकि इसमें हमीदुत्तवील मुदल्लिस है।

वह हज़रत अनससे "अन" के साथ रिवायत करते है। हाफ़िज इब्ने हजर रहे० "तबक़ातुल मुदल्लेसीन" में फरमाते हैं :

"हमीदुत्तवील हज़रत अनस रज़ि० का मशहूर साथी और कसीरुत्तदलीस है। यहाँ तक कहा गया है कि उसकी अक्सर अहादीस बवास्ता साबित और क़तादा हैं और इमाम नसाई ने उसे मुदल्लिस कहा है"।

(अबकारुल मिनन, स० २०६)

२. हुमैद के शागिर्द हुफ़्फ़ाज़ उसे हज़रत अनस रज़ि० से मौक़ूफ़ बयान करते हैं और सिर्फ़ अब्दुल वहाब सक़्फ़ी ही मरफ़ू बयान करते हैं सही बात यह है कि यह हज़रत अनस रज़ि० का क़ौल है। मरफ़ूअ् हदीस नहीं।

(अबकारुल मिनन, स० २०६)

अल ग़रज़ सज्दों की हालत में रफ़ा यदैन, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबए किराम से सही सनद के साथ साबित नहीं। इसलिए मुसन्निफ़ का अह्ले हदीस पर तअ्न करना कि वह अहादीस के बावजूद इस सुन्नत के तारिक हैं, दुरुस्त नहीं बल्कि अह्ले हदीस का मस्लक यह है कि :

"إِذَا صَحَّ الْحَدِيْثُ فَهُوَ مَذْهَبِيْ" (امام شافعی رح)

तर्जमा : "जब सही हदीस मिल जाए तो वही मेरा मसलक है"।

❖❖❖